

سلسلہ نوموزہ سالار جنگ ۷ / ۹

فہرست مشروح

مخطوطات فارسی

جلد ہفتم

(علم اجتہاد)

تالیف

حاجی مولانا محمد اشرف مرحوم

دیباچہ

دکتور مودن لعل نسیم

رئیس

موزہ و کتابخانہ سالار جنگ

حیدر آباد - آندھرا پردیش

بھارت

دارالافتاء دارالعلوم دیوبند

فهرست مشروح

مخطوطات فارسی

در

موزه و کتابخانه سالار جنگ

تالیف

حاجی مولانا محمد اشرف مرحوم

(عہدہ دار خاص برای فہرست سازی)

دیباچہ

دکتر موهن لعل نسکم

رئیس موزه و کتابخانه

جلد ہفتم

(محتوی بر ۶۲۷ مخطوطات تجوید، تفسیر، حدیث، فقہ و عقاید)

ناشر

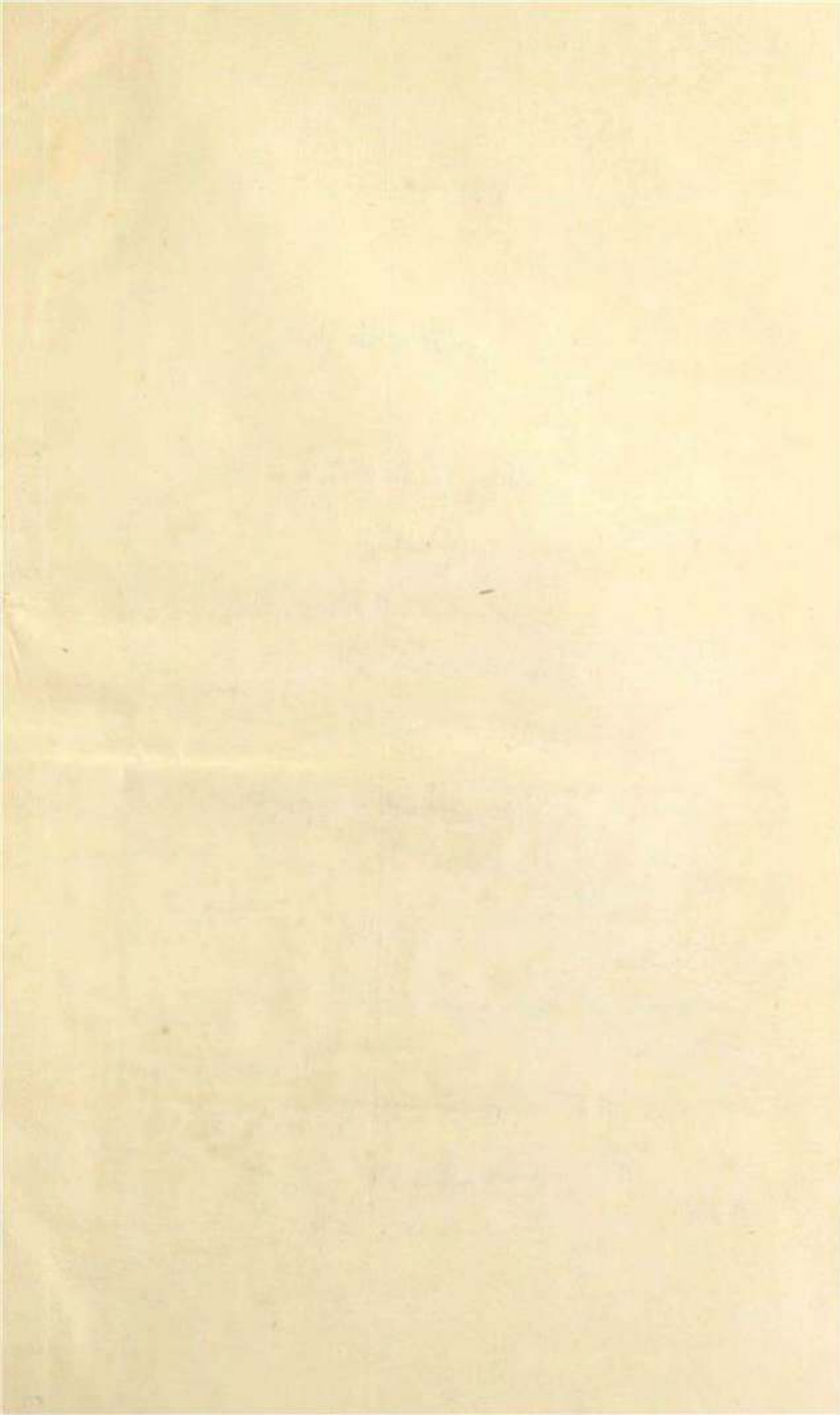
موزه و کتابخانه سالار جنگ

حیدرآباد - آندھرا پردیش بھارت

۱۹۸۰ء - ۱۴۰۰ھ

قیمت:

۱۱۰۰/۰۰



III Decorated Mss

2555 (Superbly decorated with Floral Designs and 'Unwāns).

Illustrated Mss

2401 (Illustrated with Diagrams and Charts).

2701 (Illustrated with Calligraphic Panels and Drawings).

IV Imperial and Royal Codices

(i) Imperial: 2554 and 2882.

(ii) Royal: 2576, 0592, 2716 and 2855.

V Rare Works

2401, 2402, 2408, 2413, 2418, 2419/1, 2419/2, 2427, 2464, 2465, 2467, 2512, 2536, 2537, 2558, 2576, 2633, 2682, 2716, 2815, 2818, 2819, 2820, 2839, 2855, 2856, 2857, 2876, 2900, 2909, 2949, 2960 and 2987.



Ordinary : 2402/(ii), 2404, 2409/(ii), 2415/(ii), 2416, 2418/(ii), 2422, 2432/(ii), 2454/(ii), 2459/(ii), 2463, 2483/(ii), 2498/(ii), 2518, 2522/(ii), 2524/(ii), 2527/ii, 2531/(ii), 2533, 2540, 2442, 2548, 2549, 2550, 2552, 2553, 2560, 2561, 2562/(ii), 2563/(ii), 2577, 2581, 0583, 2587 2589, 2590, 2596/(ii), 2601/(ii), 2604, 2608, 2609, 2619, 2621, 2624/(ii), 2631/(ii), 2638/(ii), 2639 2645/(ii), 2648/(ii), 2649, 2651, 2653, 2657, 2658, 2663, 2674, 2678, 2679, 2680, 2681, 2683, 2685, 2690/(ii), 2693, 2695/(ii) 2696, 2697/ii, 2698/ii, 2700, 2702, 2705, 2707/(ii), 2708, 2713, 2714, 2724/(ii), 2730, 2740, 2745/(ii), 2746/ii, 2747, 2750, 2765, 2767, 2769/(ii), 2772/(ii), 2784/(ii), 2786, 2787, 2793, 2796, 2798, 2799, 2801, 2803, 2805, 2808, 2811, 2813, 2814, 2815, 2817, 2818, 2823, 2824/(ii), 2829/(ii), 2832, 2834, 2836, 2838, 2847, 2858, 2866, 2884/ii, 2887/(ii), 2896, 0903, 2910/(ii), 2913, 2914/(ii), 2916, 2922, 2924, 2927, 2935, 2936, 2937, 2938/(ii), 2955, 2965, 2967, 2974, 2975, 2981, 2984, 0985, 2994, 2995/(ii), 3002, 3003/(ii), 3004, 3007, 3008, 3011, 3012/(ii), 3022 and 3026.

(v) *Riqā'*

Good : 2857/(ii) and 2930.

(vi) *Shafī'a*

Excellent : 2643.

Good : 2781 and 2945.

(vii) *Shikast*

Good : 2754.

(viii) *Shikast-Nast'aliq*

Clear : 2688, 2689, 2761, 2790, 2844, 2861, 2874, 2892, 2931, 2943, 2948 and 2973.

Good : 2556, 2558, 2603, 2605, 2654, 2819, 2820, 2856, 2864 and 2898.

Ordinary 2415/(ii), 2421, 2551 and 2784.

(ix) *Ta'liq*

Good : 2620 and 2875.

(x) *Thuth*

Good : 2512.

2616, 2617, 1618, 2623, 2625, 2628, 2630, 2632, 2634, 2647, 2650, 2655, 2676, 2682, 2706, 2711, 2721, 2724, 2725, 2741, 2748, 2759, 2761, 2763, 2768, 2777, 2782, 2783, 2795, 2800, 2808, 2819, 2820, 2835, 2840, 2841, 2842, 2845, 2850, 2852, 2857, 2859, 2868, 2869, 2873, 2883, 2884, 2885, 2886, 2889, 2892, 2895, 2900, 2908, 2917, 2918, 2919, 2923, 2925, 2929, 2933, 2939, 2942, 2971, 2982, 2997 and 3024.

(iv) *Nasta'liq*

Bad: 2410/(ii) and 2837.

Clear: 2445, 2469/(ii), 2471, 2472/(ii), 2473, 2475/(ii), 2476, 2477/(ii), 2490/(ii), 2494/(ii), 2499/(ii), 2503/(ii), 2510/(ii), 2515, 2532, 2543, 2547, 2567, 2568/(ii), 2569, 2571, 2572, 2578, 2600, 2611, 2622/(ii), 2633/(ii), 2637, 2644, 2659, 2660, 2661, 2662, 2668, 2673, 2675, 2696, 2699, 2701, 2710, 2715, 2718, 2723, 2727/(ii), 2728, 2729, 2732, 2733/(ii), 2735, 2736, 2737, 2751, 2752, 2753, 2756/(ii), 2757, 2766, 2770/(ii), 2788, 2791, 2797, 2802, 2804, 2810, 2812, 2816,, 2822, 2825, 2826/(ii), 2827, 2839, 2846/(ii), 2865, 2870/(ii) 2880, 2882/(ii), 2888, 2890, 2899, 2904/(ii), 2911, 2912, 2915, 2921, 2926/(ii), 2932, 2934/(ii), 2950, 2956, 2957, 2959, 2961, 2962, 2963/(ii), 2964/(ii), 2972, 2976, 2977, 2979, 2980, 2983, 2986, 2987, 2988/(ii), 2991/(ii), 2992, 2996, 2999/(ii), 3006, 3009/(ii), 3018/(ii), 3023 and 3025.

Excellent: 2465/ii, 2521, 2554, 2555, 2593, 2607, 2716/ii, 2828, 2849, 2855 and 2998.

Good: 2405/(ii), 2406, 2407, 2413, 2431, 2437, 2463, 2467, 2470/(ii), 2484/(ii), 2495/(ii), 2496/(ii), 2501/(ii), 2511/(ii), 2514/(ii), 2520/(ii), 2537/(ii), 2538/(ii), 2544, 2557/(ii), 2576/(ii), 2582, 2584, 2564/(ii), 2585, 2588/(ii), 2592, 2595/(ii), 2598/(ii), 2602, 2604, 2612/(ii), 2613, 2614, 2615/(ii), 2616/(ii), 2706/(ii), 2710, 2720/(ii), 2734, 2768/(ii), 2773/(ii), 2780, 2792, 2795/(ii), 2809/(ii), 2840/(ii), 2841/(ii), 2842, 2843, 2860, 2871, 2876, 2877, 2878, 2883/(ii), 2884/(ii) 2892/(ii), 2893, 2894, 2901, 2902, 2906, 2907, 2909, 2923/(ii), 2925/(ii), 2929/ii, 2932/(ii), 2940, 2941, 2947, 2951, 2954, 2958, 2960, 2966, 2970, 2993, 3010, 3013, 3014, 3015, 3024/(ii), 3027 and 3029.

INDEX VIII

Volume VII

Islamic Theology

(Persian Manuscripts)

Autograph Copies; Calligraphically written Mss; Illustrated, Imperial, Rare, Royal and Superbly decorated codices. etc.,

I Autograph Copies

2413, 2555, 2562, 2576, 2625, 2633, 2634, 2682, 2700, 2760, 2819, 2825, 2826, 2827, 2877, 2924, 2968 and 3006.

II Calligraphically Written Mss.

(i) Archaic Naskh

Good : 2425 and 2427.

(ii) Bahār

Good : 2426, 2428, 2433 and 2442.

(iii) Naskh

Bad : 2410.

Clear : 2579, 2622, 2629, 2631, 2633, 2645, 2652, 2658, 2743, 2756, 2770, 2771, 2774, 2776, 2789, 2806, 2826, 2926, 2928, 2934, 2946, 2949, 2952, 2953, 2963, 2965, 2979, 2991/(i), 2999/(i), 3001, 3002, 3009/(i) and 3018/(i).

Excellent : 2465/i, 2519, 2716, 2855/(i) 2869 and 3016.

Good : 2401, 2405, 2408, 2409/I, 2412, 2419/2, 2420, 2436, 2440, 2441, 2443, 2444, 2466, 2468, 2470, 2478, 2484, 2492, 2493, 2495, 2496, 2500, 2501, 2503, 2506, 2511, 2513, 2514, 2520, 2525, 2536, 2537, 2541, 2557, 2558, 2562, 2564, 2565, 2570, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2588, 2590, 2591, 2595, 2597, 2598, 2599, 2612, 2615,

| Cat. No. | Reg. No. | Cat. No. | Reg. No. | | |
|----------|----------|----------|----------|-------|---------|
| 2977 | Aq | 1/1 | 3004 | do | 16 |
| 2978 | do | 2 | 3005 | do | 112 |
| 2979 | do | 1/2 | 3006 | Man | 21 |
| 2980 | do | 76 | 3007 | Aq | 89 |
| 2981 | do | 77/1 | 3008 | do | 104 |
| 2982 | do | 137 | 3009 | do | 27 |
| 2983 | do | 126/2 | 3010 | do | 151/1 |
| 2984 | do | 78 | 3011 | do | 106 |
| 2985 | do | 144/1 | 3012 | do | 90 |
| 2986 | Man | 52/2 | 3013 | do | 14 |
| 2987 | Aq | 12 | 3014 | do | 15 |
| 2988 | do | 4 | 3015 | Aq | 26 |
| 2989 | do | 40 | 3016 | do | 68 |
| 2990 | do | 91 | 3017 | do | 133 |
| 2991 | do | 136 | 3018 | do | 145/1 |
| 2992 | do | 87 | 3019 | Tas | 148/3 |
| 2993 | do | 71 | 3020 | A. Nm | 686/2 |
| 2994 | do | 24 | 3021 | Aq | 59 |
| 2995 | do | 60/1 | 3022 | do | 105 |
| 2996 | do | 115 | 3023 | do | 101 |
| 2997 | do | 113 | 3024 | do | 70 |
| 2998 | do | 46 | 3025 | do | 120 |
| 2999 | do | 7 | 3026 | do | 13 |
| 3000 | do | 130 | 3027 | do | 140 |
| 3001 | do | 41 | 3028 | Tas | 248/2-8 |
| 3002 | do | 98 | 3029 | Aq | 146 |
| 3003 | Aq | 81 | | | |

| Cat. No. | | Reg. No. | Cat. No. | | Reg. No. |
|----------|-------|----------|----------|-----|----------|
| 2923 | M & K | 79 | 2950 | Aq | 126/1 |
| 2924 | Aq | 86 | 2951 | do | 127 |
| 2925 | do | 83 | 2952 | do | 117 |
| 2926 | Man | 31 | 2953 | do | 32 |
| 2927 | do | 32 | 2954 | AN | 262/2 |
| 2928 | Aq | 48 | 2955 | Aq | 145/2 |
| 2929 | Aq | 206 | 2956 | do | 31 |
| 2930 | do | 88 | 2957 | do | 34 |
| 2931 | Man | 6 | 2958 | do | 33 |
| 2932 | do | 26 | 2959 | do | 99 |
| 2933 | do | 39 | 2960 | do | 97 |
| 2934 | Aq | 80 | 2961 | do | 18 |
| 2935 | do | 62 | 2962 | do | 17 |
| 2936 | F | 40 | 2963 | do | 75 |
| 2937 | F.I | 1612 | 2964 | do | 74 |
| 2938 | Aq | 142 | 2965 | do | 69 |
| 2939 | do | 143 | 2966 | do | 30 |
| 2940 | Man | 25 | 2967 | F | 72/2 |
| 2941 | Aq | 85 | 2968 | Man | 10 |
| 2942 | M & K | 36/2 | 2969 | Aq | 111 |
| 2943 | Aq | 149 | 2970 | do | 67 |
| 2944 | Mad | 52 | 2971 | do | 119 |
| 2945 | Aq | 84 | 2972 | do | 110 |
| 2946 | do | 139 | 2973 | Man | 48 |
| 2947 | Aq | 23 | 2974 | Aq | 108 |
| 2948 | do | 22/1 | 2975 | do | 121 |
| 2949 | do | 125 | 2976 | do | 3 |

| Cat. No. | | Reg. No. | Cat. No. | | Reg. No. |
|----------|-------|----------|----------|-------|----------|
| 2869 | Aq | 79 | 2896 | Tas | 180 |
| 2870 | do | 100 | 2897 | M & K | 87 |
| 2871 | M & K | 78 | 2898 | Aq | 95 |
| 2872 | Ta | 2 | 2899 | do | 96 |
| 2873 | Tas | 121 | 2900 | do | 45 |
| 2874 | Aq | 92 | 2901 | Man | 30 |
| 2875 | do | 142/2-6 | 2902 | M & K | 14/2 |
| 2876 | M & K | 16 | 2903 | Tas | 23/2 |
| 2877 | do | 68 | 2904 | Aq | 73 |
| 2878 | do | 67 | 2905 | do | 124 |
| 2879 | do | 66 | 2906 | Man | 2 |
| 2880 | M & K | 65 | 2907 | do | 1 |
| 2881 | Aq | 69/1 | 2908 | do | 24 |
| 2882 | Aq | 67 | 2909 | Aq | 119 |
| 2883 | H.I | 19 | 2910 | do | 102 |
| 2884 | do | 23 | 2911 | do | 103 |
| 2885 | do | 20 | 2912 | do | 131 |
| 2886 | do | 22 | 2913 | do | 132 |
| 2887 | do | 24 | 2914 | do | 60/2 |
| 2888 | do | 21 | 2915 | do | 82 |
| 2889 | Man | 18 | 2916 | do | 144/2-3 |
| 2890 | do | 19 | 2917 | Ad | 69 |
| 2891 | do | 20 | 2918 | Aq | 6 |
| 2892 | do | 11 | 2919 | do | 5 |
| 2893 | Aq | 51 | 2920 | do | 114 |
| 2894 | Aq | 52 | 2921 | Man | 51 |
| 2895 | Tas | 179 | 2922 | Aq | 138/1 |

| Cat. No. | | Reg. No. | Cat. No. | | Reg. No. |
|----------|------|----------|----------|--------------|----------|
| 2816 | Man | 3 | 2843 | Aq | 49 |
| 2817 | F | 3 | 2844 | do | 50 |
| 2818 | Aq | 8 | 2845 | do | 141/1 |
| 2819 | Man | 17 | 2846 | do | 65 |
| 2820 | Aq | 57/1 | 2847 | do | 66 |
| 2821 | do | 43 | 2848 | do | 63 |
| 2822 | F | 6 | 2849 | do | 64 |
| 2823 | do | 9 | 2850 | H.I | 1 |
| 2824 | A.N. | 356/6 | 2851 | Man | 36 |
| 2825 | Man | 34 | 2852 | do | 37 |
| 2826 | Ak. | 36 | 2853 | do | 35 |
| 2827 | Aq | 42 | 2854 | Aq | 116 |
| 2828 | do | 72 | 2855 | T.I | 48 |
| 2829 | do | 147/2 | 2856 | Aq | 11 |
| 2830 | N | 7/2 | 2857 | do | 25 |
| 2831 | Si | 70 | 2858 | do | 145/3 |
| 2832 | do | 69 | 2859 | Tas | 178/1 |
| 2833 | Aq | 148 | 2860 | Ta | 445/1 |
| 2834 | do | 192/1-2 | | (M. No. 121) | |
| 2835 | do | 28 | 2861 | Ta | 445 |
| 2836 | do | 192/4 | 2862 | M & K | 98 |
| 2837 | do | 93/1 | 2863 | Man | 42 |
| 2838 | Man | 5 | 2864 | do | 43 |
| 2839 | Aq | 9 | 2865 | do | 41 |
| 2840 | Man | 15 | 2866 | do | 44 |
| 2841 | do | 16 | 2867 | do | 45 |
| 2842 | Aq | 37 | 2868 | do | 46/1 |

| Cat. No. | | Reg. No. | Cat. No. | | Reg. No. |
|----------|-----|----------|----------|-------|----------|
| 2762 | F.I | 47 | 2789 | F.I | 9 |
| 2763 | do | 68 | 2790 | do | 43 |
| 2764 | do | 63 | 2791 | do | 44 |
| 2765 | do | 17 | 2792 | do | 45 |
| 2766 | Man | 38 | 2793 | Ad | 90/2 |
| 2767 | F.I | 16/1 | 2794 | do | 56 |
| 2768 | do | 60 | 2795 | do | 36 |
| 2769 | Ad | 23 | 2796 | do | 67 |
| 2770 | F.I | 8 | 2797 | do | 54 |
| 2771 | do | 62 | 2798 | do | 42 |
| 2772 | Ad | 112 | 2799 | do | 70 |
| 2773 | do | 42 | 2800 | do | 38 |
| 2774 | F.I | 7 | 2801 | do | 13 |
| 2775 | do | 10 | 2802 | Tas | 146/1 |
| 2776 | F | 3 | 2803 | Aq. | 118 |
| 2777 | F.I | 55/1 | 2804 | F | 23 |
| 2778 | do | 6 | 2805 | do | 24 |
| 2779 | F | 63 | 2806 | do | 25/1 |
| 2780 | F.I | 1 | 2807 | Aq | 128 |
| 2781 | do | 37 | 2808 | F | 66 |
| 2782 | do | 65 | 2809 | Man | 28 |
| 2783 | do | 64 | 2810 | F | 7 |
| 2784 | do | 5 | 2811 | do | 8 |
| 2785 | do | 69/1 | 2812 | Aq | 39 |
| 2786 | do | 50 | 2813 | do | 147/1 |
| 2787 | do | 51 | 2814 | do | 38 |
| 2788 | do | 53 | 2815 | M & K | 13 |

| Cat. No. | | Reg. No. | Cat. No. | | Reg. No. |
|----------|-----|----------|----------|-----|----------|
| 2708 | F | 41 | 2735 | F.I | 32 |
| 2709 | F.I | 58 | 2736 | do | 11 |
| 2710 | Aq. | 23/2 | 2737 | do | 12 |
| 2711 | do | 141/2 | 2738 | do | 41 |
| 2712 | F.I | 59 | 2739 | do | 40 |
| 2713 | F | 31 | 2740 | H.I | 13/2 |
| 2714 | do | 32 | 2741 | do | 39 |
| 2715 | do | 29 | 2742 | do | 41 |
| 2716 | F.I | 15 | 2743 | do | 40 |
| 2717 | A.d | 141 | 2744 | do | 42 |
| 2718 | do | 142 | 2745 | do | 27 |
| 2719 | do | 53 | 2746 | F.I | 33 |
| 2720 | do | 54 | 2747 | do | 34 |
| 2721 | F.I | 18 | 2748 | do | 35 |
| 2722 | do | 19 | 2749 | do | 57 |
| 2723 | do | 21 | 2750 | do | 46 |
| 2724 | do | 20 | 2751 | do | 2 |
| 2725 | do | 22 | 2752 | do | 61 |
| 2726 | do | 23 | 2753 | T.I | 38 |
| 2727 | do | 29 | 2754 | F.I | 4 |
| 2728 | do | 24 | 2755 | Ad | 192/3 |
| 2729 | do | 28 | 2756 | do | 44 |
| 2730 | do | 30 | 2757 | do | 43 |
| 2731 | do | 25 | 2758 | do | 45 |
| 2732 | do | 26 | 2759 | F.I | 49 |
| 2733 | do | 27 | 2760 | do | 48 |
| 2734 | do | 31 | 2761 | do | 39 |

| Cat. No. | | Reg. No. | Cat. No. | | Reg. No. |
|----------|-----|----------|----------|-----|----------|
| 2654 | F | 43 | 2681 | F | 58 |
| 2655 | do | 67 | 2682 | do | 1 |
| 2656 | do | 68 | 2683 | do | 64 |
| 2657 | do | 68 | 2684 | do | 59 |
| 2658 | do | 41 | 2685 | do | 38 |
| 2659 | do | 46 | 2686 | H | 26/1-2. |
| 2660 | do | 47/1 | 2687 | F | 21 |
| 2661 | do | 47/1 | 2688 | do | 20 |
| 2662 | do | 48 | 2689 | do | 72/1 |
| 2663 | do | 22 | 2690 | do | 62 |
| 2664 | do | 11 | 2691 | do | 17 |
| 2665 | do | 10 | 2692 | do | 18 |
| 2666 | do | 12 | 2693 | do | 61 |
| 2667 | do | 19 | 2694 | do | 5 |
| 2668 | do | 55 | 2695 | do | 51 |
| 2669 | Fat | 6 | 2696 | do | 2 |
| 2670 | F | 54 | 2697 | do | 73 |
| 2671 | do | 60 | 2698 | do | 39/1 |
| 2672 | Fat | 3 | 2699 | do | 52 |
| 2673 | do | 2 | 2700 | do | 69 |
| 2674 | do | 1 | 2701 | do | 26 |
| 2675 | F | 33 | 2702 | Fat | 7 |
| 2676 | do | 28 | 2703 | F | 35 |
| 2677 | do | 30 | 2704 | do | 36 |
| 2678 | Fat | 4 | 2705 | do | 53 |
| 2679 | do | 5 | 2706 | do | 56 |
| 2680 | F | 57 | 2707 | F.I | 66 |

| Cat. No. | | Reg. No. | Cat. No. | | Reg. No. |
|----------|------|----------|----------|-------|----------|
| 2600 | Man | 17 | 2627 | H.I. | 6 |
| 2601 | do | 16 | 2628 | Man | 13 |
| 2602 | do | 4 | 2629 | Ad | 29 |
| 2603 | S.I. | 13 | 2630 | Man | 12 |
| 2604 | do | 12 | 2631 | do | 14 |
| 2605 | do | 11 | 2632 | H.I | 44 |
| 2606 | Ta | 388 | 2633 | do | 26 |
| 2607 | do | 398 | 2634 | do | 2 |
| 2608 | do | 390 | 2635 | Ta | 353 |
| 2609 | do | 391 | 2636 | H,I | 25 |
| 2610 | do | 392 | 2637 | do | 43 |
| 2611 | H.I | 8 | 2638 | Man | 7 |
| 2612 | Fal | 14 | 2639 | H.I | 3 |
| 2613 | do | 15 | 2640 | Man | 22 |
| 2614 | do | 16 | 2641 | do | 23 |
| 2615 | H.I | 35 | 2642 | H.I | 46 |
| 2616 | do | 36 | 2643 | M & K | 27 |
| 2617 | do | 37 | 2644 | H.I | 45/1 |
| 2618 | H.I | 38 | 2645 | do | 33 |
| 2619 | Ta | 367 | 2646 | do | 28 |
| 2620 | H.I. | 30 | 2647 | H | 9 |
| 2621 | do | 32 | 2648 | Aq | 94 |
| 2622 | do | 29 | 2649 | F | 13 |
| 2623 | do | 34 | 2650 | do | 15 |
| 2624 | H.I | 31 | 2651 | do | 14 |
| 2625 | do | 7 | 2652 | do | 16 |
| 2626 | do | 5 | 2653 | F | 44 |

| Cat. No. | Reg. No. | Cat. No. | Reg. No. |
|----------|--------------|----------|---------------|
| 2547 | Ha | 22 | 2573 M & K 28 |
| 2548 | do | 20 | 2574 do 29 |
| 2549 | do | 1 | 2575 do 59 |
| 2550 | F | 37 | 2576 H. I 48 |
| 2551 | Aq | 147/3 | (N. No. 119) |
| 2552 | Ha | 14 | 2577 M & K 54 |
| 2553 | do | 15 | 2578 do 30 |
| 2554 | do | 11 | 2579 do 31 |
| 2555 | do | 12 | 2580 do 32 |
| 2556 | do | 17 | 2581 do 60 |
| 2557 | do | 23 | 2582 Ta 368 |
| 2558 | Aq | 57/2 | 2583 do 376 |
| 2559 | Ha | 18 | 2584 do 369 |
| 2560 | do | 29 | 2585 do 371 |
| 2561 | do | 28 | 2586 do 370 |
| 2562 | do | 7 | 2587 do 377 |
| 2563 | do | 10 | 2588 do 372 |
| 2564 | H.I | 47 | 2589 do 373 |
| | (M. No. 208) | | 2590 do 374 |
| 2565 | (A. Nm | 1125 | 2591 Man 9 |
| | (M. N. 211) | | 2592 H.I. 10 |
| 2566 | A. Nm | 655 | 2593 do 9 |
| 2567 | do | 656 | 2594 do 11 |
| 2568 | do | 657 | 2595 do 12 |
| 2569 | do | 659 | 2596 Man 13/1 |
| 2570 | do | 658 | 2597 do 18 |
| 2571 | do | 660 | 2598 do 14 |
| 2572 | Aq. | 22/2-3 | 2599 do 15 |

| Cat. No. | | Reg. No. | Cat. No. | | Reg. No. |
|----------|------|----------|----------|-------|----------|
| 2493 | T. I | 11 | 2520 | Ad. | 119 |
| 2494 | do | 22 | 2521 | A. Nm | 996/2 |
| 2495 | do | 32 | 2522 | Ha | 26 |
| 2496 | do | 30 | 2523 | do | 27/1 |
| 2497 | do | 14 | 2524 | Aq. | 144/1 |
| 2498 | do | 29 | 2525 | Ha | 8 |
| 2499 | do | 36 | 2526 | A. Nm | 595 |
| 2500 | do | 46 | 2527 | do | 596 |
| 2501 | do | 16 | 2528 | do | 598 |
| 2502 | do | 12 | 2529 | do | 594 |
| 2503 | do | 13 | 2530 | do | 597 |
| 2504 | do | 37 | 2531 | A.N | 84 |
| 2505 | do | 17 | 2532 | Ad | 134 |
| 2506 | do | 18 | 2533 | do | 49 |
| 2507 | do | 33 | 2534 | do | 46 |
| 2508 | do | 35 | 2535 | Tas | 82 |
| 2509 | do | 15 | 2536 | Ha | 19 |
| 2510 | do | 31 | 2537 | do | 16 |
| 2511 | do | 34 | 2538 | M & K | 52 |
| 2512 | do | 6 | 2539 | Ha | 2 |
| 2513 | do | 7 | 2540 | do | 5 |
| 2514 | do | 9 | 2541 | do | 3 |
| 2515 | do | 8 | 2542 | do | 6 |
| 2516 | do | 10 | 2543 | Ha | 4 |
| 2417 | do | 4 | 2544 | do | 25 |
| 2418 | do | 47/1 | 2545 | do | 24 |
| 2519 | do | 5 | 2546 | do | 21 |

| Cat. No. | | Reg. No. | Cat. No. | | Reg. No. |
|----------|------|----------|-----------|-------|----------|
| 2433 | Taf. | 3 | 2459 | do | 47 |
| 2434 | do | 4 | 2460 | do | 42 |
| 2435 | do | 16 | 2461 | do | 40 |
| 2436 | do | 18 | 2462 | do | 15 |
| 2437 | do | 17 | 2463 | do | 21 |
| 2438 | do | 19 | 2464 | do | 26 |
| 2439 | do | 20 | 2465 | M & K | 56 |
| 2440 | do | 22 | 2466 | Taf | 8 |
| 2441 | do | 23 | 2467 | do | 1 |
| 2442 | do | 38 | 2468 | do | 2 |
| 2443 | do | 29 | 2469 | do | 28/1 |
| 2444 | do | 30 | 2470 | do | 27 |
| 2445 | do | 45 | 2471 | do | 25 |
| 2446 | do | 36 | 2472 | do | 28 |
| 2447 | do | 33 | 2473 | do | 10 |
| 2448 | do | 34 | 2474 | T. I. | 39 |
| 2449 | do | 31 | 2475 | do | 3 |
| 2450 | do | 43 | 2476 | do | 2 |
| 2451 | do | 48 | 2477 | do | 1 |
| 2452 | do | 30 | 2478-2482 | do | 40-44 |
| 2453 | do | 41 | 2483 | do | 45 |
| 2454 | do | 37 | 2484 | do | 19 |
| 2455 | do | 46 | 2485-2490 | do | 23-28 |
| 2456 | do | 35 | 2491 | do | 21 |
| 2457 | do | 32 | 2492 | do | 20 |
| 2458 | do | 44 | | | |

INDEX VII

List of Concordance

Volume VII

(Persian Manuscripts)

Concordance of Catalogue Nos. with the
Sectional Register Nos.

| Cat. No. | | Reg. No. | Cat. No. | | Reg. No. |
|----------|-------|----------|----------|-------|----------|
| 2401 | Taj | 7 | 2417 | Taj. | 28/5 |
| 2402 | do | 17 | 2418 | do | 17/1 |
| 2403 | do | 10 | 2419 | do | 9 |
| 2404 | do | 11 | 2420 | do | 8 |
| 2405 | do | 15 | 2421 | do | 5 |
| 2406 | M & K | 74/2 | 2422 | F. I. | 16 |
| 2407 | Taj. | 4 | 2423 | do | 69/2 |
| 2408 | do | 18 | 2424 | Aq. | 138/2-7 |
| 2409 | do | 1 | 2425 | Taf | 6 |
| 2410 | do | 3 | 2426 | do | 7 |
| 2411 | do | 17/2 | 2427 | do | 5 |
| 2412 | do | 13 | 2428 | do | 9 |
| 2413 | do | 6 | 2429 | do | 11 |
| 2414 | do | 12 | 2430 | do | 14 |
| 2415 | do | 14 | 2431 | do | 13 |
| 2416 | do | 2 | 2432 | do | 12 |

کاتب شیخ عظمت الله - ۱۱۷۱ھ

Shaikh 'Aẓmatu'llah (the copyist), 1171-A.H. -2688.

شیخ بہادر

— Bahādur, -2434.

شیخ اسماعیل بن شیخ الیاس

— Ismā'il bin Shaikh Ilyās, -2683.

شیخ محمد علی

— Muḥammad 'Alī, -2722/2.

شیخ محمد علی اویس - ۱۰۶۷ھ

— — — , Uwais, 1067-A.H. -2565, 2578 and 2840.

عبدہ الراجی سلیمان

Sulaimān b. Muḥammad Kāẓim -2990.

خوش است مہر کتب خانہ سلیمان جاہ + ہر کتاب مزین چون نقش بسم الله

— Jāh (King of Oudh) -2763/3.

W

خاتم و اجد علی سلطان عالم در کتاب + ثابت و پر نور بادہ تا فروغ آفتاب

Wājid 'Alī Shāh (King of Oudh), -2763/2.

وزیر علی شہد فدای حسین - ۱۲۳۵ھ

Wāzīr 'Alī, 1235. A.H. -2558/1.

وزیر علی بخاری - ۱۲۲۱ھ

— — Bukhārī, 1221-A.H. -2558/2.

Y

یا صاحب الزمان ادر کنی

Yā Ṣaḥibu'z-Zamān Adriknī -2707/3.

یریدون... الکافرون

Yuridūn-a'l...Kāfirūn (Verse 32 of Sūrah ix) -2516/1.

Z

زین الدین احمد خان بہادر - ۱۲۲۹ھ

Zainu'd-Dīn Aḥmad Khān Bahādur, 1229-A.H. -2770.

زبدۃ العلماء شیخ الاسلام خان - ۱۱۸۹ھ

Zubdatu'l-Ulama Shaikhul-Islam Khān, 1189-A.H. -2526/4 and 2663.

سید حسین مرزا خان - ۱۲۲۰ھ

Sayyid Husain Mirza Khān, 1220-A.H.

-2725/2.

سید کریم الدین - ۱۲۱۴ھ

— Karimud-Dīn, 1214-A.H.

-2895.

سید مقبول حسین

— Maqbūl Husain,

-3000.

سید محمد علی خان

— Muḥammad 'Alī Khān,

-2822/2.

سید محمد علی خان بہادر

— — — — Bahādur,

-2607 and 2951.

سید محمد علی خان بہادر - ۱۲۲۱ھ

— — — — — , 1221-A.H. -2475/2, 2491, 2637,
2656, 2760 and 2901.

سید ممتاز علی خان - ۱۱۸۶ھ

— Mumtāz 'Alī Khān, 1186-A.H.

-2991/1.

سید مرتضیٰ خان

— Murtaḍā Khān,

-2860/2.

سید مجاد علی خان بہادر

— Sajjād 'Alī Khān Bahādur,

-2794.

سید وزیر علی بخاری - ۱۲۲۱ھ

— Wazīr 'Alī Bukhārī, 1221-A.H.

-2820/2.

سید وزیر علی بخاری - ۱۲۳۵ھ

— — — — — , 1235-A.H.

-2820/3.

صراط علی حق تملکہ - ۱۱۸۱ھ

Seal of a noble of 'Ālamgīr's Court (?), 1181-A.H.

-2474/6, and 2716.

عبدہ ، شاہ نواز خان

Shāh Nawāz Khān,

-2437/1.

شیخ عبد القادر بن شیخ عبد الغفور - ۱۱۶۱ھ

Shaiḫ 'Abdu'l-Qādir, 1161-A.H.

-2412/2.

شیخ عبد القادر بن عبد الغفور - ۱۱۶۶ھ

— — — — — b. 'Abdu'l-Ghāfūr, 1166-A.H.

-2821.

- صدرجهان خادم شرع نبی
Şadr-e-Jahân, -3025/1.
- صفی قلی
Şafi Qulî, -2707/4.
- صفی قلی زجانب شده غلام شاه صفی
Şafi Qulî, -2707/5.
- سکینه بسببکم بنت محمد جعفر
Sekina Begum d/o Muhammad Ja'far, -2581/2.
- سید احمد - ۱۱۳۸
Sayyid Aḥmad, 1138-A.H. -2811.
- سید احمد حسینی
Sayyid Aḥmad Ḥusainî, -2814.
- سید عالم علی
— 'Ālam 'Alî, -2637/(ii).
- سید عالم علی خان بہادر - ۱۲۲۴
— — — Khân Bahādur, 1224-A.H. -2741.
- عبدہ ، سید علی الحسینی
— 'Alî a'l-Ḥusainî, -2897.
- سید انجوى خان - ۱۱۵۷
— Anjwî Khân, 1157 -2755.
- سید انجوى خان
— — — -2836.
- سید اطهر علی خان - ۱۲۰۰
— Aṭhar 'Alî Khân, 1200-A.H. -2633.
- سید اطهر علی خان - ۱۲۰۱
— — — — , 1201-A.H. -2816.
- سید حسین علی بخاری - ۱۲۰۶
— Ḥusain 'Alî Bukhārî, 1206-A.H. -2558/1 and 2820/1.

- Mustaqīmu'd-Daulah, 1246-A.H. مستقیم الدوله - ۱۲۴۶
-2590/5, 2622/2 and 2866/3.
- M'utamanu'd-Daulah, مؤتمن الدوله
-2516/2.
- Mu'tamanu'd-Daulah Dargah Qulī Khān, 1172-A.H. مؤتمن الدوله درگاه قلی خان - ۱۱۷۲
-2873.

N

- Najmu'd-Daulah, Hyder Yār Khān Bahādur, Sher Jung, 1171-A.H. نجم الدوله ، حیدریار خان بہادر ، شیرجنگت - ۱۱۷۱
-2873.

Q

- Qābil-Khān, قابل خان خانہ زاد عالمگیر بادشاہ
-2554/1.
- Qāḍī Muḥammad Qiyāmu'd-Dīn, 1161-A.H. قاضی محمد قیام الدین - ۱۱۶۱
-2680.
- Qādir Jung Bahādur, قادر جنگت بہادر
-2737/1.
- Qādir-u'd-Daulah, 1274-A.H. قادر الدوله - ۱۲۷۴
-2737/2.

R

- Rāḍī Khān, 1120-A.H. راضی خان - ۱۱۲۰
-2427.
- Rafī'u'd-Daulah, 1114-A.H. رفیع الدوله - ۱۱۱۴
-2688/2.
- Raḥmatu'llah, رحمت اللہ
-2884/2.
- Ruḥu'l-Amīn b. Muḥammad Amīn Riqwī, روح الامین بن محمد امین رضوی
-2526/ii.
- Rafī'u'd-Daulah, رفیع الدوله
-2606/1.

| | |
|-------------------------------|--|
| Muhtaram Jung, 1246-A.H | محترم جنکٹ ۱۲۴۶ھ -2933. |
| — Khān | محترم خان 2883/1. |
| — Khān, 1149-A.H | محترم خان -- ۱۱۴۹ھ -2724/1. |
| — -u'd-Daulah, 1257-A.H | محترم الدولہ -- ۱۲۵۷ھ -2507/2 and 2628/3. |
| M'uīnu'l-Mulk | معین الملک -2883/3. |
| — — , 1205-A.H | معین الملک ۱۲۰۵ھ -2724/2. |
| Muniru'l-Mulk | منیر الملک -2915. |
| — — , 1206 A.H | منیر الملک ۱۲۰۶ھ -2433/2, 2508, 2519, 2524, 2566, 2571/2, 2597, 2677, 2782, 2804, 2813, 2864, 2865, 2877, 2884/1, 2913, 2917, 2949, 2969, 2980 and 3025/2. |
| Murshid Qulī Khān, Julūs 10, | عدم تبدیل مہر مرشد قلی خان سنہ ۱۰ 2750/1. |
| Mushīru'l-Mamālik | مشیر الممالک -2426. |
| Murād Sharīf, 1171-A.H | مراد شریف ۱۱۷۱ھ -2751. |
| Mustaqīm Jung, 1208-A.H | مستقیم جنکٹ ۱۲۰۸ھ -2590/2 |
| Mustaqīm-u'd-Daulah, 1209-A.H | مستقیم الدولہ ۱۲۰۹ھ 2590/3 |

المفتقر الى شفاعه محمد محمود - ۱۱۰۵ هـ
-2412.

Muhammad Mahmūd, 1105-A.H

با محمد مير
-2707/1.

— Mir

محمد ميرك الحسيني
2976/1.

— Mīrak a'l-Husainī

محمد قادري فدوى محمد شاه بادشاه غازی
-2504/1.

— Qādri

ملك جهان مراکه بزیرنگین شده + از حکم بادشاه جهان آفرین شده
-2364/2.

— Qulī Quṭb Shāh. (The Golconda King)

مهر سلیمان زحق گشته میسر مرا + نقش نگین دلست حیدر صفدر مرا
-2564/3.

— Quṭb Shāh (The Golconda King)

محمد رضا
-2973.

— Riḍa

افوض امری الى الله محمد صالح الحسيني
-2473/3.

— Ṣāliḥ

محمد شاه
2437/2-

— Shāh

محمد شکور
-2405/3.

— Shukūr

محمد تقی خان
-2902/(ii).

— Taqī khān

شفاعت ز محمد چو دارد امید
-2683/2.

— Umīd

محمد ظهور احمدی
-2405/1.

— Zuhūr Ahmadi

محترم جنگ
-2570/1.

Muhtaram Jung

محمد علی شیعخ اویس ۱۰۶۷ هـ

Muhammad 'Alī Shaikh Awais, 1067-A.H

-2722/1.

محمد عسکری خانه زاد محمد معظم بهادر شاه

— 'Askarī

-2478 to 2482/2.

محمد باقر - ۱۲۰۵ هـ

— Bāqir, 1205-A.H

-2866/1 and 2866/2.

محمد باقر ابن شیعخ محمد علی - ۱۰۶۹ هـ

— Bāqir b. Shaikh Muhammad 'Alī, 1069 A.H. 2492/1 and 2500.

محمد باقر بن شیعخ محمد علی

— — — — —

-2722/3.

اللهم اجعلنی فاضل حامد

— Fāḥil b. a'sh-Shaikh Hāmid

-2434/3.

محمد فاض

— Fayyād

-2405/2.

محمد غیاث خان بهادر - ۱۱۴۶ هـ

— Ghayāth Khān Bahādur, 1146-A.H

-2546.

احقر العباد محمد هادی بن محمد جعفر

— Hādī b. Muhammad Ja'far

-2898.

محمد حیدر

— Haidar.

-2492/2.

محمد حسین مرید عالمگیر بادشاه ۱۰۹۹ هـ

— Husain. 1099-A.H

-2721.

محمد جعفر

— Ja'far

-2593.

محمد کمال الدرجات

— Kamāl

2606/2.

محمد مهدی - ۱۲۵۷ هـ

— Mahdī, 1257-A.H

2945.

- مرزا اصغر علی بیگ ۱۲۹۰ هـ
Mirza Aṣghar 'Alī Baig, 1290-A.H -2947.
- مرزا عصمت الله - ۱۲۳۷ هـ
— 'Ismat'ullah, 1237-A.H -2961.
- مرزا محمد محسن علی خان - ۱۲۰۳ هـ
— Muḥammad Muḥsin 'Alī Khān, 1203-A.H -2668/1.
- العبد محمد ؟ - ۹۳۷ هـ
Muḥammad (?), 937-A.H -2839.
- محمد عبد القادر فدوی آصف جاہ
— 'Abdu'l-Qādir -2552.
- محمد احسن الله - ۱۱۸۰ هـ
— Aḥsanu'llah, 1180-A.H 2662/2.
- محمد اکمل - ۱۱۱۱ هـ
— Akmal, 1111-A.H -2526/3.
- العبد المذنب محمد علی
— 'Alī -2474/4.
- رب نبی محمد و علی
— — -2474/2.
- محمد علی - ۱۲۳۴ هـ
— — , 1234-A.H 2590/4.
- بود جانشین محمد علی - ۱۲۳۷ هـ
— 1237-A.H -2777.
- بود جانشین محمد علی
— — -2860/1.
- زبید محمد علی اکبر است - ۱۰۹۷ هـ
— — Akbar, 1097-A.H -2579.
- محمد علی خان بہادر ۱۲۱۹ هـ
— — Khān Bahādur, 1219-A.H -2735/1.

M

- یا محمود
Maḥmūd -2434/1.
- المجد الله - ۱۱۶۹
Majdullah, 1169-A.H. -2478 to 2828/1.
- العبد الراجی ملک مجد - ۱۱۶۸
Malik Muḥammad, 1168-A.H. 2842/3.
- میر عباس علی خان بہادر - ۱۲۲۱
Mīr 'Abbās 'Alī Khān Bahādur, 1221-A.H. 2528/1.
- میر ابو الفضل
— Abu'l-Faḍal -2592/1.
- میر احمد علی - ۱۲۲۷
— Aḥmad 'Alī, 1227-A.H. 2430.
- میر حسن علی - ۱۲۵۳
— Ḥasan 'Alī, 1253-A.H. -2746.
- میر ابراہیم علی خان - ۱۲۲۰
— Ibrāhīm 'Alī Khān, 1220-A.H. -2725/1.
- میر محمد حسین شستری
— Muḥammad Ḥusain Shustarī -2505.
- میر سلطان حسین فدوی احمد شاہ بادشاہ غازی - ۱۱۶۴
— Sulṭān Ḥusain, 1164-A.H. -2439/2.
- میر سلطان حسین فدوی محمد شاہ بادشاہ غازی - ۱۱۶۴
— — — 1164-A.H. -52534.
- میر یادگار علی
— Yādāgr 'Alī -2941, 2942 and 2943.
- میر یادگار علی - ۱۲۲۱
— — — 1221-A.H. -2580.
- میر یوسف علی خان - ۱۲۱۲
— Yūsuf 'Alī Khān, 1212-A.H. -2590/1.

اداره معارف و اوقاف فارس

Idāra-e-M'aārif wa Auqāfe-e-Fāris

-2842/4.

افتخار الدواہ ، مشیر الملک فرزند محمد شریف بہادر ، سیف جنگی

Iftikhāru'd-Daulah, Mashīrujl-Mulk s/o Muḥammad Sharīf Khān

Bahādur, Saif Jung

-2996.

از دل و جان بندہ آل علی عیسی خان

'Isā Khān

-2842/2.

اعتصام الملک

I'tiṣāmu'l-Mulk

-2570/3.

اعتصام الملک - ۱۲۴۵ھ

— — 1245-A.H

-2628/2.

اعتصام الملک بندہ آصف جاہ - ۱۲۴۵ھ

— — 1245-A.H

-2872/1.

اعتصام الملک - ۱۲۴۵ھ

— — 1274-A.H

-2628/4, 2781 and 2782.

العبد انسانی عزت طلب خان الزاہدی

'Izzat Talab Khān

-2893/1.

J

یا امام جعفر صادق ادر کنی

J'afar

-2867.

جانسپار خان بن رستم علی خان - ۱۱۷۴ھ

Jansipār Khān, 1174. A.H.

K

کفی باللہ ولیا و کفی باللہ نصیرا

Kafābillāhī Waliyann wa Kafā Billāhī Naṣīrā

-2750/6.

محمود چون ایاز غلام محمد است
-2675.

Ghulām Muḥammad

غلام امام المهدي ۱۲۲۶ هـ
2750/5.

Ghulām Muḥammad Mahdi, 1226-A.H

نصر من الله وفتح قريب من غلام قبرام ۱۶۱ هـ
-2720.

Ghulām Qanbar, 1161-A.H

H

حیدر یار خان

Haidar Yār Khān

-2492/3, 2504/2, 2565/2, 2568/1, 2576, 2581,
2597, 2638/ii, 2840/2 (a), 2840/2 (b)
2863/2, 2863/3, 2879-2890, 2989.

یا حیدر کرار ادرکنی - حیدر یار خان (

Haidar Yār Khān,

2439/1, 2565/3, 2869, 2912/2.

حیدر یار خان بهادر

Haidar Yār Khān Bahādur

-2597/2.

بر فوق حسن تاج

Hasan

-2474.

حسن علی - ۱۲۰۰ هـ

Hasan 'Alī, 1200-A.H

-2822/1.

حسن رضا - ۱۳۰۹ هـ

Hasan Riḍā, 1309-A.H.

-2847.

حسن رضا - ۱۲۰۹ هـ اشجیع الملك

Hasan Riḍā, 1209-A.H. (Ashjī-u'l-Mulk

-2766.

I

افوض امری الى الله الغنی عبده ابراهیم

Ibrāhīm

-2475/1.

شهی که نقش نگین ساخت مهرآل مقیم + بود سپیر کرم قطب شاه ابراهیم

Ibrāhīm Quṭb Shāh (King of Golconda)

-2564/1.

باقر علی خان. ۱۲۲۰ھ
-2853.

Bāqir 'Alī Khān, 1220-A.H.

D

ثانی ضامن ضامن ضامن - ۱۲۲۶ھ
-2750/4.

Ḍāmin, 1226 A.H.

درگاہ قلی
-2571/1.

Dargāh Qulī,

ضیاء الدواہ ، مظفر الملک ، کاظم علی خان بہادر، ذوالفقار جنگٹ

Ḍiyāu'd-Daulah, Muẓaffaru'l-Mulk, Kāẓim 'Alī Khān Bahādur,
Ḍhulfiqār Jung

2780/1.

F

فضل علی خان
-2934.

Faḍal 'Alī Khān,

از لطف حق چوں شد بفخر الدین نصیب
مرید خاص سلطان جہاں اورنگٹ زیب
-2513.

Fakhrū'd-Dīn

فتح اللہ بیگ
-2523.

Fathu'llah Baig

G

غالب الدولہ
-2735/2.

Ghālibu'd-Daulah

عزمن قمع وذل من طمع
-2889.

Ghanifu'd-Dīn

غلام احمد خان - ۱۱۵۲ھ
2902/1.

Ghulām Aḥmad Khān, 1152-A.H.

غلام ضامن - ۱۲۶۳ھ
-2750/2.

Ghulām Ḍāmin, 1263-A.H.

کرد نعلین علی موسی رضا ۱۱۹۸
-2627.

'Alī Mūsā Ridā, 1198

یا امام علی نقی
-2707/2.

— Naqī,

علی باورخان - ۱۱۷۰
-2750.

— Yāwar Khān, 1170 A.H.

لا اله الا الله الملك الحق المبين الله قلی - ۱۱۱۸
-2842/1.

Allāh Qulī, 1118 A.H.

ناسخ بر مهر شد چو شد منزین بر کتاب

خاتم امجد علی شاه زمان عالی جناب ۱۲۶۲
-2763.

Amjad 'Alī Shāh King of Oudh, 1262

ارشاد خان خانه زاد عالمگیر بادشاه
-2554.

Arshad Khān,

اسد الله الغالب
-2474/1.

Asadu'llah a'l-Ghālib,

عاشق علی منشی

'Āshiq 'Alī (Munshī). The Author's seal flourished xiii/xix) -3006.

العطا من الله تعالى
-2683/1.

'Aṭā

اولیا نواب - ۱۱۵۲
-2662/1.

Auliā Nawāb, 1152-A.H.

B

بهره مند خان فدوی مجد شاه بادشاه غازی
-2638/1.

Bahrahmand Khān

بنده علی رضوی - ۱۳۱۹
-2988.

Banda 'Alī Ridwī, 1319 A.H.

(b) *Seals*

*Abbās 'Alī Khān Bahādur

عباس علی خان بہادر
-2899/2 and 2991/3.

— Ibn 'Alī

عباس ابن علی
-2899/1 and 2991/2.

*Abdu'r-Raḥīm

سالك راه عمل حق عبد الرحيم
-2433/1.

— — (Probably copyist's seal).

عبدہ عبد الرحيم
2433/1.

— — b. Muḥamad Bairam, 991-A.H. (Khān-e-Khānān's
(seal)

عبد الرحيم بن محمد بيرم - ۹۹۱

-2807.

Abū Ṭālib Khān Bahādur, 1199

ابو طالب خان بہادر ۱۱۹۹
-2976/2.

Abu'l-Baqā Arḥamu'd-Dīn-Maḥmūd, 1134-A.H

ابو البقا ارحم الدين محمود - ۱۱۳۴
-2536/2 and 2658/2.

— Faṭḥ Akramu'd-Dīn Muḥāmmad,

ابو الفتح اکرم الدين محمد
-2658/1.

— — Muḥammad Akramu'd-Dīn, 39

ابو الفتح محمد اکرم الدين - ۳۹
-2536/1.

— Makārim, 1291-A.H.

ابو المکارم عفا عنه - ۱۲۹۱
-2560.

*Ālam 'Alī,

عالم علی
-2893.

*Alī Ibni'l-Ḥusain, 1220

علی ابن الحسين - ۱۲۲۰
-2780.

J

ملكه مملوك البيت النبوي جعفر بن جلال الساهي الرضوي
J'afar-a'r-Ridwi. -658.

M

محمد باقر - ۱۲۰۵
Muhammad Bāqir, 1205. -2866/1. and 2866/2.

اللهم اجعلني فاضل حامد
— Fāḍil b. a'sh-Shaikh Hāmid. -2434/3.

محمد حسين مرید عالمگیر بادشاہ - ۱۰۹۹
— Husain, 1099-A.H -2721.

محمد جعفر بن مرزا محمد طاهر خان
— J'afar b. Mirza Muhāmmid Tāhir Khān, -2889.

محترم خان - ۱۱۴۹
Muhtaram Khān, 1149-A.H -2724/1

معین الملك - ۱۲۰۵
Mu'inu'l-Mulk, 1205. -2724/2.

مؤمن الدوله درگاہ قلی خان ۱۴ صفر ۱۱۷۲ هجری
M'utamanu'd-Daulah Dargah Qulī Khān, 17th October, 1758. -2873.

S

عبدالراجی سلیمان
Sulaimān b. Muhammad Kāzim, -2990.

ولعلی الاعلی
Sulṭān Mnhammad Quṭb Shāh, (Quṭb Shāhī King of Golconda) -2376.

Z

ظفر علی بیگ
Zafar 'Alī Baig, -2663.

INDEX VI

(Autographs and Seals with Names
and Dates found with them)

Islamic Theology

Volume VII

(Persian MSS)

(a) *Autographs*

B

Bahāu'd-Dīn 'Āmilī, 25 Shawwāl, 1027/12 September, 1918. -2592/1.

بهره مند خان

Bahrahmand Khān,

-2638.

بنده علی رضوی - ۱۳۱۹

Banda 'Alī Ridwī, 1319.

-2988.

D

درگاه قلی - ۱۱۷۲ھ

Dargāh Qulī, 1172-A.H.

2516.

ایام نظامت خجسته بنیاد... درگاه قلی - ۱۱۷۳

— — 1173-A.H. (When he was Governor of Aurangābād)-2677.

H

حیدر یار خان - ۱۰۸۳ھ

Haidar Yār Khān, 10 Rabī' I, 1083-A.H.

-2581.

I

Ibn Khātūn, (Signature on 353. f.)

-2593/2.

S

Shīrāz, Irān

[Cop., 1076/1666]-2870.

Siyālkot, Pakistān

[Cop., 1105/1694]-2611.

Sūrat, Gujarāt

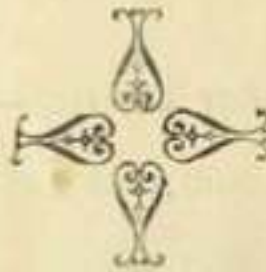
[Cop., 1172/1759]-2663.

[Cop., 1124/1712]-2679.

[Cop., 1203/1788]-2772.

Ẓafarābād

[Cop., 1265/1849]-2698.



Muḥammadnūr Fort

[Cop., 1068/1658]-2722/2.

Multān, Pākistān

[Cop., 1062/1652]-2604.

[Cop., 1147/1734]-2991.

Mungipatan

[Cop., 1108/1697]-2885.

Murshidābād, Utter Pardesh

[Cop., 1267/1851]-2631.

[Cop., 1227/1812]-2777.

[Cop., 1227/1812]-2915.

Mylāpūr

[Cop., 1185/1771]-2874.

N

Nellore

[Cop., 1167/1754]-2808.

P

Pangal, Maḥbūbnagar District—Andhrā Pradesh

(Āṣif Jāh II's camp for 2nd Mysore war).

[Cop., 1206/1792]-2414 and 2421.

Port of Pattan, Seringapatan, Karnātaka State

[Cop., 1209/1794]-2838.

R

Rauḍa, Khuldābād, Mahārāshtra

[Cop., 1193/1779]-2819.

Iṣfahān

[Cop., 1090/1679]-2474.

J

Jahānābād

[Cop., 1051/1641]-2407.

[Cop., 1148/1736]-2723.

Jahāngir Nagar, Dacca, Bangladesh

[Cop., 1086/1675]-2412.

K

Kalyān

[Cop., 1014/1683]-2725.

Kashmir

[Cop., 1057/1647]-2491.

Karbalā, Irāq

[Cop., 1206/1792]-2891.

Kirmān, Irān

[Cop., 1074/1664]-2579.

L

Lukhnow, Utter Pradesh

[Cop., 1225/1810]-2634.

[Cop., 1249/1734]-2636.

M

Madina, Sa'ūdī 'Arabīa

[Cop., 1123/1711]-2413.

Madras, Tāmil Nādū

[Cop., 1242/1827]-2609.

Māhūr, Berār, Madhya Pradesh

[Cop., 1135/1723]-1939.

Makka Saūdi 'Arabīa

[Cop., 1001/1593]-2711.

[Cop., 1008/1600]-2502.
 [Cop., 1272/1856]-2505.
 [Cop., 1261/1845]-2517.
 [Cop., 1290/1873]-2562.
 [Cop., 1027/1618]-2576.
 [Cop., 1125/1713]-2607.
 [Cop., 1137/1724]-2629.
 [Cop., 1214/1799]-2645.
 [Cop., 1254/1838]-2648.
 [Cop., 1291/1875]-2649.
 [Cop., 1281/1864]-2699.
 [Cop., 1029/2620]-2714.
 [Cop., 1242/1827]-2738.
 [Cop., 1253/1837]-2790.
 [Cop., 1280/1863]-2825.
 [Cop., 1280/1864]-2826.
 [Cop., 1037/1628]-2851.
 [Cop., 1034/1625]-2855.
 [Cop., 1195/1781]-2858.
 [Cop., 1180/1766]-2864.
 [Cop., 1238/1823]-2882.
 [Cop., 1084/1674]-2883.
 [Cop., 1287/1870]-2928.
 [Cop., 1058/1648]-2968.
 [Cop., 1293/1877]-3007.
 [Cop., 1245/1829]-3020.

I

Ilahābād

[Cop., 1183/1769]-2582.

Bidar Fort

[Cop., 1207/1793]-2865.

[Cop., 1082/1672]-2873.

Bijāpūr, Mahārāshtra

[Cop., 1131/1719]-2467.

[Cop., 1088/1677]-2572.

[Cop., 989/1581]-2710.

Burhānpūr

[Cop., 1097/1686]-2497.

[Cop., 1050/1641]-2513.

[Cop., 1036/1627]-2522.

[Cop., late xii/xviii]-2655.

[Cop., 1033/1624]-2686.

C

Chinnāpatan, Madras, Tāmil Nādū

[Cop., 1193/1779]-2559.

D

Daryāpūr

[Cop., 1263/1847]-2715.

[Cop., 1267/1851]-2793.

Daulatābād Fort, Mahārāshtra

[Cop., 1091/1610]-2438.

G

Gulberga, Karnātak State

[Cop., 1090/1679]-2963.

H

Hyderābād—Deccan, Andhrā Pradesh

[Cop., 1321/1903]-2417, 2469 and 2472.

INDEX V

Places of Transcription

Islamic Theology

Volume VII

(Persian Manuscripts)

A

Aḥmadnagar, Mahārāshtra

[Cop., 1259/1843]-2693.

Ajmer, Rajasthān

[Cop., 1111/1699]-2754.

Akbarābād

[Cop., 1235/1820]-2848.

Aurangābād, Mahārāshtra

[Cop., 1141/1728]-2608.

[Cop., End of xii/xviii]-2674.

[Cop., 1122/1710]-2834.

[Cop., 1065/1654]-2949.

‘Aẓīmābād, Patna

[Cop., 1122/1710]-2683.

B

Belasore Fort, Orissa

[Cop., 1153/1740]-2993.

Bhopāl, Madhya Pradesh

[Cop., late xiii/xix century]-2432.

2816, 2829, 2830, 2852, 2853, 2854, 2875, 2902, 2907,
2908, 2941, 2942, 2972, 2982, 2985 and 2989.

XII/XVIII

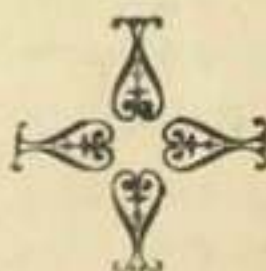
- Mid :- — 2510, 2515, 2539, 2639 2729, 2730, 2731, 2751, 2821,
2890, and 2932.
- Late :- — 2402, 2403, 2408, 2409, /I and II, 2418, 2420, 2434,
2483, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2504, 2524,
2530, 2538, 2541, 2548, 2573, 2580, 2585, 2590, 2622,
2623, 2630, 2640, 2641, 2643, 2644, 2653, 2662, 2665,
2677, 2681, 2690, 2691, 2692, 2703, 2717, 2718, 2720,
2732, 2738, 2745, 2757, 2769, 2805, 2810, 2811, 2814,
2820, 2831 2844, 2879, 2880, 2886, 2887, 2893, 2894,
2897, 2899, 2903, 2916, 2933, 2934, 2935, 2936, 2952,
2957, 2961, 2962, 2974, 2978, 2979, 2980, 2992 and
3017.

XIII/XIX

- Early :- — 2410, 2525, 2563, 2586, 2587, 2600, 2613, 2617, 2624,
2654, 2666, 2704, 2709, 2735, 2774, 2775, 2776, 2783,
2785, 2786, 2789, 2801, 2832, 2833, 2866, 2867, 2881,
2888, 2937, 2944, 2973, 2975, 2981, 2986, 2988, 2999
and 3026.
- Mid :- — 2423, 2689, 2719, 2720, 2739, 2749, 2787, 2791, 2792,
2797, 2822, 2926, 2927, 2964, 2997, 3004, 3006 and
3009.
- Late :- — 2404, 2424, 2432, 2471, 2473, 2499, 2550, 2553, 2560,
2561, 2621, 2650, 2684, 2695, 2696, 2701, 2702, 2705,
2706, 2780, 2784, 2786, 2794, 2795, 2806, 2823, 2824,
2938, 2955, 2956, 2965, 2994, 3000, 3001, 3005, 3010,
3011, 3021, 3023, 3026, 3027 and 3028.

XIV/XX

- Early :- — 2777, 2800, 2960, 3015 and 3024.



| | |
|---------------------------------|----------------------------------|
| 1292/1875 | — 2931. |
| 22 Jumāda I, 1292/26 June, 1875 | — 2651. |
| 29 Dhīḥajja, 1293/15 Jan., 1877 | — 3007. |
| 25 Muḥarram, 1298/28 Dec, 1880 | — 2861. |
| 26 Rajab, 1298/27 June, 1881 | — 2990. |
| 8 Ramaḍān, 1302/27 June, 1881 | — 3014. |
| 10 Ramaḍān, 1302/23 June, 1885 | — 3013. |
| 17 Dhīq'ada, 1306/15 July, 1889 | — 3012. |
| 1321/1903 | — 2417, 2469/1, 2469/2 and 2472. |
| 1 Jumāda I, 1324/23 June, 1906 | — 2518. |
| 1335/1917 | — 2520. |

(b) *Undated Manuscripts*

VIII/XIV

Late :- — 2425.

IX/XV

Late :- — 2426, 2428 and 2433.

X/XVI

Early :- — 2442, 2526 and 2676.

Late :- — 2429, 2436, 2441, 2591 and 2671.

XI/XVII

Early :- — 2431, 2437, 2440, 2443, 2492, 2519, 2521, 2529, 2567, 2578, 2647, 2692, 2846 and 2849.

Mid :- — 2492, 2500, 2554, 2555, 2593, 2602 and 2614.

Late :- — 2466, 2476, 2484, 2493, 2495, 2503, 2536, 2537, 2569, 2655, 2658, 2659, 2687, 2741, 2727, 2734, 2744, 2748, 2750, 2753, 2809, 2828, 2856, 2860, 2862, 2868, 2869, 2871, 2876, 2900, 2901, 2939, 2940, 2948, 2950, 2954, 2969, 2970, 2971, 2976, 2983, 3016 and 3029.

XII/XVIII

Early :- — 2406, 2413, 2468, 2477, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2506, 2534, 2539, 2544, 2545, 2546, 2547, 2551, 2557, 2568, 2574, 2581, 2597, 2615, 2626, 2632, 2637, 2638, 2656, 2664, 2669, 2724, 2740, 2743, 2759, 2813,

| | |
|-----------------------------------|---------|
| 21 Shawwāl, 1265/9 Sept., 1849 | — 2698. |
| 1266/1850 | — 3008. |
| 26 Rabi' II, 1266/11 March, 1850 | — 2807. |
| 11 Jumāda II, 1266/24 April, 1850 | — 2924. |
| 24 Rabi' I 1267/27 Jan., 1851 | — 2793. |
| 11 Şafar, 1267/16 Dec., 1850 | — 2925. |
| 1268/1852 | — 2946. |
| 2 Jumāda I, 1270/31 Jan., 1854 | — 2803. |
| 25 Jumāda I, 1271/15 March, 1855 | — 2600. |
| 2 Sh'abān, 1271/20 April, 1855 | — 2998. |
| Rabi' II, 1272/Dec., 1855 | — 2509. |
| 1272/1856 | — 2799. |
| 3 Dhīḥajja, 1272/5 Aug., 1856 | — 2505. |
| 27 Sh'bān, 1273/22 April, 1857 | — 2796. |
| 1277/1860 | — 2919. |
| Rabi' II, 1278/Oct., 1861 | — 2930. |
| 10 Rajab, 1280/21 Dec., 1863 | — 2825. |
| 16 Shawwāl, 1280/25 March, 1864 | — 2826. |
| Rabi' I, 1281/Aug., 1864 | — 2699. |
| 6 Muḥarram, 1282/June' 1865 | — 2531. |
| 1284/1867 | — 2470. |
| 26 Rabi' II, 1284/25 Aug., 1867 | — 2700. |
| Jumāda I, 1285/Aug., 1868 | — 2827. |
| 13 Rajab, 1287/9 Oct., 1870 | — 2928. |
| Muḥarrum, 1290/March, 1873 | — 2652. |
| Early Şafar, 1290/April, 1873 | — 2562. |
| 6 Şafar, 1291/25 March, 1874 | — 2642. |
| 27 Dhīq'ada, 1291/ 5 Jan., 1875 | — 2649. |

| | |
|--|---------|
| 12 Rabi' II, 1242/13 Nov., 1826 | — 2760. |
| 10 Rajab, 1242/7 Feb., 1827 | — 2646. |
| 7 Rabi' I, 1242/9 Oct., 1826 | — 2416. |
| 1 Sh'abân, 1242/28 Feb., 1826 | — 2609. |
| 14 Shawwâl, 1242/24 May, 1827 | — 2738. |
| 27 Shawwâl 1242/24 May, 1827 | — 2798. |
| 30 Rajab, 1244/5 Feb., 1829 | — 2635. |
| 8 Şafar, 1245/9 Aug., 1829 | — 3020. |
| 5 Rabi' I, 1245/4 Sept., 1829 | — 2921. |
| 1245/1830 | — 2781. |
| 1 Shawwâl, 1246/15 March, 1831 | — 2770. |
| 22 Muḥarram, 1247/3rd July, 1831 | — 2697. |
| 5 Rabi' II, 1248/1 Sept., 1832 | — 2714. |
| 8 <u>Dh</u> iq'adah, 1249/19 March, 1834 | — 2636. |
| Rabi' II, 1249/Aug., 1833 | — 3002. |
| 1251/1835 | — 2922. |
| 6 Jumâda II, 1252/ 19 Aug., 1836 | — 2746. |
| 12 Şafar, 1253/18 May, 1837 | — 2712. |
| 12 Rajab, 1253/12 Oct., 1837 | — 2790. |
| Sh'abân, 1254/Nov., 1838 | — 2910. |
| 1 Rabi' II, 1254/24 June, 1838 | — 2648. |
| End of Rabi' II, 1257/June, 1841 | — 2945. |
| 1st Ramaḍân, 1258/6 Oct., 1842 | — 2610. |
| 21 Şafar, 1259/23 March, 1843 | — 2693. |
| 8 Ramaḍân, 1261/10 Sept., 1845 | — 2517. |
| 1262/1846 | — 2549. |
| 12 Rabi' I, 1263/28 Feb., 1847 | — 2715. |
| 1264/1848 | — 2923. |

| | |
|---|---------|
| 13 Rajab, 1207/24 Feb., 1793 | — 2865. |
| 25 Rabī' II, 1208/30 Nov., 1793 | — 2898. |
| 1208/1794 | — 3018. |
| 11 Aḥmadi, 1223 (Maulūd-e-Muḥammad, Tippū's Innovation) | |
| i.e. 11 Muḥarram, 1209/8 Aug., 1794 | — 2838. |
| 7 Ṣafar, 1210/23 Aug., 1795 | — 2767. |
| 14 Ṣafar, 1210/30 Aug., 1795 | — 2812. |
| 14 Rabī' I, 1213/26 Aug., 1798 | — 2878. |
| 1214/1799 | — 2645. |
| 6 Muḥarram 1214/10 June, 1799 | — 2967. |
| 1218/1803 | — 2917. |
| 1 Rabī' II, 1218/21 July, 1803 | — 2773. |
| 22 Rabī' II, 1225/27 May, 1810 | — 2634. |
| 26 Ramaḍān' 1225/24 Oct., 1810 | — 2996. |
| 15 Ramaḍān, 1227/22 Sept., 1812 | — 2777. |
| 1 Muḥarram, 1229/24 Dec., 1812 | — 2761. |
| 6 Jumāda II, 1229/26 May, 1814 | — 2747. |
| 1230/1815 | — 2778. |
| 6 Rajab, 1231/2 June, 1816 | — 2779. |
| 9 Sh'abān, 1231/8 July, 1816 | — 2713. |
| 1232/1817 | — 2918. |
| 1233/1818 | — 2782. |
| 12 Jumāda II, 1234/8 April, 1819 | — 2920. |
| 16 Dhīḥajja, 1235/24 Sept., 1820 | — 2848. |
| 24 Dhīq'ada, 1238/2 Aug., 1823 | — 2882. |
| 2 Dhīḥajja, 1240/21 Jan., 1824 | — 2765. |
| 1240/1825 | — 2415. |
| 10 Dhīḥajja, 1240/26 July, 1825 | — 3003. |
| 19 Jumāda I, 1241/30 Dec., 1825 | — 2667. |

| | |
|--|---------|
| 11 Rajab, 1181/6 Dec., 1767 | — 2920. |
| Jumāda II, 1182/Oct., 1768 | — 2909. |
| 17 Rabī' I, 1183/22 July, 1769 | — 2582. |
| 2 Jumāda II, 1185/12 Sept., 1771 | — 2874. |
| 2 Sh'abān, 1189/28 Sept., 1775 | — 2583. |
| 18 Dhīḥajja 1190/28 Jan., 1777 | — 2627. |
| 18 Rajab, 1192/12 Aug., 1778 | — 2896. |
| 1193/1779 | — 2584. |
| 22 Muḥarram 1193/9 Feb., 1779 | — 2977. |
| 12 Jumāda I, 1193/28 May, 1779 | — 2818. |
| 16 Jumāda I, 1193/1 June, 1779 | — 2819. |
| 9 Dhīḥajja, 1193/18 Dec., 1779 | — 2559. |
| 23 Ṣafar, 1194/29 Feb., 1780 | — 2951. |
| 25 Rabī' I, 1194/31 March, 1780 | — 2984. |
| 1 Jumāda I, 1195/25 May, 1781 | — 2858. |
| 15 Shawwāl (25th Regnal year)=1195/11 Oct., 1781 | — 2958. |
| 3 Rabī' I, 1196/16 Feb., 1782 | — 2995. |
| 14 Shawwāl, 1196/22 Sept., 1782 | — 2552. |
| 11 Dhīq'ada, 1196/18 Oct., 1782 | — 2914. |
| 12 Dhīq'ada, 1197/9 Oct., 1783 | — 2736. |
| 25 Rabī' I, 1203/24 Dec., 1788 | — 2772. |
| 1203/1789 | — 2589. |
| 11 Ṣafar, 1205/20 Oct., 1790 | — 2733. |
| 9 Rajab, 1205/14 March, 1791 | — 2619. |
| 1205/1791 | — 2943. |
| 20 Jumāda II, 1206/14 Feb., 1792 | — 2891. |
| 2 Rajab, 1206/14 Feb., 1792 | — 2421. |
| 11 Rajab, 1206/5 March, 1792 | — 2414. |

| | |
|--|--------------------------------|
| 4 Rabi' I, (3 Julūs Muḥammad Shāhī) = 1134/12 Dec., 1721 | — 2683. |
| 1135/1723 | — 2939. |
| 19 Rabi' I, 1137/15 Nov., 1724 | — 2629. |
| 4 Shawwāl, 1140/3 May, 1728 | — 2895. |
| 4 Dhīq'ada, 1140/2 June, 1728 | — 2906. |
| 3 Rabi' II, 1141/26 Oct., 1728 | — 2608. |
| 9 Ramaḍān, 1144/24 Feb., 1732 | — 2599. |
| 1147/1734 | — 2991. |
| 27 Dhīḥajja, 1148/27 April, 1736 | — 2723. |
| 19 Muḥarram, 1151/28 April, 1738 | — 2837. |
| End of Rabi' II, 1151/ Beg., of Aug., 1738 | — 2762. |
| 20 Rabi' I, 1152/16 June, 1739 | — 2817. |
| 1153/1740 | — 2993. |
| 13 Rabi' I, 1155/7 May, 1742 | — 2685. |
| 28 Jumāda II, 1157/28 July, 1744 | — 2435. |
| 23 Ramaḍān, 1158/8 Oct., 1745 | — 2494. |
| 27 Ṣafar (29 Muḥammad Shāhī) = 1160/30 Jan., 1747 | — 2588. |
| 21 Dhīq'ada, 1165/19 Sept., 1752 | — 2694. |
| 27 Sh'abān, 1167/19 June, 1754 | — 2808. |
| 1170/1757 | — 2575. |
| 13 Ramaḍān, 1171/21 May, 1758 | — 2688. |
| 7 Rabi' II, 1172/8 Dec., 1758 | — 2633. |
| 1172/1759 | — 2855/(b) (Margins) and 2763. |
| 21 Jumāda II, 1172/19 Feb., 1759 | — 2663. |
| 25 Muḥarram, 1174/6 Sept., 1760 | — 2766. |
| Rajab, 1176/Jan., 1763 | — 2558. |
| 15 Sh'abān, 1178/7 Feb., 1765 | — 2670. |
| 30 Rabi' II, 1180/5 Oct., 1766 | — 2912. |
| 15 Jumāda II, 1180/18 Nov., 1766 | — 2864. |

| | |
|--|---------|
| Jumāda II, 1104/Feb., 1693 | — 2612. |
| Rajab, 1104/March, 1693 | — 2763. |
| 15 Şafar, 1104/16 Oct., 1692 | — 2878. |
| 26 Jumāda I, 1105/13 Jan., 1694 | — 2611. |
| 9 Şafar, 1106/19 Sept., 1694 | — 2556. |
| 17 Dhiḥajjah, 1108/27 June, 1697 | — 2885. |
| 41 Julūs ('Ālamgīri)=1109/1698 | — 2501. |
| 21 Jumāda II, (42 Julūs 'Ālamgīri)=1110/15 Dec., 1688 | — 2676. |
| 43 ('Ālamgīri)=1111/1699 | — 2754. |
| 22 Maḥarram, 1114/7 June, 1702 | — 2741. |
| End of Şafar, 1114/Early July* 1702 | — 2598. |
| 29 Muḥarram, 1115/14 May, 1703 | — 2863. |
| 1116/1704 | — 2904. |
| Muḥarram, 1118/April 1706 | — 2742. |
| 29 Jumāda I, (2 Julūs probably of Shāh 'Ālam, Bahādur Shāh I) =1119/17 Aug., 1707 | — 2897. |
| Rajab 1122/Sept., 1709. | — 2905. |
| 1122/17 | — 2834. |
| 19 Sh'abān, 1122/2nd. Oct., 1710 | — 2570. |
| 12 Ramḍān, 1122/24 Oct., 1710 | — 2836. |
| 2 Rabī' I, 1124/30 March, 1712 | — 2679. |
| 1125/1713 | — 2607. |
| 22 Jumāda II, 1125/5 July, 1713 | — 2802. |
| 14 Rabī' II, 1126/18 April, 1714 | — 2728. |
| Rabī' I, 1127/March, 1715 | — 2542. |
| Ramaḍān, 1128/Aug., 1716 | — 2752. |
| 17 Muḥarram, 1129/24 Dec., 1716 | — 2764. |
| 8 Rajab, 1131/16 May, 1719 | — 2467. |
| 1133/1721 | — 2756. |

| | |
|--|----------------------|
| Dhīq'adah, 1086/Jan., 1676 | — 2595. |
| 3 Rabi' I, 1088/6 May, 1677 | — 2572. |
| Muḥarram. 1089/ Feb., 1678 | — 2422. |
| 27 Shāb'an, 1089/4 Oct., 1678 | — 2533. |
| 21 Muḥarram, 1089/4 April, 1678 | — 2843. |
| 5 Rabi' II, 1089/17 May, 1678 | — 2889. |
| 2 Rabi' II, 1090/3 April, 1679 | — 2963. |
| 23 Shawwāl, 1090/17 Nov., 1679 | — 2474. |
| 1091/1680 | — 2540. |
| 19 Rabi', II, 1091/1 July, 1680 | — 2438. |
| Shawwāl, 1091/Oct., 1680 | — 2841. |
| 22 Shawwāl, 1092/25 Oct., 1681 | — 2628. |
| 12 Dhīq'ada, 1093/Nov., 1682 | — 2616. |
| 14 Jumāda I, (27 Julūs) 1094/1 May, 1683 | — 2478 and 2482. |
| Rajjab 1094/June, 1683 | — 2625. |
| 2 Rajjab, 1094/17. June 1683 | — 2708. |
| 29 Ramaḍān, 1094/11 Sept., 1683 | — 2725. |
| 1095/1684 | — 2419/1 and 2419/2. |
| 20 Jumāda II, (27 Julūs 'Ālamgiri) 1095/25 May, 1684 | — 2527. |
| 4 Rajab, 1095/7 June, 1684 | — 2498. |
| 24 Šafar, 1096/20 Jan., 1685 | — 2668. |
| 1097/1687 | — 2465. |
| 7 Rabi' I, 1097/22 Jan, 1686 | — 2657. |
| 26 Šh'abān, 1097/7 Aug., 1686 | — 2707. |
| 11 Ramaḍān (Julūs 'Ālamgiri) = 1097/22 July, 1686 | — 2497. |
| 1098/1686 | — 2686. |
| 30 Rajab, 1099/21 May, 1688 | — 2596. |
| 22 Rabi', II 1100/4 Jan., 1689 | — 2884. |
| 4 Jumāda II, 1103/12 Feb., 1692 | — 2523. |

| | |
|---|------------|
| 24 Şafar, 1066/13 Dec., 1655 | — 2660. |
| 12 Ramaḍān, 1066/24 June, 1656 | — 2960. |
| 2 Rabī'-I, 1067/10 Nov., 1656 | — 2661. |
| 1068/1658 | — 2722 /2. |
| End of Jumāda-II, 1073/end of January, 1663 | — 2877. |
| 1073/1664 | — 2435. |
| Rajab, 1074/ January, 1664 | — 2579. |
| 1 Jumāda-II, 1075/10 Dec., 1664 | — 2523. |
| 17 Dhīq'ada, 1075/22 May, 1665 | — 2618. |
| 4 Dhiḥajjah, 1076/28 March 1666. | — 2464. |
| Dhīq'adah, 1076/ May, 1666 | — 2870. |
| 13 Rabī'-I, 1077/3, Sept., 1666 | — 2507. |
| 2 Ramaḍān, 1078/5 Feb., 1668 | — 2516. |
| Jumāda-I, 1079/Oct., 1668 | — 2673. |
| 5 Rajab, 1079/29 Nov., 1668 | — 2883. |
| 16 Rajab, 1079/10 Dec., 1668 | — 2411. |
| 1081/1670 | — 2804. |
| 25 Dhīq'ada, 1082/14 March, 1672 | — 2873. |
| Şafar, 1082/ June, 1671 | — 2835. |
| 1083/1672 | — 2475. |
| 5 Jumāda I, 1083/14 Aug., 1672 | — 2603. |
| 8 Sh'abān, 1083/19 Nov., 1672 | — 2571. |
| 17 Şafar, 1084 /21 May., 1673 | — 2496. |
| 9 Rabī,'I, 1084/14 June, 1673 | — 2605. |
| 1085/1674 | — 2511. |
| 2 Jumāda I, 1086/15 July, 1675 | — 2847. |
| 8 Jumāda I, 1086/21 July. 1675 | — 2412. |

| | |
|--|---------------|
| 17 <u>Dhīḥajja</u> , 1017/12 Feb., 1609 | — 2966. |
| Ramaḍān, 1019/Nov., 1610 | — 2566. |
| 1023/1614 | — 2857. |
| 1024/1615 | — 2592. |
| 4 Jamāda-II, 1024/21 June, 1615 | — 2606. |
| Shawwāl, 1027/20 Sept., 1618 | — 2576. |
| 30 <u>Dhīḥajjah</u> , 1029/15 Nov. 1620, | — 2716. |
| Rabī'-I, 1030/January, 1621 | — 2682. |
| <u>Dhīḥajjah</u> , 1033/Sept., 1624 | — 2686. |
| End of Jumāda-I, 1034/End of Feb., 1625 | — 2855/ (2). |
| 25 Rajjab, 1034/24 April, 1625 | — 2405. |
| Rajjab, 1036/March, 1627 | — 2522. |
| 29 Rajjab, 1037/25 March, 1628 | — 2851. |
| Ramaḍān, 1038/April, 1629 | — 2859. |
| End of 1044/Mid, 1635 | — 2543/ (i). |
| <u>Dhīq'adah</u> , 1045/April, 1636 | — 2463. |
| 25 Shawwāl, 1050/28 Jan., 1641 | — 2513. |
| 14, Ṣafar, 1051/15 May, 1641 | — 2407. |
| 1053/1643 | — 2543/ (ii). |
| 20 Shawwāl, 1053/22 Dec., 1643 | — 2722/1. |
| 15 Muḥarrum, 1057/10 Feb., 1647 | — 2508. |
| 1 Ramaḍān. 1057/20 Sept., 1647 | — 2491. |
| 6 <u>Dhīq'adah</u> , 1057/23 Nov., 1647 | — 2726. |
| 1058/1648 | — 2968. |
| 1 Ṣafar, 1058/16 Feb., 1648 | — 2755. |
| 14 Rabī'-II, 1062/15 March, 1652 | — 2815. |
| 21 Jumāda I, 1062/20 April, 1652 | — 2604. |
| 6 Muḥarram, 1065/6 Nov., 1654 | — 2949. |
| 9 Ramaḍān, 1065/3 July, 1655 | — 2953. |

INDEX IV

Dates of Transcription

Islamic Theology

Volume VII

(Persian Manuscripts)

| | |
|-------------------------------------|---------|
| <u>Dh</u> ilhajja, 603/9 July, 1207 | — 2427. |
| Mid Rajab, 764/ Beg., of May 1363 | — 2947. |
| <u>Dh</u> ilhajja. 867/ April, 1463 | — 2401. |
| 890/1485 | — 2565. |
| 25 Şafar, 918/12 May, 1512 | — 2564. |
| 13 Sh'abân, 949/28 Nov., 1542 | — 2430. |
| <u>Dh</u> ilhajjah, 960/Nov., 1553 | — 2675. |
| Muharrum, 966/Oct., 1558 | — 2839. |
| 26 Sh'abân, 970/30 April, 1566 | — 2840. |
| 20 Jamâda, 1, 977/31., Oct. 1569 | — 2514. |
| 985/1577 | — 2842. |
| 1 Rajab, 989/1 Aug., 1581 | — 2710. |
| 9 Shawwâl. 993/21, July, 1591 | — 2512. |
| Rabî'-1, 1000/Dec., 1591 | — 3025. |
| Rajjab, 1001/April, 1593 | — 2711. |
| 14 Ramaḍân, 1001/4 June, 1593 | — 2845. |
| 1003/1595 | — 2672. |
| 22 Rajjab, 1008/23 Jan, 1600 | — 2502. |
| 8 Jumâda 11, 1014/11 October, 1605 | — 2850. |

W

Wārith 'Alī : [Cop., 1306/1889]-3012.

Y

Yūsuf b. Ḥājī : [Cop., at the end of xi/xvii]-2658.

Z

Zainu'd-Dīn 'Alī a'sh-Shīrāzī b. Darwish Muḥammad : [Cop., early xi/xvii]-2519.

Zainu'l-'Ābidīn b. Ḥājī Muḥammad Bāqir'a'l-Abharī : [Cop., 1089/1678]-2889.

Sayyid Muḥammad Raḥīm'ud-Dīn : [Cop., 1291/1874]-2642.

— Muṣṭafā Ḥusainī : [Cop., 1242/1827]-2609.

— Saifu'd-Dīn 'Alī Khān : [Cop., 1195/1781]-2958.

Shāh 'Alī b. 'Imādu'd-Dīn a' sh-Shirā a'z-Zawwārī : [Cop., 977/1569]-2514.

— Ibrāhīm a'r-Riḍwī : [Cop., at the middle of xiii/xix]-2822.

— Muḥammad Makki : [Scribe. theol., and author Cop., 1030/1621]-

Shaikh Faiḍ Muḥammad : [Cop., 1160/1747]-2588.

— Ibrāhīm b. Shaikh Ismā'il of Kokan : [Cop., 1089/1678]-2533.

— Ismā'il b. Ilyās Qādrī : [Cop., 1134/1721]-2683.

— Karam 'Alī : [Cop., 1241/1823]-2667.

— Maḥmūd [Cop., 1053/1643]-2543.

— Muḥammad : [Cop., 1205/1790]-2733.

— Walīu'llah, Surnamed : Muḥammad Yūsuf and Shaikh 'Aẓmatu'llah:
[Cop., 1171/1758]-2688.

Shamsu'd-Dīn 'Alī : [Cop., 1189/1775]-2583.

Sharifu'd-Dīn Muḥammad : [Cop., at the end of xii/xviii]-2665.

Sher 'Alī : [Cop., 1086/1675]-2847.

— Muḥammad : (Cop., 1091/1680)-2540.

— — b. Muḥammad Ṣalāḥ b. Uṭhmān b. Manṣūr Quljīn : [Cop.,
1003/1595]-2672.

Shujā't Khān : [Cop., 1098/1686]-2680.

Ṣiddīq b. Muḥammad Ibrāhīm b. Muḥammad Ḥasan Ṣiddīqī : [Cop., 1124/
1712]-2679.

T

Tāhir a'l-Ḥusainī : [Cop., 1037/1628]-2851.

Taqī b. Muḥammad Ḥusain a'l-Muḥaḥhab a'l-Qāzwīnī : [Cop., 1093/1682]
-2616.

N

Nāji Miskīn : [Cop., 1014/1605]-2850.

Najmu'd-Dīn : [Cop., 1078/1668]-2516.

Nizām Aḥmad : [Cop., 1210/1795]-2812.

Nūru'd-Dīn Muḥammad Dhu'sh-Sharafain b. Muḥammad Mumīn a'sh-Sharīf
[Cop., 1074/1664]-2579.

P

Pīr Muḥammad Anṣārī of Karā Manikpūr : [Cop., 1062/1652]-2604.

Q

Qādir Qūlī : [Cop., 1172/1259]-2663.

Qanbar 'Alī : [Cop., 1196/1782]-2914.

Qāsim Khān : [Cop., 1261/1845]-2517.

R

Rābī'b. Naṣrūllah a'l-Husainī : [Cop., beg of xiii/xix]-2783.

Rafī' Muḥammad b. Dāniyāl b. Khwāja : [Cop., 1036/1627]-2522.

Raḥīm Bakḥsh : [Cop., 1193/1779]-2584.

Rajab 'Alī : [Cop., 1116/1704]-2940.

S

Sālār Muḥammad b. Pīr Muḥammad : [Cop., 1125/1713]-2802.

Sayyid 'Abdu'n-Nabī b. Mīr Maḥmūd Ṣafawī : [Cop., 1180/1766]-2864.

— Bahād'ur 'Alī Khān Naqwī : [Cop., 1263/1847]-2715.

— Gulām Mahdī : [Cop., 1251/1835]-2922.

— Ḥasan 'Alī Riḍwī : [Cop., 1252/1836]-2746.

— Hāshim : [Cop., 1254/1838]-2648.

— Muḥammad Pīrān : [Cop., 1290/1873]-2652.

Muḥammad Sa'īd b. Muḥammad Murād [Cop., early xii/xvii]-2439.

— — — Qāḍī u'l-Mulk Badra'd-Daulah a'l-Madrāsi : [Scribe comp., 1284/1867]-2700.

— Šālih a'l-Husainī b. Mīr 'Abdu'llāh Mushkīn Qalam : [celebrated calligrapher, son of Mīr 'Abdu'llāh Mushkīn Qalam Jahāngīr Shāhī d. in 1060/1650 Cop., Mid xi/xvii]-2554 and 2555.

— Šālih a'l b. Hājī Šādiq : [Cop., 1119/1707]-2897.

— Sharīf Aurangābādī : [Cop. early xii/xvii]-2574.

— — b. Makhdūm Jamāl : [Cop., 1103/1692]-2523.

— — — Muḥammad 'Alī a'l-Jurjāni : [Cop., 1057/1647]-2508.

— — — 'Alī : [Cop., 1158/1745]-2494/(ii).

— Taqī a't-Tehrānī : [Cop., 1088/1677]-2572.

— — b. Ghiyāthu'd-Dīn Muḥammad a'l-Quraishī a'l-Jūnābādī a'l-Khurāsānī ; [Cop., 1014/1683]-2725/1.

Mu'īnu'd-Dīn 'Alī b. Shaikh Muḥammad Husain Makkī ; [Cop., 1144/1732]-2599.

Mu'izz Ardastānī : [Scribe and Author, Cop., 1058/1648]-2968.

Mullā 'Abdu'l-Qādir : [Cop. 1062/1652]-2815.

— 'Alī Muḥammad b. Fath Muḥammad : [Scribe (son of Fath Muḥammad) Cop., at the end of the xii/xviii]-2662.

— Fath Muḥammad : [Scribe (father of 'Alī Muḥammad) Cop., 1109/1698]-2501.

— Muḥammad b. Muḥammad Kāzīm Husain Tālib : [Cop., 1084/1673] and [Cop., 1085/1674]-2496 and 2511.

— — b. Muḥammad Nagārī : [Cop., 1065/1655]-2953.

— — Yūsuf : [Cop., 1124/1713]-3019.

— — b. Mullā Muḥammad Brūjardī : [Cop., 1089/1678]-2843.

Murṭadā Husain : [Cop., 1248/1832]-2714.

Muẓaffar 'Alī b. Muḥammad Mahdī Khaṭīb b. Lāhijānī : [Cop., 1065/1654]-2949.

- Muḥammad Ḥusain b. Mullah 'Alī Shīrāzī : [Cop., 1053/1643]-2722/1.
- Ḥusain [Cop., 1126/1714]-2728.
 - Ḥusain [Mahājir Harawī—Surnamed Hashmatu'l-Ayālah : [Cop., 1335/1917]-2520.
 - Ibrāhīm, Surnamed : Mirzā Sayyid : [for Mirzā 'Muḥammad Yūsuf Cop., 1245/1830]-2781.
 - Ja'far : [Cop., for 'Alī Muḥammad in the beg of xii/xviii]-2875.
 - Kāzīm b. Mirzā Muḥammad 'Alī : [Cop., 1194/1780]-2951.
 - — — — — Hammī a'l-Iṣfahānī : [Cop., 1164/1693]-2763.
 - Mahdī : [Cop., 1205/1791]-2943.
 - Ma'sūm Lūlū Shīrāzī Qawm-e-Dhīlqadar : [Cop., at the end of xi/xvii]-2869.
 - Mu'min b. Mīr Ḥusain Tūnī : [Cop., 993/1591]-2512.
 - — — — — (better known as 'Arab Shīrāzī b. Sharfu'd-Dīn Ḥasan Shīrāzī) [Celebrated court Calligrapher of the Quṭb Shāhs of Golconda Cop., 1029/1620]-2716 (see also 'Arab Shīrāzī in "A" Cat., No. 2855).
 - Muqīm : [Cop., 1208/1793]-2898.
 - Nabī. b. Abū Turāb Ishāq : [Cop. 1066/1656]-2959.
 - — — — — b. Muḥammad Riḍa a'sh-Shīrāzī : [Cop., 1108/1697]-2885.
 - Qāsim 'Alī : [Cop., 1290/1874]-2765.
 - — — — — [Cop. 1291/1875]-2649.
 - — — — — [Cop., 1292/1875]-2651.
 - Raḥīm b. Ḥājī Rajab 'Alī : [Cop., 1192/1778]-2896.
 - Riḍā : [Cop., (for Nawwāb Mutahwar Khān) in 1141/1728]-2608.
 - — — — — Qā'inī : [Cop., 1058/1648]-2755.
 - Ṣādiq b. Qāḍī Zainu'l-'Ābidīn Astrābādī : [Cop., 1083/1672]-2603.
 - Ṣafī b. Ismā'il a'l-Mūsawī : [Cop., 1271/1855]-2601.

Muhammad 'Alī b. Muftī Ghulām Muhammad Sālār [Scribe, theol and Author flourished during the reign of Afdalū'd-Daulah Āṣif Jāh-V and Prime-ministership of Sālār Jung Mukhtārū'l-Mulk, Cop., 1280/1864]-2826.

- 'Alī Khān Bahādur: [Scribe, (collector Sālār Jung-III's great grandfather) Cop., 1242/1826]-2760.
- 'Abdu'llāh a'l-Husainī: [Cop., 1095/1684]-2498.
- Abdu'llāh a'l-Khurāsānī: [Cop. 1267/1850]-2925.
- Āqā b. Khwāja Shukru'llah Samnānī: [Cop., 1091/1680]-2841.
- 'Aṭā: [Cop., beg. of xiii/xix]-2981.
- 'Azīm b. 'Abdu'l-'Azīz: [Scribe (Author, Ibrāhīm b. Husain's pupil Cop., 1152/1739)-2817.
- 'Azīmu'd-Dīn a'l-Mūsawī a'l-Burhānpūrī: [Cop., 1181/1767]-2620.
- Bāqir: [Cop., 1272/1856]-2799.
- — [Cop., 1115/1703]-2863.
- — [Cop., 1122/1709]-2905.
- — a'l-Husainī a't-Talāsī: [Cop., (only a few folios) in 1234/1819]-2920.
- — Majlisī b. Muhammad Taqī a'l-Majlisī: [scribe, comp., and renowned theol., Cop., 1073/1663]-2877.
- — b. Muhammad Qulī-Turkmānī: [Cop., at the end of xii/xviii]-2886.
- Burhān: [Cop., 1206/1792]-2414.
- b. Hajar a'l-Fakh-Khār: [Cop., 1233/1818]-2782.
- b. Hājī Muhammad Qāsim: [Cop. 1151/1738]-2762.
- b. Hasan Jamāl Asirī: [Cop., 1104/1693]-2612.
- Darwīsh 'Alī a'l-Mashhadī: [Cop., 1114/1702]-2741.
- Dhulfiqār b. 'Alī b. Nūru'd-Dīn b. Muhibb b. 'Alī a'l-Āmirī a'n-Najadī: [Cop., 1086/1676]-2595.
- Ghauth: [Cop., 1209/1794]-2838.
- Hādī b. Mahdī: [Cop., 1128/1716]-2752.

Mīr Kamāl u'd-Dīn Ḥusain a'l-Mūsawī . [Scribe+Author, transcribed in 1172/1758]-2633.

— Mūhammad 'Alī b. Mīr Ḥasan : [Cop., 1266/1850]-2850.

— M'uīnu'd-Dīn : [Cop., 1270/1854]-2803.

— Qanbar 'Alī : [Cop., 1196/1782]-2995.

— Salmān, surnamed : Mīr Muḥammad Gilānī : [Cop., 1090/1679]-2963.

— Sayyid 'Alī Zawwār : [Cop., 1242/1827]-2798.

Mirza Abu'l-Qāsim a'l-Mūsawī A'sh-Shīrāzī : [Cop., 1302/1885]-301 and 3014.

— Asad b. a'l-Ḥusain Mashhadī : [Cop., 1229/1814]-2747.

— Darwish 'Alī Baig : [Cop., 1207/1793]-2865.

— Faḍal 'Alī : [Cop., 1258/1842]-2610.

— Fidā 'Alī Baig : [Cop., (for Sayyid 'Alī Ḥusain) in 1321/1903]-2469/1, 2469/2 and 2473.

— Jānī Baig : [Cop., 1097/1696]-2497.

— Mahdī : [Cop., late xiii/xix]-2432.

— Muḥammad : [Cop., 1278/1861]-2930.

— — Amān : [Cop., 1158/1745]-2494/(i).

— — b. Mirza 'Alī Naqī Mashhadī : [Cop., 1174/1760]-2766.

— Nūr 'Alī Baig (Mamūr Khān of Bijāpūr) : [Cop., 1293/1877]-3007.

— Salāmat 'Alī : [Cop., 1267/1851]-2793.

— Shahsawār Baig : [Cop., 1245/1829]-3020.

Muḥammad 'Abdu'llāh a'l-Bukhārī : [Cop., 1190/1777]-2627.

— Akbar, Surnamed : Muḥammad Aḥsan : [Cop., for Shāh 'Ālam-II, in 1183/1769]-2582.

— 'Alī 'Āshiq : [Scribe, theol., poet and comp., Cop., during the reign of Afḍal-u'd-Daulah, Āṣif Jāh V of Dakhan in 1280/1863]-2825.

Husain b. 'Alī a'l-Jurjānī : [Cop., 1099/1688]-2596.

— **Khān Ardabell** : [Cop., 1051/1641]-2407.

— — b. **Khuda Bakhsh** : [Cop., 1083/1872]-2475.

I

Ibn Muḥammad Hādī : [Cop., 1231/1816]-2779.

Ibrāhīm a'l-Makkī b. 'Abdu'r-Raḥmān a'sh-Shirāzi : [Cop., 1001/1593]-
2711.

'Ināyatu'llāh : [Cop., 1131/1719]-2467 [Cop., 1127/1715]-2542.

Illāh-Dīn : [Cop., xi/xvii]-2422.

'Isā b. Asad Qubād Mihrānī Tālish [Scribe, (grandson of Amīr Qubād)]
Cop., 987/1577]-2842.

'Izzat 'Alī **Khān** : [Cop., at the end of xiii/xix]-2523.

— u'llah : [Cop., 1148/1736]-2723.

J

Jamīl Baig : [Cop., 1213/1798]-2872.

Jān Muḥammad b. Naṣīru'd-Dīn : [Cop., 910/1505]-2532.

Jawāhir Qalam : [Cop., 1170/1757]-2575.

K

Khusraw b. Muḥammad Amīn : [Cop., early xi/xvii]-2431.

M

Malik Maḥmūd : [Cop., end of xii/xviii]-2640.

Mīr 'Abd'ur-Raḥīm b. Mullā Mīr Sayyid 'Alī Kābulī : [Cop., 1266/1850]-
2807.

— Abū Ja'far a'l-Mūsawī a'n-Nishāpūri : [Cop., 1180/1766]-1912.

— Abu'l-Qāsim Tabāṭāb'āi : [Cop., 1238/1823]-2882.

— Aḥmad 'Alī : [Cop., 1242/1827]-2738.

— **Ghauth** 'Alī 'Alawī : [Cop., 1246/1831]-2770.

— Ḥasan a'l-Mūsawī Surnamed : Shustarī : [Cop., 1272/1856]-2505.

- Fath 'Alī b. Ḥājī Ḥasan Tirmidhī : [Cop., 1230/1815]-2778.
 Fath Muḥammad : [Cop., 1066/1655]-2660.
 Fathu'llāh b. 'Umar a'l-Ḥāfiẓ a'sh Shīrwānī : (Cop., 867/1463)-2401.
 Fidā' Alī Baig : [Cop., (xiv/xx)]-2417.

G

- Ghiyāthu'd-Dīn Muḥammad Mashhadī : [Cop., 1057/1647]-2491.
 Ghulām 'Alī : [Cop., 1218/1803]-2773.
 — — a'l-Ḥusainī a'r-Ridwī a'n-Naqwī a'l-Kirmānī : entitled :
 Mumtāz 'Alī Khān Takhalluṣ Arshad [Scribe and Author
 cop., 1193/1779]-2819.
 — Imām : [Cop., for Sayyid Faḍal' 'Alī Khān (1267/1851)-2613.
 — Ismā'il : [Cop. 1105/1694]-2611.
 — Qādir : [Cop., 1262/1846]-2549.
 Gu'l-Muḥammad : [Cop., late xii/xviii]-2490.

H

- Ḥaidar : [Cop., 1084/1674]-2883.
 — 'Alī b. Shaikh Muḥammad [Cop., 1140/1728]-2906.
 — Ḥusain a'l-Husain : [Cop., 1298/1880]-2861.
 Ḥafīẓ Nūru'llāh : (Cop., [transcribed only the names of 14 Immaculate
 persons in the beginning of this work]-2554/(i).
 Ḥājī 'Alī Akbar a'l-Quddūsī a'l-Yazdī : [Cop., 1268/1852]-2946.
 — Darwish 'Alī Rauḍa Khwan : [Cop., 1197/1783]-2735.
 — Muḥammad Ridā Mashrab Jurbādqānī : (Cop., 1090/1679)-2474.
 — Sher'Alī : [Cop., 1203/1788]-2772.
 Ḥasan : Cop., 970/1466]-2840.
 — b. 'Abdu'l-Majīd a'l-Ḥusainī Wā'iz a'l-Isfahānī : [Cop., 1271/1855]
 -2998.
 — Kitābdār Khushnawīs Khānī : [Cop., 1024/1615]-2592.
 Hibbatu'llāh b. Muḥammad a'l-Khatīl : [Cop., 603/1207]-2427.

Afḍal a'l-Husainī a'r-Riḍwī : [Cop., beg xii/xviii]-2626.

— b. Ṣādiq a'r-Riḍwī : [Cop., 1114/1702]-2598.

Aḥmad 'Alī : [Cop., 1249 1833]-3002.

— 'Alī Ahrārī Muṣṭafābādī : [Cop., 1285/1868]-2827.

'Alāu'd-Dīn : [Cop., flourished during the reign of Muḥammad Shāh in
Mid xii/xviii]-2751.

'Alī b. 'Abdu'llāh Kulānī : [Cop., (only last folio)-1008/1600]-2502.

'Alī Naqī a'l-Mūsawī a'l-Karbalā'ī : [Cop., 1122/1710] 2834 and 2836.

'Alī Naqī b. Ibrāhīm Astrābādī : [Cop., at the end of xii/xviii]-2887.

'Alī Nawāz Khān : [Cop., 1214/1799]-2646.

Allāh Bakḥsh b. Dindār Khān : [Cop., 1155/1742]-2685.

'Arab Kātib Shīrāzī : [Celebrated calligrapher of Quṭb Shāhī court cop.
1034/1625]-2855. (See also Mīr Mu'min b. Sharfu'd-Dīn
Ḥasan Shīrāzī in Cat. No. 2716).

Ashraf Baig Khānī : [Cop., 1110/1698]-2678.

'Ashiq 'Alī Khān : [Cop., Author flourished during xiii/xix]-3006.

B

Bahrām : [Cop., 1257/1841]-2945.

Bande 'Alī Dakhnī : [Cop., 1253/1837]-2790.

Bāqir Majlisī : [Scribe, theol., comp., cop., 1094/1683]-2625.

Bībahā Jung Bahādur : [Scribe 1265/1849]-2698.

Bījñāth Kashmīrī : [Scribe (born in Delhi) cop., 1237/1822]-2892.

D

Dargāh 'Alī Khān Afghān Multānī : [Cop., 1091/1610]-2438.

F

Faḍal Khān : [Scribe and Author, cop., 1123/1711]-2413.

INDEX III

Names of Copyists
(Islamic Theology)
Volume VII
(Persian Manuscripts)

A

'Abdu'l-Bāqī a'sh-Sharīfa'z-Zawwārī : [Cop., 1135/1723]-2939.

— Ghaffār Lāhūrī : [Cop., 1100/1689]-2884.

'Abdu'llāh b. Muḥammad Jawāb b. 'Abdu'llāh b. Nūru'd-Dīn b. 'Ni'mat-u'llah a'l-Ḥusainī [Scribe, (translator's grandson) cop., 1210/1795]-2767.

— b. Ḥakīm b. Muḥammad Ṣādiq Lāhūrī : [Cop., 1094/1683]-2478 to 2484.

— Ilahdād (Ḥājī) : [Cop., 1075/1664]-2528.

'Abdu'l-Laṭīf : [Cop., calligrapher flourished during Sulṭān Muḥammad Quṭb Shāh's reign-1027/1618]-2576.

— Ma'ālī b. Shaikh 'Abdu'l-Ḥakīm of Bihār : [Cop., 1096/1685]-2668.

— Wāḥid b. Shamsu'd-Dīn a's-Ṣiddiqī : [Cop., 1097/1686]-2657.

'Abdu'r-Raḥmān b. Islām Khān : [Cop., 1111/1699]-2754.

'Abdu's-Ṣamad b. Ṣadru'd-Dīn 'Alī Naqī Shirāzī : [Cop., 764/1363]-2947.

'Ābid 'Alī Khān Bahādur : [Cop., (A descendent of Wālā Jāh) 1287/1870]-2928.

Abū Bakr b. Muḥammad Dā'ūd : [Cop., 1019/1610]-2566.

Zahru'r-Riyâd : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Muḥammad Ismā'il's Pp. and selections from Sayyid 'Alī Tabāṭabā'i's Riyāḍu'l-Masā'il]—2788.

Zīnātu'l-Hidāya : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Muḥammad Rafī' Nūrī's treatise on Shiite laws]—2777 and 2915.

— - 'Ibād : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Zaynu'l-'Abidīn a'l-Mazindarānī's selections from concerned works on the Subject]—2797.

— - Qārī : [Islamic theol., (Tajwīd)—Nuṣratt b. 'Umar's short treatise on correct recitation of Glorious Qur'ān]—2411.

Ziyārat Nāma : [Islamic theol., (Shiite prayers)—Anony. collection of prayers of the 12 Shiite Imāms]—2772/1.

• Zubdatu'l-'Aqā'id : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Anony. treatise on Ḥadrat 'Alī's right to succession and [miscellaneous notes]—2934.



Uṣūl-e-Dīn : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Anony, tract on principles of faith]-2711/6, 2736/2, 2737, 2738, 2739, 2740, 2772/4 and 2798/1.

— - — : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Muḥammad 'Ābid's tract]-2922.

— - — Manẓūm : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Anony. versified tract on principles of faith]-2798/3.

— - Fuṣūlu't-Tawḍīḥ : [Islamic theol., (Shiites)—Bāqir Majlisī's review upon a rare controversy on ṣūfī order in favour and against]-2987.

— - khamsa : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Anony. Rare treatise on the 5 principles of faith written by Sulṭān Muḥammad Quṭb Shāh of Golconda during 1020-1035/1612-1626]-2856.

W

Wājibāt-e-Namāz : [Islamic theol., (Shiite trad.)—Muḥammad Bāqir Sabzwāri's treatise on Namāz, comp., during Shāh 'Abbās Ṣafawī-II's reign 1052-1077/1642-1667]-2740.

Waqā'iu'l-Maṣāib : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Aṣlāḥī's treatise pertaining to Imām Ḥusain's martyrdom at Karbalā]-2902.

Wilādat-e-Ḥaḍrat 'Āliyāt : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Anony. incomplete work dealing with the lives of 14 Immaculates]-2944.

Y

Yāzdah Majlis : [Islamic theol., (Shiite trad.)—Anony. collection of trads. and legends in 11 chapters pertaining to the deaths of Holy Prophet, Imāms and Saints]-2589.

Z

Zād-e-A'zam : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Sayyid Muḥammad a'l-Mūsawī's tract on Imāms]-2926 and 2927.

- - Shāhī: [Islamic theol. (Shiite Trad.)—'Ināyatu'llah's collection of trads. dealing with Haḍrat 'Alī's attributes]-2591.
- - 'Aṭīyya-e-Illāhī: [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Zainu'd-Dīn 'Alī Qushjī's commentary on Tūsī's "Tajridu'l-'Aqā'id" comp. 1023/1614]-2857.
- - Sulaimānī: [Islamic theol., (Tajwīd)—Ḥasan a'l-Khādiima'l-Qarī's tract on Recitation of Glorious Qur'ān, dedicated to Shāh Sulaimān Ṣafawī]-2424/3.
- Tuḥfatu'l-Abrār: [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Ḥasan b. 'Alī a't-Ṭabarī's treatise or guide against the Sunnites pertaining to Haḍrat 'Alī's rights to Khilāfat and his Family's eminence comp. 670/1272]-2947 and 2948.
- - Ghara'ib: [Islamic theol., (Speeches and Sermons)—'Alī b. Ṭaifūra'l-Buṣṭāmī's Rare translation of Arabic work Masā'il-lī 'Abdillāh b. Salām, about a learned Jew's conversion to Islam]-2876.
- - Ḥusainī: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Muḥammad Bāqir Bihbahānī's treatise on the subject]-2772/2.
- - Khāqāniyyah: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Muḥammad Ḥasan's treatise dedicated to Faṭḥ 'Alī Shāh Qāchār]-2789.
- - Qur'ā: [Islamic theol., (Tajwīd) Ibn. Ibrāhima'l-Muṣṭafā a'l-Qārī's treatise on recitation of Glorious Qur'ān based on 'Āṣam's (a'l-Kūfī) reading comp. 1067/1652]-2409.
- - Waṣāya: [Islamic theol., (Trad)—Anony. collection of trad. pertaining to Admonitions of the Holy Prophet to Haḍrat 'Alī on several topics]-2647/1.
- - u's-Ṣalāt: [Islamic theol., (Sunnite Fiqh)—Ḥusain b. 'Alī a'l-Wāiḡ a'l-Kāshif's treatise on presenting blessings on Holy Prophet]-2811.

U

- 'Umdatul-Maqāṣid wa'l-Maṭālib: [Islamic theol., (Sunnite beliefs)—Muḥammad 'Alī 'Āshiq's autograph collection of notes and extracts from standard works comp. and transcribed for Sālār Jung in 1280/1863]-2825.

Tham a'r-e-Gulzār-e-Iymān: [Islamic theol., (Sunnite beliefs)—Faid's Rare collection of 40 trads. with Pp. and short notes in praise of Haḍrat 'Alī, Fāṭima, Hasan and Husai'n, comp. 1175 1761]-2558.

Thawābu'l-A'māl: [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Abū J'afar Muḥammad's collection of notes on religious practices that earn reward]2834/1.

— - — - wa 'Aqābu'l-A'māl: [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Abū J'afar Muḥammad's 2 short treatises about reward and punishments of religious practices]-2834.

The main work: (Iyḍah Laṭāfatu'l-Maqāl fi Tafsīli'l Jawāb: [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Rashīdu'd-Dīn Khān's work dealing with the refutation of Sunnite]-3004/2.

Tuḥfa-e-'Abbāsī: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Muḥammad Tāhir's treatise in form of questions and answers]-2858.

— - — - Āṣifiyyah: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Fakhr'ud-Dīn A'lwand (Muḥammad J'afar's) treatise on precepts of hunting and slaying animals]-2770.

— - — - Ithnā 'Ashariyyah: [Islamic theol., (Sunnite beliefs)—Hāfiz Ghulām Halīm's exposition of Shiite trads. comp., 1200/1786]-2994.

— - — - Husain Shāhī: [Islamic theol., (Sunnite Fiqh)—Asid 'Alī Quraishi's short treatise in form of Questions and answers]-2810.

— - — - Lāriyyah: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Abū Aḥmad Muḥammad a'n-Nishāpūrī's treatise]-2775.

— - — - Munqalibah: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Riyāḍu'l-Ḥasan's treatise in refutation of Shāh 'Abdu'l-'Aziz's Ithnā 'Ashariyyah comp., 1314/1895]-3015.

— - — - Nāṣiriyyah wa Fawāi'd-e-Ḥaidariyyah: [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Sayyid 'Alī's treatise on the Sunnite stigma on Mut'a, compiled at the instance of his Shiite Friends during Āṣif Jah-IV's reign during 1244-1273/1829-1857]-3009.

- Tarjumatu'l-'Uddatu'l-Ḥisni'l-Ḥasīn : [Islamic theol., (Prayers)—Anony.
Pp. of the abbreviated version of Ibn a'l-Jazarī's
Ḥisni'l-Ḥasīn]2534/1.
- Tarjuma-e-'Uyūn Akhbārī'r-Ridā : [Islamic theol., (Shiite trad.)—Muḥam-
mad Sāliḥ's P.p. of Al-Qummi's popular work. Transla-
ted in 1075/1664]-2611.
- Tarjumatu'l-Ḥaqāiq : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—anony. collection of
Qur'ānic verse and tradition in support of Ḥaḍrat 'Alī's
succession to Holy Prophet]-2966.
- - Hidāya fi Sharḥi'l-Bidāya : [Islamic theol., (Fiqh Hanafite)—
Ghulām Yaḥyā Khān's Pp. of Burhānu'd-Dīn 'Alī's
commentary on Bidāyatu'l-Mubtadi]-2649 to 2652.
- - J'afariyyah : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—'Alī b. 'Abdu'l-'Alī
a'l-Kurkī's Pp. of a treatise pertaining to namāz comp. in
917/1511]-2708/1.
- - Khawāṣ : [Islamic theol., (Tafsīr Shiite)—'Alī b. Ḥasan a'z-
Zawwārī's detailed commentary on the Glorious Qur'ān
comp. 946/1540]-2475 to 2477.
- - Manāqib : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—'Alī b. Ḥasan a'z-
Zawwārī's P.p of Bahāu'd-Dīn Ardbelī's Kashf'u'l-
Ghamma, deals with lives of and attributes of 14 Imma-
culates comp. 970/1466]-2840 and 2841.
- - Māthūrah : [Islamic theol., (Prayers)—Nūru'd-Dīn Muḥammad
a'l-Farūqī's Pp. of Ibn a'l-Jazarī's Ḥisnu'l-Ḥasīn]-2533.
- - Ṣalāt : [Islamic theol., (Prayers Shiite)—Muḥammad Bāqir
Majlisī's Pp. of Muḥsina'l-Kāshī's Arabic treatise on
Namāz, translated on 1099/1688]-2755 to 2758, 2763 and
2798/2.
- - Sharf'at : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Muḥsina'l-Kāshī's
short treatise dedicated to Shāh 'Abbās-II]-2875/3.
- - Ṭahārat : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Muḥsina'l-Kāshī's
treatise on cleanliness, written for his son, M'uīnu'd-Dīn
Aḥmad]-2175/4.
- Tark-e-Jūsh : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—'Alī Qulī's treatise on
Shiite claims for the right of Ḥaḍrat 'Alī's succession
and criticism of Ṣūfis]-3010.

- Tarjuma-e-Makārimu'l-Akhlāq: [Islamic theol., Shiite)—'Alī b. Ṭaifūra'l-Buṣṭāmī's pp. of the Arabic Makārimu'l-Akhlāq comp. 1061/1651]-2605.
- - - Miftāḥu'l-Falāḥ: [Islamic theol., Prayers (Shiite)—Jamālu'd-Dīn's pp. of Bahāu'd-Dīn 'Āmilī's Miftāḥu'l-Falāḥ]-2719 and 2720.
- - - Minhāju'l-Karāmah fi M'arifati'l-I'mmah: [Islamic theol., (Shiite) beliefs)—Ḥusainu'llah a'l-Ardabelī's pp. of Jamālu'd-Dīn Ḥillī's doctrine of Imāmat]-2842.
- - - Nahju'l-Balāghat: [Islamic theol., (Shiite Trad.)—Muḥammad Ṣālah's translation of Arabic sermons attributed to Ḥaḍrat 'Alī]-2573.
- - - — : [Islamic theol., (Shiite trad.)—Anony. translation of Arabic sermons attributed to Ḥaḍrat 'Alī]-2574 and 2575.
- - - Quṭb Shāhī: [Islamic theol., (Shiite Trad.)—Ibn Khātūn a'l-'Āmilī's translations of Bahāu'd-Dīn 'Āmilī's selection of 40 trads. in Arabic, trans. 1027/1618]-2591 and 2601.
- - - Sirāju'l-Iymān: [Islamic theol., (Fiqh Sunnite)—Shaikh Muḥammad Mahdī's pp. of Ḥafīẓ Aḥmad Khān's Sirāju'l-Iymān]-2823.
- - - Tabsīratu'l-Mut'allimin fi Ahkāmī'd Dīn: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Anony. pp. of a treatise attributed to Jamālu'd-Dīn Ḥillī]-2801/1.
- - - Tafsīr-e-Ṭabarī: (Part I and II): [Islamic theol., (Tafsīr)—Abū Bakr Muḥammad's earliest known commentary of Glorious Qur'ān based on Ṭabarī comp. during 350-365/961-976]-2425 and 2526 (Part I only).
- - - Taūḥīd-e-Mufaḍḍal: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Bāqir Majlisī's autograph Pp. and commentary on trad. pertaining to unity of God comp. 1094/1683]-2625 and 2627.
- - - — u'r-Riḍā: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Bāqir Majlisī's pp. of the sermons of the 8th Shiite Imām 'Alī b. Mūsī Riḍā]-2763/2.

- Chiha'l-Ḥadīḡ : [Islamic theol., (Shiite Trad.)—Pp. of a collection of 40 trads.]—2798/4.
- - Fiqhu'r-Riḡwī : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Muḥammad Shāh Qāḡī's Rare pp. of an Arabic work ascribed to Imām 'Alī b. Muṣī Riḡā. Translated by Mīr Mu'min Astrābādī by the the commands of Sulṡān Muḥammad Quṡb Shāh in 1029/1620]—2711.
- - Ḥadīḡ-e-'Uyūn Akḡbārī'r-Riḡā : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Bāqir Majlisī's pp. of Ḥadīrat 'Alī b. Mūsī Riḡā, based on Ibn. Babūya's famous work comp. 1078/1667]—2763/12.
- - Hadyatu'l-Mu'minīn : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—'Abdu'llah b. Nūru'd-Dīn's pp. of N'imatullah's Hadyatu'l-Mu'minīn comp. 1173/1759]—2767.
- - Iṡlāḡu'l-'Amal : [Islamic theol., Fiqh)—Ḥasan b. Muḥammad 'Alī Yazdī's pp. of Sayyid Muḥammad's Arabic work Iṡlāḡu'l-'Amal]—2782.
- - I'tiqādāt : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Muḥammad Mahdī a'r-Riḡwī's pp. of Ibn Babūyā's work]—2835.
- - Kanzu'd-Daḡāī'q : [Islamic theol., (Ḥanafīte Fiqh)—Naṡru'llah a'l-Kirmānī's pp. of Kanzu'd-Daḡāī'q of Ḥafīzu'-Dīn 'Abdullah]—2664 to 2666.
- - Kanzu'l-'Irfān fī Fiqhī'l-Qur'ān : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Sharfu'd-Dīn Abū 'Abdu'llah's pp. of Kanzu'l-'Irfān dealing with Shiite laws of Quranic Injunctions]—2753.
- - Kitāb-e-'Alī : [Islamic theol., (Shiite trad.)—pp. of the Sayings of Ḥadīrat 'Alī comp. 1095/1684]—2763/11.
- - Makārimu'l-Aḡhlāq (Maḡāsinu'l-Adab) : [Islamic theol.,—Mode of life of the Holy Prophet and Imāms (Shiite)—Naṡīru'd-Dīn Muḥammad's translation of Abu'n-Nāṡru'l-Ḥasan's Makārimu'l-Aḡhlāq translated 963/1556]—2703.
- - ————[Please refer (Makārimu'l-Karāī'm)]—2605.

Tanwīru'l-Manār : [Islamic theol., Fiqh (Sunnite)—'Abdu'l-'Alī's commentary on Nasafī's famous Arabic work, Manāru'l-Anwār on Hanafite Principles of Fiqh]-2667.

Taqwīmu'l-Muḥsinīn wa Aḥṣanu'l-Taqwīm: [Islamic theol., (Trad. Shiite)-ascribed to Muḥsina'l-Kāshī]-2645/2.

Tarāwatu'l-Latā'if fī Tarjumatu'l-Kitābi'l-Tarāif : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—'Alī b. Ḥasan-a'z-Zawwārī's pp. of Abu'l-Qāsim's Arabic work refuting the 4 Sunnite sects comp. 961/1554]-2959.

Targhibu's-Ṣalāt : [Islamic theol., (Fiqh Sunnite)—Anony. treatise based on trads. and famous works.]-2691 and 2692.

Tarjuma-e-Aḥādith-e Nabawī : [Islamic theol., (Trad. Sunnite)—Anony. collection of trads with pp.]-2563.

——— - Aḥādith-e-Qudsi : [Islamic theol., (Trad. Shiite)—Anony. collection of several trads with pp.]-2639.

——— - Anwāru'l-'Uqūl min Ash'āri Waṣī i'r-Rasūl : [Islamic theol., Shiite Trad.]-Anony. translation of an Arabic work, containing prose and poetry ascribed to Ḥaḍrat 'Alī, by Edited Quṭbu'd-Dīn a'r-Ramandī]-2564.

——— - Asāsu'l-Uṣūl : [Islamic theol., Shiite Fiqh—Ḥimāyat Ḥusain a'n-Niṣṣāpūrī's pp. of Sayyid Dildār 'Alī's Arabic work on principles of Shiite laws]-2780.

——— - Āyāti'l-Aḥkām : [Islamic theol., (Shiite Tafsīr)—Shāh Qāḍī a'l-Yazdī's commentary of first Sūrah of Glorious Qur'ān, comp. 1021/1612 for Sulṭān Muḥammad Quṭb Shāh of Golconda]-2517 and 2518.

——— - Bahru'l-Ansāb : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Sayyid Murtaḍā 'Alamu'l-Ḥudā's pp. of the work ascribed to Imām J'afar Ṣādiq and Imām Ḥasan 'Askari about the trials and tribulations inflicted upon Holy Prophet's family]-2838.

——— - Chiha'l-Ḥadīth : [Islamic theol., (Shiite trad.)-Ḥakīm Ṣūfi's pp. of 40 Shiite trads comp. 1039/1630]-2602.

Tafsīr-e-Ḥusainī: [Please refer Mawāhibb-e-'Aliyyah in "M"]-2442 to 2462.

— - Kalām-e-Taūḥīd: [Islamic theol., (Sūfism)—Dawwānī's short treatise on unity of God]-2939/7.

— - Sūra-e-Yūsuf: (Islamic theol., (Tafsīr)—Mu'in'l-Miskīn's commentary on Chapter xii (Sūra-e-Yūsuf)-2435 to 2439.

— - Y'aqūb Chrahī: [Islamic theol., (Tafsīr)—Y'aqūb Chrahī's commentary of last 2 parts of the Glorious Qur'ān]-2429 to 2432.

— - Zāhidī: [Islamic theol., (Tafsīr)—Zahid's commentary of Glorious Qur'ān]-2428.

— - u'l-Qur'ān: [Islamic theol., (Tafsīr)—Sayyid Murtaḍā's commentary of Glorious Qur'ān]-2519.

Taisīru'l-Aḥkām: [Islamic theol., (Sunnite Fiqh)—Shihāb Shams 'Umar's short treatise on Glorious Qur'ān and trad.]-2687 to 2689.

— — — Qārī fī Sharḥ Ṣaḥīḥi'l-Bukhārī: [Islamic theol., (Trad.)—Nūru'l-Ḥaqq Bukhārī's Persian commentary on the famous collection of Imām Abū 'Abdu'llah Muḥammad, comp. 1055/1645]-2552 and 2553.

Takmilu'l-Iymān: [Islamic theol., (Sunnite beliefs)—Shaikh 'Abdu'l-Ḥaqq Muḥadiṭ Dihlawī's well known treatise, explaining Muslim Doctrine]-2812 to 2814.

Talkhīsu'l-Marām fī 'Ilmi'l-Kalām: [Islamic theol., Metaphysics and Scholastic)—Anony. compilation]-2989.

Tanbīhu'l-Ḡhāfilīn: [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Bahāu'd-Dīn's Tirmidhī's short treatise written for a friend]-2916.

— — — Ḡhāfilīn wa Tadhkiratu'l-'Arīfīn: [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Faṭhu'llah's pp. of a commentary on Nahju'l-Balāghat comp., 955/1548]-2578 to 2580.

— — — u's-Sālik: [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Anony. compilation refuting the Shiite allegation that Mut'a is permissible with the Maliki's of Sunnites]-3027/2.

Şirāṭu'l-Mustaqīm wa Dīn-e-Qawm : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Rare Anony. treatise to prove that Shiite is the only Muslim sect which is predestined for Salvation]-2960.

—— 'n-Najāt : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Muḥammad 'Alī Yazdī's collection of intricate points pertaining to legality or other wise of following the imitators]-2799/3 and 2799/5.

Sī wa Haft Bāb Dar Bayān-e-Wājibāt : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Ḍiyāu'd-Dīn's Sadida'l-Jurjānī's short treatise]-2710/1 and 2711/1.

Sullamu'l-Islām : (Hujjatu'l-Islām wa Burhānu'l-Miliat) : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Mulla 'Alī Nūrī (Hakim's) refutation of Christianity and assertion of rights of the Holy Prophet pertaining to his life and mission comp. 1232/1816]-2998.

Sulṭāniyyah : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Karīm b. Ibrāhīm's treatise on the Prophets and 12 Imāms compiled by the commands of Nāṣiru'd-Dīn Shāh Qachār of Persia]-2930/1.

Sulṭāniyyah and Irshādu'l-'Awām ; [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Karīm b. Ibrāhīm's 2 works on the subject]-2930.

Surūru'l-Mu'minin : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Mīr Muḥammad 'Alī's Autograph treatise on the attributes of Ḥaḍrat 'Alī comp. 1266/1890]-2924.

I

Tadhkirah : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—A short anony. treatise on resurrection]-2943/1.

————tu'l-A'immaḥ : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Bāqir Majlisī's biographies of 14 Immaculates containing controversial matters, curse upon the 3 Orthodox Khalīfs and the main subject]-2892.

Tafsīr Fatḥu'l-'Azīz : [Islamic theol., (Tafsīr)—Shāh 'Abdu'l-'Azīz's commentary on chapter 114 of the Gl. Qur'ān]-2470.

——e-Bismi'llah : [Islamic theol., (Tafsīr)—Muḥammad Amīn's commentary on the Qur'ānic verse Bismi'llah a'r-Raḥmān a'r-Raḥīm]-2468.

- - Nahju'l-Balāgha't: [Islamic theol., (Shiite trad.)—'Alī Ḥusain's commentary on Nahju'l-Balāgha't]-2581.
- - Qaṣīda-e-Burdah: [Islamic theol.,—Commentary on the popular Qaṣīdah in praise of the Holy Prophet]-2526 to 2530.
- - Sharāf'u'l-Islām: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Zainu'd-Dīn's pp. and commentary on Najmu'd-Dīn's Sharāf'u'l-Islām]-2709/1.
- - Sufaru's-S'aādat or (Ṣirātu'l-Mustaqīm): [Islamic theol., (trad. Sunnite)—'Abdu'l-Ḥaqq Saifu'ddīn's Persian commentary on Muḥammad Ya'qūb's Arabic work Sufaru's-S'aāda't]-2546 to 2548.
- - Tajrīdu'l-'Aqa'id: [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Mirza 'Imādu'd-Dīn Maḥmūd's commentary on Naṣru'd-Dīn Ṭūsī's famous work]-2874.
- - Wiqāya': [Islamic theol., (Sunnite Fiqh)—'Abdu'l-Ḥaqq Sajāwa's Persian commentary on Burḥānu'd-Dīn's Arabic work Wiqāyatu'r-Riwāyāt comp. 1076/1665]-2653 and 2654.
- Sharḥu'l-Mishkāt: [Islamic theol., (Trad. Sunnite)—Jamālu'd-Dīn's Muḥadith's Rare commentary on Abū 'Abdullah's Mishkātu'l-Maṣābiḥ]-2536.
- Sharḥu'l-Qurān-e-Mu'inī: [Islamic theol., (Tafsīr)—M'uīnu'd-Dīn's Rare commentary on Gl. Qur'ān]-2464.
- Sinān-e-Ḥaidariyyah Kasar-e-Ṣudūr-e-Mulḥid-e-Hindiyyah: [Islamic theol. (Shiite beliefs)—Kalb-e-'Alī's controversial treatise to prove that Sunnites are Khawārij (Anti 'Alī and his family) comp. 1252/1838]-3007.
- Sirāju'l-Hidāyā fī Nihāyati'z-Zuhūr: [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Ḥusaina'l-Ḥusainī's treatise]-2925.
- - Mu'minīn - [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Anony. tract on elementary principles]-2963.
- Ṣirātu'l-Mustaqīm (Sharḥ Sufaru's-S'aādat): Islamic theol., Sunnite trad., please refer Sharḥ Sufaru's-S'aādat]-2546 to 2548.

Shakk wa Sahw dar Namāz : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Bāqir Majlisī's tract on doubts and omissions in namāz (same as Risāla fi Shakiyāti'ş-Şalāt]-2855/(ii).

Sham'-e-Iymān : [Islamic theol., (Sunnite beliefs)—Anony. treatise on the subject]-2833.

— - - Yaqīn : (Āina-e-Dīn) : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Ḥasan b. 'Abdu'r-Razzāq's treatise on the principles of faith, comp. 1094/1683]-2898 and 2899.

Sharāiṭu'l-Iymān : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Muḥsin a'l-Kāshī's treatise on the subject]-2875/1.

— - - wa Ādāb-e-Namāz : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Bāqir Majlisī's notes on obligatory prayers]-2855 (i).

Sharḥ-Chihi'l-Āyah : [Islamic theol., (Shiite Tafsīr)—Anony. commentary of 40 Qur'ānic verses based on Shaiḡh Şadūq a'l-Qumī's Bahāru'l-Anwār]-2520.

— - - D'uā-e-Yaman-Yaḡallū : [Islamic theol., —Anony. commentary on 2 prayers]-2941/2.

— - - Farāi'ḡu's-Sirājiyyah : [Islamic theol., (Fiqh Hanafite)—Anony. commentary on Sirāju'd-Dīn's famous work on law of inheritance]-2657.

— - - e-Diwān-e-Ḥaḡrat 'Alī (Fawātiḡ) : [Islamic theol., (Shiite beliefs) please refer Cat. No. 2565 in 'F']-2565 to 2571.

— - - e-Fiqhu'l-Akbar : [Islamic theol., (Hanafite Fiqh)—Banda Nawāz's Persian commentary on Imām-e-A'zam's Fiqhu'l-Akbar]-2648.

— - - Ḥaḡiqatu'l-Mu'ttaqīn : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Dildār 'Alī Lakhnawī's commentary on Taqī Majlisī's Ḥaḡiqatu'l-Mu'ttaqīn]-2749.

— - - Ḥaḡiṡh : [Islamic theol., (trad.)—Taqī Majlisī's pp. and commentary on the sayings of Ḥaḡrat Imām J'afar Şādiq based on Kulīnī's version]-2763/13.

— - - Khuṡbātu'l-Bayān : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Dihdar Fānī's commentary on Ḥaḡrat 'Alī's 'Arabic sermons]-2940/2.

Şaidiyyah : [Islamic theol., (Sunnite Fiqh)—Husaini a't-Tabasī's treatise on Shikār based on Shāfa'ī and Hanafī laws]-2713 to 2715.

———— - Tahmāsp Şafawī : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Dā'ī's treatise dealing with legality of hunting and eating of such animals etc., compiled for Shāh Tahmāsp Şafawī]-2712.

Saifu'l-Mu'minin Fi Qitāli'l-Mushrikīn : [Islamic theol., (Shiite beliefs) 'Alī Qulī's treatise refuting jūdāism and Christianity after converting to Shiite faith during Sulţān Husain Shāh Şafawī's reign]-2990.

Şaigha-e-Maslūl-i Qatli A'dai'r-Rasūl : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Mir Aḥmad 'Alī Mūsawī's treatise, dedicated to Mukhtār-u'l-Mulk Sālār Jung]-3012.

Şaigha-e-Nikāh : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—'Arabic sermon for Shiite marriages with a few lines in Persian]-2711/4.

Sālāru't-Tafāsīr : [Islamic theol., (Tafsīr)—Maẓhar 'Alī's (commentary on Glorious Qur'ān compiled (for Sālār Jung the Collector), between 1273 and 1277/1857 and 1861]-2471.

Şalāt-e-Mas'ūdī : [Islamic theol., (Hanafite Fiqh)—Mas'ūd's old treatise on the subject]-2658 to 2662.

Samā' : [Islamic theol., (Şūfism)—Shujā'u'd-Dīn's Şūfic tract on the controversial topic of Religious Music]-3028/3.

Sarmāya-e-Iymān : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—'Abdu'r-Razzāq a'l-Lāhijī's treatise on principles of faith]-2941 and 2945.

Scrappy notes : [Islamic theol.,—Anony. collection of Scrappy notes]-2851/6.

Shajratu'l-Illāhiyyah : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Raf'ū'd-Dīn a'l-Ḥasan Tabāṭabāī's short treatise comp. during the reign of Shāh Şāfi in 1114/1702.]-2903.

Shākh-e-Nabāt : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Muḥammad J'afar Astrābādī's short treatise on Shiite principles]-2794/1.

(A'r) *Risālatu'l-'Āliyyah fi'l-Aḥādith'in-Nabawīyyah*: [Islamic theol., (Trad. Sunnite)—'Alī a'l-'Wāṣi'a'l-Kāshfi's rare collection with short notes and anecdotes]-2537 and 2538.

Risālatu'n-Na'jāt: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Muḥammad Ḥusain Ṭahrānī's selections from Muḥammad b. Ismā'il's pp of Ṭabāṭabā'i's Arabic commentary on *Mukhtaṣar-u'l-Khulāṣa*, Zayn'u'd-Dīn 'Alī's well known work]-2784/2 and 2785 to 2787.

— *u'r-Riḍā*: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Taqī Majlisī's treatise pertaining to marriage, milk sucking etc.]-2750.

— *u's-Ṣaghīra*: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Anony. treatise dealing with ablution and Namāz]-2799/1.

Riyāḍ-e-'Abbāsī: [Islamic theol., (Collection of Trad.)—Najm'u'd-Dīn 'Abbāsī's commentary on Ibn Ḥajar a'l-Asqalānī's *A'l-Munabbihāt a'l-Isti'dād*]-2535.

— *u'l-Abrār fi Manāqibi'l-Karrār*: [Islamic theol., (Shiite beliefs). Faṭḥ a'l-Ḥasanī a'l-Ḥusainī's treatise on attributes of Ḥaḍrat 'Alī and other Shiite Imāms]-2901.

Rūyat-e-Ḥaqq: [Islamic theol., (Sufism)—Anony. tract on God's vision as per Sunnite beliefs]-3028/1.

S

Sab'atu'th-Thawānī: [Islamic theol., (Sunnite beliefs)—Anony. short treatise refuting a note written by a Shiite of Ellore in Seven parts]-3026/2.

Saba' Sayyāra dar Radd-e-Mulḥidīn-e-Badkārāh: [Islamic theol., (Tajwīd)—Fāḍil Khān (Yūsuf's) Rare autograph versified treatise on recitation of Gl. Qur'ān, comp. 1123/1711]-2413.

(A's)-*Ṣafī Sharḥ Kāfi*: [Islamic theol., (Shiite Trad.)—Mullā Khālil's Persian commentary on a'l-Kāfi ('Arabic collection of Shiite Trad.) comp. 1084/1673]-2615 to 2618.

Ṣaidiyyah: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—'Alī b. AbīṬālib (Ḥazīn's) treatise dealing with legal precepts of hunting and slaughtering of animals etc.]-2768 and 2769/3.

Risāla-e-Shakkiyātī'ş-Şalāt: [Islamic theol., (Shiite trad.)—Bāqir Majlisī's treatise on doubts and blunders in Namāz, Reference No. 2855]-2632/4.

— . — : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Bāqir Majlisī's treatise dealing with doubts in prayers comp. 1085/1675]-2759 and 2762/2.

— . Fi'l Hudūd wa'd-Diyyāt: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Bāqir Majlisī's treatise on panel laws of execution and expiatory mulet for Murder]-2761.

— . Jabr wa'l-Ikhtiyār: [Islamic theol., (Shiite trad.)—Bāqir Majlisī's tract on the doctrine of Jabr wa'l-Ikhtiyār based on Ibn Babūyā a'l-Qummī's work]-2646/3.

— . — : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Bāqir Majlisī's tract on predistination and choice, comp. 1089/1678]-2763/6.

(A'r) Risālat fi Baqāi'n-Nafs-e-Insāniyah: [Islamic theol., (Philos)—Tūsī's 'Arabic tract on the protection of Human self]-3029/10.

— . — 'Ilmu'l-Uşūli'l-Aḥādith: [Islamic theol., (Principles of Trad.)—'Abdu'l-Awwa'l b. Alāu'l-Ḥusainī's tract on Uşūl-e-Ḥadīth]-2556.

— . — Kayfiyātī Şudūri'l-Maūjūdāta'nn Mabda'l-Awwal: [Islamic theol., (Philosophy)—Tūsī's 'Arabic tract]-3029/11.

— . — Fi'n-Nafs: [Islamic theol., (Philosophy)—'Arabic tract on life ascribed to Ḥasan b. Yūsuf b. Muṭahha'r]-3029/9.

— . — fi Tafşilu'n-Nishātain: [Islamic theol., —'Arabic treatise on resurrection attributed to Abu'l-Qāsim a'r-Rāghib]-3029/3.

— . — Fi'r-Raj'at: [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Anony. tract on the return of the 12th Shiite Imām, Mahdī]-2932.

— . — : [Islamic theol., (Shiite trads)—Bāqir Majlisī's collection of 12th Shiite trads. in support of return of Imām Mahdī with pp. and notes from his work Bahāru'l-Anwār]-2628 to 2631.

Risāla-e-Taūhīd : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Mulla Rajab 'Alī's treatise on principles of faith and unity of God]-2939/2 and 2945/3.

— - Uṣūl-Dīn ; [Islamic theol.,—Anony. Arabic tract on the 3rd Rukn of Tūsī's work]-3029/4.

— - — : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Hasan b. 'Abdu'r-Razāq's short treatise on principles of Faith]-2942/1.

— - — - Ahkām : [Islamic theol., (Shiite commentary)—Shāh Qāqī's or (Ghāzī's) Rare treatise on the principles of faith and divine commands in Glorious Qur'ān comp. 1021/1612 for Sulṭān Muḥammad Quṭb Shāh]-2855.

— - -Waqf : [Islamic theol., (Shiite Fiqh) pertaining to endowment]-2763/4.

— - — -e-Lāzim : [Islamic theol., (Tajwid)—Anony. tract on obligatory stops]-2524/5.

— - -Yuḥa'nnā : [theol., (Shiite beliefs)—Yuḥannā Banī Isrā'īl a'l-Ladhī a'l-Miṣrī's treatise showing how he embraced Islām and adopted Shiite Faith]-2983 to 2986.

— - -Zakāt : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Bāqir Majlis's tract on poor rate]-2763/7.

— - -wa Khams : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Anony., tract on poor rates]-2756/(i).

— - -Fi Ahkāmī'n-Nawāṣib Wa'l-Ghawāṣib : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Anony. tract pertaining to the enemies of Ḥadrat 'Alī as per Imām's orders]-2763/3.

— - -Ikhtiyārātī's-Sā'at wa'l-Ayyām wa'l-Tawāriḫ : [Islamic theol., (Shiite trads.)—Muḥammad Bāqir's treatise pertaining to Auspicious and Inauspicious days and dates, comp. 1078/1668]-2620 to 2624, 2632/5, 2645/1 and 2646/1.

(A'r) Risāla-e-Taūhīd : [Islamic theol., (Sūfism)—Dawwānī's short treatise in 'Arabic]-2939/8.

— - -Qawā'id Ṣighī'l-'Uqūd wa'n-Nikāh : [Islamic theol., (Shiite trad.)—Bāqir Majlisī's treatise on reciting Arabic prayers at marriages]-2632/2.

- Risāla-e-Qir'āt : [Islamic theol., (Tajwīd)—Anony. tract on correct recitation of Glorious Qur'ān]-2424/2 and 2621/(b).
- - Radd-e-Shī'yah : [Islamic theol., (Sunnite beliefs)—Anony. controversial treatise refuting the Shiite allegations against the first 3 Orthodox Khalīfs]-3024.
- - Rāj'at : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Bāqir Majlisī's short treatise about the return of xiith Shiite Imām 'Mahdī']-2882.
- - Šāhibu'l-'Amar : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—'Alī b. S'āid Jilānī's short treatise on the return of the 12th Shiite Imām Mahdī]-2914.
- - S'ad wa Naḥas : [Islamic theol., (Shiite trad.)—Anony. treatise on Auspicious and Inauspicious hours]-2644.
- - Šaidyyiah : [Islamic theol., (Fiqh Sunnite)—Anony. treatise on the legal and religious aspects regarding hunting fishing eating and training of animals and birds]-2675 to 2677.
- - Sawāl wa Jawāb : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Anony. controversial topic about the supremacy of Shiite faith over Šūfism in the form of questions and answers]-3020.
- - — : [Islamic theol.,—collection of Religious queries made by Amīrzāda Iskandar and replied by Mīr Sayyid Sharif]-3029/7.
- - Šifāte-e-Thubūtiyyah : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Anony. short tract on the attributes of God]-2938.
- - Tajwīd) : [Islamic theol.,—Hidāyatu'llah's father's short treatise on Glorious Qur'ān's correct recitation]-2407.
- - — : [Islamic theol., (Tajwīd)—Muḥammad b. 'Alī's rare and short treatise on correct recitation of Glorious Qur'ān]-2419.
- - — : [Islamic theol., (Tajwīd)—Anony. short treatise on Glorious Qur'ān's correct recitation]-2421.
- - Taūhīd : [Islamic theol., (Šūfism)—Khwāja Muḥammad Dihdar Fānī's short treatise]-2939/4.

Risāla-e-Kaffārah : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Bāqir Majlisī's treatise dealing with attonement, comp. 1091/1680 and transcribed by collector's great [grand-father]-2646. 2760 and 2763/8.

— — **Miqdāriyyah :** [Islamic theol., Islamic weights and Measures—Mīr Mu'min Astrābādī's treatise to the effect, dedicated to 'Abdu'llah Quṭb Shāh of Golconda]-2940/3.

— — **Munāẓirah :** [Islamic theol., (Controversial work)—'Abdu'l-Wahāb's collection of Notes on religious controversy between shiites and sunnites comp., 1023/1662]-2979 and 2980/1.

— — — : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Salāmat'llah Kāshī's controversial work on religious query instituted by Shiites on Imām Ḥusain's martyrdom, comp. 1250/1834]-3005.

— - — - **Yūsuf wa Nūru'llah :** [Islamic theol., controversial work—controversy between Amīr Yūsuf 'Alī a'l-Husainī a'l-Astrābādī and Qāḍī Nūru'llah-a'sh-Shustarī on Holy Prophet's knowledge about conscience of all men etc.,]-2993.

— - **Namāz-e-Shabb :** [Islamic theol., (Shiite beliefs) Mīr 'Ālam's short treatise on night prayer based on Miftāḥu'l-Falāḥ and Miṣbāḥ by 'Āmilī and Kafa' mī respectively comp. 1219/1104.]-2773.

— - **Panj Kalima wa Ad'iyāt-e-Ḍurrūrī :** [Islamic theol., (Fiqh Sunnite)—Allah Wālay Ṣāḥib's 5 principles of Islām and short prayers]-2698.

— - **Qāḍī Quṭbu'd-Dīn Kāshānī :** [Islamic theol., (Sunnite beliefs)—Qāḍī Quṭb'ud-Dīn Kāshānī's treatise on the subject]-2829.

— - — **Zādah :** [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Qāḍī 'Abdu'l-Khalīq a'sh-Sharīf's treatise on Shiite views of Imāmat dedicated to Shāh 'Abbās Ṣafawī-I]-2963 and anp 2964.

— - **Qir'āt :** [Islamic theol., (Tajwid)—Anony. defective tract on correct recitation of Glorious Qur'ān]-2423/4.

Risāla-e-Ḥadīth : [Islamic theol., (Sunnite)—Anony. tract dealing with an 'Arab Wanderer's queries, as replied by the Holy Prophet]—2521.

— - — : [Islamic theol., Trad. (Sunnites)—Dost Muḥammad Qādirī's collection of trad. with their pp.]—2559.

— - — : [Islamic theol., Trad. (Sunnite)—Anony. pp. of a collection of 'Arabic sayings of the Holy Prophet]—2643.

— - — : [Islamic theol., (Trad.)—Anony., collection of trad. with pp. pertaining to the attributes of Ḥaḍrat 'Alī]—2641.

— - — dar Faḍilat-e-Ḥaḍrat 'Alī : [Islamic theol., (Trad.)—Shāh N'imatu'llah Kāshfi's collection pertaining to the attributes of Ḥaḍrat 'Alī]—2555.

— - Ḥasaniyyah : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Anony. treatise on Shiite theol., in abridged form]—2845 to 2149 and 2851/5.

— - — : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Ibrāhīm Astrābādī's Persian version of an 'Arabic work, discovered at Damascus in 951/1551, that deals with a champion lady who felled down at the presence of Harūnu'r-Rashīd at a controversial Argument]—2953 to 2958.

— - Ithbāt-e-L'an bar Munāfiqīn : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Muḥammad Abī Tālib's pp. of Zaynu'd-Dīn 'Alī's 'Arabic work that asserts the Shiite right to abuse Sunnites]—2995.

— - Ithna-'Ashariyyah : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Anony. treatise pertaining to 12 Shiite Imāms, based on the sayings of Amīr Ṣadru'd-Dīn Shīrāzī and Bahāu'd-Dīn 'Āmilī]—2906 and 2907.

— - Jabr-wa-Ikhtiyār : [Islamic theol., (Sufism)—Dihdar Fānī's sufic tract]—2939/5.

— - — : [Islamic theol., (Sufic tract) please refer 3028/2 in 'J']—3029/6.

— - Jawāb : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Muḥsin-a'l-Kāshī's reply to the Sufis of Multān the truth about Shiite faith from 'Adbu's- Salām of Iṣfahān]—2875/5.

- Risāla dar Khilāfat : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Anony. treatise dealing with the Shiite claims for Ḥaḍrat 'Alī's right to Khilāfat] -3025/2.
- — Madḥ Raūḍa-e-Muqadasa-e-Najaf wa Karbalā : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Bāqir Majlisī's tract in praise on the Mausoleums at Najaf and Karbalā comp. 1097/1686] -2793/9.
- — Masā'il-e-Tahārat wa Ṣalāt : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Muḥammad Husain's treatise on ablution and prayer] -2791 and 2792.
- — Namāz : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Anony. tract on obligatory prayers]-2944/2.
- — T'aḍād-e-Āyāt-e-Qur'ān : [Islamic theol., (Tajwid)—Ḥairān Husain b. Uṭhmān's rare critical study in Gl. Qur'ān's correct recitation]-2418.
- — Taḥqīq-e-Tārīkh-e-Kushta Shudan-e-'Umar : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Bāqir Majlisī's tract (full of abuses) dealing with the date of Martyrdom of the Second Orthodox Khaliḥ Ḥaḍrat 'Umar]-2793/5.
- —e-Ādāb-e-Ṣafar : [Islamic theol.,—Anony. defective and short treatise on religious aspects of travelling]-2769/1.
- - 'Aqāi'd : [Islamic theol., (Shiite beliefs) a tract on the subject] -2711/5.
- - — : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Anony tract on principles of faith]-2935.
- - —e-Bāqiriyyah : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Anony. tract on ablutions and prayers]-2790.
- - —Fiqh : [Islamic theol., (Fiqh Sunnite)—Anony. collection, question and answer type]-2686/1.
- - — : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Anony. treatise on the subject]-2771.
- - Ghibat-e-Imām Maw'ūd : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Muḥammad 'Alī's pp. of an Arabic collection of trad. pertaining to the disappearance of the promised Imām] -2904.

Risāla dar 'Aqāi'd : [Islamic theol., (Sunnite beliefs)—Sayyid Mudath-thir's treatise about the attributes of Ḥaḍrat 'Alī and his family] -2830.

——— — Āḥār wa Awlād-e-A'immaḥ : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Anony. tract on 12 Imāms, giving names, date of births, deaths and the children they had]-2940/1.

——— — Bayān-e-Nūn-e-Sākin : [Islamic theol., (Tajwīd)—Anony. tract on Silent Nūn etc., for correct recitation of Gl. Qur'ān] -2424/4.

——— — Siyādat : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Muḥammad Ḥādī's treatise refuting those who claimed to be called Sayyid without being the descendants of Ḥaḍrat 'Alī and Fāṭima, comp., during Shāh 'Abbās's reign]-2965.

——— — Tāj wa Arkān-e-Mashāi'kh : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Anony. tract on interpretation of Tāj Crown]-2711/3.

——— — Fiqh : [Islamic theol., (Sunnite Fiqh)—Anony. treatise] -2703.

——— — — : [Islamic theol., (Sunnite Fiqh)—Anony. short treatise] -2704.

——— — Ḥaqīqat-e-Marg wa Rūḥ : [Islamic theol.,—Anony. tract on death and soul] -3029/8.

——— — 'Ilme-e-'Arūḍ : [Dehḍar Fānī's short treatise on prosody] -2939/6.

——— — Kalām : [Islamic theol., Raḍīu'd-Dīn Muḥammad's treatise on Scholastic theol. and Metaphysics]-2945/2.

——— — Ithbat-e-Imāmat : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Anony. tract on Ḥaḍrat 'Alī's right to Imāmat]-2908.

——— — Khilāfat : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Few pages of an anonymous work dealing with Ḥaḍrat 'Alī's right to Khilāfat]-3016.

——— — I'tiqād : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Mullā Rajab 'Alī Tabrizī's treatise on principles of faith]-2939/1.

Raddu'l-Buhtānu'l-Maūhūm : [Islamic theol., (Sunnite beliefs)—Anony. controversial work, refuting the Shiite allegations pertaining to the parentage of Holy prophet's 2 daughters married to 3rd Orthodox Khalif Hadrat Uthmān]-3027/i.

————Fuḍūl : [Islamic theol., (Sunnite beliefs)—Anony. tract refuting the Shiite claim based on Ibn Athīr Jazarī's claim]-3021.

Rasāi'l-e-Fiqh : [Islamic theol., (Sunnite Fiqh) containing 2 works]-2686.

———— : [Islamic theol., (Shiite Fiqh) containing 2 works]-2708.

———— : [Islamic theol., (Shiite Fiqh) containing 2 works]-2736.

———— : [Islamic theol., (Shiite Fiqh) contains 2 works]-2762.

———— : [Islamic theol., (Shiite Fiqh) contains Muḥammad Amīn Mastaghīnī's 2 works]-2754.

———— : [Islamic theol., (Shiite Fiqh) contains 2 works]-2784.

———— : [Islamic theol., (Shiite Fiqh) contains 2 works]-2794.

———— : [Islamic theol., (Shiite Fiqh) contains 2 works]-2801.

Raūḍatu'l-Abrār : [Islamic theol., Shiite trad.]-'Alī b. Hasan a'z-Zawwārī's rare and Royal codex of Persian commentary on Naḥju'l-Balāghat comp. 947/1540]-2576 and 2577.

————Anwār wa Zubdatu'l-Afkār : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Muḥammad Bāqī b. Shaikh Muḥammad 'Alī's learned exposition on 5 principles of faith comp. 1067/1656]-2869.

Rawāyāt : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Muḥammad Bāqir (the 5th Shiite Imām's) collection of narratives about the Martyrdoms of the 1st 4 Shiite Imāms]-2946/3.

Risāla-Dar-Ādāb-e-Libās : [Islamic theol., (Sunnite trad.)-'Abdu'l-Haqq b. Saifu'd-Dīn a't-Turk Dīhlāwī's collection of trads. with pp. pertaining to the dress of the Holy Prophet]-2549 to 2551.

———— 'Aqāi'd : [Islamic theol., (Sunnite beliefs)—Anony. tract on the subject]-2828.

Notes on Istikhārās : [Islamic theol., (Shiite trad.) Anony. Notes]-2621.

Nuṣratu'l-Mu'minin Fi Shubbātū'l-Mu'aniḍin : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Anony. treatise refuting the Sunnite claims for Khilāfat for the first 3 Orthodox Khalīfs]-3017.

Nūr-Nāma : [Islamic theol., Siyar—Anony. descriptive account of Holy Prophet's light, based on Qur'ānic verses and traditions]-2831 and 2832.

Nūru'l-Hidāya : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Anony. story pertaining to a born Sunnite who advocated the rights of Ḥadrat 'Alī to Khilāfat]-3018, 3019 and 3029/1.

Nu'zhatu'l-Ithna 'Ashariyyah : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Mirza Muḥammad Kāmil's controversial work, refuting Tuḥfa-e-Ithnā 'Ashariyyah of Shāh 'Abdu'l-'Aziz]-3000.

P

Partawa-e-Anwār : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Husain b. Muḥammad Bashīr Jilānī's treatise]-2946/1.

Q

Qaūs-Nāma : [Islamic theol., (Archary)—Anony. extract from a treatise on the subject]-2851/2.

Qawā'id-e-Namāz-wa-Waḍū : [Islamic theol., (Fiqh Snnnite)—Anony. short treatise on ablution and prayers]-2706.

Qawā'idu'l-Qur'ān [Islamic theol., [Tajwid)—Yār Muḥammad's treatise on correct recitation of Glorious Qur'ān]-2403 and 2404.

(A'l) Qawlu'l-Mubīn : [Islamic theol., (Controversial work)—Sayyid Muḥammad Ghauth Ghauthi Takhallus: Rāqim's tract to prove that Ḥadrat 'Alī is entitled to be called Sayyid]-3011.

Qiblatu'l-Āfāq : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Raḍīu'd-Dīn Muḥammad Qazwīnī's treatise on Holy Ka'bā's direction comp. during author's life time, before 1089/1678]-2752.

Qiṣṣa-e-Firūz Bakht : [Prose (Tale and anecdotes)—Shamsu'd-Dīn 'Alī Sharbatdār's romantic tale]-2851/3.

N

- Nafāi'su'l-Irqām** : [Islamic theol., (Sūfism)—Kl̤wāja Muḥammad Dihdar Fānī's Sūfic treatise]-2939/3.
- Nailu'l-Marām** : [Islamic theol., (Fiqh Shiite)—Raḥīm b. M'arūf's treatise, comp., during Shāh Ismā'il Ṣafawī's period 906-930/1500-1524]-2707.
- Nakḥbah** : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Muḥammad Ibrāhīm Isfahānī's treatise]-2793.
- Naṣiḥat Nāma** : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Anony., collection of admonitions alleged to have given to Ḥaḍrat 'Alī by the Holy Prophet]-2862.
- Nathru'l-La'ālī** : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Alphabetically arranged collection of Ḥaḍrat 'Alī's sayings]-3029/2.
- Natījatu'l-'Ālam fi Naḥ'i'l-'Ālam** : [Islamic theol., (Sunnite beliefs)—'Ālam b. Muḥammad's commentary on Sunnite Article of faith]-2807.
- Maẓm-e-Ḥāfiẓī** : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Ḥāfiẓī's versified tract, defective]-2423/6.
- La'ālī** : [Islamic theol., (Tajwid)—Abu'l-Qāsim Qārī's versified treatise on correct recitation of Glorious Qur'ān (different from No. 2408)]-2423/1.
- : [Islamic theol., (Tajwid)—Nāẓim (Abu'l-Qāsim Mash-hadī's) rare versified treatise on the correct recitation of Glorious Qur'ān composed in 1061/1051 (Different from No. 2423/1.)]-2408.
- Nikāt-e-Dawām-e-Dudmān-e-Quṭb Shāhī** : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Ḥusain a'l-Husainī a'l-Yazdī's collection of 12 points based on Glorious Qur'ān and sayings of great men comp. 1054/1644]-2860 and 2861.
- Nisha-e-Sarshār Arbāb-e-Iymān** : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Anony. pp. and short commentary on Ḥillī's (A'l-Bābu'l-Hādī 'Ashar) an Arabic work on 5 shiite principles of faith]-2912 and 2913.

Mufidu'l-Qurr'ā': (Islamic theol., (Tajwīd))—Ni'matu'llah b. Raḥmatu'llah's short treatise on correct recitation of Glorious Qur'an, compiled during Emp. 'Ālamgīr's reign]—2422/1.

Mukhtār Nāma: [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Muḥammad b. Aḥmad Zamchī's Religious legend pertaining to Mukhtār b. Abī 'Ubaida, a Shiite hero who rebelled in Kūfa in 66/685 to take revenge of Haḍrat Imām Ḥusain and his noble companions Massacre at Karbalā]—2606 to 2610.

———**u'l-Ikhtiyār 'alā Madhhabu'l-Mukhtār**: [Islamic theol., (Fiqh Sūnnite)—Ghiyāthu'l-Ḥusainī's treatise regarding rules and regulations to the Qāḍī's office comp. before 928/1522]—2671.

Mukhtaṣar dar Bayān-e-Tajwīd-e-Qur'ān: [Islamic theol., (Tajwīd)—Ustād Shukūri's short treatise on correct recitation of Glorious Qur'ān]—2409/1.

—————**'Ilm-e-Tajwīd**: [Please refer the above work].

Muqaddima-e-Tafsīr-e-Qādrī: [Islamic theol., Tafsīr (Sunnite)—'Abdu'l-Qādir b. Walīu'llah's commentary and introduction to Urdu paraphrase of Gl. Qur'ān's text]—2469/2.

(A'l) **Muqaddimatu'l-Jazariyyah**: [Islamic theol., (Tajwīd)—Shamsu'd-Dīn Abu'l-Khair a'l-Jazari's short versified treatise with pp. on correct recitation of Gl. Qur'ān comp. before 833/1429]—2422/3.

Murshidu'l-'Awām: [Islamic theol., Fiqh (Shiite)—Abu'l-Qāsim bin Muḥsin a'l-Jilānī's treatise dealing with the basic Shiite principles]—2779.

———**Wāi'zīn**: [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Muḥammad Riḍā b. Muḥammad Ṣādiq Astrābādī's treatise based on traditions and anecdotes about the Holy Prophet's family]—2923.

Mushkilātu'l-Fiqh: [Islamic theol., Fiqh (Sunnite)—Aḥmad b. Ḥamīd (Nizām's) collection of intricate points in shape of questions and answers]—2862/2.

(A'l) **Mu'tamad fi'l-Mu'taqad**: [Islamic theol., (Sunnite beliefs)—Tāju'd-Dīn Abū S'aid a'l-Ḥasan's treatise on principle beliefs etc.]—2803.

Miftāhu'l-Ghai'b: [Islamic theol., 2 folios of an anony. work]-3025/1.

————'s-Ṣalāt: Islamic theol., (Sunnite Fiqh)—Shah Fath Muḥammad Burhānpūrī's treatise regarding prayers and allied subjects comp. 1061/1651]-2683.

Minhāju'l-'Adālat: [Islamic theol., (Sunnite Fiqh)—Muḥammad Sa'id's short autograph treatise pertaining to judicial matters concerning Fiqh comp. 1284/1867]-2700.

Mira'tu'l-Haqīqat: [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Husain b. Muḥammad's treatise on attributes of Imāmat based on Glorious Qur'ān and treatise on trads etc.]-2946/2.

Masā'il-e-Muḥammad Shāhī: [Islamic theol., (Sunnite Fiqh)—'Izzat Khān's collection of intricate and difficult points based on Glorious Qur'ān and trads, compiled by Emp., Muḥammad Shāh's orders]-2693.

—————Musallī: [Islamic theol., (Sunnite Fiqh)—Anony. short treatise on elementary rules of Fiqh]-2690.

—————Mustahallīn: [Islamic theol., (Shiite trad.)—Shāh Mirzā's treatise pertaining to offer of prayers on looking at the crescent moon comp. xii/xviii]-2645/3.

—————Jannāt: [Islamic theol., (Sunnite beliefs)—Muḥammad 'Alī's Autograph treatise comp. 1280/1864]-2826.

Miṣbāhu't-Tariq: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Anony. pp. of Sayyid Muḥammad's Iṣlāḥu'l-'Amal]-2783.

Miscellaneous Notes: [Islamic theol.,—Anony. Notes]-2756/(ii).

————— and Kāshī's Poems: [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Miscellaneous notes and selection of Kāshī's poems]-2870/(v).

————— on Magic and Talismān: [Islamic theol., (Prayers) Miscellaneous—prayers and anony. notes on magic]-2769/2.

Mubāḥith-e-Tāhīr Dakkanī (Ba 'Ulamā-e-Ahl-Sunnat): [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Tāhīr Dakkanī's discussion on shiite creed, with the contemporary Sunnite devines, under Burhān Nizām Shāh-I of Aḥmad Nagar]-2952.

Manhalu'l-'Aṭshān fī Rasm Aḥrufi'l-Qur'ān : [Islamic theol., (Tajwīd)—
Tāhir Ḥāfiẓ Iṣfahānī's rare guide pertaining to the
orthography and critical study of Glorious Qur'ān comp.
during Sultān Abu'n-Naṣr Shāhrukh of Iṣfahān's reign
808-850/1405-1447]-2402.

Maqṣūdu'l-Qārī : Islamic theol., (Tajwīd)—M'uizu'd-Dīn Qādī Khān's
short treatise on correct recitation of the Glorious
Qur'ān, dedicated to Emp. Jahāngīr]-2406. 2422/2 and
2424/1.

Marghūbu'l— : [Islamic theol., (Tajwīd)—'Abda'llah b. Aḥmad's short
versified treatise pertaining to correct recitation of
Glorious Qur'ān]-2415.

Ma'arifa't-e-Illāhiyyāt : [Islamic theol.,—Mulla Muḥammad Taqī a'l-
Mūsawī's treatise on divine knowledge for Persian
knowing people]-2920.

Masāi'l-e-Fiqh : [Islamic theol.,—(Fiqh)—Anony. collection of notes on
Islamic law]-2702.

Masāliku'l-Aṭwar wa Mashāriqu'l-Anwār : [Islamic theol., (Shiite beliefs)
—Muḥammad Bāqir Wāi'z tabrizī's treatise]-2859.

Masliku'l-'Ārifīn : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Muḥammad M'asūd's pp.
of Bāqir Majlisī's popular Arabic work, Misbāhu'sh-
Sharī'at wa Miftāḥu'l-Ḥaqīqat compiled for the benefit
of Non-'Arabs]-2895-2896.

Mathnawī-e-Mīr Ḥasan (Shāru'l-Bayān : [Poetry (Urdū)—Mīr Ḥasan's well-
known Urdū Mathnawī called Shāru'l-Bayān]-2423/8.

Mawāhibb-e-'Aliyyah : (Tafsīr-e-Ḥusainī) [Islamic theol., tafsīr)—Kāshfī's
complete popular commentary on glorious Qur'ān comp.
899/1494]-2442 to 2462.

Miftāḥ-a-Asrār'ul-Ḥusainī : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Muḥammad
Yūnus Damāwandī's rare treatise in Sufic strain comp.
1160/1747]-2909.

Miftāḥu'l-A'ẓam : [Islamic theol., (Prayers)—Sulaimān a'l-Miṣrī's selection]
-2870/1.

- Majmū'a-e-Sultānī:** [Islamic theol., (Sunnite Fiqh)—Anonymous collection of questions and answers on complicated religious practices]-2684 and 2685.
- Makārimu'l-Karā'im** (Tarjuma-e-Makārimu'l-Akhlāq): [Islamic theol., (Shiite)—'Alī b. Ḥasan a'z-Zawāris Persian translation of Makārimu'l-Akhlāq]-2704.
- Makhāzinu'l-M'arūf:** [Islamic theol., (Trad. Sunnite)—Khawāṣ Khān's commentary on Mishkātu'l-Maṣābiḥ comp. 1116/1705]-2557.
- Manāf'iu'l-Muslimīn:** [Islamic theol., (Fiqh Hanafite)—Muḥammad b. Badru'd-Dīn's pp. and commentary of 'Ubaidu'llah's Arabic work Sharḥu'l-Waqāya']-2655 and 2656.
- Qulūb:** [Islamic theol., (Sunnite Fiqh)—Anony., collection of intricate points]-2108.
- Manāqib-e-Sādāt:** [Islamic theol., Manāqib (Sunnite)—Maliku'l-'Ulamā Qāḍī Shihābu'd-Dīn's treatise on the attributes of Holy Prophet's descendants]-2809.
- u'l-Murtaḍawī:** [Islamic theol., Manāqib (Shiite)—Muḥammad Ṣāliḥ al-Ḥusainī (Kāshfi's) treatise on Ḥaḍrat 'Alī's life and attributes]-2863 to 2868.
- Manhaju'l-Fāḍilīn fī M'arifati'l-A'immati'l-Kāmilīn:** [Islamic theo., (Shiite beliefs)—Muḥammad b. Ishāq's rare controversial work on the right of Imāmat for Ḥaḍrat 'Alī against the leadership of the first 3 orthodox Khalīfs comp. 936/1530]-2949 to 2951.
- u'l-Yaqīn:** [Islamic theol., (Shiite beliefs)—'Alāu'd-Dīn Muḥammad's pp. of a treatise based on the sayings of Shiite Imāms comp. 1081/1671]-2897.
- 'r-Rishād:** [Islamic theol., (Shiite beliefs)—'Alī Qulī's treatise on the principles of Shiite creed dedicated to Shāh Sultān Ḥusain Ṣafawī of Irān]-2905.
- 'ṣ-Ṣādiqīn:** [Islamic theol., commentary on glorious Qur'ān (Shiite)—Faṭḥu'llah Kāshānī's detailed commentary]-2478 to 2483.

- Majmū'a : [Islamic theol., (Shiite beliefs) contains 3 works]-2945.
- : [Islamic theol., (Shiite beliefs) contains 3 works]-2946.
- : [Islamic theol., (Shiite beliefs)-contains 'Abdu'l-Wahāb's 3 works]-2980.
- : [Islamic theol., (controversial works) contains 2 works]-3025.
- ; [Islamic theol., (Sunnite beliefs) contains 2 controversial works]-3026.
- : [Islamic theol., (Sunnite beliefs) contains 2 controversial works]-3027.
- : [Islamic theol., (Sunnite beliefs) contains 5 controversial works]-3028.
- : [Islamic theol., contains 14 controversial works]-3029.
- e-Khānī fī 'Izzi'l-Makānī : [Islamic theol., Fiqh (Sunnite)-Kamālu'd-Dīn b. Karīm Lāhūrī's treatise based on well-known works]-2680 and 2681.
- Quṭb Shāhī : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Anonymous compilation by the commands of 'Abdu'llah Quṭb Shāh of Golconda]-2871.
- Rasā'il : [Islamic theol., (Shiite Fiqh) contains 7 works]-2711.
- - ——— : [Islamic theol., (Shiite Fiqh) contains 13 works by Bāqir Majlisī, Taqī Majlisī and others]-2763.
- e-Bāqir Majlisī : [Islamic theol., (Shiite trads.)—Bāqir Majlisī's 5 works]-2632.
- Kāshī : [Islamic theol., (Shiite beliefs)—Muḥsinu'l-Kāshī's-(Faiḍ) 5 works]-2875.
- Ruq'āt : [Islamic theol.,—Anonymous collection of letters]-2851/4.
- - ——— : [Islamic theol., collection of 4 letters on controversial topics]-2944/3.

- Majālisu'l-Aḥzān:** [Islamic theol., (Shiite) —'Abdu'l-Jalīl Khān's legends about the deaths of Holy Prophet and his uncle as his family members comp. 1109/1697]-2619.
- Majmū'a:** [Islamic theol., Tajwīd—contains 3 works on correct recitation of glorious Qur'ān]-2422.
- : [Islamic theol., (Tajwīd) contains 8 works on correct recitation of glorious Qur'ān etc., and other subjects]-2423.
- : [Islamic theol., (Tajwīd)—contains 6 works on correct recitation of glorious Qur'ān]-2424.
- : [Islamic theol., (Shiite trad.)—contains 3 works]-2645.
- : [Islamic theol., (Shiite trad.) contains 3 works]-2646.
- : [Islamic theol., trad.—contains 2 anonymous collections]-2647.
- : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—A bayāḍ containing 3 works on travelling, prayers, hunting and slaying of animals]-2769.
- : [Islamic theol., (Shiite Fiqh) collection of 5 works]-2798.
- : [Islamic theol., (Shiite Fiqh) contains 2 works]-2800.
- : [Islamic theol., (Shiite beliefs) contains 8 works]-2939.
- : [Islamic theol., (Shiite beliefs) contains 3 works]-2940.
- : [Islamic theol., (Shiite beliefs) contains 2 works]-2941.
- : [Islamic theol., (Shiite beliefs) contains 3 works of Ḥasan b. 'Abdu'r-Razzāq]-2942.
- : [Islamic theol., (Shiite beliefs) contains 3 Anonymous works]-2943.
- : [Islamic theol., (Shiite beliefs) contains 3 Anonymous works]-2944.

Lisānu'dh-Dhākirin : [Islamic theol., (Shiite Trad.)—Mirza Muḥammad Hādī Nā'in's work dealing with the lives of the Holy Prophet and his family]—2635.

Lubābu'l-Aḥbār : [Islamic theol., (Sunnite Trad.)—Muḥammad Maḥmūd's pp. and short notes based on Aḥmad b. 'Abdu'llah's collection of 400 selected trads.]—2522 to 2525.

M

Ma'ārifu'l-Yaqīn Fī Sharḥ Aḥādith 'Arba'i'n : [Islamic theol., (Shiite Trad.)—Muḥammad Bāqir Wāi'z Tabrizī's persian commentary of a selected collection of 40 Traditions]—2637.

(A'l)-Mabsūṭ fī'l-Qur'āti's-Sab' Wa'l-Maḍbūṭ Min Aḍāti't-Ṭab' : [Islamic theol., (Tajwīd)—Muḥammad b. Maḥmūd's rare illustrated and detailed commentary on Shāṭibī's famous versified work on Tajwīd and pp. of Uḥmān ad'-Dānī's Tafsīr fī'l-Qirāti's-Sab']—2410.

M'adanu'l-Qir'āt : [Islamic theol., (Tajwīd)—Mubārak Phūl Ibrāhīm's comprehensive work on correct recitation of Holy Qur'ān comp. 984/1576]—2405.

Mafātiḥu'l-Gḥai'b : [Islamic theol., (Shiite trad.)—Bāqir Majlisī's treatise on Istikhāra based on Shiite trad., comp., 1104/1169]—2632/1.

Maḥāsīnu'l-Adab : (Tarjuma-e-Makārimu'l-Aḥlāq) : [Islamic theol., (Shiite)—Naṣīru'd-Dīn Muḥammad's pp. of Abu'n-Naṣru'l-Ḥasan's Arabic work Makārimu'l-Aḥlāq, dealing with the lives of Holy Prophet and Shiite Imāms trans.—963/1556]—2603.

Ma'idatu's-Ṣamāwiyyah : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Muḥammad Raḍī Husain Khwansari's treatise pertaining to the legality or other wise of eating animals, birds etc., and on using utensils and crockery]—2764.

Majālis : [Islamic theol., (Shiite belief)—Anony., collection of six works about the Martyrdom of Ḥaḍrat 'Alī, Ḥasan, Muslim, his son, Hurr and Qāsim with a few verses by Muḥtasham Kāshī]—2933.

Khawātimu's-Ṣālihīn: [Islamic theol., (Shiite trad.)—Abū 'Alī's collection of trads. pertaining to the wearing of rings, set with carnelian, rock crystal etc.,]—2636.

Kifāyatu'l-I'tiqād: [Islamic theol., (Sunnite belief)—Muḥammad Nizāmu'd-Dīn's refutation on Shiite allegations on the topic of succession, comp. at the instance of a celebrated Divine, Shaikh 'Abdu'l-Ḥaqq Dihlawī]—2967.

—————**Mu'minīn**: [Islamic theol., (Shiite belief)—Muḥammad Sharīf Khāḍim's pp. on Shaikh Quṭbu'd-Dīn's Arabic work dealing with the miracles performed by the 14 Immaculates]—2851 to 2854.

—————**Qāri**: [Islamic theol., Tajwid—Saif'ud-Dīn's versified concise treatise (Mathnawī) on correct recitation of Glorious Qur'ān composed in 1136/1724]—2414.

Kitāb-e-Mubīn: [Islamic theol., (Shiite belief)—Aḥmad b. Muḥammad b. Ḥusain's assertion on rights of Ḥaḍrat 'Alī to succeed the Holy Prophet comp., 1231/1816]—2997.

————**Nāma-e-Ḥukmā**: [Islamic theol.,—Anony. treatise on the beginning and the end]—2943/3.

Kitābu'l-Imāmat: [Islamic theol., (Shiite belief)—Ibn-e-Khātūn's Auto-graphed controversial treatise about the Imāmat and House of Ḥaḍrat 'Alī's right to it comp. 1058/1648]—2968 to 2974.

————**u's-Ṣawm**: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Anony.—treatise on fasting]—2799/2.

L

Laṭā'if-e-Ghiyāthiyyah: [Islamic theol., (Sunnite)—Imām Rāzī's treatise on scholastic theol.,]—2802.

Lawām'a-e-Ṣāhib Qirānī: [Islamic theol., (Shiite Trad.)—Muḥammad Taqī's pp. and commentary on Ibn Babūya a'l-Qummi's *Malhayahdari'l-Faqīh* comp. 1065/1654]—2741-2745.

—————**u't-Tawīl**: [Islamic theol., (Shiite Tafsīr)—Muḥammad M'aṣūm's pp. of 11th Shiite Imām, Ḥasan 'Askari's *Tāwīla'l-Āyāt*, that deals with the attributes of the Holy Prophet and his family comp., 1059/1649]—2474.

Kanzu'l-Iymān fī qawā'id-l-Qur'ān : [Islamic theol., Tajwīd—'Abdu'l-Bāri Taqī'u'd-Dīn Muḥammad's treatise on correct recitation of Qur'ān comp., 1086/1675]-2412.

Kashfu'sh-Shubḥa 'An Ḥukmi'l-Mut'ah : [Islamic theol., (Shiite belief)—Bihbānī's reply in favour of Mut'ah to Shāh 'Abdu'l-'Aziz Tuḥfa-e-Iḥnā 'Ashariyyah comp., 1225/1810]-2996.

Khamsa-e-Maḥbūb Shāhī : [Islamic theol., (Fiqh Sunnite)—Shāh 'Abdu'llah Mashsha Qādrī's short treatise on the 4 principles of Islam comp., for Āṣif Jah VI of Ḥyderābād, Mīr Maḥbūb 'Alī Khān in 1290/1875]-2701.

Khazīna-e-Radd-e-Munāfiq : [Islamic theol., (Anti Khārījī and hypocrite belief)—Zainu'l-'Ābidīn Naitī's refutation for hypocrites and Anti 'Alī element comp. 1147/1734]-2992.

Khulāṣatu'l-Aḥkām fī Dīnī'l-Islām : [Islamic theol., (Sunnite fiqh)—Maḥmūd Aḥmad's treatise on the principles of Islam etc., comp., 755/1354]-2804 to 2806.

————— : [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Anony. short treatise containing extracts pertaining to marriage, divorce etc.,]-2795.

—————Manhaj : [Islamic theol., (Shiite Tafsir)—Fathu'llah's abridged version of his own Manhaju's-Ṣādiqīn, a detailed commentary of Glorious Qur'ān according to the Shiite Doctrine]-2484 and 2511.

—————'n-Nawādir : [Islamic theol., Tajwīd—Muḥammad S'adu'llah's abridged version of his work, 'Nawādiru'l-Bayān fī 'Ulūmi'l-Qur'ān deals with the correct recitation and orthography etc., of Glorious Qur'ān]-2417.

Khutba-e-Nikāḥ : [Islamic theol.,—An Arabic sermon to be recited before Ṣiḡha]-2632/3.

Khwāb : [Islamic theol.,—Anony. reply to a query on nocturnal-pollution, (Dreams)]-3028/4.

Khawāṣ-e-Nād-e-'Alī : [Islamic theol., (Shiite)—Characteristics of Nād-e-'Alī, the Shiite Durūd]-2870/iv.

Janāhu'n-Najāb : [Islamic theol., (Shiite belief)—Faiḍu'llah b. Muḥammad 'Alī's short treatise based on eminent scholars' Arabic works]-2821.

Jawāb-e-Risāla-e-Kashf-i-Ghitā : [Islamic theol., (Shiite belief)—Anony. controversial work, refuting Tuḥfa-e-Iṭḥnā. 'Ashariyya for supporting the view on the right of first orthodox Khālifa to succeed the Holy Prophet]-3001.

Jawāhir-Nāma : [A tract on precious stones, pearls and other minerals]-2711/7.

— **u'l-'Aqā'id** : [Islamic theol., (Shiite belief)—Muḥammad Rafī's rare treatise on 5 principles of Shiite faith]-2900.

— **Faḍā'il** : [Islamic theol., (Sunnite belief)—Ghulām 'Alī a'l-Ḥusainī (Arshad's) rare and autograph verse and prose about Holy Prophet's family based on trads. and Arabic quotations comp.; 1166/1753]-2819.

(A'l)—**Farīdah-fī Sharḥ-i-Qaṣīdah** : [Islamic theol.,—Gopāmwī's pp. and commentary on Qaṣīdah comp., 1257/1841]-2531.

Jawāhiru't-Tafsīr Li Tuḥfati'l-Amīr : [Islamic theol., (Tafsīr)—Ḥusain b. 'Alī a'l-Wāi'za'l-Kāshfi's detailed commentary on Glorious Qur'ān comp., at the request of Mīr 'Alī Sher]-2440 and 2441.

K

Kalīd-e-Bihisht : [Islamic theol., (Shiite belief)—Anony. incomplete treatise on 'Aqā'id]-2937

— **-Rustgārī** : [Islamic theol., (Prayers)—Amīr Ḥusain Kirmānī's pp. of Bahāu'd-Dīn a'l-'Āmilī's Miftāḥu'l-falāḥ, a detailed treatise on Namāz]-2717 and 2718.

Kalimāt-e-'Amīru'l-Mu'minīn : [Islamic theol., (Shiite trad.)—Anony. pp. Ḥaḍrat 'Alī's 1000 Arabic Sayings]-2642.

Kamāl-e-Qudrat : [Islamic theol., Sufism—Anony. tract on the omnipotence of God]-3028/5.

— : [Islamic theol., (Shiite belief)—Anony., treatise supporting Ḥaḍrat 'Alī's direct succession to Holy Prophet's seat with some favourable Qur'anic verses and trads.] -2976.

Iyḍāh Laṭāfatu'l-Maqāl Fī Taḥṣīli'l-Jawāb: [Islamic theol., (Shiite belief)—Rafi'u'd-Dīn Khān Dihlawī's controversial work containing refutation, of the sunnites, which forms the 2nd part of this work and given the title of 'The main work' in this catalogue]-3004/2.

Iyqāzu'n-Niyām Li'l-Ihtimām bi Muqallidī Kullī Imām: [Islamic theol., (Sunnite Fiqh)—Muḥammad Bāqir Āgāh's critical exposition pertaining the following of any of the 4 principal jurists (Imāms) in prayers based on traditions and standard works]-2822.

J

Jabr wa Ikhtiyār: [Islamic theol., (Sunnite belief)—Shujāu'd-Dīn Abū-'Abdu'llah a'l-Husain's tract on the topic]-3028/2 and 3029/6.

Jalāu'l-Adhān wa Jalāi'l-Aḥzān dar Tafsīr-e-Qur'ān: [Islamic theol., (Shiite commentary)—Abu'l-Mahāsin's Rare commentary on Qur'ān, transcribed during author's life time in 993/1591]-2512 to 2516.

Jāma'-e-'Abbāsi: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Bahāu'd-Dīn Muḥammad 'Āmilī's well-known work, Vol: I, edited by 'Izzu'd-Dīn Muḥammad and Vol: II, by Niẓām b. Ḥusain Sawji completed by Shāh 'Abbās—I Ṣafawī in 1032/1622]-2721 to 2735.

Jām-e-Kauthar: [Islamic theol., (Sunnite belief)—Aḥmad 'Alī Ahrārī's autograph collection of fatwās and explanation from scholars pertaining to Jām-e-Kauthar, comp., 1285/1868]-2827.

Jam'u'r-Riḍwī: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—'Abdu'l-Ḡhanī's Persian commentary on Najmu'd-Dīn a'l-Hillī's Arabic work, "Sharāi'u'l-Islām" comp., 1161/1748]-2765.

Iḍa'atu'sh-Sham'li Izaḥti Ḥalāmī'l-Mut'a: [Islamic theol., (Sunnite belief)
Anony. treatise refuting the Shiite practice of Mut'a]-
3026/(1).

Ihtijābu'l-Mafātiḥu'l-'Aẓīm: [Islamic theol.,—Selection of prayers by
Sulaimān Miṣrī]-2870(ii).

Ijābatu'l-Muḍṭarīn fī Bayāni'l-Uṣūl wa furū'u'd-Dīn: [Islamic theol.,
(Shiite Fiqh)—Ja'fī b. Abī Ishāq Jarfī's treatise on Shiite
law' comp., 1228/1813]-2918 and 2919.

Intikḥāb-e-Iṣlāḥu'l-'Amal: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Abu'l-Ḥasan
a'l-Ḥusainī a'l-Iṣfahānī's selection from Sayyid Muḥam-
mad Ṭabāṭabāī's Iṣlāḥu'l-'Amal]-2784/i.

——— - Zīnatu'l-'Ibād: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Sayyid Aḥmad's
selections specially collected for Maḥbūb Yār Jung]-2800/i.

Irshādu'l-'Awām: [Islamic theol., (Shiite belief)—Karīm b. Ibrāhīm's
treatise on the subject for the Persian knowing people]-
2930/(2).

——— - Mu'minin: [Islamic theol., (Sunnite Fiqh)—Ibrāhīm b. Ḥusain's
elementary treatise, based on 'Aḥkāmu's-Ṣalāt' and
other standard works, Question—Answer type]-2817.

Iṭḥbāt -e-Wājibu'l-Wujūd: [Islamic theol.,—Najmī'd-Dīn 'Alī's tract on
philosophy]-3092/12.

——— -e-'Aqāī'd-e-Iṭḥnā 'Ashariyyah: [Islamic theol., (Shiite belief)
Bāqir Majisī's controversial treatise, up holding the
Shiite and refuting Sunnite beliefs]-2988.

——— - Ḥaqqī'n-Laṭīf: [Islamic theol., (Shiite belief)—Ḥazīn's treatise
dealing with the rights of the Khilāfat and abuses for 3
Orthodox Khālifas comp, 1144/1741]-2991.

——— - Imāmat: [Islamic theol., (Shiite belief)—Mulla Mu'iz Ardastānī's
selection in favour of Shiite claim(to Ḥaḍrat 'Alī's right
of succession]-2975.

Ḥallu'l-'Aqā'id: [Islamic theol., (Shiite belief)—Shamms'd-Dīn a'l-Astrābādī's pp. and commentary on Ibn Babūyā's Arabic work]-2836 and 2837.

Ḥaqqu'l-Yaqln: [Islamic theol., (Shiite belief)—Bāqir Majlisī's popular work comp. 1109/1698]-2893 and 2894.

Ḥayātu'l-Arwāḥ fi Taḥqīq Ba'i'i'l-Amāwa'l-'Abīd: [Islamic theol., (Fiqh Sunnite)—Muḥammad a'l-Qāi'm's fatwā pertaining to a special problem of fiqh (refer the same under 'A fatwā' also)-2663/1.

— - **Qulūb (Vol: II)**: [Islamic theol., (Shiite belief)—Bāqir Majlisī's epitome of Arabic work 'Bahāru'l-Anwār', Encyclopaedia of Shiite Doctrine comp., 1087/1677]-2889 and 2890.

— - — (Vol: III): [Islamic theol., (Shiite belief) Vol: III of Bāqir Majlisī's epitome of Arabic work 'Bahāru'l-Anwār', Encyclopaedia of Shiite Doctrine comp., 1087/1677]-2191.

Hidāyatu'l-Umma fi Ma'rifati'l-Ai'mmah: [Islamic theol., (Shiite belief)—Rūḥu'l-Amīn's controversial work on Khilāfat, who claims right of succession for Ḥaḍrat 'Alī and his descendants. comp. 1099/1688]-2682.

Hilyatu'l-Muttaqln: [Islamic theol., (Shiite trad.)—Bāqir Majlisī's work on daily practices and observances for Shiite life, based on the precept and examples of their Imāms, comp. 1079/1668]-2883 to 2888.

Ḥujjatu'l-Islām wa Burhānu'l-Millat: [Islamic theol., (Shiite belief) please refer in 'S' cat. No. 2998]-2998.

Hurmūsu'l-Haramisah: [Islamic theol., (Shiite belief)—Anony. Arabic tract, attributed to Prophet Idris]-2943/2.

Huznu'l-M'uminīn: [Islamic theol., (Shiite belief)—Muḥammad 'Alī's treatise on the lives of Prophets Ismā'īl, Ḥaḍrat Muḥammad, his daughter Fāṭima, and the first 8 of the Shiite Imāms comp., 1255/1839]-2928.

Ḥadāi'qu'l-Qir'āt: [Islamic theol., Tajwid—Muḥammad J'afar Ḥusaini Yazdi's treatise on correct recitation based on 'Āṣam's version comp., 1242/1826]—2416.

Ḥadīqa-e-Sulṭaniyyah: [Islamic theol., (Shiite belief)—Sayyid Ḥusain's treatise written for king Amjad 'Alī Shāh of Oudh]—2929.

Ḥadiqatu'l-Muttaqin: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Taqī Majlisī's treatise comp. 1064/1653]—2746 to 2748 and 2762/1.

———'sh-Shi'ah: [Islamic theol., (Shiite belief)—Aḥmad b. Muḥammad Ardabell's treatise on attributes of 12 shiite Imāms and their rights to Imāmat]—2843 and 2844.

Ḥadīth-e-Bisāt: [Islamic theol., (Shiite belief)—Arabic Saying by Ḥaḍrat 'Alī extracted from Majm'au'r-R'aiq with its pp. alleged to have been compiled by Ibn Babūya a's-Ṣadūq a'l-Qummi]—2572.

Hadyatu'l-Maulā: [Islamic theol. (Shiite Fiqh)—Muḥammad Amin Mustaghni's tract on ablution, namāz and prayers etc., based on Amīr Sayyid Muḥammad Khail 'Āmilī's teachings]—2754/2

———M'uminin: [Islamic theol., (Shiite belief)—Ṣafdar 'Alī Naqwi's treatise about the 12th Imām Mahdī]—2921.

———'s-Safar: [Islamic theol.,—Ḥasan b. 'Abdu'r-Razzāq's short treatise with special reference to obligatory prayers]—2942/3.

———'s-Ṣāliḥīn: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Ghulām Ḥasan's tract on Shiite principles of Faith comp. after Āqā Sayyid Muḥammad Ṭabāṭabā'i]—2799/4.

———'s-Ṣawm: [Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Anony. treatise on fasting dedicated to Sir Sālār Jung d. 1301/1883]—2796.

Haft-band: [Islamic theol., (Shiite belief)—'Abd'ul-Wahāb's persian verse comp., in Kāshī's imitation]—2980/3.

Ḥairatu'l-Fiqh wa Hujjatu'l-Fuḍalā': [Islamic theol., (Sunnite Fiqh)—'Alāu'd-Dīn 'Umar Bukhārī's collection of complicated and difficult points]—2663/1.

(Fatwā) [Islamic theol., (Sunnite Fiqh) Qāḍī Muḥammad Irtāḍa 'Alī Khān Ṣafawī a'l-Jufāmawī's Fatwā on Good and Bad] -2842.

Fawā'id-e-Maḥmūd Khānī: [Islamic theol., (Fiqh Sunnite)—Collection of complicated and difficult points of fiqh dedicated to Maḥmūd Khān Sultān]-2668.

— -e-Munajjā: [Islamic theol., (Shiite belief)-Anony. Notes]-2873.

(A'l) — u't-Tāi'fa fi Ithbātī'r-Rābiṭah: [Islamic theol., controversy, Aḥmad Sayyid a'l-Mujaddadī's tract, refuting the allegation of some sunnites that Mujaddadī Naqshband follow the Sufism's innovation of usual routine]-3008.

Fawātiḥ (Sharḥ Diwān-e-Ḥaḍrat 'Alī): [Islamic theol., Persian poetry—Maṭṭaqī's Persian commentary on Arabic Diwān ascribed to Ḥaḍrat 'Alī]-2565 to 2571.

Fiqh-e-Baburī: [Islamic theol., (Sunnite Fiqh)—Nūrū'd-Dīn's treatise compiled by Emperor Babur's order]-2670.

— Barahna: [Islamic theol., (Sunnite Fiqh) Naṣīru'd-Dīn Lāhūrī's well know treatise comp., 986/1581]-2679.

Fiqrāt-e-'Alī Darajāt: [Islamic theol., (Shiite belief) Shāh Mirza's notes on 12 shiite Imāms based on 3 standard shiite works] -2910 and 2911.

Fuṣū-e-Sulaimāniyyah: [Islamic theol., collection of shiite prayers—Majid b. Muḥammad's collection of Arabic prayers with their pp. comp., for Shāh Sulaimān Ṣafawī]-2763/10.

Fuṣūl-e-Jamāliyyah: [Islamic theol., (Tajwid)—Anony., rare and short treatise on correct recitation of glorious Qur'ān]-2419/1.

G

Gauhar-e-Murād: [Islamic theol., (Shiite Trad.) 'Abdu'r-Razzāq's famous treatise cop., during 1052 and 1077/1642 and 1667]-2610 to 2614.

Gul-e-Gulzār-e-M'aānī: [Islamic theol., (Shiite (Fiqh)—'Alī Akbar Mūsawī a'l-Husainī's treatise comp., 1172/1758]-2766.

Faiḍ-e-Quddūsī dar Bayān Ikhti'lāla-e-Kalām-e-Tūsi : [Islamic theol., (Shiite belief)—Anony., controversial tract, explaining confusion in Tūsi's assumption, on certain points]-3022.

Fāl-Nāma : [Islamic theol., Tajwīd (Recitation) Anony., versified tract on divination through Glorious Qur'ān]-2423/2.

Farāiḍ-e-Irtāḍiyyah : [Islamic theol., Fiqh (Sunnite) Muḥammad Irtidā 'Alī Khān's popular treatise on Muslim Law of Inheritance and partition comp., 1226/1811]-695.

— — — — — **u'l-A'ẓamiyyah :** [Islamic theol., Fiqh (Sunnite)—A'ẓamu'd-Dīn's treatise on Laws of inheritance comp., during Āṣif Jāh V's reign (1273-1285/1857 to 1869)-2699.

Farhang-e-Fiqh : [Islamic theol., Fiqh (Sunnite) Anony., tabulated list of eatable animals permissible or forbidden for the 4 sunnite schools]-2705.

Fatāwī : [Islamic theol., (Shiite belief) collection of Fatwās sought by Shiite 'Ulamās during a battle of wit between Shiite and Sunnites of Delhi and Lucknow]-3004/1.

— — — — — **-e-Amīniyyah :** [Islamic theol., (Fiqh Sunnites)—Muḥammad Amīn b. 'Abdu'llah's treatise on Fiqh topics comp., after 948/1541]-2672 to 2674.

Qarā' Khānī : [Islamic theol., (Fiqh Sunnite) Ṣadru'd-Dīn Yaqūb Muẓaffar Kirmānī and Qābu'l-Qarā' Khānī's well known treatise on Hanafi'te-Fiqh]-2669.

Faṭḥu'l-Maṭḥānī : [Islamic theol., Tafsīr Uṭḥmān Samānī's alphabetically arranged Glossary of Qur'ānic words]-2472.

— — — — — **- Mubīn :** [Islamic theol., collections of trad., Abū Bakr Muḥammad b. Bahrūchī's pp. of Ibna'l-Jazarī's Hisnu'l-Ḥasīn 910/1505]-2532.

Faṭḥu'r-Raḥmān bi Tarjumati'l-Qur'ān : [Islamic theol., Tafsīr—Shāh Waliu'llah Muḥadith's introduction to the literal pp. of complete text of the Glorious Qur'ān comp., 1151/1738]-2469/1.

— — — — — **-Rijāl :** [Islamic theol., short Arabic Prayers]-2870/(iii).

Dah-Majlis: [Islamic theol. (Shiite belief) Anony. collection of legends pertaining to the Holy prophet, Shiite Imāms and Saints, based on Kāshfi's Rauḍatu'sh-Shuhadā']-2582 to 2587.

(A'd)-Ḍarbatu'l-Ḥaidariyyah: [Islamic theol. (Shiite belief) Ḥamīdu'd-Dīn's controversial work on Muta, comp., 1238/1823]-3002.

Dastūru'l-'Amal: [Islamic theol. (Shiite Fiqh) Muḥammad J'afar Astrābādī's short treatise on prayers and fasting]-2794/2.

— Khāi'fīn: [Islamic theol. (Shiite Trad.) Mīr Kamālu'd-Dīn Ḥusain a'l-Mūsawī's rare autograph work on the daily observances and practices comp. 1217/1758]-2633.

Dawāzdah-Majlis: [Islamic theol. (Shiite trad.) Anony., revised collection of trads. in 12 chapters pertaining the death of Holy Prophet, Imāms and Saints, based on Kāshfi's Rauḍatu'sh-Shuhadā']-2590.

Dhakhīrratu'l-'Uqbā: [Islamic theol., (Sunnite belief) Munshī 'Āshiq 'Alī Khān's autograph controversial treatise on the famous trad. Ḥadīthu'th-Thaqalain with reference to Tuhfa-e-Ithnā 'Ashariyyah comp., 1252/1838]-3006.

Dhakhīrratu's-Sa'ādat: (Islamic theol., (Shiite Fiqh)—Anony., treatise on Namāz comp., in 1235/1820 for Muḥammad Ibrāhīm 'Alī Khān Bahādur a'l-Ḥusainī]-2781.

Dhari'atu'n-Najāt: [Islamic theol. (Sunnite belief) Faiḍ's rare collection of 40 Qur'ānic verses with their pp. in praise of Ḥaḍrat 'Alī comp. 1179/1755]-2820.

Dhurwat S'anānu'l-Islām Li Tāf'd Dīni'l Islām: [Islamic theol. (Sunnite belief and Sufic topics) Muḥammad Amīru'd-Dīn's treatise comp., for his son as a guidance in 1239/1823]-3003.

D'ūā-e-Kimiyā-e-S'aādat: [Islamic theol. short Arabic prayers]-2534/2.

D'ūā-e-Ṣaḥar: [Islamic theol., An Arabic prayer attributed to Imām J'afar Ṣādiq]-2772/3.

Barātu'n—Najāt : [Islamic theol. (Shiite Fiqh) Muḥammad 'Alī Rushtī's selection from Sayyid 'Alī Ṭabāṭabā'ī's collection of fatwās]-2774.

(A'l)-Baṣāi'r-fi'l-Wujūh-wa'n-Nazāi'r: [Islamic theol. (Tafsīr) Abu'l-Faḍāi'l Muḥammad's old valuable and rare critical study of the Glorious Qur'ān comp: before 577/1181]-2427.

Bashāratu'l-Muṣṭafā li Shī'ati'l-Murtaḍā : [Islamic theol. (Shiite trad). Anony. pp. of a collection of trads, pertaining to the happiness for Ḥaḍrat 'Alī's friends]-2638.

— u'sh-Shī'ah : [Islamic theol. (Shiite trad.) Mirza Ghulām 'Alī Khān's commentary on the 99 titles of the Shiite Imāms based on Glorious Qur'ān and trads]-2931.

Bustānu'l-Muḥadithīn : [Islamic theol., trad., (Sunnite) 'Abdu'l-Ḥaqq Dihlawī's Bibliography of works on trad and commentaries together with the lives of traditonists and commentators]-2560 and 2561.

C

Chihi'l-Ḥadīth : [Islamic theol. Trad., (Sunnite) collection of 40 trads. with their pp.]-2525/(ii).

— — : [Islamic theol., Trad. (Sunnites) Anonymous collection of 40 trads with their pp.]-2554.

— — : [Islamic theol., Trad.—Zainu'd-Dīn 'Alī's collection of 40 trads. with notes and pp. comp. during Sulṭan Muḥammad Quṭb Shāh's reign.]-2851/1.

— Kalima : [Islamic theol. (Shiite belief) 'Abdu'l—'Azīm's collection of 40 paragraphs of religious and moral topics copied and comp. for Munīru'l-Mulk Collector's grand father]-2917.

— Sūrah; [Islamic theol. (Shiite trad.) Anony. collection of 40 trads. with pp.]-2423/5.

D

Dāf'au'l-Ghamm : [Islamic theol. Shaiḫ Bū 'Alī Sīnā's Arabic tract showing the philosophy of driving away grief and affliction]-3029/5.

Aqallah Mā Yūjuz Bihi's-Ṣalāt : [Islamic theol. (Shiite Fiqh) Muḥammad Amīn Mustaghni's tract on obligatory prayers]-2754/1.

A reply by Tūsī to Najmu'd-Dīn 'Alī's tract on philosophy: [Philosophy, Tūsī's reply to Najmu'd-Dīn 'Alī's tract—*Ithbāt-e-Wājibu'l-Wujūd*]-3029/13.

Arkānu'l-Iymān : [Islamic theol. (Shiite belief) Abu'l-Ḥasan Sharīf's rare and short treatise]-2839.

Asāsu'l-Musallī : [Islamic theol. Fiqh (Sunnite) Badar Rukn Sanbādī's short treatise on prayers]-2694.

Ashī'atu'l-Lam'āt fi Sharḥi'l-Mishkāṭ : [Islamic theol. collection of trad. (Sunnite)—'Abdu'l-Ḥaqq Dihlawī's commentary on Mishkātu'l-Maṣābiḥ comp. during [1019-1025/1611-1616]-2539 to 2545.

Āthāru'sh-Shauq wa'l—Gharām ila Hajj Baiti'l-Ḥarām : [Islamic theol. (Sunnite) Shāh Muḥammad's rare and autograph treatise on rituals and observance laid down for pilgrims to Mecca and Madīna comp : 1030/1621]-2682.

A tract on the knowledge of Life and Death: [Islamic theol. (Shiite trad.) anonymous tract pertaining to life and death]-2621/(d).

— — Tajwīd : [Islamic theol. (Tajwīd) Qāḍī Khāns tract on recitation of glorious Qur'ān]-2621/(c).

'Aynu'l-Ḥayāt : [Islamic theol. (Shiite ethics) Bāqir Majlisī's extensive rare and autograph work based on Qur'ānic verses and Trad.]-2877 to 2881.

— Inṣāf : [Islamic theol. (controversial work) Anonymous short-note collection from Kitābu'l-Rasā'īl]-3023.

B

Baḥr-e-Mawwāj : [Islamic theol. (Taḥasīr)—Walī Shihāb Sāmms ('Umar Daultabādī's) exhaustive commentary on glorious Qur'ān comp. before 849/1445]-2433 and 2434.

Barāhīn-e-Qāṭi'ah : [Islamic theol. (Sunnite belief) Kamālu'd-Dīn, pp. of Ibn. Hajar's Arabic work that deals with the refutation of shiite stand pertaining to Khilāfat's illegal usurpation]-2961 and 2962.

Amal-e-Rūz-e-‘Āshūrah : [Islamic theol. (Shiite fiqh) anony. collection of prays to be recited on ‘Āshūrah day 10th of Muḥarram] -2800/2.

Amāratu’l-Kalāmi’r-Raḥmānī : [Islamic theol. Muqarrub Khān’s detailed Rare Qur’ānic Index’ comp. 1103/1692]-2467.

‘Amdah : [Islamic theol. Shiite fiqh—anony. treatise on 2467 and 2468 on uṣūl and Furū’]-2801/2.

Anīsu’l-Akhyār : [Islamic theol. (Shiite trad.)—Muḥammad Ḥusain’s Autograph treatise comp. 1225/1810]-2634.

— **Atqīyya :** [Islamic theol. (Sunnite belief) Rare work, based on ‘Abdu’r-Raḥīm’s commentaries of glorious Qur’ān and Trad.]-2815.

Anīsu’t-Tujjār : [Islamic theol. (Shiite Fiqh) Maḥdī b. Abī Dhar’an-Nirāqī’s guide for businessmen]-2778.

A note on Ḥadīth in Persian : [Islamic theol. trad.—anony. Persian notes on Ḥadīth]-3029/14.

A note on the position of Ḥadrat ‘Alī according to Maūlānā Rūm : [Islamic theol. (Sufic belief) Maulāna Rūm’s estimation on Ḥadrat ‘Alī’s High position]-2798/5.

Anwāru’l-Abṣār fī-Taḥqīq Marātibī’n-Nabī’l-Mukhtār wa Ā’imati’l-Aṭḥār : [Islamic theol. (Shiite belief) Muḥammad ‘Alī Khurāsānī’s treatise, dealing with the topic of supermacy of Imāmat over Nabūwat comp. during 1300/1885]-3013 and 3014.

Aqābu’l-‘Amal : [Islamic theol. (Shiite belief) Ja’far Muḥammad’s collection of notes on acts that bring forth punishment]-2834/2.

Aqāi’d-e-Dīniyyah : [Islamic theol. (Shiite belief) Preface to Diyāu’d-Dīn b. Sadīd A’l-Jurjānī’s short treatise on Shiite fiqh] -2710/2 and 2711/2.

— — [Islamic theol. (Shiite belief) anony. treatise in form of questions and answers]-2870.

— — **Quṭb Shāhiyyah :** [Islamic theol.: (Shiite belief) collection of rules and regulations to be observed during Muḥarram, framed by Sulṭān ‘Abdu’llah Quṭb Shāh’s command]-2872.

Aḥwāl-e-Aḥmad bin Jadīr: [Islamic theol. Trad. Anonymous pp. of a biography of Aḥmad b. Abu'l-Ḥasan b. Muḥammad b. Jadīr]-2647/2.

Aḥwāl wa Faḍā'ī'l-e-A'imm-āe-Ṭāhīrīn: [Islamic theol. Anony. treatise, deals with the lives and attributes of 12 Shiite Imāms, based on Jāmi's Shawāhi'd u'n-Nabūwat and Majdhūb's Shahrāh-e-Najāt]-2816.

Aḥyāu's-Sunnat wa Imātati'l-Bid'at Bi Ṭa'ni'l-Asi'nnat: [Islamic theol. (Shiite) Dildār 'Alī Naṣīrābādī's (Mujtahid of Lucknow) controversial work]-2999.

Al'na-e-Dīn (Sham'-e-Yaqīn) please refer Sham'-e-Yaqīn in 'S' cat: Nos. -2898 and 2899.

Āl'na-e-Ḥikmat: [Philosophy —Ḥasan b. 'Abdur'-Razzāq's short treatise on philosophy]-2942/2.

— - Shāhī: [Islamic theol. Shiite belief Kāshīs p.p. of the extract of an Arabic work, Diyāu'l-Qulūb, comp. 1076/1666]-2875/2.

'Ajā'ibu't-Tajwīd: [Islamic theol. Tajwīd (Correct recitation of glorious Qur'ān) anonymous short treatise dealing with Ḥaf's reading]-2420.

Ajwībatu'l-Masā'il: [Islamic theol. Shiite fiqh collection of 2420 questions and answers]-2751.

— — : [Islamic theol. (Shiite fiqh) anony. collection of questions and answers on difficult points]-2776.

Aḥbāru'l-Ma'ād: [Islamic theol. (Sunnite belief) Shaikh Muḥammad's rare and shorter treatise on the world and forth-coming events before this world's end]-2816.

A'lāmūl-Aḥibba fi Hurmati'l-Ghinā fi'l-Qur'ān: [Islamic theol. Shiite trad.—Muhammad Ḥādī's treatise on Shiite beliefs pertaining to the illegality of vocal music]-2850.

A'lām bi Faḍā'ī'l-Yūm Hūwa Sayyidi'l-Ayyām: [Islamic theol. trad. (Sunnite) Sayyid Wajhū'd-Dīn Aḥmad's collection of trad. on the attributes of Friday, comp. 1289/1872]-2562.

Alfiyyah Fārsī: [Islamic theol. Fiqh (Shiite)—anony. pp. of Muḥammad b. Makki's work on Naẓam]-2708/2.

INDEX II

Names of Titles

Islamic Theology

Volume VII

(Persian Manuscripts)

A

- Abṣāru'l-Mustabsarīn :** [Islamic theol. (Shiite belief) Mulla 'Abdu'l-Wahāb's account of 'Abdu'l-'Alī Shīrāzī's conversion to Shiite faith. Comp. 1062/1652]—2977, 2978 and 2980/2.
- Ad'iyā :** [Islamic theol. collection of different prayers and Hīrz]—2534/3.
- A Fatwā :** (Hayātu'l-Arwāh fī Taqīḥ Bai'ii'l-Amawā'l-'Abīd)
[Islamic theol. Muḥammad u'l-Qāim's fatwā on Fiqh]—2663/2.
- A few Persian Ghazals :** [Persian poetry—'Abbās 'Alī's Iyrical poems]—2423/7.
- Abādith-e-Nabī fī Shān-e-'Alī :** [Islamic theol. collection of Trad. (sunnites) Anonymous collection in praise of Ḥaḍrat 'Alī compiled by a Shiite]—2640.
- Aḥkāmū'l-Haiwān :** [Islamic theol. (Sunnite Fiqh) Faṣīḥu'd-Dīn of Nellore's short treatise pertaining to eating of animals, lawful or forbidden by the 4 Sunnite Schools]—2696.
- **U's-Ṣalāt :** [Islamic theol., Fiqh. Anonymous treatise question and answer type on elementary principles of Islamic faith]—2997.
- Aḥsanu'l-Qaṣas :** [Islamic theol.—An anonymous rare pp. of Abū Bakr b. Muḥammad b. Zaidā't-Ṭūsī's Arabic work (Kitābu's-sittina'l Jamāi'l-Laṭāif, based on Sūra-e-Yūsuf of Glorious Qur'ān)]—2495.

Anonymous Compilations

(b) Unknown Authors

2407, 2419/1, 2420, 2421, 2423/2 and 3, 2424/2, 4 and 5, 2465, 2473, 2520, 2528, 2534/1 to 3, 2554, 2563, 2564/5, 2574, 2582 to 2590, 2638, 2639, 2640, 2641, 2647/1 and 2, 2675 to 2677, 2684, 2686, 2690, 2691, 2697, 2702, 2703, 2704, 2705, 2706, 2736/1, 2738, 2739, 2763/3 and 4, 2771, 2776, 2783, 2790, 2796, 2798/1, 3 and 4, 2799/1 and 2, 2800/2, 2801/1 and 2, 2808, 2828, 2831, 2832, 2833, 2845 to 2849, 2851/2, 4, 5 and 6, 2856, 2862/2, 2870, 2871/1, 2873/1, 2906/1, 2907/1, 2908/1, 2932/2, 2934, 2935, 2936, 2937, 2938, 2941/2, 2943/1 to 3, 2944/2, 2960, 2961/1, 2976, 3017 to 3025/1 and 2, 3026/1 and 2, 3027/1 and 2, 3028/1, 4 and 5, 3029/1, 8 and 14.

Wallu'ddīn Abū 'Abdu'llah Muḥammad a't-Tabrizī [Theol. and trad.]-
2536, 2539/i and 2545/i.

Wallu'llah (Shāh Aḥmad) [Celebrated Sunnite Theol. d. 1176/1762]-2469/i.

Y

Y'aqūb Charkhī Ghaznawī [Theol., commentator d. 838/1435]-2429 to 2432.

Yār Muḥammad Samarqandī [Theol. during mid X/XVI]-2403 and 2404.

Yuhanna-e-Banī Isrā'īl-Miṣrī [Theol. and Comp.]-2983-2986.

Yūsuf 'Alī Astrābādī [Theol., noble]-2993/i.

— — Khān (Mīr) Sālar Jung III (the collector) [One of the Prime
Ministers of Hyderābād d. 1368/1949]-2869/ii and 2998/ii.

Z

Zāhidī (Abū Naṣr Aḥmad) [Theol. during 658/1260]-2428.

Zahīru'ddīn Muḥammad Bābur [First Mughal Emperor in India, d.
937/1530]-2670/ii.

Zainu'ddīn 'Alī [Shiite theol.]-2995/i.

— — [Theol., Comp. during the reign of Muḥammad Quṭb
Shāh of Golconda]-2851 and 2857/iii.

— — b. Shahīd-e-Thānī [Shiite Theol.]-2709/ii and
2784/iv.

— Shīrzāī [A Ṣūfī saint of Khuldābād]-2819/ii.

— Nā'itī Dīwān [Theol. and Poet in 1147/1734]-2992/i.

Zāir [Persian Poet]-2773/iv.

Ziyād b. Qadāmā-2606/vi.

Zuhūru'llah Qādī [A Judge of Lucknow]-3005/iv.

Sayyid Murtaḍā 'Alam-u'l Hudā [Theol. and trans. d. 436/1046]-2838/iv.

— Wajihu'ddīn Ahmad [Theol. comp. and trad. of XIII/XIX]-2562.

— Zai'nu'l-'Ābidīn (Shujā'u'l-Mulk) [Nawāb of Murshidābād during 1184-1208/1772-1793]-2915/ii.

T

Ṭāhir Ḥāfiẓ Iṣfahānī [Theol. during 808-850/1405-1447 in Irān]-2402 and 2403.

Tāju'ddīn Abū Sai'd Abū S'aīd Ḥasan Tūrpustī [Theol. comp. d. 661/1263]-2803/i.

Ṭābit Jung Arcotī ['Abdu'l-Ghaffār Khān]-2667.

Turāb 'Alī Khān (Mīr) (Sir Sālār Jung I) [One of the Prime Ministers of Hyderābād, Collector's Grandfather d. 1300/1882]-2471, 2531, 2825, 2826 and 2928/iv.

U

'Ubadiu'llah [Shaibānī] Prince during 940-946/1533-1539]-2403/ii.

'Umar b. Khaṭṭāb [The Second Orthodox Caliph]-2572/iv and 2693/iv.

— J'afī [Theol. and trad.]-2625.

'Uṭhmān 'Alī Khān (Mīr) (Āṣit Jāh VII) [The last King of Hyderābād]-2998/v.

Uṣṭād Shukrī [Theol. of XII/XVIII]-2409/ii, 2410 and 2424.

'Uṭhmān a'd-Dānī [Theol. d. 444/1053]-2401/iii.

— bīn Ḥanīf Anṣārī [Governor of Baṣra]-2763/ii.

— u's-Samānī [Theol. and Commentator]-2472.

W

Wālā Jāh [Nawāb of Arcot]-2928/iii.

Walī Shihāb Shams 'Umar Daultābādī Zawālī [Theol. and commentator d. 849/1445]-2433 and 2434/i.

Sultān Ibrāhīm 'Ādi'ī Shāh II [Famous King of Bijāpūr d. 1037/1627]-
2682/ii and 2961-2962.

— — Quṭb Shāh [King of Golconda reigned 957-989/1550-1581]-
2713/ii and 2960.

— Nawāz Baig [King of Khurāsān and 'Irāq]-2663/ii.

— Salghar 'Aṭābek (Abū Bakr S'ad b. Zangī) [King of Sulghar, d.
658/1260]-2803/ii.

Sayyid Aḥmad [Shiite Theol. of Hyderābād]-2648/iv 2800/i and 2801.

— 'Alī Dildār 'Alī Nasrābādī [Shiite Theol. d. 1235/1820 at Hyderā-
bād]-2999 and 3009/i.

— — Musharraḥ 'Alī [Shiite Theol. d. 1240/1824]-3002/iv.

— — Ṭabāṭabāī [Well known Shiite Theol. d. 1231/1816]-2774,
2784, and 2788/i.

— Bāqir Shāh Nāgūrī Bukhārī (Ḥamīdu'ddīn) [Theol. during the
reign of Naṣru'ddīn Hyder of Oudh]-3002/i.

— Fāḍal 'Alī Khān-2631.

— Jamālu'ddīn Ibrāhīm Aḥmad Bukhārī [Theol. and commentator]-
2471/i.

— Husain Lukhnawī [Theol. comp.]-2929/ii.

— M'arūf-2648/iii.

— Mudaththir Huainī [Theol.]-2830.

— Muḥammad [Shiite Theol.]-3002/ii.

— — Ṭabāṭabā'ī [Shiite and Theol. d. 1240/1825]-2782-
2784/i, and 2799.

— — Ghāṭh Ghāṭhī Rāqim [Theol. and Poet]-3011

— — Khail 'Āmilī [Theol. and Amir]-2754/1 and 2.

— — Sa'idān Ṣāhib [Theol. and comp.]-2926-2927.

— Murtaḍā [Shiite Theol. and commentator during XI/XVII]-
2519.

Shaikh Muḥammad 'Alī 'Āmilī (Ibn-e-Khātūn Shamsu'ddīn) [A Minister of 'Abdu'llah Quṭb Shāh of Golconda d. 1059/1649.]-2731, 2732 and 2968/i to 2974.

— — — Kāzīmī [Theol. comp. and poet during the reign of Amjad 'Alī Shāh of Oudh]-2579, 2828/i.

— — — Mahdī [Theol. and trans.]-2823/ii.

— Murtaḍā Ansārī [Shiite Theol.]-2799/iii.

— Quṭbu'ddīn Ramandī [Theol. d. 537/1177]-2851 to 2854/i.

— Sadūq Qummī [Theol. Comp. d. 381 or 391/991 or 1001]-2520, 2572, 2611 and 2646.

Shamsu'ddīn 'Alī Sharbatdār [Author]-2851.

— Abu'l-Khair Muḥammad Shīrāzī Jazarī [Theol. and Trad. d. 833/1429]-2532/i and 2533/i.

— Abū 'Abdu'llah Miquad Hillī [Theol. Author during IX/XIV]-2753.

— Abū 'Abdu'llah Muḥammad Damishqī [famous Arabic poet in VII/XIII]-2526 and 2527.

Shihāb Shams U'mar [Theol. and comp.]-2687/i.

Shibābu'ddīn Abu'l-Faḍal Aḥmad Shāf'ī Ibn-Hajar Asqalānī [Famous Shiite theol., trad. and Commentator d. 852/1446]-2535/i.

— Zawāll Daultābādī [Theol. Commentator and comp. d. 842/1437]-2433, 2434 and 2809.

Sirāju'ddīn Abū Ṭāhir Muḥammad Sajāwandī [Theol. comp. in VI/XII cent.]-2657.

Shujā'u'ddīn Abū 'Abdu'llah Husain [Shiite theol. and Ṣūfī]-3028 and 3029.

Subḥān 'Alī Khān [Shiite theol.]-3006/ii.

Sulaimān Miṣrī [Theol.]-2870/ 1 and 2.

Sulṭān Fathu'llah-2873/ii.

— Husain Shāh [The last Sharqī Sulṭān of Jaūnpūr d. 905/1499]-2810/ii.

Shāh 'Ālam I [Later Mughal King during 1119/1707]-2897/ii.

- 'Ālam II [Later Mughal King during XII/XVIII Cent.]-2582/ii, 2958.
 - Husain Ṣafawī [King of Persia during 1105-1135/1694-1722]-2764/ii, 2905/ii and 2990/ii.
 - Ismā'īl Ṣafawī [King of Persia during 906-930/1500-1524]-2707/ii, 2910 and 2911/ii.
 - Jahān Shāhābu'ddīn Muḥammad [Famous Mughal Emperor]-2552-2553/iii and 2863 to 2868.
 - Mirza Nizāmu'ddīn Muḥammad Hādī Ṣafawī [Theol. mid XII/XVIII]-2645/3, 2910-11/ii.
 - Qādī (Ghāzī) Yazdī [Theol. Comp. of Golconda in 1021/1612]-2517, 2518 and 2855/i.
 - — Muḥammad [Theol. during the reign of Muḥammad Quṭb Shāh of Golconda]-2716/iii.
 - Rukh [Sultān of Iṣfahān during 908-950/1405-1445]-2402/ii.
 - Ṣāfi Ṣafawī [King of Persia during 1114/1702]-2903/ii.
 - Sulaimān Ṣafawī [King of Persia reigned 1077-1105/1667-94]-2424/3 2751/ii.
 - Tāhir Ḥusainī Deccanī [Famous Shiite Theol. d. 952/1546]-2713/iii and 2952/i.
 - Tahmāsp I Ṣafawī [King of Persia reigned 930-984/1524-1524-1576]-2576/ii, 2591/iii, 2603/iv, 2712, 2835, 2953 to 2958 and 5959/iii.
 - Walīu'llah (Aḥmad b. 'Abdu'r-Raḥmān) [Celebrated Sunnite theol. d. 1176/1762]-2469/i.
 - Zāda Sultānam-2839/2.
- Shaikh 'Abdu'l-Ḥaqq Dihlawī [Celebrated Theol. and trad. d. 1052/1642]-2539 to 2551, 2812-2814 and 2967/ii.
- Aḥmad b. Sulaimān-2702.
 - Farīd, Murtadā Khān [Pay Master of Emperor Jahāngīr's Army d. 1025/1616]-2579.

S

Sa'di Shirāzī (Muslheḥu'ddīn) [Celebrated Persian Ṣūfī Poet* d. 691/1292]-
3001/vi.

Ṣadre-Jahān (Ḥusainī Tabasī) [Shiite Theol. during 957-989/1550-1581 at
Golconda]-2713 to 2715

Ṣadru'ddīn Muḥammad Abu'l-Faṭḥ (Banda Navāz Gesūdarāz of Gulberga)
[Famous Ṣūfī Poet of Deccan d. 825/1422]-2648/ii.

— — Sh'irāzī Amīr [Renowned Theol.]-2906 to 2907/ii
and 2910 to 2911/ii.

— — Tabrizī [Theol. and Trans]-2736/ii.

— Ya'qūb Muḥallār Kirmānī [Theol. and Comp. during VIII/
XIV cent.]-2669/i.

Ṣafdar 'Alī Naqwī [Theol. Comp.]-2921/ii.

Saifu'ddīn [Theol. and Poet XII/XVIII cent.]-2414.

Salāmatu'llah Kāshifī [Sunnite Theol. and Poet of XIII/XIX]-3005/i.

Sālār Jung I (Mīr Turāb 'Alī Khān, Muḥtārū'l-Mulk) [One of the Prime
Ministers of Hyderābād d. 1300/1882]-2699/ii-2700/ii,
2796, 2825, 2826/ii and 2928/iv.

— — III (Mīr Yūsuf 'Alī Khān) the collector [One of the Prime
Ministers of Hyderābād d. 1368/1949]-2969/ii and 2998/ii.

Salmān-e-Fārsī [One of the Companions of the Holy Prophet]-2521/i and
2572/i.

Shāh 'Abbās I Ṣafawī [King of Persia reigned 965-1037/1587-1628]-2592/iv,
2721 to 2735, 2858/2, 2944/3, 2665/i 2963 and 2964.

— — II Ṣafawī [King of Persia reigned 1052 to 1077/1642-1666]-
2429/i, 2423/i 2474/iv, 2612/ii, 2741/ii and 2941.

— 'Abdu'l-'Azīz [Reputed Theol. and Trad. d. 1239/1824]-2470, 2560,
2966, 3006 and 3015/i.

— 'Abdu'llah Mashsha Qādrī [Theol. and Comp. during the reign of
Nizām VI of Hyderābād]-2701/i.

Q

- Qābu'l Qarā Khānī [Theol. and Comp. during VIII/XIV cent.]-2669/ii.
- Qāḍī 'Abdu'l-Khāliq a'sh-Sharīf Qāḍizāda [Theol. and comp. during the reign of Shāh 'Abbās I of Irān]-2963 and 2964.
- Khān Muī'zu'ddīn [Theol. during the reign of Mughal Emperor Jahāngīr]-2406/i, 2422/2, 2424/1 and 2621.
- Muḥammad Irtidā 'Alī Khān Ṣafawī [Theol. and comp. d. 1270/1854]-2824.
- Quṭbu'ddīn Kāshānī [Theol. and comp.]-2829.
- Zāda of Transoxania [Theol. during the reign of Shāh 'Abbās I of Irān]-2963 and 2964/ii.

Qāsim bin Muslim b. 'Aqīl -2933/5.

Quṭbu'ddīn Ramandī [Shiite Theol. and Editor]-2564/iv.

R

- Raḍīu'ddīn Muḥammad Mūsawī (Sharīf Rāḍī) [Shiite Theol. and comp. d. 406/1015]-2573/ii.
- — Qazwīnī [Shiite Theol. and comp.]-2752/i.
- — Tabrasī [Theol.]-2603/iv.
- Raḥī'u'ddīn Ḥasan Tabāṭabāī (Muḥammad Ḥaidar) [Theol. during 1114/1702]-2903/i.
- Rajab 'Alī Tabrizī [Theol. and Comp.]-2939 and 2945/3.
- Raḥīm b. Ma'rūf [Shiite Theol. and comp. during Shāh Ismā'īl Ṣafawī of Irān]-2707/i.
- Rāqīm Sayyid Muḥammad Ghauth [Theol. and poet]-3011.
- Rashīd b. Shaikh Dost Muḥammad [Comp. at the end of XII/XVIII]-2674.
- Riyāḍu'l-Ḥasan Bukhārī [Shiite Theol. during XIV/XIX]-3015.
- Rūḥu'l-Amīn Sabzwārī [Theol. and comp.]-2982/i.
- Rūmī (Jalāl'u'ddīn) [Celebrated Ṣūfī Poet.]-2798/5 and 3001/v.

Naṣīru'd-Dīn Muḥammad Astrābādī [Theol. and Trans. during 963/1556 in Irān]-2603/V.

— Maḥmūd (Chirāgh-e-Dihlī) [Celebrated Ṣūfī d. 793/1392]-2668 and 2808/i.

— Tūsī [Celebrated Theol. and Philosopher etc.]-2857/ii, 2874/i and 3029/X to XIII.

Naṣrullah Izdkirmānī [Theol. and Trans.]-2664/i to 2666/i.

Nawāz Baig [King of Khurāsān and 'Irāq]-2663/ii.

Nāẓim Abu'l-Qāsim [Theol. and Poet. During 1061/1657]-2408 and 2423/i.

Ni'mat Khān-e-'Ālī [Poet during the reign of Emperor 'Ālamgīr]-2980/4.

Ni'matu'llah Jazā'irī [Shiite Theol. Author d. 1130/1718]-2767/i.

— Lāhūrī [Theol. Author during the reign of Emperor 'Ālamgīr]-2422/i.

Nizām Aḥmad [Theol.]-2686.

— 'Alī Khān (Mir) [Second Āṣif Jāh of Hyderābād]-2819/iv.

— Sāwī [Theol. during the reign of Shāh 'Abbās I of Persia]-2721 to 2725.

Nizāmu'ddīn Muḥammad Hādī Ṣafawī [Theol. Mid XII/XVIII]-2910 and 2911/i.

Nūru'llah [Renowned Shiite Theol.]-2910 and 2911/iv.

— Husainī Shustarī [Theol. Qāḍī]-2903/ii.

— Muḥammad Fārūqī [Theol. and Trans.]-2533.

— — Jahāngīr [Mughal Emperor during 1037/1627]-2406/2, 2519/ii and 2863 to 2868.

Nūr Muḥammad Nūru'l-Ḥaqq Bukhārī [Theol. Commentator and Trad. d. 1073/1662]-2552/i and 2553/ii.

Nūru'ddīn b. Quṭbu'ddīn [Author during Emperor Bābur's reign]-2670/i.

Nuṣrat Iskandar [Theol and Comp of XI/XVII]-2411.

Mu'izz Ardastānī [Theol. Author and comp.]-2968/iii to 2975/i.

Mu'izzu'ddīn Qāḍī (Qāḍī Khān Jahāngir [Author and Theol. comp. XI/XVII]-2406/i, 2422/2, 2424/1.

Mujaddid a'l-Alif Thānī [A celebrated Ṣūfī]-2654/v.

Mukarramu'd-Daulah [Minister Incharge of Judicial dept. during the reign of Āṣif Jāh V]-2699/iv.

Mukhtār b. Abī 'Ubaida [a Shiite hero d. 73/693]-2606/i.

Munīru'l-Mulk [Hyder Yār Khān d. 1248/1832]-2917/ii, 3009/iii.

Murtaḍa Khān (Shaiḥ Farīd) [Pay master of the Imperial forces. d. 1025/1616]-2519/.

Mushkīn Qalam ('Abdu'llah) [Elegant calligrapher and poet under Emp. Jahāngir]-2863/ii to 2864.

Muslim [Cousin of the third Shiite Imām d. A.H. 61]-2619/vi and 2933/3.

Muṣṭaḥṣu'ddīn S'adī Shīrāzī [Celebrated Persian poet d. 691/1292]-3001/vi.

Muṣṭafā (Muqarrab Khān) [Theol. commentator, author]-2467 and 2468.

Muẓẓafar Ḥusain A'l-Kirmānī [Theol. and Commentator.]-2463.

N

Najashī-2763.

Najmu'ddīn 'Alī Qazwīnī [Renowned Theol. and Ṣūfī]-3029/12.

— b. 'Abbās [Theol. and Commentator]-2535/ii.

— Hillī [Renowned Theol. (Shiite) Author d. 676/1277]-2709/i, 2765, 2912 and 2913.

— Muḥammad Mansūr Rāzī [Theol. in VII/XIII cent.]-2947/iii and 2948.

Nāṣīru'd-Daulah Āṣif Jāh IV [The 14th Āṣif Jāhī King of Hyderābād reigned during 1244-1273/1829-1857]-3009.

Nāṣīru'ddīn Shāh Qāchār [King of Persia during 1264-1313/1848-1896]-2930/3.

Nāṣīru'd-Dīn Lāhūrī [Theol. Comp. during X/XVI cent.]-2678 and 2679.

- Muḥammad Ṣāliḥ a'l-Ḥusainī a't-Tirmidhī Kāshfī [Theol. comp. scholar and poet d. 1060/1650]-2555 and 2863/i to 2868.
- Shāh [Mughal Emperor reigned during mid XII/XVIII]-2693/ii and 2751/iii.
 - Shamsu'ddīn a'l-Astrābādī [Theol. and trans.]-2836/ii.
 - Sharīf khādim [Theol. and trans]-2851/ii to 2854/ii.
 - Tabrizī, Mīr Majdhūb [Renowned Shiite Persian poet and devoted Ṣūfī d. 1093/1682]-2816/ii.
 - Ṭāhir Najafī a'l-Qummī [Theol. comp. during the period of Shāh 'Abbās I of Irān]-2858/i.
 - — Qummī [Renowned Shiite Theol.]-2987/i.
 - Taqī a'l-Majlisī [Renowned Shiite Theol. d. 1080/1660]-2741/ii, 2746 to 2750 2762/i 2763/13 and 2987/ii.
 - — Mirza [Prince in 1228/1813]-2918/i and 2919.
 - — a'l-Mūsawī. [Theol. and comp.]-2929
 - u'l-Qāim [Theol. and comp.]-2663/2.
 - Yūnus Damāwandī [Shiite Theol. in 1160/1747]-2909/i.
- Mubārak Phūl Ibrāhīm [Theol. d. 983/1575]-2405/i.
- Muḥtasham Kāshī [Renowned Persian poet]-2584/iii, 2585/ii, 2589/ii, 2606/v, 2870/v, 2933/6 and 2980/3.
- Mukhtāru'l-Mulk Sir Sālār Jung I [One of the Prime Ministers of Hyderābād (collector's Ancestor) in XIII/XIX cent.]-2928/iv.
- Musharraḥ 'Alī (Sayyid 'Alī) [Shiite Theol. d. 1240/1824]-3002/iv.
- M'ūāwiyyah (Ḥaḍrāt) [Companion of the Holy Prophet]-2981/iv.
- M'ufnu'ddīn [Theol. Ṣūfī during the reign of Shāhjahān and 'Ālamgīr]-2464.
- Aḥmad-2875/4.
 - Farāhī Herātī [Theol. and Commentator 907/1502]-2435 to 2439.

Muḥammad Murtaḍā Muḥsin a'l-Kāshī Faiḍ [Shiite theol. renowned Persian Poet d. 1090/1679]-2758 to 2761, 2763/1, 2, 5, 2764/6, 2798/2, 2875/i.

- M'asoom Astrābādī [Theol. trans. during the reign of Shāh 'Abbās II of Irān]-2474/ii.
- Ma'sūd Qāzwīnī [Shiite theol. and trans.]-2895/2 and 2896/2.
- Ma'sūm [Spritual Master of Mujaddid Alif Thānī]-2653/iii and 2654.
- Muḥiū'ddīn Aurangzeb [The last great Mughal Emperor]-2422/ii 2653/iv, 2654/i and 2819/iii.
- Haḍrat Muṣṭafā [Holy Prophet of Muslims]-2619/i.
- Nizām'uddīn [Theol. and comp.]-2967/i.
- Qulī Quṭb Shāh [King of Golconda Reigned 989-1020/1581-1611]-2713/iv, and 2714/iii.
- Quṭb Shāh [King of Golconda during 1020-1035/1612-1626]-2517/ii, 2576/ii, 2592/iii, 2716/ii-2851/i 2855/ii and 2856/ii.
- Rāfi 'Qāzwīnī [Theol and Comp.]-2900/i.
- — 'Nūrī [Theol and Comp.]-2915/i.
- Rashīdu'd-Dīn Khān Dihlāwī [A Sunnite theol. d. 1243 or 1249/1827 or 1833]-3002/iii and 3004/i.
- Riḍā Astrābādī [Theol. and comp.]-2923/i.
- Riḍā'i Kafāi [A Sunnite d. 1937]-2998/iv.
- Sādiq Khān (Ghālib Jung) [A noble during 1205/1790]-2733.
- S'adu'llah [Theol. and Author XIV/XX]-2417.
- S'aid b. Qādaru'l-Mulk Badru'd-Daulah Sibghatullah a'l-Madrāsī [Theol. and Comp. during the Prime Ministership of Sālār Jung I at the end of XIII/XIX]-2700/i.
- Ṣalah a'l-Ansāri [Theol. and comp d. 1041/1632]-2855/iii.
- — Qāzwīnī [Trans.]-2573/iii and 2611/ii.

Muḥammad Bāqir b. Muḥammad Taqī a'l-Majlisi [well known Shiite theol.
d. 1110 or 1111/1699 or 1700]-2755/ii to 2763, 2877 to
2896, 2987/iii and 2988.

— — a's-Sabzwārī [Theol. during Shāh 'Abbās II Ṣafawī of
Irān]-2740/i.

— Hādī b. Mu'īnu'd-Dīn Shīrāzī [Theol. comp. during Shāh 'Abbās I's
reign in Irān]-2915/i.

— b. Hādī (Rafī'uddīn a'l-Ḥasan Ṭabāṭabāī) [Theol. comp. in
1144/1702]-2903/i.

— Hādī sabzwārī [Theol.]-2850.

— Ḥasan Qāzwīnī [Shiite Theol. comp.]-2789/i.

— Ḥusain Khwānsarī [Theol. Author during the reign of Shāh
Ḥusain Ṣafawī of Irān]-2764/ii.

— — b. Muḥammad 'Alī a'l-Ḥusainī [Theol. Author in 1225/
1810]-2634.

— — b. Raḥīm [Theol. and comp.]-2791 and 2792.

— — Tehrānī [Theol. Shiite, comp.]-2784/ii, 2785 to 2787.

— Ibrāhīm 'Alī Khān Bahādur a'l-Ḥusainī [Theol. in 1235/1820]-
2781/i.

— — Isfahānī [Theol. Comp. d. 1261/1845]-2793.

— Ibn Ḥanafīyya [Theol. Ḥaḍrāt 'Alī's third son]-2606/ii.

— Irtida 'Alī Khān Bahādur [Theol. Comp during XIII/XIX]-2695/i.

— J'afar Astrābādī [Theol. and comp.]-2794/1 and 2.

— — (Fakhrū'ddīn) [Shiite, theol.]-2770/i.

— — Ḥusain [Theol. Author]-2416.

— Mahdī a'r-Riḍwī [Theol. and Trans.]-2835/ii.

— Mu'min [Theol. during Shāh 'Abbās II's reign in Irān]-2474/iii.

— — a'l-Astrābādī [Great Theol. and Scholar 1029/1620]-
2716/iv.

Muḥammad Amīru'ddīn [Theol (Sunnite), Comp. of Punjāb d. 1238/1822]-
3003.

- b. Aḥmad Zamchī [Author]-2606/iv.
- Astrābādī [Theol, comp. and trans.]-2095/ii.
- b. 'Alī [Theol. and trans. mid iv/x]-2425/2.
- — a'l-Ḥusainī [theol. and Author XI XVII]-2419/2.
- Jarzūwānī [theol. and trans. d. 747/1346]-2655/i and 2656/i.
- b. Jarīr a't-Ṭabarī [theol. and commentator d. 310/923]-2425/i
and 2426.
- Bāqir [The 5th Shiite Imām]-2946/3.
- — Āgāh [Theol. (Sunnite) poet, and comp. d. 1220/1805]-
2822.
- — b. 'Abdu'r-Ridā [Cop. 1244/1829]-2635.
- b. 'Alī Ibn Khātūn a'l-'Āmilī [Theol, great scholar d. 1059/1649]-
2592/ii to 2601 and 2979/i.
- b. Ismā'il Shaikh Abū 'Alī 'Arab [Theol. and trans.]-2784/ii to
2787 and 2788/ii.
- b. Muḥammad [Theol. and trans.]-2522/ii to 2525/ii.
- Samarqandī a'l-Hamadānī [Theol. and commentator]-2401/i.
- b. Makkī [Theol. (Shiite) comp. d. 786/1304]-2708/ii.
- b. Muḥammad Aḥsan (Abū 'Alī) [Theol.]-2363/i.
- b. Murtaḍā (Muḥsin a'l-Kāshī) [theol, trad. and poet]-2645/2.
- b. Y'aqūb (Majdu'ddīn) [theol. trad. and Author d. 817/1415]-
2546/ii to 2548.
- Bāqir b. Muḥammad Akmal a'l-Iṣfahānī Bahbahānī [Theol.
d. 1205/1791]-2772/ii.
- — b. Shaikh Muḥammad 'Alī b. Shaikh Uwais [Theol.
comp.]-2722 and 2869/i.

Mirza Muḥammad Hādī Nai'nī [theol. and comp.] -2635/i.

— — Maḥdī Astrābādī [Well-Known Shiite theol.] -2799/iv iii.

— — — a'l-Husainī a'l-Mashhadī Ishqābādī [Diwān of Burhānpūr] -2874/iii.

— — Yūsuf [Theol. and noble in 1245/1830] -2781/ii.

— Nāẓimī Tahrānī [Persian Poet] -2773/v.

Muḥammad (Shāh Qādī) [Theol. and trans. during the reign of Sulṭān Muḥammad Quṭb Shāh of Golconda] -2716/iii.

— Maulānā Mishkāk [Theol.] -2944/3

— 'Ābid [Theol. and comp.] -2922.

— 'Alī 'Āshiq [Theol, poet, comp. and cop. during the reign of Āṣif Jāh V] -2825/i.

— — (Mīr) [Theol. comp. and cop] -2924.

— — [Theol. comp and cop. during the reign of Āṣif Jāh V] -2826/i.

— — b. Abī Ṭālib [Poet d. 1180/1766] -2768/i and 2769/iii.

— — Khurāsānī [Theol. (Shiite) during early XIV/XX] -3013 and 3014/i.

— — Karbalā'ī [Theol, trans. and comp.] -2904/i.

— — Rashtī [Shiite theol.] -2774/ii.

— — Yazdī [Theol. (Shiite) comp.] -2799/iii and 2799/5.

— — Makki [Theol. and author during the reign of Ibrāhīm 'Ādil Shāh II] -2682/i.

— Amīn [Theol. and comp. during X/XVI] -2672 to 2674.

— — Jūnābādī [Theol. in 1088/1677] -2874/iv.

— — Mustaghni [Theol. (Shiite) and comp.] -2754/1 and 2.

— — [Theol. and commentator] -2466.

- Mir Aḥmad 'Alī Ḥusainī [Shiite theol.]-3012.
- 'Ālam [One of the Prime Ministers of Hyderābād Deccan in 1223/1808]-2773/iii.
- 'Alī Sher Mazindarānī [Scholar and theol.]-2605/ii.
- Ḥusain Mai'badhī [Renowned theol. and commentator d. 890/1487]-3021/ii.
- Majīd Ḥusain [theol. in 1225/1810]-2996/iv.
- Mahbūb 'Alī Khān Āṣif Jāh VI [Nizām of Hyderābād reigned 1285-1329/1869-1911]-2701/ii.
- Muḥammad Ḥusain Iṣfahānī [Theol.]-2635/ii.
- Mu'min Astrābādī [Celebrated Ṣūfī, noble and theol. etc. d. 1034/1625]-2716.
- Nizām 'Alī Khān, Āṣif Jāh II [2nd Nizām of Hyderābād Deccan]-2819/iv.
- Sayyid Sharīf [Theol.]-3029/vii/b.
- Turāb 'Alī Khān Sālār Jung I Mukhtāru'l-Mulk [Prime Minister of Deccan during the reign of Āṣif Jāh VI]-2471/ii, 2531/ii, 2825/ii, 2826/ii, 2928/iv.
- Yūsuf 'Alī Khān Sālār Jung III [One of the Prime Minister of Hyderābād during the reign of Mir Uṭhmān 'Alī Khān Āṣif Jāh VII]-2869/ii, 2998/ii.
- Mirza 'Askarī [Theol. in 1108/1694]-2611/iv.
- Ghulām 'Alī Khān (Khairātī Ṣāhib) [Theol. and comp.]-2931.
- Hajjū (Ghulam Ḥasan) [Shiite theol. of Lucknow]-2799/iv.
- 'Imādu'ddīn Maḥamūd Burhānpūrī [Theol. and commentator.]-2874/ii.
- Mirza Mubārak Rū [During mid XI/XVII]-2555.
- Muḥammad Kāmil [theol. Shiite and poet etc. d. 1235/1819]-3001/i.
- — Maṣih [in 1182/1768]-2909/iv.

Kashfī Tirmidhī (Muḥammad Ṣāliḥ a'l-Ḥusainī) [Poet, Scholar and scribe
d. 1060/1650]-2555, 2863 to 2868.

Kaẓim 'Alī Khān [theol. of 'Azīmābād (patna)]-2996/iii.

Khairatī Ṣāhib (Mirza Ghulām 'Alī Khān [theol.]-2931.

Khallī Qazwīnī [Theol and commentor d. 1089/1678]-2615 to 2618, nad
2752/ii.

Khawāja Abū Ismā'īl 'Abdu'llah [Theol, Poet]-2683/iii.

— Muḥammad Dihder Fānī [Theol, Ṣūfī, poet d. 1016/1608]-2739/3
to 6 and 2940/2.

Khawās Khān Qādrī [Theol. commentator. During XI/XVIIth cent.]-2557.

Khudā Bande Changīzī [King in Persia reigned 703-710/1304-1311]-2842/iii.

Khūsh Mazāh (Abu'l-Ḥasān Iṣfahānī) [theol. and comp.]-2784/1.

Kulīnī [Shiite theol.]-2763/13.

M

Mahdī (Imām) [The last and promised Imām]-2635-2860/ii, 2861/ii, 2904/ii,
2919/i, 2921/i and 2932/i.

— b. Abī Dharr a'n-Nirāqī [Shiite theol, comp.]-2778.

Maḥmūd Aḥmad b. Abu'l-Qāsim [Theol (Shiite) comp]-2804 to 2806.

— Shāh of Gujarāt [King of Gujarāt, 863 to 917/1459-1511]-
2532/iii.

Manṣūr Dhū-Iynāqī [Theol.]-2763/ii.

Majdhūb (Mīr Muḥammad Tabrizī) [Shiite theol. poet and Ṣūfī d. 1093/
1682]-2816/ii.

Manīṭiqī (Ḥusain b. M'uḥnu'd-Dīn) [Shiite theol. and poet d. 890/1485]-
2565:i to 2571/ii.

Mas'ūd Samarqandī [Theol. and comp.]-2658 to 2662.

Maula Ghani Qalandar [theol. and poet.]-2683/ii.

Mīr 'Abbās 'Alī [poet]-2443/7.

J

J'afar Husain (Muhammad) [Theol. 1300/1900]-2416.

— Şādiq [Sixth Shiite Imām d. 148/765]-2763/6 and 12, 2772, 2838, and 2953 to 2958/4.

J'afi bin Ali Işhāq Jāri [Theol. and comp. of Irān in 1228/1813]-2918 and 2919/i.

Jahāngir (Nūru'ddīn Muhammad) [Mughal Emperor of India reigned 1014-1037/1605-1628]-2406/i and 2863 to 2868.

Jalālu'ddīn Muhammad Akbar [Akbar the great d. 1605 A.D.]-2405/ii.

— — Dawwānī [Renowned theol. d. 908/1502]-2939/7 and 8.

— Rūmī [Celebrated Şūfī poet]-2798/5 and 3001/v.

— 'Aṭā'ullah [Theol. Trad. d. 926/1520]-2536/ii.

— Bukhārī (Sayyid Ibrāhīm Aḥmad) [Theol.]-2771/i.

— Muḥammad [Theol. and Trans.]-2719/ii and 2720/ii.

— Hasan Hilli [Theol. Author d. 926/1520]-2536/ii.

Jāmī [Celebrated Persian Poet]-2816/i.

K

Ka'fāmī [Theol. and Author]-2603/iii and 2773/ii.

Kalb-e-'Alī [Shiite theol. of XII/XVIII cent.]-3007.

Kamālu'ddīn 'Abdu'l-Jalīl-2655 and 2656/ii.

— Husain (Mīr) [Shiite theol. during 1172/1758]-2633.

— (Faṭḥa'l-Husainī) [Theol.]-2961 and 2962/i.

— Jehramī [Theol. and Trans]-2961 and 2962/i.

Kamāl Nagūrī [Theol. and Comp.]-2680 and 2681.

Kāmi'l (Mirza Muhammad) [Shiite theol. and poet d. 1235/1819]-3000/i.

Karīm Bin Ibrāhīm [Theol. and comp. during the reign of Naṣīru'ddīn Shāh Qāchār]-2930/19.

Ibrāhīm Quṭb Shāh [King of Golconda during 957-989/1550-1581]-2713/ii.
and 2960.

Idrīs [Prophet]-2933/2.

Iftikhāru'd-daulah (Afḍalu'l-Mulk Ṣalābat Jung) [A noble of Oudh]-2636/ii.

Ikhtiyāru'ddīn Ḥusain Herātī [Theol. and comp. d. ca. 928/1522]-2671.

Imām Abū Ḥanīfa (Nu'mān) [Famous theol. d. 150/767]-2648/2.

— Bukhārī (Abū 'Abdu'llah Muḥammad) [Famous trad.]-2552 to 2553/ii.

— Ḥasan [Second Shiite Imām]-2558/iv, 2619/iv and 2933/ii.

— — 'Askarī [Eleventh Shiite Imām d. 261/874]-2474/i.

— Ḥusain [Third Shiite Imām]-2558/v, 2606/ii, 2619/vi, 2635, 2902,
2909/ii. and 3005/ii.

— Ja'far Ṣādiq [Sixth Shiite Imām d. 148/765]-2038/i, 2763/6 and 12,
2772/iii, and 2953 to 2958/4.

— Rāzī (Fakhrū'ddīn Muḥammad) [Celebrated Shiite theol. d. 606/1209]-
2802/i.

— Mahdī [Promised last Imām]-2635, 2860, 2861/ii, 2804, 2914, 2921 and
2931/i.

— Zaynu'l-Ābidīn [Fourth Shiite Imām]-2635.

'Ināyatu'llah [Theol. and comp.]-2591/ii.

Islām Khān Rūmī [A noble of XI/XVII cent.]-2687/iii.

Ismā'il Ṣafwī [King of Persia during 906-930/1500-1524]-2707/ii.

'Ismat Bukhārī [poet]-2875/5.

'Izzat Khān [theol. comp. in xii/xviii India]-2693/i.

'Izzu'ddīn Muḥammad [Theol. Scholar during the reign of Shāh 'Abbās I
of Persia]-2721 to 2735.

— Ulugh Qutlugh Khān-2680 and 2681.

Husain (Imām) [3rd Shiite Imām d. 61/680]-2558, 2606, 2619, 2635, 2902, 2909 and 3005/ii.

- Yazdī [Theol. and comp.]-2860 and 2861/i
- **Khurāsānī** [Theol. and Comp.]-2925.
- b. 'Alī Wā'iz a'l-Kāshif [Theol. Trad. and commentator d. 910/1505]-2440, 2462, 2537, 2538, 2582 to 2590 and 2811.
- Manṭiqī [Shiite theol., poet and comp. [d. 890/1485]-2565 and 2571/ii.
- Jilānī [theol. and comp.]-2946/i and 2.
- Shāh [the last Sharqī King d. 905/1499]-2810/ii.

Husain'ull āhī Ardabelī [Theol. and Trans.]-2842/ii.

- **Husainī** (Ṣadr-e-Jahān) [Shiite theol. comp. during the reign of Ibrāhīm Qulī Quṭb Shāh of Golconda]-2715.

Hurr [Son of Ḥaḍrat Muslim]-2933/4.

I

Ibn Athīr Jazarī [Renowned Theol. d. 606/1110]-3021/i.

- Ibrāhīm Muṣṭafā Qārī [Theol. and comp. during the reign of Shāh 'Abbās II in Irān]-2409 and 2410.
- Babūyyā Qummi [Shiite theol. d. 381/991]-2741/i and 2763/2.
- Hajar Asqalānī [Renowned theol. d. 973/1566]-2535/i, 2961 and 2962/ii.
- a'l-Jazarī Shamsu'ddīn Abu'l-khair Muḥammad [theol. d. 833/1420]-2532/i and 2533/i.
- e-**Khāṭūn** [Famous shiite theol. and scholar to King 'Abdu'llah Quṭb Shāh of Golconda]-2592 to 2601 and 2568/i to 2974.

Ibrāhīm 'Ādi'l-Shāh II [King of Bijāpū d. 1037/1627]-2682/ii, 2961 and 2992/ii.

- **Astrābādī** (Gurgin) [Theol. and trans. during 958/1557]-2553 to 2958/i.
- b. Husain [Sunnite theo.]-2817.
- Isfrai'nī [Theol. comp.]-2530/iii.

Hāfiẓ Ghulām Haliw [Shiite Theol.]-2994.

Hāfiẓi [Theol. comp. and poet]-2423/6.

Hāẓu'ddīn (Abu'l-Barkāt 'Abdu'llah) [Theol. do 710/1310]-2664/ii and 2666/ii.

Haider Yār Khān (Munīru'l-Mulk) Prime Minister during the reign of Āṣif Jāh V]-2917/ii and 3009/iii.

Hakīm Ṣūfi 'Alī [Theol.]-2602.

Hairān Husain [theol.]-2418.

Hamīdu'ddīn (Sayyid Bāqir 'Alī a'l Bukhārī. [Theol. comp. during the reign of Naṣīru'ddīn Hydar of Oudh]-3002/i.

Hamxā [Uncle of the Holy Prophet]-2619/ii.

Hārūn a'r-Rashīd ['Abbāssid caliph of Baghdād, reigned 170-193/786-809]-2953/2 and 2651/2.

Hazīn (Muḥammad 'Alī) [Poet d. 1180/1766]-2791, 2766 and 2991.

Hasan (Imām) [Second Shiite Imām]-2558/iv and 2933/2.

— a'l-Khāḍim Qārī [Author and Qarī during xi/xvii]-2424/3.

— 'Alī a'l-Mahīlī-2695-ii.

— a'l-'Askarī [11th Shiite Imām d. 261/874]2838/ii,

— b. 'Abdu'r-Razzāq [Theol. comp. 1094/1683]-2868, 2899, 2642/1 to 3.

— b. 'Alī Astrābādī [Theol. comp. in VII/XIII cent.]-2627/ii and 2648.

— Yazdī [trans. and Theol.]-2762/ii.

— (Mīr) [famous Urdu poet]-2424/8.

— b. Yūsuf [theol.]-3029/ix.

Hasaniyyah (Husainiyyah [Lady theol. during 'Abbāsid reign]-2953/3 to 2958 3.

Himāyat Husain Nīshāpūrī [trans. and comp.]-2780/ii.

Fānī Khwāja Muḥammad Dihdar [Theol. and poet. d. 1016/1608]-293 9/3
to 6 and 2940.

Farīdu'ddīn 'Aṭṭār [Renowned Ṣūfī Poet.]-3001/iv.

Faṣṭḥu'ddīn [Theol. and Comp. of Vellore]-2696.

Fāṭima [Beloved wife of Ḥaḍrat 'Alī, the 4th Orthodox caliph of Islām]-
3558/iii and 2619/iii.

Faṭḥ a'l-Husainī (Kāmālu'ddīn) theol. and comp.]-2901/i.

— Muḥammad Burhānpūrī [Theol.]-2683/i.

Faṭḥu'llah Kāshānī [Sunnite Theol. Commentator and Trans. d. 978/1571]-
2478, 2911 and 2579 to 2580.

Faṭḥ 'Alī Shāh Qāchār [King of Irān during 1211-1250/1797-1834]-2781/ii,
2923 add 2997/ii.

Firūz Shāh Tughlaq III [King of India during 752-790/1351-1388]-2669/iii
and 2807.

G

Ghaḍanfar Husainī [Theol. and Commentator]-2526 and 2527/ii.

Ghiyāthu'l-Husainī (Ikhtiyāru'ddīn) [Theol. and comp. d. ca. 928/1522]-
2671.

Gulām 'Alī Husainī Ridwī Kirmanī (Mumtāz 'Alī Khān Arshad) [Theol.
Poet and comp.]-2819.

— Hasan Mirza Hajjū [Shiite theol. of Luckhnow]-2799/IV.

— Ḥalīm Ḥāfiẓ [Theol.]-2994.

— Yāḥyā Khān Bihāi [Trans and Theol.]-2649/i to 2652/i

Gurgin Ibrāhīm Astrābādī [Theol. and Trans. in 958/1551 d. at damascus]-
2953/i to 2958/i.

H

Ḥafīẓ Aḥmad Khān [Theol.]-2823/i.

— Shīrāzī [Celebrated Persian Poet]-2816/iii and 3001/vii.

C

Chiragh-e-Dihli (Naṣīru'ddīn Mahmūd) [Celebrated Ṣūfī Saint of India d. 793/1392]-2668 and 2808/i.

D

Dā'i [Theol. comp. during 630-944/1524-1526 in Irān]-2712/i.

Dawwānī (Jalālu'ddīn Muḥammad Asad) [Renowned theol. d. 908/1502]-2939/7 and 8.

Dihdar (Khawaja Muḥammad Fānī) [Theol. poet d. 1016/1608]-2939/3 and 2939/6 to 2940/2.

Dildār 'Alī Lakhnawī (Sayyid 'Alī Naṣirābādī) [Shiite Theol. and Commentator d. 1235/1820]-2749/i and 2999.

Diwān (Zainu'l-'Abidīn Nai'tī) [Theol. and Poet in 1147/1734]-2992/i.

Diya'u'ddīn Sadīd a'l-Jurjānī [Theol. and Comp.]-2710/i to 2711/i.

Dost Muḥammad Qdīrī [Theol. and Comp.]-2559.

F

Faḍal 'Alī Khān-2631.

— 'Azīm Khān [During 1205/1791]-2610/viii.

— Khān [Theol. and Poet during XII/XVIII Cent. in India]-2413.

Faḍlu'llah Khwāja Iṣfahānī [Theol. and comp. d. 921/1515]-2529/iii.

Fai'd [Theol. and Poet during XII/XVIII Cent.]-2558/i and 2820/i.

— Kāshī (Muḥammad Muḥsin) [Shiite Theol. and Poet. d. 1090/1679]-2755 to 2761, 2763/i and 5, 2769/8, 2798/2 and 2875/i to v.

Faiḍu'llah b. Muḥammad [Theol. and Comp.]-2821.

Fakhru'ddīn Alwand (Muḥammad Ja'far) [Shiite theol. and comp.]-2770/i.

— Husainī [During 1050/1641]-2513.

— Muḥammad Rāzī [Celebrated Sunnite Theol. d. 606/1202]-2802/i.

'Āye'sha Ṣiddīqah [The beloved wife of Holy Prophet]-2982/iii.

A'ẓamu'ddīn [Theol. during 1275/1857 at Hyderābād]-2699/i.

A'ẓamu'l-umarā Arastū Jāh [Prime Minister to Aṣif Jāh II d. 1219/1804]-2865/i.

B

Bābur (Ẓahīru'ddīn Muḥammad) [First Mughal Emperor in India d. 937/1530]-2670/ii.

Badar Bukn Sanbādī [Theol. comp.]-2694.

Bahādur Shāh I [Mughal Emperor in 1124/1712]-2679.

Bahāu'ddīn Abū'l-Faṭḥ Arbālī [theol. d. 692/1293]-2840 and 2841.

— Aḥmad [theol.]-2808/ii.

— 'Āmilī [Renowned Shiite theol. d. 1031/1622]-2592 to 2601, 2717, 2737, 2773/i, 2906/iii, 2907/iii, 2910 and 2911/iii.

— Muḥammad [Fāḍil-e-Hindī]-2990/iii.

— Bahāu'ddīn Muḥammad Tirmidhī [theol. and comp.]-2916.

— Najam [A Ṣūfī Shaikh of Burhānpūr]-2693/iii.

Banda Nawāz Gesūdarāz (Abu'l-Faṭḥ Ṣadru'ddīn Muḥammad [Celebrated Ṣūfī Saint of Gulbega, Deccan d. 825/1422]-2648/i.

Bāqir a'l-Majlisī [Renowned Shiite theol. and Scholar]-2620 to 2624, 2628 to 2632, 2645, 2646 2853.

Bihbānī (Aḥmad) [Shiite theol.]-2996/i.

Bū 'Alī Sirā (Shaikh) [Philosopher, Theol. etc.]-3079/v.

Buland Aḥtar (Muḥammad) A Mughal Prince d. 1118/1206]-2616/vii.

Burhān-u'sh-Sharī'a't (Burhānu'ddīn Maḥmūd [theol.]-2653/ii to 2656/iii.

Burhān'ddīn 'Alī [Theol. and Commentator d. 593/1197]-2649/ii to 2652/ii.

— Nizām Shāh I [King of Aḥmad Nagar during 914-961/1508-1554]-2952/ii.

Amir N'umân [A Şūfī of X/XVI Cent.]-2433/ii.

— Sayyid Muḥammad Khail 'Āmilī [Shiite Theol.]-2754/12.

— Şadru'ddīn Muḥammad Shīrāzī [Famous Theol.]-2906/ii, 2907/ii,
2910/ii and 2911/ii.

— Yūsuf 'Alī Ḥusainī Astrābādī [Theol.]-2993/i.

Amīrẓādah Iskandar [Theol.]-3029/vii.

Amjad 'Alī Shāh [King of Oudh reigned 1258-1263/1842-1847]-2928/ii
and 2929/i.

Anas Malik [Trad.]-2521/ii.

Anīs Āfrīn 'Alī Khān [A noble of U.P.]-2634/ii.

Āqā Sayyid Muḥammad Ṭabaṭabāī [Renowned Shiite theol.]-2799/IV.

Arshad (Ghulām 'Alī Kirmānī) [Theol, poet and comp.]-2819.

Ashraf Khān [d. 1097/1686]-2687/ii.

'Āshiq 'Alī Khān (Munshī) [Sunnite Theol. during XIII/XIX]-3006/i.

— (Muḥammad 'Alī) [Theol. and Poet during 1280/1813]-2825/i.

Asid 'Alī Quraishī [Theol. and Comp.]-2810/i.

Āṣif Jāh II (Mīr Nizām 'Alī Khān) [Second Nizām of Hyderābād d. 1218/
1803.]-3819/iv.

Āṣif Jāh VI (Mīr Maḥbūb 'Alī Khān) [6th Nizām of Hyderābād d. 1911
A.D.]-2701/ii.

Āṣif Jāh VII [Mīr Uṭhmān 'Alī Khān 7th and last King of Hyderābād reigned
upto 1948 A.D.]-2998/V.

Aṣlahī [Theol. and Comp.]-2902/i.

Āṣifu'd-Daulah [King of Oudh, reigned 1188-1212/1775-1897]-2770/ii.

'Aṭāu'llah Jamālu'ddīn [Theol Commentator d. 926/1520]-2536/ii.

Ātish Khān [A noble]-2900/ii.

Āṭṭār (Farīdu'ddīn) [Celebrated Şūfī poet.]-3001/IV.

'Alāu'd-Dīn 'Umar Bukhārī [Author during the reign of Sultān Nawāz Baig, King of Khurāsān and 'Irāq]-2663/i.

'Alī (Ḥaḍrat) [The 4th Orthodox caliph and first Shiite Imām d. 41/661]-2555, 2558/ii, 2564 to 2573, 2591, 2619, 2763/ii, 2798/5, 2820, 2825, 2830, 2908/ii, 2924, 2933, 2940/2, 2947 to 2949, 2966/2, 2968 to 2977, 2982/ii, 3001/iii and 3029/ii.

— Ḥakīm Ṣūfī [Theol., and Trans.]-2602.

— Akbar Mūsawī [Shiite Theol. during XII/XVIII]-2766.

— Jilānī [Theol. Comp.]-2914/ii.

— Ḥazīn [Theol. and Poet d. 1180/1766]-2768/i, 2769/iii.

— A'z-Zawwārī [Renowned Theol. and comp. d. after 870/1466]-2575, 2577, 2604, 2840, 2891/ii and 2959/i.

— Riḍā [8th Shiite Imām, d. 203/818]-2611/iii, 2716 and 2763.

— — [Theol., during 1062/1652]-2977/ii and 2978/ii.

— b. Ṭaifūr a'l-Bustāmī [Theol. Scholar during late 11/17th Cent. at Golconda]-2605/i, and 2876.

— Ḥusain Ardbelī [theol. Comment.]-2581.

'Ālī Jāh Shujā'u'l-Mulk Sayyid Zainu'l-'Ābidīn 'Alī Khān Firūz Jung [Nawāb of Murshidābād reigned during 1184-1208/1770-1793]-2915/ii.

'Alī Nūrī (Ḥakīm, Mulla) [Shiite Theol., during XIII/XIX Cent.]-2998/i.

— Qulī [Shiite Theol. during the reign of Shāh Ḥusain Ṣafawī]-2990/i and 3010.

— — Jāmī [theol. and comp.]-2905/i.

— Qushjī (Mullā) [theol. and Comment.]-2857/i.

Allāh Wāl-e-Ṣāhib [theol. and comp.]-2698.

Amīnu'l-Mulk [A noble of the Āṣif Jāhī period during 1231/1816.]-2713/v.

Amīr Qubād-2842/iv.

— Ḥusain Kirmānī [Shiite theol. and Trans.]-2717/ii.

Abu'n-Naṣr Shāh Rukh Bahādur [Sultān of Iṣfahān, reigned during 808-850/1405-1447]-2402/ii.

Afḍalu'd-Daulah Āṣif Jāh V [Nizām of Hyderābād, reigned during 1275-1285/1857 to 1869]-2699/ii.

Āftāb Khān [Theol., d. 1069/1659]-2846.

Aḥmad 'Alī Aḥrārī Muṣṭafābādī [Theol., Comp, during the Prime Ministership of Sālār Jung I]-2827.

— — Mūsawī (Mīr) [Shiite theol.]-3012.

— b. 'Abd'llah [theol. and trad.]-2522/ii to 2525/i.

— — 'Abdu'r-Raḥmān (Shāh Waliu'llah) [Celebrated Indian Comment. and trad. d. 1176/1762]-2469/i.

— — Muḥammad Fārūqī [Editor, during XIII/XIX]-3005/iii.

— — — 'Alī Bihbānī [Renowned Shiite theol.]-2996/i.

— Astrābādī [Theol. and Comp. during 1211-1250/1797-1834 in Irān]-2997/i.

— (Nizām)[Theol., and Comp.]-2682/2.

— Ardabelī [Theol. and Comp. d. 993/1586]-2843 and 2844.

— b. Muḥammad Ḥusainī [Theol. (Shiite) during XII/XVIII]-2751/i.

— Sa'id a'l-Mujaddadī [Theol. author]-3008.

— Khān (Ḥāfiẓ) [Theol.]-2823/i.

Akbar (Jalālu'ddīn Muḥammad) [The Great Mughal Emperor d. 1605 A.D.]-2405/ii.

'Ālam b. Muḥammad [theol. and Comp.]-2807/i.

'Ālamgīr (Muḥammad Muḥīu'ddīn Aurangzeb) [the last Great Mughal Emperor d. 1118/1707]-2422/ii, 2653, 2654 and 2819/iii.

'Alāu'd-Dīn Muḥammad [Theol. and comp. in 1081/1671]-2897.

Abu'l-Barakāt 'Abd'ullah a'n-Nasafī (Ḥafīẓu'd-dīn) [Theol. d. 710 or 711/
1310 or 1311]-2664/ii to 2666/iii.

- — Hibbatu'llah [Shiite theol.]-2564/iii.
- Faḍāi'l Muḥammad a'n-Nishāpūri [Theol. and Author d. 577/
1181]-2427/i.
- Fakhr Shaikh Yūsuf-2556/iii.
- Fath Muḥammad b. Malik Shāh [Saljūqī King, during 498-511/
1104-1117]-2802/ii.
- — Muḥammad Shāh [King of Gujarat reigned during 863-917/
1459-1511]-2532/iii.
- — Ṣadru'd-Dīn Muḥammad Gesūdarāz of Gulbarga (Banda
Nawāz) [Celebrated Ṣūfī Siant of Deccan d. 825/1422]-
2648/i.
- Ḥamid Muḥammad Yousuf 'Alī Uṭhmānī a'l-Gopāmawī [Theol.
Comment. Trad. of XII/XIX Cent.]-2581/i.
- Ḥasan [Shiite Theol.]-2564/ii.
- — a'l-Ḥusain a'l-Iṣfahānī (Khush Maza) [theol. comp.]-
2784/i.
- — Iṣfahānī [Shiite learned man at Hyderabad in 1937]-
2993/iii.
- — Ridā [Founder of the Shiite Sect. d. 203/818]-3021/iii.
- — Sharif [theol. comp.]-2839/i.
- Ma'ālī [Theol. trans]-2708/ii.
- Mahāsin a'l-Ḥusain a'l-Jurjānī [Shiite Theol. Commentator, d.
997/1588]-2512 to 2516.
- Qāsim Firruḥ as'h-Shāṭibi [Theol. poet, d. 590/1194]-2401/ii.
- — Mashhadī (Nāẓim) [Theologist and Poet of 1061/1651 at
Goiconda]-2408/i, 2423/i.

Abu'n-Naṣr Aḥmad a'z-Zāhidī [Theol. Comment. d. 658/1260]-2428.

- — a'l-Ḥasan Ṭabrasī [theol. author, d.c. 548/1153]-2603/i.

'Abdu'r-Razzāq Lāhijī [Theol. comp. Shāh 'Abbās II's reign]-2612/i to 2619, 2941/i and 2945/i.

— Riḍā-2754/iv.

Abū 'Abdu'llah Muḥammad Bukhārī [Theol., trad, and comp.]-2552/ii and 2553/ii.

— Aḥmad Muḥammad Nīshāpūrī Khurāsānī [Theol. and comp.]-2775.

— 'Alī (Muḥammad) [theol. and comp.]-2363/i.

— Bakr Aḥmad [theol. commentator and trans. IV/X]-2425/iii and 2426.

— Bakr Muḥammad [Theol. comment, and trans. in Mid. IV/X Cent.]-2425 and 2426.

— Bakr S'ad b. Zangī ('Aṭābek) [Ruler of Sulḡhar, d. 658/1260]-2803/ii.

— Bakr Barūchī [Theol. Trans in the reign of Sulṭān Muḥammad Shāh of Gujarat']-2532/iii.

— Ḥanīfa a'n-N'umānī Thāb it a'l-Kūfī [Imām-e-A'zam, great theol. d. 150 or 151/767 or 768]-2648/2.

— J'afar a'l-Kulinī [Shiite theol. trad. and author d. 328 or 329/940 or 941]-2615/i.

— J'afar Muḥammad Qummī [Renowned Shiite theol. and Comp. d. 381 or 391/991 or 1001]-2833/1, 2834/1, 2834/2, 2835/1 and 2836/1.

— Mafakḡhar (Nizām'uddīn) Muḥammad Hādī a'l-Ḥusainī a'ṣ-Ṣafawī better known as Shāh Mīrza, [Renowned Shiite Theol. and comp. in Mid XII/XVIII]-2645/3, 2910/ii and 2911/i.

— Muḥammad a'l-Ḥusain Mas'ūd a'l-Farraḡ a'l-Baḡhawī [Theol. and trad. d. 510-516/1116-1122]-2539/ii to 2545/ii.

— Ṣāliḡ Maṣṣūr b. Nūḡ [Samanide Prince during 350-355/961-976]-2425/3 and 2426.

— Tāḡir [theol.]-2838/iii.

- Ḥaḳ Dihlawī (Shāikh) [Celebrated divine, theol., and Trad. d. Ca. 1052/1642]-2539/iii to 2551/iii, 2812 to 2814, and 2967/ii.
- — Sajāwa'l Sarhindī [Theol., and Comment. XII/XVIII]-2653 to 2654 (i).
- — Khāliq Sharīf (Qāḍī) [Theol., during 995-1037/1587 to 1627 in Irān]-2963/i, and 2964.

'Abdullah ('Abdu'l-Jalīl Khān) [Theol., Author]-2619.

- a'l-Kalyānī [Theol., and P. Poet. XIII/XIX]-2415.
- b. Bādhil-2768/ii.
- b. Ḥaram a'l-Ḥijāzī [Theol.]-2417/ii.
- Khān Uzbek [Theol., Amir of Uzbeksitān]-2944/iii.
- a'l-Jazā'irī a't-Tustarī [Theol., Trans XII/XVIII]-2767/ii.
- Mashsha Qādrī (Shāh) [Theol., in the reign of Niẓām VI]-2701/i.
- Mushkīn Qalam Jahāngīr Shāhī (Waṣfī) [Theol., elegant calligrapher, poet and Comp. during Emp. Jahāngīr's reign]-2863/ii and 2868.

'Abdu'l-Qādir b. Walīu'llah [Theol., Comment.]-2469/2.

- Qāsim 'Alī a'l-Ḥusainī [Theol., Comp., d. 664/1266]-2959/ii.

'Abdu'llah Quṭb Shāh [King of Golconda, reigned during 1035-1083/1626-1672]-2408/ii, 2468/ii 2474/ii, 2490/ii, 2871 and 2872.

'Abdu'l-Wahāb [Theol., comment.]-2427/iii.

- Wahāb of Thatta [Theol., comp. during XI/XVII]-2977/1, 2978/12, 2979, 2980 and 2981/2.

'Abdu'n-Nabī-2754/iii.

'Abdu'r-Raḥīm [theol., trad, comp. and comment]-2815.

- — of Aḥmadābād [late X/XVI]-2433/iii.
- Raḥmān Jāmī [Celeb. Persian poet-d. 898/1492]-2816/i.

INDEX I

Names of Persons

Islamic Theology

Volume VII

(Persian Manuscripts)

(a) Known persons

A

Abā Bakr Ṣiddīq, [The first Orthodox Caliph of Islām]-3000/(iii).

‘Abbās ‘Alī (Mīr): [Persian Poet]-2423/7.

— Ṣafawī I [King of Persia]-2721/ii, 2735, 2858/ii, 2944/3(iii) b, 2963/ii, 2964 and 2965/1 (ii).

— Ṣafawī II [King of Persia]-2441/2, 2474/iv and 2741/ii.

‘Abdu’l-‘Alī a’l-Karkī (a’l-Kurkī) [Shiite theol., Comp., d. 945/1538]-2708/(i).

— — Muḥammad Anṣārī [Theol., Commentator]-2667.

— — Shīrāzī-2977/(iii).

— Awwa’l [Theol., Trad., Comp.]-2556/(i).

— ‘Azīm Iṣfahānī [Theol., Comp., of XIII/XIX]-2917/(i).

— ‘Azīz (Shāh) Muḥaddith Dihlawī [Renowned Theol., Trad. d. 1239/1824]-2560, 2561, 2996/ii, 3000/(ii), 3001/(ii), 3006/(iii) and 3015/ii.

— Bārī Taqīu’ddīn Muḥammad Hamadānī [a’l-Qārī [Author and Theol., in 1086/1675]-2412.

— Ghaffār Khān [Thābit Jung of Arcot.]-2667.

— Ghani Kashmīrī [Shiite Theol., poet and Comment.]-2765/(ii).

13. A reply to the above by Tūṣī, on ff. 49v-51.

Beginning : قل مولانا المعظم إمام العالم ملك الحكماء - الشيخ

Ending : واقع بين العلول الأول وبين واحد من العلل الموجودة كلام

14. A note on Hadith, in Persian, defective at the end, on f. 51v.

Beginning : بدانکه حدیث در اصطلاح محدثین قول و فعل و تقریر
رسول را نامند - الشيخ

Ending : abruptly. زیرا که از طاقت بیر و نست مکر اصرار دوام

ff. 51. ll. varying. S. 10.3 × 6.7; 8.3 × 4.7"/26.1 × 17.2; 21.2 × 12.0 cms.

Written in good nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Spacings for text sprinkled with silver dust. Gold ruled borders.

Worm holes. Fair condition. To be repaired, and reset in existing covers.



8. *Risāla dar Ḥaqlqat-e-Marg we Rūh*, on ff. 39v-42v.

A tract on death and soul, in ten faṣl.

Beginning : الحمد لله . . . اما بعد اين رساله مشتمل ست بر ده فصل - الشيخ

Ending : و دلی از آتش فراق بریان - والله المستعان و عليه التكلان

9. *Ar-Risālat fi'n-Nafs*, on ff. 42v-44v.

An Arabic tract on life, ascribed to Ḥasan b. Yūsuf b. Muṭahhar. It is in nine muqaddimas.

Beginning : يقول العبد الفقير إلى الله تعالى حسن بن مطهر - الشيخ

Ending : المتبعين من الكفار، والحمد لله . . . وآله الطاهرين

10. *A'r-Risālat fi Baqāi'n-Nafs Insāniyah*, on ff. 44v-45v

An Arabic tract of Ṭūsī.

Beginning : قال الحكيم الفاضل الكامل افضل المتقدمين - الشيخ

Ending : ولأضم الكلام ههنا والله الحمد . . . المعصومين

11. *A'r-Risālat fi Kayfiyāti Ṣudūri'l-Maujūdāt 'an Mabda'i'l-Awwal*, on ff. 45v-46v.

Another Arabic tract on philosophy by the same Ṭūsī.

Beginning : قال سألني قاضي القضاة ملك البلاء - الشيخ

Ending : وهو ولي التوفيق و ملهم الصواب، منه المبدأ وإليه المآب

12. *Ithbāt-e-Wājibu'l-Wujūd*, on ff. 47-49.

An Arabic tract on philosophy attributed to Najmuddin 'Alī b. 'Umar a'l-Kātibī a'l-Qazwīnī.

Beginning : قال إمام الحكماء نجم الملة و الدين علي بن عمر - الشيخ

Ending : صلى الله عليه و آله أجمعين إلى يوم الدين

3. A'r-Risālat fi Tafṣīlu'n-Nishātain, on ff. 11v-26v.

An Arabic treatise on resurrection attributed to Abu'l-Qāsim a'r-Rāghib. It is in thirty-three bābs.

Beginning : الحمد لله الذى ارسل بالنبوة عبده و علمناه على لسانه حمده - الشيخ

Ending : سلام عليكم بما صبرتم ، و من حصل له على ما يشاء قدیر

4. Risāla Uṣūl-e-Dīn, on ff. 26v-29.

A tract, in Arabic, on the third rukn of Ṭūsī's work.

Beginning : الحمد لله واسم الرحمة و - ابغ النعمة - الشيخ

Ending : و هو حسبنا و نعم الوكيل و الحمد لله رب العالمين

5. Dafe'u'l-Gḥamm, on ff. 29-30v.

A tract, in Arabic, on how to drive away grief and affliction, attributed to Shaikh Bu 'Alī Sinā.

Beginning : الحمد لله ... لما كان اعظم ما يلحق الإنسان - الشيخ

Ending : و على هذا ايضا شبه بشيء واحد ، و الحمد لله رب العالمين

6. Risāla-e-Jabr wa Ikhtiyār, on ff. 30v-35v.

Another copy of the same. Refer Nos. 3028/2 and 3029/6.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

7. Risāla-e-Sawāl wa Jawāb, on ff. 36-39v.

A collection of queries made by Amirzāda Iskandar, and the replies given by Mīr Sayyid Sharīf.

Beginning : و به صفحه كل سقيم ، سؤالاتى كه امير زاده اسكندر - الشيخ

Ending : و اشاره ایشان بتوحيد از آنجا ناشی گردد ...

و هو اعلم بحقایق الكل

3. Samā', on ff. 5v-9.

A tract on the controversial topic of religious music, by the same.

4. Khwāb, on ff. 9-10v.

A reply to a query on nocturnal pollution.

5. Kamāl-e-Qudrat, on ff. 10v-13.

A tract on the omnipotence of God.

Beginning : حمد ببعده و ثنای ببعده مر خدا یراکه مومنانرا - السخ

Ending : نیز واقع است - والله تعالى أعلم ، علم الإنسان ما لم يعلم

ff. 13. ll. 15. S. 9.3×6.2 "/ 23.8×15.6 cms.

Written in ordinary script. A late 13th cent. copy.

Worm holes. Fair conditon. Not bound.

3029

Aq. 146.

بمجموعه

(MAJMŪ'A)

This copy contains the following works :—

1. Nūru'l-Hidāya, on ff. Iv-9.

Another copy of the same. Refer No. 3018, 3019 and 3029/1.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

2. Nathru'l-Lu'ālī, on ff. 10v-11v.

A collection of the Arabic saying of Ḥaḍrat 'Alī, arranged alphabetically.

Beginning : حرف الآف - إيمان المرء يعرف بإيمانه ، أخوك من
وأخاك في الشدة - السخ

Ending : يأس القلب راحة النفس ، يسعد الرجل لمصاحبة السعيد - تم

A controversy on the parentage of Ruqīyah and Umm-e-Kulthūm (wives of Ḥaḍrat 'Uthmān), whom the Sunnites claim as the daughters of the holy Prophet. After the death of Ruqī'yah, Umm-e-Kulthūm was married to Ḥaḍrat 'Uthmān.

Beginning : ترقیم یافته بود که بعض شیعہ میگویند که حضرتین رقیہ
و ام کلثوم - الخ

Ending : شیعہ ست کبری - کبرت کلمۃ مخرج من افواہہم -
والسلام من اتبع الہدی

2. Tanbīhu's-Sālik, on ff. 6v-8v.

A tract refuting the Shiite allegation that 'muta' is permissible with the Māliki school of the Sunnites.

Beginning : برضما ر اہل تدقیق و امعان نظر مخفی و مستتر نخواہد
بود کہ - الخ

Ending : باز حمل آن اخبار بر تقیہ چرا - والسلام علی من اتبع الہدی

ff. 8. ll. 12. S. 7.1 × 4.5" / 18.0 × 11.4 cms.

Written in good nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Rubrications. Good condition. Bound.

3028

Tas. 248/5-9.

مجموعہ

(MAJMU'A)

This copy contains the following notes:-

1. Rūyat-e-Ḥaqq, on ff. Iv-3.

A tract on God's vision.

2. Jabr wa Ikhtiyār, on ff. 3-5v.

Another tract on Sunnite beliefs by Shujāu'ddin Abū 'Abdullah a'l-Ḥusain.

2 Saba' Sayyāra dar Radd-e-Mulhidīn-e-Badkārāh, on ff. 22v-54v.

A short treatise refuting a note written by a Shiite of Ellore. The work is in seven parts, hence the title. It deals with the following points:-

- a. Is it in order to make fun of Allah and the Quranic text? on f. 24v.
- b. God is the best judge, on f. 30v.
- c. Godhead (الهيات) on f. 36.
- d. Cleanliness (طهارت) on f. 40.
- e. Prayers, on f. 45.
- f. Marriage, on f. 49.

A few rubā'is in which the Shiite had mentioned many controversial topics, on f. 51v.

List of Shiite works at the end.

Beginning : بعد حمد حضرت الهی تعالی و تعظیم و نعت جناب رسالت
پناهی - السخ

Ending : خدام جناب ما که شیعه باشند - هستند بدان خلق و اهل از رجال

ff. 54. ll. 12. S. 7.1 x 4.4" / 18.0 x 11.2 cms.

Written in ordinary nasta'liq. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Fair condition. Bound.

3027

Aq. 140.

مجموعه

(MAJMU'A)

This copy contains a few folios out of a bigger copy as per original foliation. It has two works:-

1. Raddu'l-Buhtān'l-Mauhām, on ff. 2v-6.

2. *Risāla dar Khilāfat*, on ff. 3-68.

A treatise dealing with the Shiite claims for the right of *Ḥaḍrat 'Alī* to the *Khilāfat*. This copy is defective in the beginning.

Beginning: abruptly. در استخراج مسائل از قرآن یا قول حضرت رسالت
بناء علیه السلام - الخ

Ending: امید که عذر مقبول اقتدا انشاء الله تعالی والحمد لله -
یا ارحم الراحمین

ff. 68. ll. 12. S. $7.3 \times 4.7^{\frac{1}{2}}/18.4 \times 11.8$ cms.

Written in clear *nasta'liq*, in *Rabī' I*, 1000/December, 1591.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Preserved in a portfolio.

Seals 1. *Ṣadr-e-Jahān*, صدر جهان خادم شرع نبی

2. *Munirū'l-Mulk*, 1206.

منیر الملک - ۱۲۰۶

3026

Aq. 13.

مجموعه

(MAJMU' A)

This copy contains two works:-

1. *Ida'atu'sh-Shama' li Izāḥati Zalāmi'l Muta'*, on ff. 1-21v.

An anonymous treatise refuting the Shiite claim for the legality of *muta'*. The title means (kindling of light for driving away the darkness of *muta'*).

Beginning: الحمد لله الذى متم اهل السنة والجماعة باطاعة كتاب وسنة
نبی الشفاعة - الخ

Ending: و تفصیل این بجهل در رسائل اینجانب باید دید
والسلام علی من اتبع الهدی

Beginning : الحمد لربه والصلاة على حبيبه وآله وصحبه بعد ازين معلوم - الخ

Ending : على اكرم السجيات وعلى محبوبه الرفيع المقامات

ff. 7. ll. 12. S. 7.1 × 4.3⁷/18.0 × 10.8 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 13th cent. copy.

European paper. Rubrications. Fair condition. Bound.

3024

Aq. 70. رسالة رد شيعه

RISĀLA-E-RADD-E-SHĪ'AH

An anonymous treatise refuting the Shiite allegations against the first three Orthodox Khalifs.

Beginning : الحمد لله الذى تقدر عن ادناس الحدوث والإمكان - الخ

Ending : فقال فى ذلك ابو زهير البشارى السعدى شعر

ff. 14. ll. 23. S. 10.6 × 6.9⁷/27.0 × 17.4 cms.

Written in good naskh and nasta'liq. An early 14th cent. copy.

European paper. Good condition. Not bound.

3025

Aq. 120. مجموعه

(MAJMU'A)

This copy contains two works :—

1. Miftāḥu'l-Ghaib, on ff. Iv-2v.

Just two folios out of a work.

Beginning : بدان هداك الله كه چون آدمى قابل علم و تكليف
مكلف است - الخ

Ending : abruptly. اين معنى اورا يقين ميشود بنوعى كه اصلا احتمال - الخ

Beginning :

بعض شيعه اثنا عشریه این زمان از مقدمه شرح
دیوانی که - السخ

Ending :

آن امامیه را که مخالف خود اند بر اثنا عشریه محول نمودند
والسلام علی من اتبع الهدی

ff. 7. ll. 12. S. 7.1×4.4 "/ 18.0×11.0 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Rubrications. A few worm holes. Good condition. Bound.

3022

- Aq. 105. فیض قدوسی در بیان اختلال کلام طوسی

FAIḌ-E-QUDDŪSĪ DAR BAYĀN-E-IKHTILĀL-E-TŪSĪ

An anonymous tract explaining the confusion found in Naṣīru'ddīn Tūsī's assumptions on certain basic points of Shiite creed.

Beginning : حمد فراوان و شکر بی پایان حضرت حکیمی را سزید که - السخ

Ending : علی سید الموجودات و آله اولی الدرجات و اصحابه
ارباب المقامات

ff. 15. ll. 12. S. 7.1×4.5 "/ 18.0×11.2 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy.

European paper. Worm holes. Fair condition. Bound.

3023

Aq 101.

عین الانصاف

'AYNU'L-INṢĀF

A collection of short critical notes on a few points selected from the first six risālas of Kitābu'r-Rasā'il, compiled by a Sunnite whose name is not given.

A. Nm. 686/2.

رسالة سؤال وجواب

RISĀLA-E-SAWĀL WA JAWĀB

A treatise on controversial topic about the supremacy of the Shiite faith over sufism, compiled by an anonymous person in the form of questions and answers. The answers are by a person of Faiḍābād.

Beginning :

الحمد لله الذى... اما بعد بايد دانست كه درين ايام

بفصل - الخ

Ending :

و اياك ممن يدكر فتنفعه الذ كرى

ff. 53. ll. 10. S. 9.0 × 5.8"/23.0 × 14.8 cms.

Written in bad script, by Mirza Shāhsawār Baig, on 8 Ṣafar 1245/9 August, 1829, at Hyderabad.

Dampness stains. Fair condition. Not bound.

Aq. 59.

رد الفضول

RADDU'L-FUDŪL

An anonymous tract refuting the Shiite claim based on the work of the celebrated author of Jāmi'u'l-Uṣul fī Aḥādithi'r-Rasūl, Ibn Athīr-Jazarī, (d. 606/1210), a Sunnite quoted by Mir Ḥusain Maibadhī, (d. 890/1487). Maibadhī was the commentator of Hidāyatu'l-Ḥikmat, and Fawātiḥ, a commentary on the Diwān of Ḥaḍrat 'Alī. According to him the eighth Shiite Imām states in his preface that Abu'l-Ḥasan Riḍā (d. 203/818) was the founder of the Shiite sect.

The full title of the work is رد الفضول المتعلق بقول جامع الأصول

ff. 39. ll. 9. S. 6.7×4.4 "/ 16.8×11.0 cms.

Written in ordinary naskh. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Not bound.

3018

Aq. 145/1.

نور الهداية

NÖRU'L-HIDĀYA

An anonymous tract showing how a born Sunnite having studied religious books had become a Shiite, and advocated the rights of Ḥaḍrat 'Alī to the Khilāfat.

Beginning :

حقيقت احمد مختص بمجناب حضرت وجودی است

عز و جل - الشيخ

Ending :

فارجع إليه وكن من الشاكرين

ff. 16. ll. 15. S. 9.6×5.3 "/ 24.2×13.4 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq, in 1208/1794.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

3019

Tas. 148/3.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 12. ll. 15. S. 9.2×5.6 "/ 23.4×14.2 cms.

Written in ordinary naskh, by Mulla Muḥammad Yūsuf, on 27 Dhīḥajja, 5 Julūs = 1124/14 January, 1713.

Worm holes. Fair condition. Not bound.

ff. 25. ll. 12. S. 7.1×4.5 ; $4.7 \times 2.6^*$ / 17.8×11.2 ; 12.0×6.6 cms.

Written in good nasta'liq. An early 14th cent. copy.

European paper. 'Unwân. Gold ruled borders. Rubrications. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

3016

Aq. 68. رساله در اثبات خلافت حضرت علی

RISĀLA DAR ITHBĀT-E-KHILĀFAT-E-HADRAT 'ALĪ

A few pages out of a work that deals with the right of Hadrat 'Alī to succeed the holy Prophet.

Beginning: abruptly. خلافت نداشته و نصی بر خلافت او نبوت پیوسته - السخ

Ending: abruptly. و بر بطلان این اعتقاد هم عقل شهادت میدهد

ff. 7. ll. 15. S. 7.6×4.3 ; $4.8 \times 2.0^*$ / 19.0×10 ; 12.0×5.0 cms.

Written in excellent naskh. A late 11th cent. copy.

Gold sprinkled paper. Gold ruled borders. Good condition. Not bound.

3017

Aq. 133. نصرة المؤمنین فی کشف شبهات المعاندين

NUṢRATU'L-MU'MINĪN FĪ KASHFI'SH-SHUBHĀTU'L-MU'ĀNIDĪN

An anonymous treatise by a Shiite in which he has refuted the Sunnite claim for the Khilāfat of the first three Orthodox Khalifs. Marginal glosses.

Beginning: الحمد لله الذى... اما بعد چنین گوید احقر العباد که این رساله ایست - السخ

Ending: آن شیر دلاور که برای طمع نفس درخوان جهان پنجه نیاورد علی بود

ff. 180. ll. 9. S. 8.2×5.5 ; 5.2×2.9 "/ 20.8×13.8 ; 13.2×7.4 cms.

Written in good nasta'liq, by Mirza Abu'l-Qāsim a'l-Mūsawī, a'sh-Shirāzī, on 10 Ramaḍān, 1302/23 June, 1885.

Good 'unwān. Interlinear gold work on first two pages. Gold ruled borders. Rubrications. Worm holes. Fairly good condition. Bound.

3014

Aq. 115.

Another copy of the same, but defective by a folio in the beginning.

Beginning: abruptly. از مؤمنین - عادت قرین از ما کنین حیدر آباد - الشيخ

Ending: as usual.

ff. 121. ll. 11. S. 10.6×7.0 ; 7.4×4.1 "/ 26.8×17.6 ; 18.8×10.4 cms.

Written in good nasta'liq, by Mirza Abu'l-Qāsim a'sh-Shirāzī, on 8 Ramaḍān, 1302/21 June, 1885.

Rubrications. Gold and coloured ruled borders. Dampness stains. Good condition. Preserved in a portfolio.

3015

تحفة منقلبه

Aq. 26.

TUHFA-E-MUNQALIBAH

A short treatise compiled in 1313/1895, by Riyādu'l-Ḥasan Bāqir 'Alī a'n-Naqwī a'l-Bukhārī, in which he has selected fourteen points from Tuḥfa-e-Ithnā 'Ashariyah of Shāh 'Abdu'l-'Azīz, and has refuted them.

Beginning: الحمد لله على فضله و نواله و الصلاة على رسوله محمد وآله أما بعد
چون در بارگاه عظمت - الشيخ

Ending: اینست مختصری از الزام این عزیز والا مقام و الله عزیز ذو انتقام

ff. ii + 142 ll. 17. S. 11.5 × 7.7¹¹ / 29.0 × 19.6 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by Wārith 'Alī, on 17 Dhīqa'da, 1306/15 July, 1889.

European paper. Rubrications. To be repaired, and re-bound.

Autograph of the author.

3013

Aq. 14.

انوار الأبصار في تحقيق مراتب النبي المختار وائمة الأطهار

ANWĀRU'L-ABŞĀR FI TAḤQĪQI MARĀTIBI'N-NABĪ'IL-
MUKHTĀR WA A'IMMATI'L-A'T-HĀR

A treatise on Shiite beliefs compiled by Muḥammad 'Alī Khurāsānī, dealing with the supremacy of Imāmat over Nabūwat, over which, during 1302/1885, the Shiites of Hyderabad had divergent views.

The work is divided into a muqaddima, and five maqṣads.

Beginning : الحمد لله الذي وفقنا التمسك بدين الإسلام ... اما بعد فيقول
احوج الناس إلى ربه الغنى - النخ

Ending : يك از افراد انبياء علم بهم ائمتا نبوده است - هداكم الله ...
شا كرا على نعماته

The work ends on f. 168 followed by Mas'ala-e-Mi'rāj, on ff. 169-180, a short treatise on the question of Ascension of the holy Prophet. It is in reply to the question of a Ṣūfī whether the Ascension was as a Prophet or in the capacity of Wilāyat. It forms an appendix to the bigger work.

Beginning : والحمد لله وبعد اين جواب از سوال و تشكيكي است كه
فهميدن آن از جهت - النخ

Ending : وحسرت يوم القنادر وقد فرغت من تسويد الجواب وانا المحبب
محمد على الخراساني

Aq. 90. السيف المسلول في قتل اعداء الرسول

AS-SAIFU'L-MASLUL FI QUTLI A'DÄ'T'R-RASUL

A treatise on Shiite beliefs dedicated to Mukhtāru'l-Mulk Sir Sālār Jung, (d. 1300/1883), by the author Mir Aḥmad 'Alī Mūsawī.

The work is divided into a muqaddima, five maqṣads and a khātima, as under: —

Muqaddima, on f. 2. مقدمه در تحقیق معنی اولی الامر و اهل بیت و آل عبا

Maqṣad 1, on f. 8. مقصد اول در ذکر و ایمان و اسلام

Maqṣad 2, on f. 30v. مقصد دوم در ذکر اختلافات مسائل دینی که نواصب در آن اختلاف بسیار دارند

Maqṣad 3, on f. 73v. مقصد سوم در ذکر اختلافات مسائل آب طاهر و آب نجس و مسائل وضو و غیره

Maqṣad 4, on f. 90v. مقصد چهارم در ذکر اختلافات مسائل نماز

Maqṣad 5, on f. 118v. مقصد پنجم در ذکر مسئله غیبت حضرت امام محمد مهدی صاحب الزمان و غیره

Khātima, on f. 133. خاتمه در ذکر تحریفات مسائل

Table of contents in the beginning.

Beginning : سپاس بیقیاس مر خدایراست که قد کرده نغای
بی منتهایش - الخ

Ending : فی الجود و الإکرام ولی الله المرجع و المآب لأنه ولی الخیر
و الصواب

Beginning : الحمد لله ... من خود چه کنم که در شماری باشم یا در صف
اهل دل سواری باشم - السخ

Ending : abruptly. این کلامت در مذاهب فاسد است اختلاف قید خود
بی متهاست پس چرا

ff. 104. ll. 10 to 15. S. $7.3 \times 6.0''/23.4 \times 15.2$ cms.

Written in good nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

3011

Âq. 106. القول المبین

A'L-QAWLU'L-MUBÎN

A tract compiled by Sayyid Muhammad Ghaûth GhaûthI, taakhilus Râqim, with a view to prove that Hadrat 'Alî is entitled to be called Sayyid. This work was undertaken to refute what a learned man had to say in this regard. The full title is:-

(القول المبین فی اثبات سیادت یعسوب المؤمنین)

Beginning : بعد حمد حضرت الهی و نعت جناب رسالت بنهای معلوم
طالبان آگاهی باد که - السخ

Ending : و هیچکس را مجال انکار آن نباشد - و الحمد لله اولاً و آخراً
و الصلاة والسلام ... باطنا و ظاهراً

ff. 9. ll. 12. S. $7.1 \times 4.6''/17.8 \times 11.4$ cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy.

European paper. Rubrications. Worm holes. Fair condition.
Bound.

Aq. 27. تحفة ناصريه و فوائد حيدريه

TUḤFA-E-NĀṢIRIYAH WA FAWĀ'ID-E-ḤAIDARIYAH

A tract on the Sunnite stigma on muṭā'. The author Sayyid 'Alī b. Dildār 'Alī, who was in Hyderabad during the reign of Nāṣiru'd-Daulah Āṣif Jāh IV, (1244-1272/1829/1857), and the prime ministership of Munīru'l-Mulk, compiled this work at the instance of his Shiite friends. The title contains the name of the Nizām and his prime minister Ḥaidar Yār Khān Munīru'l-Mulk.

Beginning: الحمد لله الذى صرح بحاية النساء... أما بعد بموقف عرض
برداران ايمان - الخ

Ending: آنچه سائل تغير و تحريف در نقل اين روايت نموده است

ff, 18. ll. 14. S. 9.5×6.0; 7.3×4.1"/24.0×15.2; 18.6×10.4 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. A mid 13th cent. copy.

Ordinary 'unwān. Red ruled borders, and rubrications. Fairly good condition. To be re-set in existing covers.

Aq. 151/1. ترك جوش

TARK-E-JŪSH

A treatise on the Shiite claim for the right of Ḥaḍrat 'Alī to succeed the holy Prophet. The author, 'Alī Qulī, has criticised the Ṣūfis.

List of contents in the beginning.

Beginning : الحمد لله . مظهر الحق بنصب الأدلة . . . أما بعد واضح
ولا يخفى باد بر جميع كافة انام كه - الشيخ

Ending : پی تاریخ گفت از های هاتف + سه نفرین بر هر - خدایه

ff. iii+117. ll. 17. S. 8.5×5.7"/21.4×14.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Mirza Nūr 'Alī Baig Ma'mūr Khān of Bījāpūr, on 29 Dhīḥajja, 1239/15 January, 1877, at Hyderabad.

Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

3008

Aq. 104. الفوائد الطائفه في اثبات الرابطة

A'L-FAWĀ'IDU'T-TĀ'IFAH FI ITHBĀTI'R-RĀBIṬAH

A tract compiled by Aḥmad Sa'īd a'l-Mujaddidī in which he has refuted the allegations of a section of the Sunnites against the followers of the Mujaddadī branch of the Naqshband Order. The charge was that the usual routine of the Ṣūfīs (رابطة معموله) is heresy or innovation (بدعة).

The charges are reproduced under the heading (قال) he says and the replies (اقول) I say.

Beginning : الحمد لله العلى الأعلى . . . ميگويد احقر عباد الله المجيد احمد سعيد
المجددى - الشيخ

Ending : سبحان ربك رب الزرة عما يصفون . . . رب العالمين

ff. 11. ll. 11. S. 10.6×6.1"/26.8×15.6 cms.

Written in ordinary nasta'liq, in 1266/1850.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

ff. 286. ll. 19. S. 11.9×7.9"/30.0×20.0 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Rubrications. A few worm holes. Good condition. Bound.

Ref: Bk. 1342.

3006

Man. 21.

ذخيرة العقبي

DHAKHĪRATU'L-'UQBĀ

A controversial treatise on famous Tradition known as Ḥadīth al-Thaḡalain compiled by Munshī 'Āshiq 'Alī Khān, refuting the Shiite viewpoint of Subhān 'Alī Khān. The work was compiled in 1252/1837. A reference is made to Tuhfa-e-Ithnā 'Ashariyah of Shāh 'Abdu'l-'Aziz.

Beginning: افتخار المحدثين و المتكلمين حضرت مولانا شاه عبد العزيز قدس سره كه - الشيخ

Ending: دوستدار رسول و آل و يم + دشمن خصم بد حصال و يم

ff. 42. ll. 14. S. 8.9×6.1"/22.8×15.6 cms.

Written in clear nasta'liq, with several corrections by the compiler. A mid 13th cent. copy.

'Unwān. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

An autograph copy.

Printed at Calcutta, in 1253/1838.

Seal of 'Āshiq 'Alī.

عاشق علی

3007

Aq. 89. سنان حیدریہ کاسر صدور ملحدان ہندیہ

SINĀN-E-ḤAIDARĪYAH KĀSIR-E-ŞUDŪR E-MULḤIDĀN-E-HINDIYAH

A controversial treatise compiled in 1252/1836, by Kalbe 'Alī, in which he has tried to prove that the Sunnites are Khwārij, anti-'Alī and his family.

RISĀLA-E-MUNĀẒIRAH

A controversial work compiled by Salāmatu'llah, takhalluṣ Kashfī, in about 1250/1834, on a religious query instituted by the Shiites on the martyrdom of Imām Ḥusain.

The editor, Aḥmad b. Maḥmūd Fārūqī Shāhjahānābādī, who was a pupil of the author, having performed the pilgrimage returned to Hyderabad, and then left for Calcutta, and finally arrived at Lucknow in 1240/1825. Since he was fond of knowledge he became a devout disciple and pupil of Shāh Salāmatu'llah, and completed his education under him.

Eventually, on 10 Muḥarram, 1249/30 May, 1833, Salāmatu'llah held a majlis and began his sermon on the martyrdom of Imām Ḥusain, based on the famous book of Shāh 'Abdu'l-'Azīz, Sirru'sh-Shahādātāin. This sermon was highly appreciated by the whole congregation of the Sunnites, but the Shiites who were present there did not relish. Thereupon the Shiites advocated that the martyrdom of Imām Ḥusain is not acceptable to the Sunnites whereas the Khilāfat of Yazīd is. They pressed for a reply in writing to which the author reluctantly agreed, as he wanted to reply verbally.

The istiftā (religious query) was instituted through a judge of Lucknow—Qāḍī Zuhūru'llah—after which the Shiites wrote a reply under the title of Thamaratu'l-Khilāfat in which Salāmatu'llah was severely ridiculed, and was beleaguered so much that he had to flee from Lucknow, and took refuge in Kānpūr. Here also he was put to a lot of inconvenience, whereupon he dictated this work to the editor. It was completed in 1250/1834.

Beginning : الحمد لله الذى الحق عنده يعلم ولا يعلم . . . أما بعد برکسانیکه
محرز شیوة انصاف - الخ

Ending : کشفی خمش که خصم تو معنی شناس نیست
با همچو کس نزاع و محاکمه حاجت است و اذا بلغ الخطاب . . .
والاعتصام فی کل مرام

ff. 183. ll. 17. S. $9.2 \times 5.8''/23.4 \times 14.8$ cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, on 10 Dhīḥajja, 1240/26 July, 1825.

Rubrications. Dampness stains. Good condition. Bound.

3004

Aq. 16. **ايضاح الطاقة المقال في تفصيل الجواب**

IYDAH LATĀFATU'L-MAQĀL FĪ TAFṢĪLI'L-JAWĀB

This copy contains two works :—

1. Fatāwi, on ff. Iv-63v.

A collection of fatwas asked for by the Shiite 'Ulamā together with their answers along with counter queries and counter answers. A battle of wits between the Shiites and the Sunnites of Lucknow, Delhi and Rashīdu'ddīn Khān Dihlawī.

Beginning :

چه می فرمایند علمای دین و مفتیان شرع متین در ازین
مسئله که در کتاب اشباه نظایر واقع است - الخ

Ending :

و أن يحشر في تحت لواء الرسول والآل والأسباط

2. The main work, on ff. 643v-408.

It deals with the refutations of the Sunnites compiled by the same Rashīdu'ddīn Khān.

Beginning :

الحمد لله الذي جعل العلم علماء... و اقول بحري دلیدیر
و بحریر بے نظیر - الخ

Ending :

وعلى آله خير آل واصحابه خير اصحاب بفضل رب المتعال

ff. 408. ll. 19. S. 10.8×5.9 ; $8.5 \times 4.4''/27.2 \times 14.8$; 21.4×11.0 cms.

Written in ordinary nasta'liq. Amid 13th cent. copy.

Coloured ruled borders. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Beginning :

الحمد لله الذى هدانا لهذه الدينه الذى اصطفاه . . . اما بعد احواج

المربوبين الى رحمة ربه البارى - الشيخ

Ending :

ويرشد به كل معاند و الحمد لله . . . اهل بيته الطاهرين

الى يوم الدين

fl. 256. ll.25. S. 12.2×8.1; 9.6×5.6^a/30.8×20.6; 24.4×14.2 cms.

Written in clear naskh, by Aḥmad 'Alī, in Rabi' II, 1249/August, 1833, during the reign of Naṣīruddin Ḥaidar, King of Oudh.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

3003

Aq. 61.

ذروة سنام الإسلام لتأييد دين الإسلام

DHURWAT SANĀMU'L-ISLAM LI-TA'IDI-DĪNI'L-ISLAM

A treatise on Sunnite theology and sufiic topics, compiled in 1293/1823, by Muḥammad Amīruddīn b. Shāh Faḍlullāh al-Qādirī of Sūnā, in, the Punjab who had settled down in Aḥmadnagar, for his son, Muḥammad Ibrāhīm who was going to Bombay with a Christian in search of employment in 1238/1822. It was to serve as a guide for his son so that he may not get converted to Christianity.

The date of compilation and subsidiary title are given in a qit'a on the fly-leaf سال تالیف کتابم در ورق یهست شمیر برهته دادحق - ۱۲۳۹ هـ

Beginning :

ربنا لا ترغ قلوبنا . . . بعد ستایش و نیایش

حضرت آمريدگار عالم - الشيخ

Ending :

بالظاهر و الباطن بكلمة الله العليا وصلى الله على خير خلقه . . .

يا ارحم الراحمين

Part II, on ff. 1v-46v.

Beginning : اثبات نبوت بطريقى ... بتواتر رسيدہ کہ دعواى
نبوت - الخ

Ending : هذا ما فهمت والله اعلم بالصواب ... والحمد لله رب العالمين

Part III, on ff. 47-122v, deals with the twelfth Shiite Imām, Mahdī.

Beginning : بشرة للخاطب بالنبابة المعنوية او اعلام له بأمر صاحب
الأمر عليه السلام - الخ

Ending : على محور القطنة من البطنة خصوصا من الوجوه
المحرمة او المشتبهة

- The work is half Arabic and half Persian, with profuse marginal glosses and Persian verse.

ff. 122. ll. 12. S. 7.8×4.6"/19.8×11.4 cms.

Written in clear naskh. A late 13th cent. copy.

Rubrications. Good condition. To be repaired, and re-bound.

3002

Aq 98. الضربة الحيدرية

A'D-DARBATU'L-HAIDARIYYAH

A controversial work on muta' compiled in 1238/1823, by Ḥamīdu'-dīn, better known as Sayyid Bāqir Shāh an-Naqwī a'l-Bukhārī.

It is stated that one Sayyid Muḥammad compiled a book called Bāraqa-e-Ḍaighamiyyah which was refuted by a Sunnite, Muḥammad Rashīduddin Khān Dihlawī, (d. 1243 or 1249/1827 or 1833), in his work called Shawkat-e-'Umariyyah. When a few folios of the latter were brought by Musharraḥ 'Alī, (Sayyid 'Alī b. Ḥasan a'l-Askarī, d. 1240/1824) to Ḥamīduddīn in the month of Jumāda II, 1238/February, 1823 for refuting the same he declined, but when the whole book came to him he undertook this work, the full title of which is:-

الضربة الحيدرية لكسر الشوكة العمرية وبقية بالسطوة العلوية على
العداوة العدوية

The work is in five volumes, but this copy contains Vol II.

Beginning : الحمد لله الذى جعل رجال اسانيد احاديثنا . . . بعد از اين اين مجلد
ثالث است - الخ

Ending : پشت و پهلويش زدند كه بيهوش شد

ff. 117. ll. 19. S. 10.6 × 6.2" / 26.8 × 15.8 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seal of Sayyid Maqbūl Husain.

سيد مقبول حسين

Ref : Bk. 1339.

3001

Aq. 44. جواب رساله كشف الغطا

JAWĀB-E-RISĀLA-E-KASHFU'L-GHITĀ

A treatise refuting what the same 'Abdu'l-'Aziz had written in his book regarding the right of Ḥaḍrat Abū Bakr Ṣiddīq to succeed the holy Prophet. Taking an extract from his work (ff. Iv-2, and Iiv-12), a Shiite, whose name is not given has refuted his assertions, and argued in favour of Ḥaḍrat 'Alī, quoting what 'Aṭṭār, Maulānā Rūmī, Sa'dī and Ḥāfiz have said.

This controversial work is divided into three parts :—

Part I, on ff. Iv-10v.

Beginning : اثبات نبوت بطريقى كه جميع اهل قبله را غير آن
مسلكى نيست - الخ

Ending : والحمد لله ما من به والصلاة والسلام . . .
اوله واوسطه و آخره

ff. 96. ll. 19. S. 10.2×6.4; 7.4×3.9"/26.0×16.2; 18.8×9.8 cms.

Written in excellent nasta'liq, by Ḥasan b. 'Abdul-Majīd a'l-Ḥusainī wa'iz a'l-Iṣfahānī, on 2 Sha'bān, 1271/20 April, 1855.

Glazed and gold besprinkled paper, a few of which are coloured blue and light green. Double gold ruled borders. Good condition. To be repaired, and re-bound.

Ref: Mashhad Library, No. 76.

2999

Aq. 7. إحياء السنة وإماتة البدعة بطعن الأسنة

AHYĀU'S-SUNNAT WA IMĀTATI L-BID'AT
BI TA'NI'L-ASINNAT

A controversial work compiled by Sayyid 'Alī, better known as Didlār 'Alī Naṣīrābādī, Mujtahid of Lucknow, (d. 1235/1820).

Beginning: الحمد لله الذى اقامت البدعة... اما بعد فهذا سفر الرابع من
الاسفار الأربعة - الشيخ

Ending: بحمد الله بآخر رسيد اين رد كتاب معاد ياصى كه ازاين بد عاقبتى
او واضح كرديد

ff. 137. ll. 13 to 17. S. 9.0×5.8"/22.6×14.8 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. An early 13th cent. copy.

European paper. Rubrications. Good condition. Bound.

Printed in 1281/1864.

3000

Aq. 130. نزهة الاثنا عشرية

NUZHATU'L-ITHNĀ 'ASHARIYYAH

A controversial work compiled by Mirza Muḥamad b. 'Ināyat Aḥmad Khān, takhalluṣ Kāmil, (d. 1235/1819), in order to refute what Shāh, 'Abdul-'Azīz Muḥaddith Dihlawī, (d. 1239/1824), had written in his Tuḥfa-e-Ithna 'Ashariyyah.

Fath 'Alī Shāh Qāchār of Persia, (1211-1250/1797-1834). The date of compilation is given on f. 9:—

ز تاریخش از عقل کردم - وال + بگفتا که هذا کتاب مبین - ۱۲۳۱ هـ

The work is divided into five bābs and Khātima.

This copy is left incomplete at the end

Beginning : ای نام تو بهترین سر آغاز + بی نام تو نامه کی کنم باز

Ending : یعنی که چیزی که در نزد عثمان بهم میرسد اینست که
حکم رجم کند

ff. 158. ll. 14. S. 9.5 × 5.9; 6.3 × 3.6"/24.0 × 15.0; 16.0 × 9.0 cms.

Written in good naskh. A mid 13th cent. copy.

Good 'unwān. First two pages decorated. Gold ruled borders. Headings in red. Good condition. Bound.

2998

Aq. 46. سلم الاسلام (حجة الاسلام وبرهان الملة)

SULLAMU'L-ISLĀM (HÜJJATU'L-ISLĀM WA
BURHĀNU'L-MILLAT

A treatise compiled in 1232/1816, by Mullā 'Alī Nūrī, surnamed Hakīm, refuting Christian belief, and asserting the right of the holy Prophet and other matters pertaining to his life and mission according to Shiite viewpoint.

This copy is defective in the beginning. One folio is also missing in between ff. 52 and 53. It was sent to the Collector, Nawab Sālār Jung with a letter written by a Shiite learned man, Abu'l-Hasan Iṣfahānī through his son, Muḥammad Riḍā'i Kafā'i who happened to be present during the Silver Jubilee celebrations of H.E.H. the Nizam, in 1937.

Beginning : abruptly. سرفراز است پس مبنی برای بن برا ملک و ملت - الخ

Ending : اکنون عاصی باعاده آن نبی ستانده... الحمد لله الذی... الهدی

Aq. 115. كشف الشبهة عن حكم المتعة

KASHFU'SH-SHUBHA 'AN HUKMI'L-MUTA'

A tract compiled in 1225/1810, by Aḥmad b. Muḥammad 'Alī b. Bāqir a'l-Iṣfahānī, better known as Bihbānī, in reply to Shāh 'Abdu'l-'Azīz Dihlawī's work called Tuḥfa-e-Ithnā 'Ashariyyah. The Shiite practice of muta', (temporary marriage) is upheld. Amongst the Sunnite this practice is illegal. This controversial work was written at the instance of Kāẓim 'Alī Khān of 'Azīmābād (Patna).

Beginning : الحمد لله الذى ارسل محمدا لإرشاد الأمة وكشف الشبهة ...
و بعد چنین گوید مذهب جانی - البخ

Ending : وقع الفراغ من تسويد هذه الرسالة المتعة في الشهر الثاني ...
من الهجرة النبوية على مهاجرها

ff. ll. 21. S. 8.2 × 4.8*/20.6 × 12.2 cms.

Written in clear nasta'liq, khafi script, for Mir Mājīd Ḥusain, on 26 Ramaḍān, 1225/24 October, 1810.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seal of Iftikhāru'd-Daulah Mushiru'l-Mulk Farzand Muḥammad Sharīf Khān Bahādur Saif Jung.

افتخار الدوايه مشير الملك فرزند محمد شريف خان بهادر سيف جنگ

Aq. 113. كتاب مبین

KITĀB-E-MUBĪN

A treatise compiled in 1231/1816, by Aḥmad b. Muḥammad Ḥusain a'l-'Alawī a'l-Ḥusainī a'l-Astrābādī, in which he asserts the rights of Ḥaḍrat 'Alī to succeed the holy Prophet. This work is dedicated to

The work is divided into twelve bābs and a khātima.

Beginning: الحمد لله و كفى و السلام على عباده الدين اصطفى . . .
اما بعد ميگويد بنده درگاه - الخ

Ending: برحمتك يا ارحم الراحمين و آخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين

ff. 247. ll. 19. S. 11.9×8.4"/30.0×21.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent copy, made from a printed work of 1215/1800.

Rubrications. Dampness stains. Fair condition. To be re-bound.

2995

Aq. 60/1. رسالة اثبات لعن بر منافقين

RISĀLA-E-ITHBĀT-E-LA'N BAR MUNĀFIQĪN

A Persian paraphrase of the Arabic work of Zainu'ddīn 'Alī b. 'Abdu'l 'Alī, compiled by Muḥammad b. Abī Ṭālib Astrābādī for those who are not well versed in Arabic. It asserts the right of the Shiites to abuse those who, according to their creed, have usurped the rights of Ḥaḍrat 'Alī to succeed the holy Prophet.

The work is divided into a muqaddima, a maqṣad in nine faṣls, and a khātima in two baḥath.

Beginning: سپاس بيقياس لايق خالقيست . . . آگاه و مختصان درگاه
را باشد - الخ

Ending: حديث رسالت پناهی شد باطل و عاقل خواهد بود و الله یهدی
الی صراط مستقیم

ff. 33. ll. 14. S. 9.4×6.1"/23.8×15.4 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by Mir Qanbar 'Alī, on 3 Rabi' I, 1196/16 February, 1782.

Rubrications. Worm holes, repaired. Fair condition. To be repaired, and re-set in existing covers of good leather work.

ff. 37. ll. 15. S. 8.4×4.9 ; 6.2×3.2 "/ 21.2×12.4 ; 15.2×8.0 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2993

Aq. 71. رسالة مناظرة يوسف و نور الله

RISĀLA-E-MUNĀZIRA-E-YŪSUF WA NŪRULLAH

A collection of letters on religious controversy between Amīr Yūsuf 'Alī, a'l-Husainī a'l-Astrābādī and Qāḍī Nūrullah a'l-Husainī a'sh-Shushtarī on the topic of the knowledge of the holy Prophet about conscience of all men etc.

در باب اطلاع حضرت پیغمبر صلی الله علیه و سلم بر ضمائر جمیع
مردمان از جمیع احوال واقع شده

Beginning: الحمد لله... اما بعد نموده بنده انیم الراجی الی غفران
الملك الکریم الهادی - الخ

Ending: درین گنبد به نیکی برکش آواز + که گنبد هرچه کوئی کوبدت باز

ff. 85. ll. 17. S. 8.9×5.7 "/ 22.4×14.6 cms.

Written in good nasta'liq, in 1153/1740, at Belasore Port in Orissa.

Headings in red. Worm holes, repaired. Fairly good condition.
Bound.

2994

Aq. 24. تحفة اثنا عشرية

TUḤFA-E-ITHNĀ 'ASHARIYAH

An exposition of Shiite creed compiled in 1200/1786, by Ḥāfiẓ Ghulām Ḥalīm b. Shaikh Quṭbu'ddīn Aḥmad b. Shaikh Abu'l-Faiḍ Dihlawī, a Sunnīte.

Muhammad b. Abū Ṭālib b. 'Abdu'llah b. 'Alī alias 'Alī, surnamed Ḥaẓīn.

This work was started at Mashhad in 1141, and the title is the chronogram for that year (f. 10). It was completed in 1144/1731, at Mecca, (f. 90v).

Beginning : الله لطيف اعباده وسلامه على رسوله الهادي الى سبيل رشاده
وبعد - الشيخ

Ending : لقد امنت نفسي بكم في حياتها + و اني لا ارجو الا من بعد وفاتي

ff. 90. ll. 14. S. 8.4 × 5.3^{*}/21.0 × 13.4 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq, in 1147/1734, in the suburbs of Multān.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Seals: 1. Sayyid Mumtāz 'Alī Khān, 1186. ۱۱۸۶ - سيد ممتاز علي خان

2. 'Abbās Ibn 'Alī. ۲ - عباس ابن علي

3. 'Abbās 'Alī Khān Bahādur. ۳ - عباس علي خان بهادر

2992

Aq. 87.

خزینہ رد منافق

KHAZĪNA-E-RADD-E-MUN ĀFIQ

A short treatise compiled by Zainu'l-'Ābidin Nā'iṭī, takhallu's Dīwān, in which he refutes the beliefs of the Khārijis—anti 'Alī group—and the hypocrites. The title is the chronogram for 1147/1734.

Beginning : حمد بی حد مر خدای را که صنعت کامله بالغه جمال و جلال که مرج
البحرین - الشيخ

Ending : ارقام در آورد حق تعالی بدرجه قبول خاص و عام رساناد
بحق محمد وآله الأجداد

ff. 147. ll. 17. S. 9.0 × 5.8⁷/22.8 × 14.6 cms.

Written in ordinary naskh. An early 12th cent. copy.

Worm holes, repaired. Fairly good condition. Bound.

Seal of Haidar Yār Khān.

حیدر یار خان

2990

Aq. 91.

سيف المؤمنين في قتال المشركين

SAIFU'L-MU'MININ FI QITĀLI'L-MUSHRIKIN

A treatise refuting Judaism and Christianity compiled by 'Alī Qulī, a Christian convert to Shiite faith, during the reign of Sulṭān Shāh Husain Ṣafawī, (1105-1135/1694-1722). He quotes Bahāuddin Muḥammad, better known as Fāḍil-e-Hindī, who helped him with the Arabic and Persian paraphrase of the Latin Old Testament.

Since the Old Testament is in Five Books, the author has also divided this work into five Kitābs. This copy, however, contains Kitāb I, which deals with the Book of Genesis (سفر تکوین الخلاق) on f. 6v.

Beginning : بهترین نعمه که عندلیب زبان در بوستان زندگانی بآن ترنم
تواند نمود - الخ

Ending : روزگار ثبت گردانم ، والله الموفق والمعين . . . العلی العظیم

ff. 251. ll. 27. S. 13.1 × 8.3⁷/33.0 × 20.8 cms.

Written in good nasta'liq, on 26 Rajab, 1298/27 June, 1881.

Rubrications. A few worm holes. Good condition. To be repaired, and re-bound.

Seal and autograph of Sulaimān b. Muḥammad Kāẓim. عبده الراجی سلیمان

2991

Aq. 136.

اثبات حق لطیف

ITHBĀT-E-ḤAQQIN LATĪFIN

A treatise dealing with the rights of the Shiite Imāms to the Khilāfat, and abuses for the three Orthodox Khalifs, compiled by

Aq 4.

اثبات عقائد اثنا عشرية

ITHBĀT-E-'AQĀ'ID-E-ITHNĀ 'ASHARIYAH

A controversial treatise in which Muḥammad Bāqir Majlisī has upheld the Shiite beliefs, and refuted those of the Sunnites.

This copy is defective in the beginning.

Beginning : abruptly.

و داخل خانه خود شد و بروایت دیگر در نماز صبح
بود - الشيخ

Ending :

و در رساله جنت آثار ابراد نموده ام - رزقنا الله و سائر
المؤمنين ... الطيبين الطاهرين

ff. 149. ll. 12 to 14. S. 8.0 × 4.5 ; 6.9 × 3.4^o / 20.2 × 11.4 ; 17.4 × 8.8 cms.

Written in clear shafi'a and nasta'liq. An early 13th cent. copy, in two different hands.

Coloured ruled border. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

Seal of Banda 'Alī Ridwī, 1319. بنده علی رضوی - ۱۳۱۹

Aq. 40.

تلخیص المرام فی علم الکلام

TALKHĪṢU'L-MARĀM FI 'ILMI'L-KALĀM

An anonymous compilation of various topics of metaphysics and scholastic theology.

Beginning :

الحمد لله كما هو أهله ومستحقه ... بعد از افتتاح بنام نامی
پروردگار عالمیان - الشيخ

Ending :

شکر الله شکر الله لا حول ولا قوة الا بالله العلي العظيم

Aq. 12.

اصول فصول التوضيح

UŞUL-E-FUŞULU'T-TAWDİH

A controversy between two Shiites about the Sufic Order. Mullā Muḥammad Ṭāhir Qummī, in his work called Nujmū's-Sama wa'l-'Alam had condemned sufic beliefs, whereupon Muḥammad Taqī a'l-Majlisī (d. 1070/1660), refuted the charges and upheld the sufic beliefs. Ṭāhir Qummī thereupon wrote another treatise upholding his former condemnations and criticised Taqī Majlisī, and named his work as Tawdīḥu'l-Mashribain wa Tawqīḥu'l-Madḥhabain.

The compiler of this work, whose name is not given, has however collected all three works and given his citations (محاكمة) on each. Since his notes were lengthy, he has abridged them.

The work is divided into twenty-three bābs, and each bāb into three faṣls—1 and 3 for Ṭāhir Qummī, and 2 for Taqī Majlisī.

Muḥammad Bāqir Majlisī, (d. 1111/1700), the son of Taqī, has reviewed the works. His review is on ff. 87v-89, which is transcribed subsequently by 'Abdullah b. Muḥammad Kāẓim, on 21 Jumāda 1, 1191/27 June, 1777.

Beginning: الحمد لله... أما بعد برضاى ذاكبيه ارباب انصاف پوشيده
نماند كه - البغ

Ending: كتاب توضيح المشربين و تنقيح المذهبين را مطالعه نمايد -
والسلام على من اتبع الهدى... كثيرا

ff. 87 + 2. ll. 13. S. 8.0 × 4.8" / 20.2 × 12.2 cms.

Written in clear nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

A rare work.

2984

Aq. 78.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 45. 13. S. $9.8 \times 6.2''/24.8 \times 15.6$ cms.

Written in ordinary nasta'liq, on 25 Rabi' I, 1194/31 March, 1780.

Arabic in red. A few worm holes. Fair condition. Not bound.

2985

Aq. 144/1.

Another copy of the same.

Beginning as usual.

Ending : مذهب شیعه اختیار کردم و بران زنده باشم و بران بمیرم
انشاء الله تعالى والحمد لله... یا ارحم الراحمین

ff. 28. 11. 15. S. $7.8 \times 5.0''/19.8 \times 12.6$ cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Worm holes. Fair condition. Not bound.

2986

Man 52/2.

Another copy of the same in a condensed form.

Beginning : as usual.

Ending : بر ما کوا هست که بعد ازین از حق عدول نخواهم کرد

ff. 12. 11. 15. S. $9.7 \times 6.1''/24.8 \times 15.4$ cms.

Written in clear nasta'liq. An early 13th cen. copy.

Rubrications. Fairly good condition. Not bound.

Beginning : الحمد لله الذى نور قلوب المؤمنين بنور الإيمان... اما بعد مى گويد
روح الامين - الشيخ

Ending : و دلائل ساطعه بر موالف واضح و مخالف لايجرديد

ff. 272. ll. 27. S. 11.0 × 7.7"/27.8 × 19.4 cms.

Written in good naskh, by a pupil of the author. An early 12th cent. copy.

European paper. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2983

Aq. 120/2. رسالة يوحنا

RISĀLA-E-YŪḤANNĀ

A treatise describing how the author, Yūḥannā-e- Banī Isrā'il a'l-Miṣrī (يوحنا بنى اسرائيل المصرى) formerly a Jew, made a comparative study of all religions, and finally embraced Islām. Since the Sunnite faith is governed by four schools of jurists—Ḥanafī, Shāfa'ī, Mālikī and Ḥanbalī, it made him to adopt the Shiite faith.

Beginning : الحمد لله... حق سبحانه تعالى برهان تحقيق حجاب و تعليل
از خاطر همگنان مرفوع گرداناد - الشيخ

Ending : ترا مزدبى نهايت دهاد - بحق مجد و آله الامجاد

ff. 30. ll. 17. S. 10.5 × 6.9; 7.4 × 4.3"/26.6 × 17.6; 18.6 × 10.2 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Gold ruled borders. Worm holes, repaired. Fair condition. Bound.

Ref: IvASB. 1066; Bk. 1331.

2981

Aq. 77/1.

Another copy of the same *Risāla-e-Munāẓirah*, Ref. 2979, but containing lesser notes than the preceding copy.

Beginning : as usual.

Ending : راه حق بر همکنان ظاهر گردد و السلام علی من اتبع الهدی

ff. 56. ll. 14 diagonally. S. 8.3×4.5 "/ 20.8×11.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Muḥammad 'Aṭā. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2982

Aq. 137.

هدایه الامة فی معرفة الائمة

HIDĀYATU'L-UMMAH FI MA'RIFATI'L-A'IMMAH

A controversial work on the *Khilāfat*, compiled in 1099/1688, by Rūḥu'l-Amin b. Shamsu'ddīn Muḥammad a'l-Husainī as-Sabzwārī, in which he claims the right of succession for Haḍrat 'Alī and his descendants.

The work is divided into a muqaddima, five maṭlabs and a *khātima*, as under:—

Muqaddima, on f. 2.

Maṭlab 1, on f. 12v.

Maṭlab 2, on Qur'ānic verse indicating the Imāmat and *Khilāfat* of 'Alī, on f. 24.

Maṭlab 3, on Traditions on the same topic, on f. 64.

Maṭlab 4, on proofs for the rights of other Shiite Imāms for the same, on f. 145v.

Maṭlab 5, in refuting the Sunnite claims for the first three Orthodox *Khalifs*, on f. 177.

Khātima, on abuses for the first three Orthodox *khalifs*, 'Āyesha, the beloved wife of the holy Prophet, and Mu'āwiyah, the first Ummayyid *Khalif*, on f. 214.

ff. 58. ll. 15. S. $7.8 \times 4.7''/19.8 \times 12.0$ cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12 cent. copy.

Rubrications. Worm holes, repaired. Fair condition. Bound.

2980

Aq. 76.

مجموعه

MAJMU'A

This copy contains three works by the same 'Abdu'l- Wahāb.

1. (Risāla-e-Munāẓirah), on ff. Iv-53.

A revised version of the same. Ref. No. 2979.

Beginning : as usual.

2. Abṣāru'l-Mustabṣerīn, on ff. 53v-100.

Another copy of the same. Ref. Nos. 2977 and 2978.

Ending : as usual.

3. Haft-band, on ff. 116v-119v.

Persian verse in imitation of Kāshī.

Beginning :

ای که میبخواهی بهشت و رستگاری از عذاب
از برآ عمر چون مؤمنان سر بر متاب

Ending :

چون بود دنیای فانی از برای لعن تو - یا امام الفاسقین

Stray notes, and a qaṣida by Ni'mat Khān 'Āll, on ff. 101-115.

ff. i+120. ll. 17. S. $8.5 \times 4.8''/21.4 \times 12.2$ cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Worm holes, repaired. Fairly good condition. Bound.

Seals of Munīru'l-Mulk, 1206.

منیر الملک -- ۱۲۰۶

*Alī Shīrāzī in the bazaar which led to his getting converted from the Sunnite to the Shiite faith. In support of his conversion he quotes Quranic verse and traditions to uphold his convictions.

Beginning : الحمد لله الذى اتم حجه على الثقلين . . . توضيح اين مقال وتفصيل
اين اجمال آنكه - الخ

Ending : بعد از تفكر استحيان مقالا تم نمود الحمد لله رب العالمين

ff. 52. ll. 15. S. 7.8×4.2 "/ 19.8×12.0 cms.

Written in clear nasta'liq, on 22 Muḥarram, 1193/9 February, 1779.

Rubrications. Worm holes, repaired. Fair condition. Bound.

Ref: Bk. 1330

2978

Aq. 2.

Another copy of the same, but without the lengthy Arabic preface.

Beginning : as usual.

Ending : محبان آل رسول زده از متعصبان ایشان بالكلية تبرأ نمود
والحمد لله رب العالمين

ff. 47. ll. 13. S. 9.4×5.7 "/ 23.8×14.4 cms.

Written in good nasta'liq. A late 12th cent. copy.

European paper. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
To be re-bound

2979

Aq. 1/2.

رساله مناظره

RISĀLA-E-MUNĀZIRAH

A collection of notes on religious controversy between the Shiites and the Sunnites, compiled in 1073/1662, by the same 'Abdu'l-Wahāb.

Beginning : ابتدای مناظره چند که اقل العباد الوهاب را در بلاد سمی
آکله الا کباد با اهل عناد - الخ

Ending : در ضمن آن سزا آن در گناهش نهادند - الحمد لله على ذلك

Aq 3.

اثبات امامت

ITHBÂT-E-IMÂMAT

A treatise on the legality of Ḥaḍrat 'Alī's claim for direct succession to the *Khilāfat* after the holy Prophet. This work is based on the preceding work to which the compiler whose name is not given, has added some more Quranic verse and traditions in support of his stand.

Beginning : ای از تو کتاب اهل دین را توئین + وی حمد و ثنای تست بنیان مبین
الحمد لله حق حمده ... اما بعد از ادای مراسم حمد الهی
و قیام بلوازم - الخ

Ending : ممکن ممکن که ره جور را کماره نباشد
مکن مکن که بشیمان شوی و چاره نباشد

ff. 107. ll. 15. S. 8.1 × 5.2 ; 5.7 × 3.1" / 20.4 × 13.2 ; 14.6 × 7.8 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Good 'unwān. Rubrications. Coloured ruled borders. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals: 1. Muḥammad Mīrak a'l-Ḥusainī.

محمد ميرك الحسيني

2. 'Abū Ṭālīb Khān Bahādur, 1199.

ابو طالب خان بهادر - ۱۱۹۹

Aq. 1/1.

ابصار المستبصرين

ABṢĀRU'L-MUSTABṢERĪN

An account of how the author, Mullā 'Abdu'l-Wahāb b. 'Abdu'r-Raḥmān of Thatta, with his friend, 'Alī Riḍā, come from the port of Lāhirl to Jahānābād (Delhi), in 1062/1652, and happend to meet 'Abdu'l

ff. 113. ll. 16. S. $10.1 \times 7.8''/25.8 \times 20.0$ cms.

Written in clear shikast-nasta'liq. An early 13th cent. copy.

European paper. Rubrications. Dampness stains. Fair condition.
Not bound.

Seal of Muḥammad Riḍā.

محمد رضا

2974

Aq. 108.

Another copy of the same, defective at the end in faṣl 11.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly.

و اما قبح نمودن نسبت

ff. 240. ll. 17. S. $9.1 \times 6.2''/24.2 \times 15.6$ cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

2975

Aq. 121.

اثبات امامت

ITHBĀT-E-IMĀMAT

A selection of notes from the work of Mullā Mui'zzu'ddīn Muḥammad Ardasiānī on the Shiite claims for the rights of Ḥaḍrat 'Alī to succeed the holy Prophet.

This copy is defective at the end

Beginning : بعد از حمد قادر علی الاطلاق که زبان از بیان آن قاصر

است - الخ

Ending : abruptly. پس آنحضرت بر اطراف آن دشت نظر کرد سنگی عظیم

ff. 348. ll. 14. S. $8.0 \times 4.8''/20.2 \times 12.2$ cms.

Written in ordinary nasta'liq. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

ff. iv × 391 + 7. ll. 17. S. 9.5 × 6.5"/24.0 × 16.4 cms.

Written in good nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

2971

Aq. 109.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 613. ll. 19. S. 9.1 × 5.2"/24.2 × 13.0 cms.

Written in good naskh. A late 11th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2972

Aq. 110.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 222. ll. 24. S. 14.3 × 8.6"/36.0 × 21.8 cms.

Written in clear nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Fair condition. Bound.

2973

Man. 48/2.

Another copy of the same, containing last two faṣls and the khâtima, together with first folios of the preface. It is defective after that till the end of faṣl 10.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

The work is divided into a muqaddima, twelve fasls and a khātima, and was completed in one and a half years in 1058/1648, at Hyderābād.

Beginning : حمدی که حاملان ملاء اعلی و ذا کران کره عبرا از ادای آن
عاجز آیند - الخ

Ending : بود پنجاه بهشت بعد هزار
که به پایان رسید این گفتار

ff. 73. ll. 29 + varying numbers on the margins. S. $12.5 \times 8.0'' / 32.2 \times 20.4$ cms.

Written in clear nasta'liq, probably by the author, in 1058/1648.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2969

Aq. 111.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 340 ll. 21. S. 11.2×7.0 ; $8.0 \times 4.1'' / 28.2 \times 17.6$; 20.2×10.4 cms.

Written in excellent nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Excellent 'unwān. Gold ruled borders. Rubrications. Good condition. Bound.

Seals of Muniru'l-Mulk, 1206.

منیر الملک - ۱۲۰۶

2970

Aq. 107.

Another copy of the same, with profuse marginal glosses, and notes.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 80. ll. 17. S. 9.5 × 5.7"/24.0 × 14.2 cms.

Written in good nasta'liq, on 17 Dhiḥajja, 1017/12 February, 1609.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2967

F. 72/1.

کفایۃ الاعتقاد

KIFĀYATU'L-I'TIQĀD

A treatise refuting the allegations of the Shiites on the topic of the succession compiled by Muḥammad Nizāmu'ddīn at the instance of the celebrated divine, Shaikh 'Abdu'l-Ḥaqq Dihlawī, (d. ca. 1052/1642).

Beginning : الحمد لله خالق العقل والتمييز... أما بعد ، مصنف کفایۃ
الاعتقاد - الخ

Ending : ای روائض شرم بادت از خدا
مر تفضی را بر حسد داری روا

ff. 17. ll. 16. S. 9.1 × 5.0"/23.0 × 12.6 cms.

Written in ordinary nasta'liq, on 6 Muḥarram, 1214/10 June, 1799.

Dampness stains. Worm holes, repaired. Fair condition. Bound.

2968

Man. 10.

کتاب الامامة

KITĀBU'L-IMĀMAT

A controversial treatise on the Shiite viewpoint about the Imāmat, and the rights of the House of 'Alī to the same, compiled by Shaikh Muḥammad b. 'Alī, surnamed Ibn-e-Khātūn a'l-'Āmilī, a minister to Sulṭān 'Abdu'llah Quṭb Shāh of Golconda, (1035-1083/1626-1674).

In this copy the author's name is given as Mu'izz Ardastānī, and the title as Risāla fi Ma'rifati'l-A'immah wa'l Imāmah.

2965

Aq. 69.

رساله در بیان سیادت

RISĀLA DAR BAYĀN-E-SIYĀDAT

A treatise on (سیادت اشراف) refuting the rights of those who claim to be called Sayyids although they may not be the descendants of 'Alī and Fāṭimah. The work was undertaken during the reign of Shāh 'Abbās I, by Muḥammad Hādī b. Mu'īnu'ddīn Muḥammad a'sh-Sharīf a'sh-Shīrāzī. It is divided into a muqaddima and two faṣls.

Beginning : بعد از حمد و ثنا و سپاس و ستائش صانع ذوالجلال
و قادر لایزال - الخ

Ending : دختر زادهای حضرت رسول حاصل است و کمی بربك
هاد یا و نصیرا

ff. 36. ll. 12. S. 8.6 × 5.2"/21.8 × 13.2 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Worm eaten. Poor condition. Not bound.

2966

Aq. 30.

ترجمة الحقائق

TARJUMATU'L-HAQĀ'IQ

A collection of Quranic verse and traditions compiled by an anonymous person with a view to assert the claims of Ḥaḍrat 'Alī for succeeding the holy Prophet.

Beginning : الحمد لله باعث الرسل رحمة للعالمين... أما بعد ، ابن ضعیف قلیل
البضاعت - الخ

Ending : باب زمزم و کوثر سفید توان کرد + گلیم بخت کسی را که یافتند سیاه
هر کرا روی به بود نبود + دیدن روی سود نبود

2963

Aq. 75.

رساله قاضی زاده

RISĀLA-E-QĀDĪZĀDA

A treatise on Shiite views on Imāmat, compiled by Qāḍī 'Abdu'l-Khālaq a'sh-Sharīf, surnamed Qāḍizāda Kamarharwādī, who claims to have had a debate with the Qāḍizāda of Transoxania, in the presence of Shāh 'Abbās I, the Safavide (995-1037/1587-1628) to whom the work is dedicated.

The work is divided into a muqaddima on f. 5v, a qā'ida on f. 8-9v, and a khātima, on f. 185v.

Beginning : کس نامه انوار حلی نویسد + قاپراور = هو العلی = ننویسد - السبح

Ending : و ذریعة نجات این کثيرة السبئات گردد بحق عهد و آله . . .
علیه السلام

ff. 198. ll. 21. S. 9.4 × 5.4"/23.8 × 13.6 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq, by Mir Salmān, surnamed Mir Muḥammad Gilānī, on 2 Rabi' I, 1090/3 April, 1079, at Gulberga.

Rubrications. Worm holes, repaired. Fairly Good condition. Bound.

2964

Aq. 74.

Another copy of the same, but defective by a folio at the end.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly. مرقوم رفیع حسن اعتقاد نگاشته در رشته حلوس نیت

ff. 308. ll. 14. S. 7.9 × 5.4"/19.9 × 13.4 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. A middle 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Fair condition. Bound.

Aq. 18.

براهین قاطعه

BARĀHĪN-E-QĀṬI'AH

A Persian paraphrase compiled in 994/1586, by Kamālū'ddīn b. Fakhrū'ddīn Jahramī, and dedicated to Sulṭān Ibrāhīm 'Ādil Shāh II of Bijāpūr, (978-1035/1579-1626). It is a translation of the Arabic work, a'ṣ-Ṣawā'iqu'l-Muḥriqa of Ibn Ḥajar 'Asqalānī, (d. 973/1566), which deals chiefly with the refutation of the Shiite stand about the illegal usurpation of the Khilafat by the first three successors of the holy Prophet.

The work is divided into three muqaddimas, ten bābs and a khātima.

Beginning: الحمد لله الذي فضل نبينا محمدا صلى الله عليه وسلم على سائر
الانبياء - الشيخ

Ending: سبحان ربك رب العزة عما يصفون ... محمد وآله وصحبه وسلم

ff. 266. ll. 21. S. 9.9 × 5.8"/25.0 × 14.6 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals of Mirza 'Iṣmatullah, 1237.

مرزا عصمت الله - ۱۲۳۷

Ref: 1vASB. 1129; Bk. 1282.

Aq. 17.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 236. ll. 17. S. 8.4 × 6.2"/21.1 × 15.4 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

European paper. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

b. Muhammad a't-Ta'ūs a'l-'Alawī a'l-Husainī, (d. 664/1266). It was presented to Shāh Tahmāsp I, the Safavide, and refutes the beliefs of the four Sunnite sects—Hanafī, Shāfa'ī, Mālikī and Hanbalī.

Beginning : تیمنا بد کره العلی العظیم ، حمد عنبر نری بی پایان و شکر
شکر این فراوان - الخ

Ending : بے بهره نکذ ارد یا الله العالمین و یا خیر الناصرین برحمتک
یا ارحم الراحمین . . . تسلیما کثیرا

ff. 220. ll. 23. S. 11 2×8.0"/28.4×20.2 cms.

Written in clear nasta'liq, by Muḥammad Nabī b. Abū Turāb Is-ḥāq, on 12 Ramaḍān, 1066/24 June, 1656.

European paper. Rubrications. A few worm holes. Good condition. Bound

2960

Aq. 97

صراط مستقیم و دین قویم

ŞIRÂT-E-MUSTAQÎM WA DÎN-E-QAWÎM

An anonymous treatise written with a view to prove that the Shiite sect is the only one amongst the Muslims that is predestined for salvation. The work is dedicated to Sulṭān Ibrāhīm Quṭb Shāh of Golconda, (957-989/1550-1581).

This copy is defective at the end.

Beginning : حمد و مدح و ثناء و شکر آلاء و نعمای خداوندی
را سزاوارست که - الخ

Ending : abruptly. مقتدا و پیشوا و مفروض الطاعت ندانسته اند

ff. 165. ll. 9. S. 6.0×3.8"/15.2×9.6 cms.

Written in good nasta'liq. An early 14th cent. copy.

European paper crumbling to pieces. Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

A rare work.

2957

Aq. 34.

Another copy of the same, but defective by a few folios at the end.

Beginning: as usual.

Ending: abruptly. پسر عم هارون تمسخر می نمود تا حسیده و خواجه او
با جمیعت

ff. 70. ll. 15. S. $8.3 \times 4.8^{\circ}/21.0 \times 12.2$ cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

Seals of Munfru'l-Mulk, 1206.

منیر الملک - ۱۲۰۶

2958

Aq. 33.

Another copy of the same. A few lines of the epilogue are not found in this copy.

Beginning: as usual.

Ending: abruptly. ملعونین فی الاولی والاخری

ff. 66. ll. 14. S. 10.2×6.7 ; $6.7 \times 3.2^{\circ}/25.8 \times 12.0$; 12.0×8.2 cms.

Written in good nasta'liq, by Sayyid Saifu'd-dīn 'Alī Khān, on 15 Shawwāl, 25 regnal year of Shāh 'Ālām II = 1195/14 October, 1781.

Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2959

Aq. 99. طراوة اللطائف فی ترجمة کتاب الطرائف

TARĀWATU'L-LATĀ'IF FI TARJUMATI KITĀBI'T-TARĀ'IF

A Persian paraphrase compiled in 961/1554, by 'Alī b. Ḥasan a'z-Zawwārī of the Arabic work of Abu'l-Qāsim 'Alī b. Mūsā b. Muḥammad

Beginning : روایت میکنند که در خلافت هارون الرشید مردی بود بنجار در
شهر بغداد - الخ

Ending : و هر يك بجای متلاشی شدند ، الحمد لله علی محبة أهل
البيت - تمت الكتاب

ff. 38. ll. 17. S. 9.8×5.9 "/ 24.8×14.8 cms.

Written in good nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Bluish paper. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2955

Aq. 145/2.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : و اگر امی ترین زمینهای خداست بر خدا و اگر نه چنین

ff. 105. ll. 13. S. 9.6×5.7 "/ 24.4×14.6 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not Bound.

2956

Aq. 31.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 117. ll. 14. S. 9.2×6.2 "/ 23.4×15.8 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. To be re-bound.

RISĀLA-E-ḤASANIYAH

A Persian version of Arabic work alleged to have been discovered by the author, Ibrāhīm Astrābādī, surnamed Gurgīn, at Damascus, in 958/1551. It deals with a tale about a woman, named Ḥasaniyyah, or Ḥusainiyah who took part in controversial arguments with different Sunni divines in the presence of the famous Abbaside Khalīf, Hārūn al-Rashīd of Baghlād, (170-193/786-809), and floored them all by her arguments in defence of Shiite faith. This woman was a slave girl belonging to a rich merchant. She had served Imām Ja'far Ṣādiq for twelve years, and had become well-versed in theology. When the merchant lost everything she begged him to sell her to the Khalīf for not less than one lakh dinārs. This high price being for her erudition, and was payable when she should defeat all the learned men of the Empire.

The work is dedicated to Shāh Tahmāsp I, and is of propaganda value for the Shiites.

Marginal corrections. Notes on last folios.

Beginning : الحمد لله الذى من علينا بمعرفته . . . أما بعد چنین گوید فقیر حقیر
بی بضاعت - الشيخ

Ending : دعاؤکم مغایب الامامی و مصباح السرة و النجاح

ff. 116 + 1. ll. 14. S. 8.1 × 4.6"/20.6 × 11.6 cms.

Written in clear naskh, by Mullā Muḥammad Muḥammadnagarī, on 9 Ramaḍān, 1065/3, July, 1655.

Worm holes, partly repaired. Fair condition. Bound.

Ref: IvC. 397; Bk. 1300.

Written in clear nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Gold 'unwān, and ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2951

Aq. 127.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 332. ll. 15. S. 9.8×6.1 "/ 24.8×15.4 cms.

Written in good nasta'liq, by Muḥammad Kāzim b. Mirza Muḥammad 'Alī, on 23 Ṣafar, 1194/29 February, 1780.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

Seals of Sayyid Muḥammad 'Alī Khān Bahādur. سید محمد علی خان بہادر

2952

Aq. 117, مباحثہ طاہر دکنی با علما اہل سنت

MABĀḤITHA-E-ṬĀHIR DAKANĪ BĀ 'ULAMĀ-E-AHL-E-SUNNAT

A discussion on Shiite creed which the champion of that faith in the Deccan, Shāh Ṭāhir a'l-Ḥusainī a'd-Dakanī, (d. 952/1546 under Burhān Nizām Shāh I of Aḥmadnagar, (914-961/1508-1554), had with the Sunnite divines of the period.

Beginning : قل جاء الحق و زهق الباطل . . . چون بہر جب فرمان قضا
جریان شہر یار - الخ

Ending : عنایت و افضال بر سادات بحرمت النبی و آلہ الامجاد

ff. 61. ll. 10. S. 8.6×5.6 "/ 21.8×14.2 cms.

Written in clear naskh. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Worm holes, partly repaired. Fair condition. Bound.

Bāb 2, in five manhajis, on f. 64.

باب دوم در ادله امامت حضرت امیر المؤمنین علیه صلوات

Bāb 3, in seventeen dalils, on f. 145v.

باب سیوم در ادله امامت باقی از اثمه اثنا عشر

Bāb 4, in five faşls, on f. 156.

باب چهارم در کیفیت بیعت کردن مردم بر ابوبکر و بعضی از مطاعن
ابوبکر عمرو عثمان که دال است بر بطلان امامت ایشان

Bāb 5, in six faşls, on f. 177.

باب پنجم در ذکر ادله که مخالفان بزعم خود ایراد کرده اند -

خاتمه در بیان عدم صحت چیزی که روایت کرده اند - Khātima, on f. 288.

Beginning : الحمد لله ذی اللطف و الإحسان و الفضل و الامتنان و العظمة
و السلطان و المنزه

Ending : وصی المصطفی حقا - إمام الإنس و الجنة

ff. 231. ll. 21. S. 12.1×6.9"/30.6×17.2 cms.

Written in clear naskh, by Muẓaffar 'Alī b. Muḥammad Mahdī
Khāṭib Lāhijānī, on 6 Muḥarram, 1065/6 November, 1654, at Aurangābād.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes, once repaired. Fair
condition. Bound.

A rare work.

Seals of Munīru'l-Mulk, 1206.

منیر الملک - ۱۲۰۶

2950

Aq 126/1.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 223. ll. 17. S. 10.5×6.9; 7.4×4 3"/26.6×17.6; 18.6×10.8 cms.

Table of contents in the beginning.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly. مضرت نرسانند بجهتیتی که کودکان بامار افعی باز کنند
و دران زمان

ff. iv + 133, ll. 12. S. 6.1 × 3.2⁹/15.4 × 8.0 cms.

Written in clear shikast nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Not bound.

2949

Aq. 125. منهج الفاضلین فی معرفة ائمة
الهداة الکاملین

MANHAJU'L-FĀḌILĪN FI MA'RIFATI'A'IMMAT'IL HUDĀTIL-KĀMILĪN

A controversial work on the right of Imāmat claimed by the Shiites for Ḥaḍrat 'Alī and his family as against the leadership of the first three Orthodox Khalifs, compiled in 936/1530, by Muḥammad b. Is-ḥāq b. Muḥammad a'l-Ḥamawī, surnamed Fāḍilu'ddīn. The work was undertaken at the instance of the author's friend, and dedicated to Shāh Tahmāsp I, the Safavide, (930-984/1524-1576).

The date of compilation is given in a qit'a, on f. 7 :—

سال تالیف این کتاب کریم + منهج مذهب امامی شد - ۹۳۶ هـ

The work is divided into a muqaddima, five bābs and a khātima, as per table of contents on ff. 3-7, and as under.

Muqaddima, on f. 7.

مقدمه در بیان معتقد امامیه و اثناعشره علی سبیل الإجمال در مسئله مذکوره

Bāb 1, on f. 8.

باب اول در بیان آنکه مذهب امامیه واجب

الاباع است

6. CONTROVERSIAL WORKS

2947

Aq. 23.

تحفة الأبرار

TUḤFATU'L-ABRĀR

A treatise on the rights of Ḥaḍrat 'Alī to the Khilāfat compiled in 670/1272, by Ḥasan b. 'Alī b. Muḥammad b. Ḥasan a't-Ṭabarī (or a't-Ṭabrasī) a'l-Astrābādī. The position of Imām (religious leader), and the eminence of 'Alī's family together with the part played by the Ummayyides, according to Shiite viewpoint, is the theme of this work, which was specially written for Najmu'ddīn Muḥammad Maṣṣūr Rāzī a'l-Farhādī. It is a guide for the Shiites against the Sunnites.

The work is not properly classified in this copy.

Arabic and Persian notes, by a later hand, at the end.

Beginning : و منه التوفيق و بيده أزمة التحقيق حمد بيحد و نذای بی عد
بادشاهی را که - السخ

Ending : و مع ذلك باشند وجه خصم خدایرا عادل نگوید -
نعوذ بالله من ذلك

ff. 136+8. ll. 17. S. 8.1 × 5.2"/20.6 × 13.0 cms.

Written in good nasta'liq, by 'Abdū's-Ṣamad b. Ṣadru'ddīn 'Alī Naqī, Shirazī in mid Rajab, 764/beginning of May, 1363.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re bound.

2948

Aq 22/1.

Another copy of the same, a revised edition inasmuch as it is classified into a muqaddima and ten bābs. This copy is however defective at the end, and contains first four bābs.

The work is divided into five lam'ās.

Beginning :

سبحانك لا احدى ثناء عليك . . . در آغاز حمد
توای ذوالجلال - الخ

Ending :

ما دامت الاليل مظلمة و أضواء النهار - قدیم بالخیر و السعادة

2. Mir'ātu'l-Haqqat, on ff. 74v-115.

A treatise on the attributes of Imāmat based on Qur'ānic verse, traditions, etc. by the same author who has written this to elaborate whatever he had written in the preceding work under Lam'a 4.

Beginning :

بسم الله . . ديباچه و جود يعنى على ولى خداوند
ذوالجلال - الخ

Ending :

انسانى که حادث و از تو مخلوق شده

3. Riwāyāt, on ff. 115v-131v.

A collection of narratives pertaining to the martyrdoms of the first four Shiite Imāms attributed to the fifth Imām, Muḥammad Bāqir.

Beginning :

از امام محمد باقر روایت کرده اند که آنحضرت فرمود که - الخ

Ending :

آه از سینه بر آورد و جامه بروی مبارکش کشید

Miscellaneous notes in the beginning.

ff. iii+131. ll. 18 to 22. S. 8.3×6.0"/21.0×15.2 cms.

Written in ordinary naskh, by Hājī 'Alī Akbar a'l-Quddūsī a'l-Yazdī, from 1262 to 1268/1846 to 1852.

European paper. Good condition. To be re-bound.



2. Risāla dar 'Ilm-e-Kalām, on ff. 92v-139.

A short treatise on metaphysic and scholastic theology, compiled by Rafi'uddīn b. Ḥaidar a'l-Ḥusainī aṭ-Ṭabāṭabāi.

The work is divided into a muqaddima, a maqṣad and a khātima.

Beginning : الحمد لله المتوحد بالإلهية . . . بر ارباب خرد و هوش
پوشیده نیست که - الخ

Ending : و درود بر خیر البشر و خاتم النبیین و آله الطیبین الطاهرین

3. Risāla-e-Tauḥīd, on ff. 139-149.

A tract on the unity of God by Rajab 'Alī.

The work is divided into a muqaddima, five maṭlabs and a khātima.

Ref. No. 2939/2.

Beginning : در بیان معنی لفظ وجود و موجود و اشتراك لفظی
و معنوی - الخ

Ending : مقابل آن صفات که طرف نقصان است کرده اند

ff. 149. ll. 12. S. $6.5 \times 4.1^{\frac{1}{2}}$ / 16.4×10.4 cms.

Written in good shafi'a, by Bahrām, at the end of Rabī' II, 1257/
June, 1841.

European paper. Rubrications. Good condition. Bound.

Seals of Muḥammad Mahdī, 1257.

مجلد مهدی - ۱۲۵۷

2946

Aq. 139.

مجموعه

(MAJMU'A)

This copy contains the following works :—

1. Partawa-e-Anwār, on ff. Iv-73.

A treatise on Shiite theology compiled by Ḥusain b. Muḥammad Bashīr Jilānī.

2. (Risāla dar Namāz), on ff. 5-15v.

A tract on obligatory prayers by an anonymous person.

Beginning :

هر که نه کویا بتو خاموش به

هر چه نه یسار تو فراموش به

Ending :

قبل از سجود تکبیر بگوید در حال قیام حق است

3. (Majmū'a-e-Ruqa'āt), on ff. 16-30v.

A collection of four letters on controversial topics.

i. From the learned men of Transoxania to the inhabitants of Mashhad.

ii. Reply by Maulānā Muḥammad, better known as Mishkāḳ.

iii. 'Abdullah Khān Uzbek to Shāh 'Abbās.

iv. His reply.

Beginning :

پوشیده نیست بر هیچ مؤمن عالم که - الخ

Ending :

بأنتمال هم ستوران خواهند شد - و الصلوات و السلام

علی محمد و آله اجمعین

ff. 30. ll. 15. S. 9.7×6.1 "/ 25.8×15.4 cms.

Written in clear nasta'liq. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Fairly good condition. Not bound.

2945

Aq. 84.

مجموعه

(MAJMU'A)

This copy contains three works :—

1. (Sarmāya-e-Iymān,) on ff. Iv-91.

Another copy of the same by 'Abdu'r-Razzāq a'l-Lāhijī. Refer No: 2941/1 above.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

2. (Hurmusu'!-Harâmisah,) on ff. 42-45.

A tract, in Arabic, attributed to Prophet Idrîs.

Beginning : رسالة يشتمل على عدة فصول منقولة من مرس الهرامسه
- الخ

Ending : فاحسن الاخلاق فانه بمعونته يحصل المرام

3. (Kitâb Nâma-e-Hukama,) on ff. 46v-101.

A treatise on the beginning and the end, in fourteen bâbs.

Beginning : الحمد لله . . . بدانکه این نامه نامه ایست از مایه را درانی که - الخ

Ending : بجای می رسد که بنجامی دریافته شود هیچ علمی که از آن
به گرمی نبود با دانسته نماید

ff. 101. ll. 11. S. 7.3×4.3 "/ 19.8×10.8 cms.

Written in clear shikast-nasta'liq, by Muḥammad Mahdî, in 1205/1791.

Heading in red. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seal of Mir Yâdgâr 'Alî.

میر یادگار علی

2944

Man. 52.

مجموعه

(MAJMO'A)

This copy contains three works:—

1. (Wilâdat-e-Haḍrât-e-'Âliyât,) on ff. 1-4.

Bab 4 out of some work dealing with the lives and attributes of the Fourteen Immaculates. It is left incomplete in Bâb 5.

Beginning : باب الرابع في ذكر سبب النبي و الأئمة و أعمارهم
و مواليدهم - الخ

Ending : abruptly : ولادت او و طول عمرش مبنی بر سه فصل

2. *Risāla-e-Hikmat*, on ff. 33v-52v.

A short treatise on philosophy.

Beginning : حمد و سپاس بپسند و قیاس جناب کبریای کلیم بی همتای
را سزا است که - الخ

Ending : که هیچ شک و ریب نداشته و این بود مقصود این رساله

3. *Hadyatu's-Safar*, on ff. 53v-61v.

A short treatise on various types of journeys with special reference to obligatory prayers.

Beginning : الحمد لله ... چنین گوید کترین اهل آفاق حسن بن
عبد الرزاق - الخ

Ending : برو هیچ چیزی نباشد و نماز های گذشته همه بخیری بود ...
باطنا و ظاهرا

ff. 52. ll. 19. S. 10.1 x 6.2; 7.2 x 3.5"/25.4 x 15.6; 17.8 x 8.8 cms.

Written in good naskh. An early 12th cent. copy.

Good 'unwāns on ff. Iv, 33v, 53v. Rubrications upto f. 33.
Coloured ruled borders. Worm holes, repaired. Fairly good condition.
Bound.

2943

Aq. 149.

مجموعه

(MAJMU'A)

This copy contains three works by anonymous persons.

1. *Tadhkirah*, on ff. Iv-41.

A short treatise on resurrection, in twenty fasls.

Beginning : ربنا لا تزع قلوبنا بنام آنکه آغاز - الخ

Ending : حرام علی اهل دنیا و هما حرامان علی اهل الله

The work is divided into a muqaddima, and five bâbs.

Beginning : اما بعد الحمد لله . . . چنین گوید العبد الملتجی عبد الرزاق
اللاهجی - تجاوز الله عنه - که - الخ

Ending : وانتفاء مفسده كبد، هذا آخر ما أردنا إيرادہ فی هذه الرسالة
والحمد لله أولا و آخراً

2. Sharḥ Du'â-e-Ya Man Yaḥallu, on ff. 181v-201.

A commentary on a prayer by an anonymous person.

Beginning : مقدمة إلیش جنود دعا و صدر الصدور عرض حاجت
و مدعا - الخ

Ending : اگرچه نیست سن او ار آن از جانب توای خدا و صاحب عرش عظیم

ff. 202. ll. 12. S. 7.0 × 3.9"/17.6 × 9.8 cms.

Written in good nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Dampness stains. A few worm holes. Good condition. To be reset in existing covers.

Seal of Mīr Yâdgār 'Alī.

میر باد گار علی

2942

M & K. 36/3-5.

مجموعه

(MAJMU'A)

This copy contains three works by Ḥasan (b. 'Abdu'r-Razzâq).

1. Risâla-e-Uṣûl-e-Dīn, on ff. 1v-32v.

A short treatise on Shiite principles of faith, in five faṣls.

Beginning : الحمد لله . . . اما بعد بدانکه اصول دین یعنی چیز ها که بنای دین
بر آنهاست که - الخ

Ending : و اندوه ندارند اللهم اجعلنا من افضل اهل جنتك . . . رب
العالمین

2. (Sharḥ-e-Khuṭbatu'l-Bayān (شرح خطبة البيان) ff. 7v-23v).

A commentary on the Arabic sermon of Ḥaḍrat 'Alī, compiled by Muḥammad b. Maḥmūd, surnamed Dihdār (d. 1016/1607), based on sufic beliefs.

Beginning : الحمد لله الذى خلق الانسان علمه البيان . . . جنين كويد بيكر
كفتار - الشيخ

Ending : قال علمها عند ربي في كتاب لا يضل ربي ولا ينسى

3. Risāla-e-Miqdāriya (رساله مقداريه) (ff. 24v-41).

A treatise on Islamic weights and measures, compiled by Mīr Mu'min Astrābādī (d. 1034/1625), and dedicated to 'Abdu'llah Quṭb Shāh of Golconda (1020-1035/1612-1626).

It is divided into a muqaddima, one faṣl and a khātima.

An autograph copy is described under Nos. 3888 and 3889.

Beginning : بعد از حمد و سپاس افزون از حد و مقدار - الشيخ

Ending : بیشتر مردم بران وجه است و الله اعلم بالصواب

ff. 41. ll. 19. S. 9.4 × 5.9"/24.2 × 15.0 cms.

Written in good nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Dampness stains. Worm eaten. A few folios at the end damaged.
Poor condition. Bound.

2941

Aq. 85.

مجموعه

(MAJMU'A)

This copy contains two works:-

1. Sarmāya-a-Iymān, on ff. 1v-178.

A treatise on Shiite principles of faith compiled by 'Abdu'r-Razzāq a'l-Lāhijī, author of Gauhar-e-Murād, who flourished under Shāh 'Abbās II, (1052-1077/1642-1666).

7. Tafsīr-e-Kalām-e-Tauḥīd (ff. 181v-206).

A short treatise on sufism, by Jalālu'ddīn Muḥammad As'ad a'd-Dawwānī (d. 908/1502).

Beginning : آفتاب جهان قدم از ان متعالیست که - السخ

Ending : کما بدء کم تعود ون ، منه بدأ وإليه يعود کل شیء

8. A'r-Risāla fī Ithbātī't-Taḥīd, (margins of ff. 181v-184v).

A short treatise on sufism, in Arabic, by the same Dawwānī, written by 'Abdu'l-Bāqī as'h-Sarīf a'z-Zawwārī in 1135/1723, at Māhūr in Berar.

Beginning : ولئن تفرد وتعالى أن توحيد وصلاة على من هدانا - السخ

Ending : التوحيد إسقاط الحدوث وإثبات القدم

A few verses at the end.

ff. 206+3. ll. 17. S. 7.5×3.8 ; 5.6×2.2"/18.9×9.5 ; 14.1×5.5 cms.

Written in good naskh. A late 11th cent. copy.

Gold ruled borders. Headings in red. Margins repaired. Worm holes. Fair condition. Bound.

2940

Man. 25.

مجموعه

(MAJMU'A)

This copy contains :-

1. (Risāla dar Āthār wa Awlād-e-A'immah ff. 1v-7).

(رساله در آثار و اولاد ائمه) -

A tract on the twelve Shiite Imāms giving their names, dates of births and deaths and the children each had.

Beginning : در آثار و اولاد ائمه علیهم السلام و درین بحث یاد کنیم - السخ

Ending : و تحت ظل رافت یوم الدین یارب العالمین

The work is divided into a muqaddima, five maṭlabs and a khātima.

Beginning : احمد لله ... بدانکه این نوشته مشتمل است بر مقدمه - الخ

Ending : و بمعنی وجوب واجب چنانچه در ممکنات است

3. Nafā'isu'l-Arqām, (ff. 122v-147v).

A sufic treatise by Khwāja Muḥammad, surnamed Dihdār, takhalluṣ Fānī (d. 1016/1608).

The work is divided into nine raqams.

Beginning : ثناء و ستایش مر خدا و ندی را که - الخ

Ending : بوجهی ار وجوه دران نیست و الحمد لله و حده و الصلاة على
محمد و آله اجمعین

4. Risāla-e-Tauḥīd (ff. 148-159).

Another short treatise on sufism by the same Dihdār.

Beginning : لك الحمد و انت اهل له حمدا یعلمو حمد الحامدين - الخ

Ending : و مهر کس ترش منور و محفوظ بحق الحق و آله اجمعین

5. Risāla-e-Jabr-wa-Ikhtiyār (ff. 159v-174).

Another sufic tract by the same.

The work is divided into ten faṣls.

Beginning : الحمد لله رب الارباب و مسبب الاسباب و مفتاح الابواب - الخ

Ending : الكلام الى الله فامسكوا ، ثم بحمد الله و حسن توفيقه

6. Risāla dar 'Ilm-e-'Arūd, (ff. 179v-181v).

A short treatise on prosody, by the same.

Beginning : بدانکه اجزای که شعر از ان مرکب میگردد هفت (هشت)
است - الخ

Ending : براهل فضل زین باس سرور - تم بحمد الله و حسن توفيقه

Aq. 142/1.

رسالة صفات ثبوتيه

(RISĀLA-E-ŞIFĀT-E-THUBŪTIYAH)

An anonymous tract on Shiite beliefs on the attributes of Allah.

Beginning:

الحمد لله رب العالمين ... و بعد چون عالىجاه معلى جاىگاه
و حالات دستگاه - الخ

Ending:

معتقدان و ذکر آن گنجایش این مختصر ندارد

ff. 7. ll. 15. S. 9.6×6.0 "/ 24.2×15.1 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq. A late 13th cent. copy.

European paper. Rubrications. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Aq. 143.

مجموعه

(MAJMU'Ā)

This copy contains the following works :-

1. Risāla dar I'tiqād (ff. 1-113).

A treatise on Shiite principles of faith compiled by Mullā Rajab 'Alī Tabrizī. This copy is defective in the beginning by a few folios.

Beginning:

بچه چیز تعریف او میسر میشد و حال آنکه واجبست - الخ

Ending:

و انتقای مفسده کند هذا آخر ما أردنا إيراده في هذه الرسالة

2. Risāla-e-Tauhīd (ff. 113v-122).

Another treatise on the same topic by the same Rajab 'Alī.

F. 40.

سراج المؤمنین

SIRĀJU'L-MU'MINĪN

An anonymous tract on the elementary principles of Shiite theology.

The work is divided into three parts (اصل) i, on beliefs, ii, on Islam and iii, on faith.

Beginning : اللهم اهدنا الصراط المستقيم . . . و بعد از حمد خدای جل و علی و پس
از نعت رسول - الخ

Ending : هادیا رخت کفر را در سوز + شمع ایمان در دلم بفروز -
و السلام علی من اتبع الهدی

ff. 10. ll. 13. S. 6.1 × 4.1" / 10.5 × 10.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 12th cent. copy.

European paper. Rubrications. Dampness stains. Fair condition.
Preserved in a portfolio.

F. 1. 16/2.

کلید بهشت

KILĪD-E-BIHISHT

An incomplete and anonymous treatise on 'aqā'id.

Beginning : لا اله الا الله له الكبريا والاسماء الحسنی . . . و بعد بر ضمیر
منیر - الخ

Ending : abruptly. اما آنچه از حدیث وصایای ابی ذر رضوان

ii. 40 ll. 17. S. 7.8 × 5.8" / 20.0 × 14.8 cms.

Written in ordinary nasta'liq. An early 13th cent. copy.

European paper. Rubrications. Dampness stains. Worm holes.
Good condition. Bound.

This copy is defective in the beginning. The name of the author is missing.

Beginning : abruptly. و بان پروازد موت مجازی آنست که - البیخ

Ending : از مائده نعباء نا مفتهای و خوان احسان و کرم اوست بانجام
و اختتام رسید

ff. 113. ll. 15. S. $9.1 \times 5.1''/23.0 \times 12.8$ cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Headings in red. Worm holes, partly repaired. Fair condition.
Bound.

Seals : Faql-e-'Ali Khān,

فضل علی خان

2935

Aq. 62.

رساله عقائد

(RISĀLA-E-'AQĀ'ID)

An anonymous treatise on Shiite principles of faith.

The work is divided into four bābs.

Beginning : بدان هداك الله تعالى كه چون آدمی قابل علم و تكلیف باشد مكلف
است - البیخ

Ending : و ضروری نشده باشد مثل حرمت جماع در حیض - و الله اعلم

ff. 68. ll. 15. S. $9.0 \times 5.0''/22.7 \times 12.5$ cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a
portfolio.

ff. 8. ll. 20. S. 11.8 × 7.0; 8.8 × 4.5"/30.0 × 18.0; 22.6 × 11.2 cms.

Written in clear nasta'liq. A mid 12th cent. copy.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2933

Man. 39.

مجالس

(MAJĀLIS)

A collection of six majālis, marked 3 to 8. These are on the martyrdom of Ḥaḍrat 'Alī, Imām Ḥasan, Muslim, his sons, Ḥurr and Qāsim. Each majlis begins with a short Arabic preamble, and a few verses by Muḥtasham Kāshī and others.

Beginning: الحمد لله فضلنا على العالمين ... بر خوان عم جون عالميانوا
صلا زدند - الشيخ

Ending: این بگفت و جان شیرین بحق تسلیم فرمود

ff. 53. ll. 11. S. 10.0 × 6.2"/25.6 × 15.8 cms.

Written in good naskh and nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

Seal of Muḥtaram Jung, 1246.

محترم جنگ - ۱۲۴۶

2934

Aq. 80.

زبدة العقائد

ZUBDATU'L-'AQĀ'ID

A treatise on Shiite beliefs pertaining to Ḥaḍrat 'Alī's right to succession. Besides, there are notes on different topics.

Man. 6.

بشارت الشيعة

BASHĀRATU'SH-SHI'AH

A commentary on the ninety-nine titles of Shiite Imāms based on the Glorious Qur'ān and the Traditions, compiled by Mirza Ghulām 'Alī Khān, alias Khairātī b. Ṣāhib Ṣādiq 'Alī Khān. The titles are on ff. 3v-66, followed by the commentary on each.

Arabic Durūd in the beginning and curses at the end.

Beginning : الحمد لله الذى جعلنا من المتمسكين . . . أما بعد اين بنده كثرين
مواليان خاندان - الخ

Ending : بدرستی که آمر زیدم جمیع کفاهان شیعه علی علیه السلام را
و محبان ایشان را

ff. ii + 100 + i. ll. 13. S. 7.9 × 5.1" / 20.2 × 13.0 cms.

Written in clear shikast-nasta'liq, 1292/1875.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Man. 26.

الرسالة في الرجعة

A'R-RISĀLAT FI'R-RAJ'AT

A tract on the return of the twelfth Shiite Imām, Mahdī, by an anonymous person.

Beginning : الحمد لله و الصلاة على رسول الله محمد و آله اجمعين ، أما بعد
بر صم بر ارباب دانش

Ending : همه را ادا فرمايد حتى يك كله سير و يك دانه خردل
بمنه و كرمه

Aq. 88.

سلطانیہ و ارشاد العوام

SULTĀNIYYAH AND IRSHĀDU'L-'AWĀM

This copy contains two works by Karīm b. Ibrāhīm on Shiite theology.

1. Sultāniyah, on ff. 1v-90.

A treatise on the prophets and twelve Shiite Imāms. It was expressly undertaken by the commands of Nāṣiru'ddin Shāh Qāchār of Persia, (1264-1313/1848-1896).

The work is divided into a muqaddima, two mabāḥith and a Khātima.

Beginning: شکر و مہرباس برون از حصر و حد یگانہ خداوند بی مانندی
را سزد - الخ

Ending: مہرمت و مکرمات سرکار اشرف امجد بر دین و اہل دین
بی چند و چون شود

2. Irshādu'l-'Awām, on ff. 91v-148.

Another treatise written for the benefit of all those who are not conversant with Arabic.

The work is divided into four qismats.

This copy is left incomplete at the end with lacunae on ff. 125, 134 and 140.

Beginning: ستایش خداوندی را سزد است کہ پرورندہ جہانیان
است - الخ

Ending: abruptly. معلوم شد کہ باب خدا کسی است کہ چون باو نظر کنی

ff. 148. ll. 17. S. 8.7 × 6.9"/22.0 × 17.4 cms.

Written in good riqā', by Mirza Muḥammad, [in Rabt' II, 1278/
October, 1861.

Rubrications. Dampness stains. Good condition. bound.

The work is divided into faṣls and majlis.

Beginning :

ملولفه : خون حسین جوش دهد هر صباح و شام
تاجت خدائی کند در جهان قیام - الخ

Ending :

شیخ ازین مصرع بجو تاریخ تالیف کتاب... مؤمنین
را علت اندوه حزن المؤمنین

ff. 250+1. ll. 20. S. 13.1 × 8.2⁷/33.4 × 21.0 cms.

Written in clear naskh and shikast-nasta'liq, by 'Ābid 'Alī Khān Bahādur, a descendant of Wālā Jāh, for Mukhtāru'l-Mulk, on 13 Rajab, 1287/9 October, 1870, at Hyderābād.

This copy was transcribed from a copy printed at Bombay, in 1260/1844.

European bluish paper. Rubrications. Good condition. Bound.

2929

Aq. 48.

حديقة سلطانية

HADIQA-E-SULTANIYAH

A treatise on Shiite theology written for King Amjad 'Alī Shāh of Oudh, by Sayyid Husain b. Sayyid Dildār 'Alī of Lucknow.

The work is divided into two maqsads (parts). This copy however contains part of Maqsad I, which is subdivided into a muqaddima, five bābs and a khātima. Bābs 4, 5 and khātima are not found in this copy.

Beginning : الحمد لله... أما بعد بر ضمائر صافية و خواطر زا کیه - الخ

Ending : درمباحث امامت هم نسخه ازان عرض بیان خواهد

آمد انشاء الله تعالى

ff. 389. ll. 17. S. 11.4 × 7.0; 8.4 × 4.2⁷/28.8 × 17.6; 21.2 × 10.6 cms.

Written in good naskh and nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Excellent 'unwān. Two full page decorations in gold. Double gold ruled borders. Rubrications. Good condition. Bound.

Printed in 1265/1849, at Lucknow.

The work is divided into twelve rukns. Table of contents in the beginning.

Beginning :

انما وايكم الله ورسوله . . . در بيان احوال ملاء انس
و جان - الخ

Ending :

تعظيم ايشان بجا آرید و تمسك بدیشان نمائید

ff. iii+555. ll. 15. S. 11.8×8.0"/30.0×20.4 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. A mid 13th cent. copy.

European paper. Rubrications. Dampness stains. Worm holes.
Fair condition. Bound.

2927

Man. 32.

Another copy of the same, but defective in the beginning.

Beginning : abruptly.

جون پای گاو ان و گوشهای ايشان چون گوش
اشتران - الخ

Ending : as usual.

ff. 502. ll. 21. S. 11.5×6.6"/29.6×17.0 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A mid 13th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

2928

Ta. 226

حزن المؤمنین

HUZNU'L-MU'MININ

A treatise on the lives and attributes of the Prophet Ismā'il, the holy Prophet, his daughter, Fāṭimah, and first eight out of twelve Shiite Imāms, compiled by Muḥammad 'Alī, b. Shaikh Mūsā a'n-Najafī a'l-Kāzīmī, takhallus Shaikh. It was completed in 1255/1839, during the reign of King Amjad 'Alī Shāh of Oudh, in (1258-1263/1842-1847). It's full title is (Huznu'l-Mu'minin fi Maṣā'ibi-Āl-e-Tāhā wa Yāsīn

(حزن المؤمنین فی مصائب آل طه و یسین)

Ag. 83. سراج الهداية في نهاية الظهور

SIRĀJU'L-HIDĀYA FI NIHĀYATI'Z-ZUHŪR

A treatise on Shiite theology compiled by Ḥusain a'l-Ḥusafī a'l-Khurāsānī.

The work is divided into twelve sirājs (chapters), a muqaddma, in the form of questions and answers, from f. 33v; and a Khātima on f. 104v.

Beginning: الحمد لله جاعل الظلمات والنور ومكور الازمنة
والدهور - الخ

Ending: اكر دعوتكم رد كنى ور قبول
من و دست و دامان آل رسول

ff. 135. ll. 9. S. 8.4 × 5.0; 4.9 × 3.0^o/21.4 × 12.8, 12.6 × 7.6 cms.

Written in good naskh and nasta'liq, by Muḥammad a'l-Khurāsānī oa 11 Šafar, 1267/16 December, 1850.

Gold 'unwān. Double gold ruled borders. Rubrications. Worm holes, repaired. Fair condition. Bound.

Man. 31. زاد اعظم

ZĀD E-Ā'ẒAM

A treatise on the lives and attributes of Shiite Imāms, compiled by Sayyid Muḥammad a'l-Mūsawī, alias Saidan Šāhib, whose ancestors were ministers to the-Quṭb Shāhī kings of Golconda, and two of them are buried in Mughalpūra, Hyderābād.

Bāb 3, on Qur'ānic verses in praise of 'Alī, on f. 29.

باب سیوم در بیان بعضی آیات قرآن که مخصوص بر شأن جناب
علی رضه نازل شدند

Bāb 4, on the Sayings of the holy Prophet about the *Khilāfat* and *Imāmat* of 'Alī, on f. 39v.

باب چهارم در بیان بعضی احادیث که جناب رسول خدا ص در باب خلافت
و امامت جناب علی رضه فرموده اند

Bāb 5, on *Ghadir khumm*, on f. 55. باب پنجم در بیان قصه غدیر خم

Bāb 6, on the Sayings of 'Alī, on f. 69.

باب ششم در بیان بعضی کلمات جناب علی رضه که از زبان معجز بیان خود
فرموده اند

Bāb 7, on the happenings in the Mosque at Kūfa, on f. 73.

باب هفتم در بیان خبر شامی که خود را از علما میتمرود و در مسجد جامع کوفه
از جناب علی رضه سوالات کرد و آنجناب جوابات آنرا فرمود

Khātima, on the attributes of 'Alī, on f. 75v.

خاتمه در بیان بعضی روایات و احادیث و غیره

Beginning: ستایش و سپاس خالق را که تذکار آلائی بی احصا و نعمتهای
بی منتهایش - الخ

Ending: اطاعت عجل و سامری کردند - یعلم الذین ظلموا ای منقلب
ینقلبون سبحان ربك... رب العالمین

ff. 93. ll. 13. S. 9.8×6.7; 6.6×3.6"/24.8×16.8; 16.6×9.2 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by the author, on 11 Jumāda II,
1266/24 April, 1850.

European paper, white and blue. Rubrications. Coloured ruled
borders. Good condition. Bound.

M & K. 79.

مرشد الواعظین

MURSHIDU'L-WA'IZIN

A treatise on Shiite theology compiled by Muḥammad Riḍā b. Muḥammad Ṣādiq Astrābādi, who has based his work on traditions, and collected anecdotes about the family of the holy Prophet showing therein their eminence and piety together with their sufferings. The work is dedicated to Fath 'Alī Shāh Qāchār, (1211-1250/1797-1834).

Beginning :

الحمد لله الذي راسخ في راسد امر كن ايجد
اشياء كرد - الخ

Ending :

در سابق مذکور خامه محنت ختامه گردید -
والله الموفق والمعين

ff. 259, ll. 19. S. 11.4 × 7.3 : 8.0 × 4.7² / 28.8 × 18.2 ; 20.2 × 11.8 cms.

Written in good naskh and nasta'liq, in 1264/1848.

Rubrications. Zangār has detached the written space from the borders. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Aq. 86.

سرور المؤمنین

SURŪRU'L-MU'MININ

A treatise on the attributes of Hadrat 'Alī, compiled by Mīr Muḥammad 'Alī b. Mīr Ḥasan.

The work is divided into seven bābs and a khātima :—

Bāb 1. on Imāmat, on f. 5v.

باب اول در اثبات امامت

Bāb 2, on miracles, on f. 12v.

باب دوم در بیان بعضی معجزه ها

2921

Man. 51.

هدية المؤمنين

HADIYATU'L-MU'MININ

A treatise on Shiite beliefs about the twelfth Imām, Mahdī compiled by Šafdar 'Alī Naqwī.

The work is divided into a muqaddima and five bābs.

Beginning : الحمد لله الذى هدانا . . . اما بعد جبين كويد بدمه خاكسار - الشيخ

Ending : در بعضی احادیث ظاهر میشود بر غیبت زمان است
رجعت خواهد کرد

ff. 45. ll. 11. S. 61 × 3.6; 4.7 × 2.4"/15.4 × 9.2; 12.0 × 6.0 cms.

Written in clear nasta'liq, on 5 Rabi' I, 1245/4 September, 1829.

'Unwān. Rubrications. Coloured ruled borders. Good condition. Bound.

2922

Aq. 138/1.

اصول دین

UŞUL-E-DİN

A tract on Shiite theology, compiled by Muḥammad 'Ābid.

Beginning : الحمد لله . . . اما بعد - وال اصول دین یعنی چیز هائیکه - الشيخ

Ending : بیرون آمدن از آن دین میشود

ff. 14. ll. 11. S. 9.4 × 6.4"/23.6 × 16.2 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Sayyid Ghulām Mahdī, in 1251/1835.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

Ref: IvASB. 1040.

Aq. 5.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.**Ending** : as usual.ff. 318. ll. 16. S. $8.7 \times 6.9^{\circ} / 22.0 \times 17.2$ cms.

Written in good naskh, in 1277/1860.

European glossy paper. Rubrications, upto f. 132v. Good condition. Not bound.

Aq. 114.

معرفت الہیات

(MA'RIFAT-E-ILĀHIYĀT)

A treatise on divine knowledge (معرفت الہی) compiled by Mullā Muḥammad Taqī a'l-Mūsawī. In the preface it is stated that since works on this topic are in Arabic, the author has undertaken this work. It is divided into a muqaddima, and five bābs on usual topics.

Beginning :

لک الحمد یا من تدانی فی کمال ... أما بعد بر صفحات
ضمائر أولى البصائر - الخ

Ending :

خدام اولاد مسلمین اندو و الحمد لله رب العالمین و الصلاة
و السلام علی محمد و عترته الطاهرين

ff. 208. ll. 15. S. $8.5 \times 6.1^{\circ} / 21.4 \times 15.4$ cms.

Written in a few different hands, in nasta'liq, with a few folios by Muḥammad Bāqir a'l-Husaini at-Ṭālasī, on 12 Jumada II, 1234/8 April, 1819.

European bluish paper. Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

The work is divided into four qism (parts) each having ten kalimas, and a *khâtima*. Five more kalimas are also added.

Beginning : الحمد لله ... وإبعد جنين كويد حقير محتاج الى إرمة
ربه الكريم - الشيخ

Ending : هزار مرتبه بخواند حج روزی او میشود ما شاء الله

ff. 24. ll. 10. S. 6.4×4.4 ; 4.6×2.6 */ 16.4×11.4 ; 11.8×6.8 cms.

Written in good naskh, in 1218/1803.

Rubrications. Worm holes, repaired. Fair condition. Bound.

Seals of Muniru'l-Mulk, 1206.

منیر الملک - ۱۲۰۶

2918

إجابة المضطرين في بيان الأصول وفروع الدين. Aq. 6.

IJĀBATU'L-MUḌTARRĪN FĪ BAYĀNI'L-UṢŪL WA FURŪ'ID-DĪN

A treatise on Shiite law and theology compiled by Ja'fi b. Abi Ishāq Jārī, at the instance of Prince Muḥammad Taqī Mirza, in 1228/1813, at Baghdādābād, a village in Yazd.

The work is divided into a muqaddima, two maqālās on uṣūl and furū' and a *khâtima* on ethics.

Beginning ملک الکلام ... وبعد اوان طاع طالع جوزائے زمان
سطوع ساطع - الشيخ

Ending : من وزشتی بغداد ابادیانست و الحمد لله رب العالمین والصلاة
على محمد وآله اجمعین

ff. 194. ll. 20. S. 7.7×5.4 ; 6.0×3.5 */ 19.4×13.6 ; 15.0×8.8 cms.

Written in good naskh, in 1232/1817.

European glossy paper. Red ruled borders. Interlinear decorations in brass powder. Good condition. Bound.

Printed in 1306/1889, in Persia.

Written in clear nasta'liq, on 15 Ramaḍān, 1227/22 September 1812, at Murshidābād.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes, repaired. Fair condition. Bound.

Seal of Munīru'l-Mulk.

منیر الملک

2916

Aq. 144/2 and 3.

تنبيه الغافلين

TANBĪHU'L-GHĀFILĪN

A short treatise on Shiite 'aqā'id written for a friend, by Bahāu'ddīn Muḥammad b. Ibrāhīm a't-Tirmidhī.

The work is divided into a muqaddima, nine bābs and a Khātima.

A short tract on slander (غيبة) on ff. 36v-40v.

Beginning :

الحمد لله الذي امرنا بالعلم و الطاعة نهانا عن الجهل - الخ

Ending :

کرمه بندی اسب قازی پیش خور نکشان
همگون نگردد طبعشان همگون شود

ff. 36+4. ll. 15. S. 7.8 × 5.0"/19.7 × 12.6 cms

Written in ordinary nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Ref: Iv ASB 1061.

2917

Aq. 69.

چهل کلمه

CHIHIL KALIMA

A collection of forty paraphrases dealing with religious and moral topics compiled by 'Abdu'l-'Azīm b. 'Alī Ridā a'l-Husainī a'l-Iṣfahānī, for Munīru'l-Mulk, (grandfather of Mukhtārul-Mulk Sir Sālār Jung, who died in 1248/1832).

2914

Aq. 60/2.

رسالة رجعت صاحب الامر

RISĀLA-E-RAJ'AT-E-ŞĀHIBU'L-AMAR

A short treatise on the return of the twelfth Shiite Imām, 'Mahdī, compiled by 'Alī b. Abī Sa'īd Jīlānī.

Beginning : حمد نامعدود مر واجب الوجودی رالایق است که - الخ

Ending : و سه مرتبه میگوئی العجل العجل یا مولای یا صاحب الزمان

ff. 33. ll. 14. S. 9.4 × 6.1*/23.8 × 15.4 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by Qanbar 'Alī, on 11 Dhīqa'da 1196/18 October, 1782.

- Rubrications. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

2915

Aq 82.

زينة الهداية

ZĪNATU'L-HIDĀYA

A treatise on Shiite theology, compiled by Muḥammad Rafī' Nūrī, who dedicated the work to 'Ālijāh Shujā'u'l-Mulk Mubāraku'd-Daulah Sayyid Zainu'l 'Ābidin 'Alī Khān Bahādur Firūz Jung of Murshidābād (1184-1208/1770-1793).

It is divided into a muqaddima, a few maṭlabs and khātima.

Beginning : الحمد لله الذى بيده ازمة الفتوح . . . افسر سلطان سخن حمد
مالك الملكى رالایق و سه مرتبه است که - الخ

Ending : نسأل الله الغفران و هو المستعان و عليه التكلان - الخ

ff. 108. ll. 17. S. 8.0 × 5.0"/20.2 × 12.6 cms.

2912

Aq. 131.

نشاء سرشار ارباب ايمان

NISHĀ-E-SARSHĀR ARBĀB-E-IYMĀN

A Persian paraphrase of and a short commentary on Hilli's (d. 726/1326) Arabic work, a'l-Bābu'l-Hādī 'Ashar, which is in the five principles of Shiite faith.

Beginning : الحمد لله رب العالمين اللهم صل على محمد وآل محمد ، اين رساله
ايست مختصر در بيان مسائل اصول خمسة - الشيخ

Ending : الحمد لله رب العالمين في الأول والآخرة ظاهرا وباطنا - والسلام

ff. 85. ll. 13. S. 7.2×4.3 "/ 18.1×10.8 cms.

Written in clear nasta'liq, by Mir Abū Ja'far a'l-Mūsawī a'n-Nīshāpūrī, on 30 Rabi' II, 1108/5 October, 1766.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seal of Ḥaidar Yār Khān.

يا حيدر كرار ادر كنى - حيد ريار خان

2913

Aq. 132.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 49. ll. 17. S. 7.3×4.4 "/ 18.4×11.0 cms.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

Seal of Munīru'l-Mulk, 1206.

منير الملك - ۱۲۰۶

Written in good nasta'liq, for Mirza Muhammad Mas'ih, in Jumāda II, 1182/October, 1768.

Rubrications. Worm holes. Good condition. Bound.

A rare work.

2910

Aq. 102.

فقرات عالی درجات

FIQRĀT-E-'ĀLĪ DARAJĀT

A collection of notes on the twelve Shiite Imāms based on Wāridāt of Sadru'ddīn Muḥammad Shīrāzī and Majālisu'l-Mu'minīn of Nurullah and Iṭḥnā 'Ashariyah of Bahāu'ddīn compiled by Abū Maṣākhīr (Nizāmu'ddīn) Muḥammad Hādī (a'l-Husainī a's-Ṣafāwī), better known as Shāh Mirza, who flourished in middle xii/xviii. For his other works refer Index.

Beginning : مپاس ببقیاس سز او ار مالک الملکیست جل شأنه که - السخ

Ending : نزد شیعه امامیه اثنا عشریه بلا خلاف معصوم انداز فرمان
او سبحانه و تعالی از نص قرآن که آیت موجود است

ff. 72. ll. 10. S. 8.1 × 5.4" / 20.4 × 13.5 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, in Sha'bān 1254/November, 1834.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

2911

Aq. 103.

Another copy of the same, defective at the end.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly. هر اک از برادر اش بشمار نه دوازده می شود
فادر این که ...

ff. 48. ll. 7. S. 7.6 × 4.6" / 19.2 × 11.7 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

Man. 24.

رساله در اثبات امامت

(RISĀLA DAR ITHBĀT-E-IMĀMAT)

A tract on the rights of the House of 'Alī to Imāmat compiled by an anonymous person.

Stray notes at both ends.

Beginning : میر محمد صالح کشفی قدس سره در کتاب مناقب مرتضوی
خود چنین آورده است کہ - الخ

Ending : پس همانا کہ مخصوص بآنحضرت علیہ السلام و دہ باشد

ff. xiii + 43 + 4. ll. 9. S. 6.8 × 4.5"/17.4 × 11.6 cms.

Written in good naskh. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Worm holes Fair condition. Not bound.

Aq. 119.

مفتاح اسرار الحسيني

MIFTĀḤ-E-ASRĀRU'L-HUSAINĪ

A treatise on Shiite 'aqā'id compiled in 1160/1747, by Muḥammad Yūnus Damāwandī, in a sufi strain.

The author considers himself a spiritual disciple of Ḥaḍrat Ḥusain and claims that his work is a *tadhkirah* for the guidance of the *sālik*, in which he has included his own *mukāshifāts* (revelations).

The work is divided into thirty-seven *miftāhs*.

Beginning : الحمد لله الذي نجانا من العلوم الرسمية بنبيه... اما بعد ميگويد اين
فقير الى الله - الخ

Ending : و آله الطاهرين و الخلفاء الهادين المهديين الى يوم الدين

ff. 105. ll. 21. S. 8.3 × 5.3"/21.0 × 13.2 cms.

2906

Man. 2.

رسالة اثنا عشرية

RISĀLA-E-ITHNĀ 'ASHARIYAH

A treatise, dealing with Shiite 'aqā'id on the twelve Imāms, compiled by an anonymous person.

The work is based on the sayings of Amīr Ṣadru'ddīn Muḥammad Shīrāzī, Bahāuddīn (Āmīlī) Majālisu'l-Mu'mīnīn, etc.

Beginning : سپاس ببقیاس سنر او ار مالک الماک یست جل شأنه که - السخ

Ending : الذين نزل فيهم طوبى و حسن مآب *

ff. 86. ll. 6. S. 7.6×4.5 ; $4.7 \times 2.2^{\circ}$ / 19.4×12.0 ; 12.0×5.6 cms.

Written in good nasta'liq, by Ḥaidar 'Alī b. Shaiḡ Muḥammad, on 4 Dhīqa'da, 1140/2 June, 1728.

Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

2907

Man 1.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 86. ll. 6. S. 7.3×4.5 ; $4.8 \times 2.2^{\circ}$ / 18.8×11.4 ; 12.2×5.6 cms.

Written in good nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2904

Aq. 73.

رسالة غيبات امام موعود

RISĀLA-E GHĪBAT-E-IMĀM MAW'ŪD

A collection of traditions in Arabic with Persian paraphrase and explanatory notes pertaining to the mysterious disappearance of the Promised Imām compiled by Muḥammad 'Alī Karbalā'ī.

Beginning :

حمد بیحد و شکر بیحد مر پرورد گاری را که - الخ

Ending :

العجل العجل یا مولائی یا صاحب الزمان - وصلى الله على محمد وآله أجمعين وسلم تسليما كثيرا كثيرا

ff. 90. ll. 15. S. 8.7×5.6 "/ 22.7×14.1 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq, by Rajab 'Alī, in 1116/1704.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes, repaired. Fair condition. Bound.

2905

Aq. 124.

منهج الرشاد

MANHAJU'R-RISHĀD

A treatise on the principles of Shiite creed, compiled by 'Alī Qulī b. Mirza 'Alī Jāniqurbānī, and dedicated to Shāh Sulṭān Ḥusain a'l-Ḥusainī a'l-Mūsawī a'ṣ-Ṣafawī Bahādur Khān of Irān (1105-1135/1694-1722).

The work is divided into a muqaddima, five bābs and a khatima.

Beginning :

نصرت ریاحین سواستان سخنوری و نزهت ازهار ریاض نکتہ
پروری - الخ

Ending :

و کتب تراب اقدام المؤمنین ابن محمد باقر عفی الله عن
جراتها سنة ۱۱۲۲ هـ

ff. 358. ll. 23. S. 9.5×6.7 ; 7.3×3.7 "/ 24.0×16.8 ; 18.3×9.3 cms.

Written in good naskh, by Muḥammad Baqir, in Rajab, 1122/September, 1709.

Good 'unwān. Double gold ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

The *khâtima* beginning from f. 76 contains the specific prayers for the first decade of Muharram, etc.

Beginning : الحمد لله الذى لا يحب الفرحين ويحب الغمومين - الخ

Ending : مصطفىارا زبده راضى دار + بعلى و آله الأبرار

ff. 80. ll. 17. S. 8.2×4.6 "/ 21.2×11.8 cms.

Written in good nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes, repaired. Fair condition. Bound.

Seals of Ghulām Ahmad Khān, 1152.

غلام احمد خان - ۱۱۵۲

- Muḥammad Taqī Khān.

محمد تقى خان

2903

Tas. 23/1.

شجرة الإلهية

SHAJRATU'L-ILĀHIYAH

A short treatise on Shiite 'aqā'id, compiled in 1114/1702, by Muḥammad b. Ḥaidar, better known as Rafi' u'ddīn a'l-Ḥasan Ṭabāṭabāī, undertaken during the reign of Shāh Šaffī.

The work is divided into a muqaddima and eight maṭlabs.

This copy is left incomplete in faṣl 4 of maṭlab 3.

Beginning : حمد بيجد و ثنای بيجد معبودى را سزد که - الخ

Ending : abruptly. کل حوادث قضا و قدر است و اکر مراد بقضا

ff. 45. ll. 9. S. 7.3×4.5 "/ 18.5×11.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2901

Man. 30.

رياض الأبرار في مناقب الكرار

RIYĀDU'L-ABRĀR FĪ MANĀQIBI'L-KARRĀR

A treatise on the attributes of Ḥaḍrat 'Alī and the other Shiite Imāms compiled by Faṭḥ ? a'l-Ḥasanī a'l-Ḥusainī surnamed Kamālu'ddīn.

The work is divided into gulshans, gulbans, ḥadiqās and chamans, interspersed with ḥikāyāt.

This copy is defective at the end.

Beginning: وبه الاستعانة في الافتتاح و التتميم رياض أحاديث صحيح
التحديث نزاهت و طرقات - الخ

Ending: abruptly. نود محمد بن حنفية رضي الله عنه آمدند و گفتند يا أبا القاسم
ما عازم بر قتال ابن لعین

ff. 603. ll. 17. S. 8.5 × 5.4"/21.8 × 13.8 cms.

Written in good nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Paper getting brittle. Poor condition. Not bound.

Seals of Sayyid Muḥammad 'Alī Khān Bahādur, 1221.

سید محمد علی خان بہادر - ۱۲۲۱

2902

M and K 14/2.

وقایع المصائب

WAQĀI'U'L-MAṢĀ'IB

A treatise on Shiite 'aqā'id pertaining to the martyrdom of Imām Ḥusain at Karbalā compiled by Aṣḥāḥī. It is based on other standard works. The name of the author and title of work are on last folio.

It contains several anecdotes, illustrating the miracles performed by Imām Ḥusain.

جواهر العقائد

Aq. 45.

JAWĀHIRU'L-'AQĀ'ID

A treatise on the five principles of Shiite faith, compiled by Muḥammad Rafī b. Ḥājī Mu'min Qazwīnī, and dedicated to Ātish Khān.

The work is divided into a muqaddima, five bābs and a khātima :-

| | |
|------------------------------|----------------------------------|
| Muqaddima, on f. 3v | مقدمه در معنی معرفت و علم و حکمة |
| Bāb 1, on f. 16v. | باب اول در توحید واجب الوجود |
| Bāb 2, on f. 29. | باب دوم در عدل |
| Bāb 3, on f. 37v. | باب سیم در نبوت |
| Bāb 4, on f. 42v. | باب چهارم در امامت |
| Bāb 5, on f. 108v. | باب پنجم در معاد |
| Khātima, in three maqālas :- | خاتمه مشتمل بر سه مقاله |

Maqāla i. on f. 127. مقاله اول در بیان بحلی از ابتدای خلقت دنیا

Maqāla ii, on f. 132.

مقاله دوم در ذکر بحلی از اخبار برزخ و آخر الزمان

Maqāla iii on f. 154v.

مقاله ثالث در ذکر بعضی از اواراد و ادعیه مأثوره بحربه

This copy is defective at the end.

Beginning : حمد و سپاس بقیاس حضرت حمد بی چونیرا منراست
که ذات پاکش از مشابیهت - الخ

Ending : abruptly. مذکور کرده و سفارش و تا کید بسیار کرده که هر که این

ff. 192. ll. 12. S. 8.5×4.7"/21.6×11.8 cms.

Written in good naskh. A late 11th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes, repaired. Fair condition. Bound.

A rare work.

2898

Aq. 95.

شمع یقین (آئینه دین)

SHAMA'-E YAQĪN (Ā'ĪNA-E-DĪN)

A treatise on the five principles of Shiite faith, compiled for the Persian knowing people by Ḥasan b. 'Abdu'r-Razzāq, in 1094/1683.

The work is divided into a muqaddima and five bābs.

Beginning: حمد و سپاس بی نهایت - برای ثنای علیم الاطلاق است که - انج

Ending: و ذخیره قیامت و عاقبت این فقیر کرد و بحق محمد و آله الکرام
علیهم افضل الصلاة والسلام

ff. 274. ll. 20. S. 9.2 × 6.6"/23.4 × 16.6 cms.

Written in good shikast-nasta'liq, by Muḥammad Muqīm, on 25 Rabī' II, 1208/30 November, 1793.

Rubrications. Good condition. To be repaired, and re-set in existing covers.

Seals of Muḥammad Hādī b. Muḥammad Ja'far.

احقر العباد محمد هادی بن محمد جعفر

2899

Aq. 96

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 418 ll. 17. S. 9.4 × 5.5; 7.1 × 3.3"/23.8 × 14.0; 18.0 × 8.4 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Coloured ruled borders. Worm holes, repaired. Fair condition. Bound.

Seals: 1. 'Abbās Ibn 'Alī.

عباس ابن علی

2. 'Abbās 'Alī Khān Bahādur.

عباس علی خان بهادر

ff. 163. ll. 10. S. 4.2×2.6 ; $3.0 \times 1.8^{\circ}$ / 10.8×6.8 ; 7.8×4.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Muḥammad Raḥīm b. Ḥājī Rajab 'Alī on 18 Rajab, 1192/12 August, 1771.

'Unwān. Red ruled borders. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and reset in existing covers.

2897

M & K. 78.

منهج اليقين

MANHAJU'L-YAQĪN

A treatise on Shiite 'aqā'id based on the sayings of their Imāms, collected and rendered into Persian by 'Alāuddīn Muḥammad b. Abū Turāb Gulistāna. The work was completed in Shawwāl, 1081/March, 1671.

Table of contents in the beginning.

Beginning : روانح روح افزای حمدی که مشام مقدسان ملاء اعلی
را سرگرم - السخ

Ending : صلوات الله - و سلامه عليه وآله الى يوم الدين محشور گردد
انشاء الله تعالى

ff. ii+301. ll. 14. S. $7.9 \times 5.0^{\circ}$ / 20.0×12.6 cms.

Written in ordinary naskh, by Muḥammad Ṣālīb b. Ḥājī Ṣādiq, on 29 Jumāda I, 2 Julūs (probably of Shāh 'Alām Bahādur Shāh I) = 1119/17 August 1707.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

Seals of Sayyid 'Alī a'l-Ḥusainī.

عبدہ سید علی الحسینی

Ref: EIO. 2667.

ff. 390. ll. 22. S. 10.1 × 5.5; 7.5 × 3.5"/25.0 × 14.0; 19.0 × 8.8 cms.

Written in good nasta'liq. A late 12th cent. copy.

*Unwān. Double gold ruled borders. Fair condition. To be repaired and re-bound.

2895

Tas. 179.

مسلك العارفين

MASLAKU'L-'ĀRIFĪN

A Persian paraphrase of Miṣbāḥu'sh-Sharī'at wa Miftāḥu'l-Ḥaqqat, a popular Arabic work on Shiite theology of the same Bāqir Majlisī. The translation was undertaken by Muḥammad Mas'ūd b. Muḥammad Ḥusain a'l-Qazwīnī for the benefit of non-Arabs.

Beginning : بدان - ايدك الله تعالى - بتايد العرفان و وفك بتوفيق السلوك
و الوجدان كه - الخ

Ending : از روى تحقيق ، ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء ،
والله ذو الفضل العظيم

ff. 152. ll. 14. S. 8.3 × 4.5"/21.2 × 11.4 cms.

Written in good naskh, on 4 Shawwāl, 1140/3 May, 1728.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

Seals of Sayyid Karīmu'ddīn, 1214.

سيد كريم الدين - ۱۲۱۴

2896

Tas. 180.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 194+7, ll. 12. S. 9.1×5.9 ; $7.0 \times 3.5^*/23.4 \times 15.0$; 17.8×8.8 cms.

Written in good naskh and nasta'liq, by Bijnāth Kashmīrī, who was born in Delhi, on 23 Shawwāl, 1237/13 July, 1822.

Good 'unwān. Gold and coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Margins repaired. Fair condition. Bound.

Seal of 'Ālam 'Alī.

عالم علی

Ref: Rs. 44; Bk. 502.

2893

حق الیقین

Aq. 51.

HAQQU'L-YAQİN

A popular work on Shiite theology by the same Bāqir Majlisī who completed the same in 1109/1698.

The work is divided into six bābs.

Beginning: الحمد لله الواحد الأحد الفرد الصمد، العليم... خامه شکسته
زبان و بیان ابکم نشان - البخ

Ending: و حزم بو قوعش نمی کنم، و در مرتبه تجویز و احتمال نمی گذاریم -
والله اعلم بالصواب

ff. 556, ll. 15. S. 11.0×7.1 ; $6.5 \times 3.6^*/28.0 \times 18.0$; 16.4×9.0 cms.

Written in good nasta'liq. A late 12th cent. copy.

'Unwān. First two pages decorated with golden foliage on margins, and interlinear gold work. Gold and coloured ruled borders. A few worm holes. Good condition. Bound.

Printed in Tehrān.

Ref: IvASB. 390; Bk. 1315.

2894

Aq. 52.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

Man. 20.

The third volume of the same work. It deals with the question of Imāmat in support of which some Traditions are quoted.

Beginning : الحمد لله الذي أوضح لنا مناهج الهدى . . . اما بعد اين مجاد
سيم است - البخ

Ending : انتقام خواهد كشيد از بني اميه وارانها كه تكذيب ائمه كردند
وانها كه عداوت ايشان داشته اند

ff. 295. ll. 18 to 20. S. 8.0×5.7 / 20.8×14.6 cms.

Written in clear naskh, on 20 Jumāda II, 1206/14 February 1792, at Karbalā, and collated on 17 Rajab.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

Man. 11.

تذكرة الأئمة

TADHKIRATU'L-A'IMMAH

The biographies of the Fourteen Immaculates, compiled by the same [Bāqir Majlisī. There is more controversial matter and curses upon the first three Orthodox Khalifs than history in this work.

The work is divided into a muqaddima, fourteen bābs and a khātima.

Beginning : الحمد لله الذي جعل النبيين . . . اما بعد چنين گويد بنده خا كسار
گنهگار مجد باقر -

Ending : الحمد لله جمعي از ايشان مؤمن و شيعه شديد والله يهدي من يشاء
الى صراط مستقيم

Epilogue by the scribe on ff. 195-197v.

This work is divided into sixty-five bābs and was completed on 25 Dhiḥajja, 1087/18 February, 1677.

Beginning : الحمد لله والصلاة على عباده الذين اصطفى وآله خير الورى،
اما بعد اين كتاب دوم است - الشيخ

Ending : از ملامت حق ناشناسان پرواندارم - وهو حسبي و نعم
الوكيل ، و كان ذلك . . . المعصومين المطهرين

ff. 333. ll. 29. S. 14.0×9.4"/35.8×24.0 cms.

Written in good naskh, by Zānu'l-ʿĀbedīn b. Ḥājī Muḥammad Bāqir a'l-Abharī, on 5 Rabi' II, 1089/17 May, 1678.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

From original foliation it appears that Vol. I is of 532 folios.

Seal of Ghaniuddīn.

عز من قنع وذل من طمع

Autograph of Muḥammad Ja'far b. Mirza Muḥammad Tāhir Khān.

Ref: IvASB. 1122-1123; IvC. 387; Bk. 501.

2890

Man. 19.

Another copy of the same.

Beginning : as usual

Ending : as usual.

ff. 357. ll. 27. S. 11.3×7.2; 8.6×5.0"/29.0×18.2; 22.2×12.6 cms.

Written in clear nasta'liq. A mid 12th cent. copy.

Coloured ruled borders. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals of Ḥaidar Yār Khān.

2887

H. I. 24.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 267. ll. 15 to 19. S. 9.5×5.9 "/ 24.4×15.8 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by 'Alī Naqī b. Ibrāhīm Astrābādī. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. A few folios at the end damaged. Poor condition. Not bound.

2888

H. I. 21.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 316. ll. 19. S. 9.2×5.5 "/ 23.6×14.0 cms.

Written in clear nasta'liq. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and reset in existing covers.

2889

Man. 18.

حياة القلوب

ḤAYĀTU'L-QULŪB

An epitome of the Arabic work, Bahāru'l-Anwār, in twenty-five volumes, which is the encyclopædia of Shiite doctrine, by the same Bāqir Majlisī. This Persian work is by the same author, in three volumes, out of which this copy contains the second volume, and it deals with the life of the holy Prophet and his mission from Shiite viewpoint.

ff. vii+280. ll. 17. S. 8.9×5.0 ; $6.3 \times 2.8^*$ / 22.8×12.8 ; 16.2×7.2 cms.

Written in good naskh and nasta'liq, by 'Abdu'l-Qaffār Lāhūrī, on 22 Rabi' II, 1100/4 January, 1689.

Good 'unwān. Gold ruled borders. Headings in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

Seals: 1. Munīru'l-Mulk, 1206.

منير الملك - ١٢٠٦

2. Raḥmatu'llah.

رحمت الله

2885

H. I. 20.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 445. ll. 15. S. 9.0×5.5 ; $6.5 \times 3.2^*$ / 23.4×8.8 ; 16.8×8.2 cms.

Written in good naskh, by Muḥammad Nabī b. Muḥammad Ridā a'sh-Shifrāzī, [on 17 Dhīhajja, 1108/27 June, 1697, at Mungipatan.

Rubrications. Gold ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and reset in existing covers.

2886

H. I. 22.

Another copy of the same, with table of contents in the beginning.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. iii+402+1. ll. 17. S. 9.5×5.6 ; $6.2 \times 3.0^*$ / 24.4×14.2 ; 16.0×7.6 cms.

Written in good naskh, by Muḥammad Bāqir b. Muḥammad Qulī Turkmānī. A late 12th cent. copy.

Good 'unwān. Coloured ruled borders. Headings in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

ff. 107. ll. 11. S. $8.2 \times 5.2''/20.8 \times 13.2$ cms.

Written in clear naskh and nasta'liq, by Mīr Abu'l-Qāsim Ṭabāṭabāī, on 24 Dhīqa'da, 1238/2 August, 1823, at Hyderābād.

Rubrications. Dampness stains. Good condition. To be re-bound.

Ref: Bk. 1316.

2883

H. 1. 19.

عملية المتقين

HILYATU'L-MUTTAQIN

The practices and observances of daily life for the Shiites based on the precepts and examples of their Imāms, compiled by the same Bāqir Majlisī, and completed on 5 Rajab, 1079/29 November, 1668.

The work is divided into fourteen bābs and a khātima.

Beginning: الحمد لله الذي ؟ على انبيائه المرسلين . . . اما بعد جنين كويد
تراب اقدام مؤمنين

Ending: و بهرین مردم کسی است که مردم از او منتفع شوند

ff. 299. ll. 18. S. $9.0 \times 5.2''/23.2 \times 13.4$ cms.

Written in good naskh and nasta'liq, by Ḥaidar., on 19 Shawwāl, 1084/17 January, 1674, at Hyderābād.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals: 1. Muḥtaram Khān.

محرم خان

2. Mu'īnu'l-Mulk.

معین الملک

Ref: Bk. 1314.

2884

H. 1. 23.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

2880

M & K. 65.

Another copy of same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 282. ll. 26. S. 11.8 × 6.8; 9.6 × 4.4"/29.8 × 17.2; 24.2 × 11.0 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Red ruled borders. Dampness stains. Wormholes. Fair condition. Bound.

2881

M & K. 69/1.

Another copy of the same, but defective at the end.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly. از اعنت الهی خلاص میکنم اگر عمل کنی شاید

ff. 138. ll. 21. S. 11.7 × 7.0"/29.6 × 17.6 cms.

Written in ordinary naskh. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2882

Aq. 67.

رسالة رجعت

RISĀLA-E-RAJ'AT

A short treatise compiled in 1078/1667, by the same Bāqir Majlisi. It deals with the return of the twelfth Shiite Imām, Mahdī.

Beginning : الحمد لله ... اما بعد چنین گوید فقیر خا کسار محمد باقر بن محمد تقی - النخ

Ending : العجل العجل العجل یا مولای یا صاحب الزمان صلاة الله وسلامه

Good 'unwān. Gold ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Seals of Munīru'l-Mulk, 1206.

منير الملك - ١٢٠٦

Ref: IvC. 388; Bk. 1311.

2878

M & K. 67.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

Prayers, in Arabic, at the end, by a later hand, on ff. 421-450.

ff. 42+30. ll. 15. S. $8.2 \times 4.7''/20.6 \times 11.8$ cms.

Written in good nasta'liq. This copy is alleged to have been transcribed by the author, on 15 Şafar, 1104/16 October, 1692.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2879

M & K 66.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 345. ll. 22. S. $10.2 \times 6.8; 7.0 \times 3.7''/25.8 \times 17.2; 17.8 \times 9.2$ cms.

Written in clear naskh. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Gold ruled borders. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals of Haidar Yār Khān.

حیدر یار خان

them then it is advisable to embrace Islām. The Jews thereupon sent him as their emissary to the holy Prophet with 1400 points (مسائل) and two very intricate problems which according to them were beyond human comprehension. When Samuel placed all those points to the holy Prophet, he replied to them to the satisfaction of Samuel. Thereupon Samuel embraced Islām, and was given the name of 'Abdu'llah bin Salām.

The translation ends on f. 41, followed by supplementary notes on different topics.

This rare and scarce copy is defective at both ends.

Beginning: abruptly. سکان بادیه ضلالت بنور هدایت انسان راهبر کشته - الخ

Ending: abruptly. فکر کردن در صنایع قدرت و بدایع فطرت بر دو نوع است

ff. 160. ll. 12. S. 7.0×4.4 ; 5.5×2.1 "/ 19.0×10.8 ; 12.6×5.4 cms.

Written in good nasta'liq. A late 11th cent. copy.

• Rubrications. Gold ruled borders. Worm holes. Fair condition. Bound.

2877

M & K. 16

عین الحیاة

'AYNU'L-HAYĀT

An extensive work on Shiite theology and ethics compiled by Muḥammad Bāqir b. Muḥammad Taqī a'l-Majlisī, (d. 1110 or 1111/1699 or 1700). It is based on Quranic verse and Traditions.

The work is divided into several bābs, and subdivided into faṣls, aṣls etc.

Beginning: لآلی حمد و جواهر ثنائی تحفه بارگاه جلال کبریاء حکیمی که - الخ

Ending: از دعای طلب مغفرت سیات و رفع درجات محروم نگرانند

ff. 402. ll. 17. S. 9.5×6.3 ; 7.6×4.0 "/ 24.0×16.0 ; 19.2×10.0 cms.

Written in good nasta'liq, by the author, at the end of Jumāda II, 1075/ end of January, 1663.

A tract on cleanliness written for his son, Mu'inuddin Ahmad.

Beginning : منت خدايرا - تقدست اسماءه که ارواح مؤمنان را - الخ

Ending : عذرش زائل شود مستحب است که نماز را اعاده کند - و الله الموفق

5. *Risāla-e-Jawāb*, on ff. 40-42v.

A reply to the *Ṣūfīs* of Multān who wrote to one 'Abdu's-Salām of Iṣfahān regarding the truth about Shiite faith.

Beginning : اما بعد غرض ازین نوشته بیان آنست که طایفه - الخ

Ending : بنوشتن پیش ازین نتوان و العلم عند الله والحمد لله و الصلاة
... اهل بیت رسول الله

A poem of 'Iṣmat Bukhārī in the beginning.

ff. 42. ll. 19. S. 9.6 × 6.0" / 24.2 × 15.2 cms.

Written in good nasta'liq, by Muhammad Ja'far, for 'Alī Muḥammad. An early 12th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2876

M & K. 16.

تحفة الغرائب

TUHFATU'L-GHARĀ'IB

A Persian paraphrase of the Arabic work called 'Masā'il li 'Abdillāh bin Salām', refer Arabic *Mawā'iz* 48/3 of our Library. The translation was done by 'Alī b. Ṭaifūr a'l-Buṣṭāmī, (d. after 1092/1681), who was attached to the Courts of Sulṭān 'Abdu'llah Quṭb Shāh, and Tānā Shāh of Golconda.

It is said that when the holy Prophet invited the Jews of Khaibar towards Islām, they consulted Samuel who was held in esteem for his erudition. He told the Jews that there are several signs about the last prophet in the Old Testament, and if the Prophet of Arabia were to possess

Aq. 142/2-6.

مجموعه رسائل کاشی

(MAJMU'A-E-RASĀ'IL-E-KĀSHĪ)

This copy contains the following works of Muḥammad Murtaḍā surnamed Muḥsin a'l-Kāshī, takhalluṣ Faīḍ, (d. 1090/1679), for his other works refer Nos: 1963 and 1964.

1. Sharā'īṭu'l-Iymān, on ff. Iv-8.

A tract on Shiite theology.

Beginning : منت بی پایان خدایرا جل شأنه که مستعدان کمال ایمانرا از
ظلمات جهالت - الخ

Ending : واکنساب اخلاق پسندیده در تضاعیف آن - والله المستعان
وعليه التكلان

2. 'Ā'īna e-Shāhī on ff. 8v-15v.

A Persian paraphrase of the abstract of the Arabic work, Dīyāu'l-Qulūb, compiled in 1076/1666.

Beginning : سپاس شائسته و ستایش بائسته سزاوار نثار
پرورد گاری که - الخ

Ending : آئینه جان از ممکن غیب دل که بیرون آید آنچه بماند
نارنجیست

3. Tarjamatu'sh-Sharī'at, on ff. 15v-33v.

A short treatise dedicated to Shāh 'Abbās II.

Beginning : سپاس و ستایش مر خداوندی را که خلاق را برای پرستش
خود آفرید - الخ

Ending : وجود آنچه مقصود بود از کتاب انجام آمد

4. Tarjamatu't-Tahārat, on ff. 33v-40.

Aq. 92.

شرح بجرید العقائد

SHARḤ TAJRĪDU'L-'AQĀ'ID

A commentary on Naṣīruddin Ṭūsī's famous work compiled by Mirza ,Imādu'ddīn Maḥmud b. Mirza Mas'ūd Simnānī of Burhānpūr, when he was engaged at Burhānpūr in giving discourses on this work. Since he could not write a preface to his work, he left it with Mirza Muḥammad Maḥdī a'l-Husainī a'l-Mashhādī, better known as 'Ishqābādī, Dīwān of Burhānpūr. The original copy came to the notice of Muḥammad Amīn b. Muḥammad Mu'min Khurāsānī Jūnābādī who was a pupil of the commentator. He, therefore, wrote a short preface to this work on 1 Rajab, 1088/20 August, 1677, vide ff. Iv-2v.

Beginning : Preface- سپاس و ستایش مرصاعی را که دلالت میکند بر وجود او و حدوث مصنوعات

Commentary — اما بعد حمد واجب الوجود علی نعماته و الصلاة علی سید انبیائه - الخ

Ending : Preface آن مبرور را بفتح و حقیر را بدعای خیر یاد آوری نمایند -

Commentary — علی التوفیق للاتمام و الصلاة علی خیر الانام و آله الکرام ...
کثیرا کثیرا

ff. 261. ll. 31. S. 8.8 x 6.0"/22.2 x 15.2 cms.

Written in clear shikast-nasta'liq, on 2 Jumāda II, 1185/12 September, 1771, at Mylāpore.

European paper. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Binding damaged.

M & K. 78.

Another copy of the same, but less than half of the above work.

The scribe has inserted the name of Sultān 'Abdu'llah Quṭb Shāh of Golconda in place of Sultān Fathu'llah. Thus a clear fake.

A treatise on Shiite beliefs, compiled by an anonymous person by the commands of Sultān 'Abdu'llah Quṭb Shāh of Golconda, (1035-1083/1626-1674).

The work is divided into a muqaddima, a few bābs and a *khātima*. This copy which is defective at the end contains:-

Muqaddima, in praise of knowledge and condemnation of ignorance, on f. 4v.
مقدمه در تعریف علم و مذمت جهل

Bāb 1, on cleanliness, prayers, etc., on f. 4v.

باب اول در دعاء و ذکر و حمام و مسواک و انگشتر و امثال آن

Bāb 2, on friendship and enmity; and on sincerity and love, on f. 17v.

باب دوم در دوستی و دشمنی و صداقت و محبت

Bāb 3, on contracting friendship, etc., on f. 29.

باب سیوم در معاشرت با مردم و سلوک با اهل مدینه و منزل آدمی و غیره

Bāb 4, on forgiveness, etc., on f. 52v.

باب چهارم در عفو و عقاب و توبه و عذر پذیرفتن و غیرها

Beginning: ابتدای کلام بنام خداوندی سزا است که ابتدای هر چیز ازوست - الخ

Ending: abruptly. زرها را طلبید، ندارد، تا کار بجزنگی رسید،
چون مموئل قلمه محکم

ff. 6. ll. 19. S. 9.7 × 5.7 / 24.4 × 14.4 cms.

Written in good nasta'liq. A 12th cent. copy.

Rubrications. Worm eaten. Poor condition. Bound.

Tas. 121.

فوائد منجی

FAWĀ'ID-E-MUNJĪ

An anonymous compilation containing notes on Shiite beliefs. The work is dedicated to some Sulṭān Faṭḥu'llah. It is divided into a muqaddima and six bābs:-

- Muqaddima, on f. 3. مقدمه در تعریف علم و مذمت جهل
- Bāb 1, on f. 6v. باب اول در دعاء و ذکر و محام و مسواک و انگشتر و امثال اینها
- Bāb 2, on f. 28. باب دوم در دوستی و دشمنی و صداقت
- Bāb 3, on f. 47v. باب سوم در معاشرت با مردم و ملوک با اهل مدینه
- Bāb 4, on f. 87. باب چهارم در عفو و عقوبت و توبه و عذر پذیرفتن و غیرها
- Bāb 5, on f. 97v. الباب الخامس فی الصبر و الشکر
- Bāb 6, on f. 114. الباب السادس فی العدل و الانصاف و الظلم و الاعناف و غیره

From f. 148v, the notes are divided into several fasls on proverbs and anecdotes of the Arabs (مثلهای عرب و حکایات ایشان).

Beginning: ابتدای کلام بنام خداوندی - عز است که - السخ

Ending: ملک براو خرم و معمور باد + چشم بد از مملکتش دور باد

ff. 709. ll. 15. S. 10.1 × 5.8"/25.8 × 14.8 cms.

Written in good naskh, on 25 Dhīqa'da, 1082/14 March, 1672, at Bīdar.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

Seal of Mu'tamanu'd-Daulah Dargāh Qulī Khān. مؤتمن الدوله درگاه قلی خان

Autograph of Dargāh Qulī Khān dated 14 Şafar, 1172/ 17 October 1758.

v. Miscellaneous notes and Kāshī's poem.

Beginning : بسم الله... و الصلاة والسلام على محمد سيد المرسلين و اهل بيته
الطاهرين - الشيخ

Ending : ينجم الله اكبر . عفوك عفوك يا كريم

ff. ix + 25 + 64. ll. 10. S. 6.6 × 3.8 ; 4.2 × 2.2" / 14.2 × 9.6 ; 10.6 × 5.6 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq, in Dhīqa'da, 1076/ May, 1666, at Shīrāz.

Good 'unwān. Gold and coloured ruled borders. Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound

2871

Pa. 2. عقائد قطب شاهيه

(‘AQĀ’ID-E-QUTBSHĀHĪYAH)

A collection of rules and regulations framed by the commands of Sulṭān ‘Abdu’llah Quṭb Shāh, to be observed by his subjects during the month of Muḥarram.

Stray verse at the end.

Beginning : احوال سلطان عبد الله و بدائع دين تعزیه حضرت ابا عبد الله
الحسين - الشيخ

Ending : چون مذهب ائمه دين رايج از شمه است - يابند گانی اين دين حق شريف

ff. 13 + 2. ll. 9. S. 7.9 × 4.7" / 20.2 × 12.0 cms.

Written in clear shikast-nasta’liq, by Jamil Baig, on 14 Rabī’ I, 1213/ 26 August, 1798.

Rubrications. Worm eaten. Poor condition. To be repaired, and re-bound.

Seals: 1. I’tiṣāmu’l-Mulk, 1245. اعتصام الملك بنده آصف جاہ - ۱۲۴۵

2. I’tiṣāmu’l-Mulk, 1274. اعتصام الملك - ۱۲۷۴

The author left the 'Ādil Shāhī Court and joined the North. The weather did not suit him and on his request he was transferred to Aurangābād.

The collector (Nawāb Sālār Jung) directly descended from him in seventh line.

The work appears to have been compiled when the author was still in Bijāpūr.

Beginning : الحمد لله الذى أخر جنا من ظلمات الضلالت... ميزان وميكويد
این فصول خمسہ

Ending : شکر الله شکر الله لا حول ولا قوة إلا بالله العلى العظيم

ff. 351. ll. 17. S. 11.7 × 6.9"/29.6 × 17.7 cms.

Written in excellent naskh, by Muḥammad Ma'ṣūm Lu'lū'i Shīrāzī Qawm-e-Dhīlqadar. A late 11th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

An heirloom of the collector.

Seal: Haidar Yār Khān. یا حیدر کرار ادرکنی - حیدر یار خان

Author's endowment notes at both ends, and Waqf (وقف) on top of every page. The title of work, authorship and two couplets are also autographed.

2870

Aq. 100.

عقائد دینیہ

'AQĀ'ID-E-DĪNIYAH

An anonymous treatise on Shiite beliefs composed in the form of questions and answers. It ends on f. 25.

On other folios the following Arabic prayers are noted :-

- i. Miftāhu'l-A'zam, Selected by Sulaimān a'l-Miṣrī, on ff. 25v-62v.
- ii. Iḥtijābu'l-Mafātiḥu'l-'Azīm, selected by the same, on ff. 63-77.
- iii. Faṭḥu'r-Rijāl, short prayers, on ff. 77v-79.
- iv. Khwāṣ-e-Nāde 'Alī, on ff. 79v-82v.

2867

Man. 45.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 264. ll. 21. S. 11.5×7.0 "/ 29.4×18.0 cms.

Written in ordinary script. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seal of Ja'far.

یا امام جعفر صادق ادر کنی

2868

Man. 46/1.

Another copy of the same, defective at the end, by a few lines.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly.

ای نسیم از گلشن غیب آمده

بانسیمیم شاه لا ریب آمده

ff. 318. ll. 17. S. 5.0×8.7 "/ 12.8×22.2 cms.

Written in good naskh. A late 11th cent. copy.

Rubrications. Dampness. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound, as a bayāḍ.

2869

Aq. 79.

روضة الأنوار و زبدة الأفكار

RAWḌATU'L-ANWĀR WA ZUBDATU'L-AFKĀR

A learned exposition on Shiite principles of faith that are five (فصول خمسة) 1. Unity of God (توحید) 2. Justice (عدل) 3. Prophethood (نبوت) 4. Imāmat (امامت) and 5. the other World (معاد) compiled in 1067/1050, by Muḥammad Bāqir b. Shaikh Muḥammad 'All b. Shaikh 'Uwais a'l-Uwaisī.

ff. 290. ll. 17. S. 8.4×5.1 ; 7.3×3.9 "/ 21.6×13.0 ; 18.6×9.8 cms.

Written in good shikast-nasta'liq, by Sayyid 'Abdu'n-Nabl b. Mīr Maḥmūd Ṣafawī, on 15 Jumāda II, 1180/ 18 November, 1766, at Hyderābād.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals of Munīru'l-Mulk, 1206.

منير الملك - ١٢٠٦

2865

Man. 41.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 286. ll. 17. S. 8.7×5.9 ; 6.5×5.4 "/ 22.2×15.0 ; 16.6×8.6 cms.

Written in clear nasta'liq, by Mirzā Darwish 'Alī Baig, on 13 Rajab, 1207/ 24 February, 1793, at Bīdar Fort, when he was accompanying A'ẓamu'l-Umarā (Arasṭū Jāh).

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

Seal of Munīru'l-Mulk, 1206

منير الملك - ١٢٠٦

2866

Man. 44.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 424. ll. 15. S. 8.5×5.2 "/ 22.8×13.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals: 1. Muḥammad Bāqir, 1205 and his autograph.

باقر - ١٢٠٥

2 and 3 Mustaqīmu'd-Daulah, 1246.

مستقيم الدولة - ١٢٤٦

Man. 42.

مناقب المرتضوی

MANAQIBU'L-MURTAḌAWI

A treatise on the life and attributes of Ḥaḍrat 'Alī compiled by Muḥammad Sāliḥ a'l-Ḥusainī a't-Tirmidhī, takhalluṣ Kashfī, (d. 1060/1650). He was the son of 'Abdullah Mushkīn Qalam Jahangīrshāhī, takhalluṣ Wāṣfī, who was an elegant calligrapher. They flourished under Jahāngīr and Shāh Jahān respectively.

This work on Shiite 'aqā'id is divided into twelve bābs based on the Glorious Qur'ān, the traditions and other sayings of the Sunnites and Shiite. It was completed in three years time.

Beginning: خداوند عطا کن نشاء ذوق - که آغازم بنامت نامۀ شوق

Ending: تا شود مقبول طبع خاص و عام
للسنی منّا نحتیت والسلام

ff. 278. ll. 19. S. 8.9 × 5.3" / 22.8 × 13.6 cms.

Written in ordinary script, by Muḥammad Bāqir, on 29 Muḥarram, 1115/ 14 May, 1703, at Parenda Fort (in Osmanābād, Maharāshtra).

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals of 'Izzat Talab Khān. للعبد انسانی عرت طلبخان الزاهدی

Ḥaidar Yār Khān (two patterns)

حیدریار خان

Ref: R. 154, 1081; IvASB 68; IvC 375, 749.

Man. 43.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

2861

Ta. 445.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 24. ll. 15. S. $12.5 \times 8.0^{\circ}$ / 31.8×20.2 cms.

Written in clear shikast-nasta'liq, by Haidar Husain a'l-Husaini, on 25, Muḥarram, 1298/ 28 December, 1880.

European paper. Headings and Arabic verse in broad Script. Good condition. Bound.

2862

M & K. 98.

نصیحت نامہ

NAṢIḤAT-NĀMA

A collection of admonitions which the Holy Prophet is alleged to have given to Ḥaḍrat 'Alī.

An anonymous compilation.

Beginning : نصیحت نامہ حضرت رسول ... بحضرت امیر المؤمنین ...
فرمودہ اند کہ یا علی .. الخ

Ending : کسی نیکی بیند کہ بہر دوسرای یکے رسایندہ باشد

ff. i+5. ll. 16. S. 7.2×4.5 : $6.3 \times 3.5^{\circ}$ / 18.0×11.4 ; 15.8×8.8 cms.

Written in clear naskh. A late 11th cent. copy.

Rubrications. Red ruled borders. Worm holes, repaired. Fair condition. Bound.

The work is divided into forty maslaks.

Beginning: حمد بی حد خالق را رواست که سالکان مسالک اطوار را
طریق -- السخ

Ending: این جواز از اتفاق فرقه ناجیه است فلا تغفل اللهم اجعل
خاتمة امورنا خیرا

ff. 97. ll. 14. S. $8.5 \times 5.8''/21.6 \times 14.8$ cms.

Written in good naskh, in Ramadān, 1038/April, 1629.

Rubrications. A few worm holes. Fair condition. To be re-bound.

2860

Ta. 479. نکات دوام دودمان قطب شاهی

NUKĀT-E-DAWĀM-E-DUDMĀN-E-QUTBSHĀHĪ

A collection of twelve nuktās (points), based on the Glorious Qur'ān, Shiite Traditions, and sayings of great men, compiled by Ḥusain a'l-Husainī a'l-Yazdī, in 1054/1644. The title (نکات دوام دودمان قطب شاهی - ۱۰۰۴) is chronogrammatic. It is said that the perpetuation of the Qutb Shāhī Dynasty will be ensured till the return of Imām Mahdī provided the rulers were to follow the injunctions laid down in these nuktās.

Beginning: حمد و سپاس و بقیاس مر بادشاهی را سزاوارست که نکات
صنعتش را بامر کن

Ending: شامت همه صبح کند و شب همه روزی
روزت همه ماهی کند و مه همه سالی

ff. 61. ll. 9. S. 7.0×4.1 ; $4.5 \times 2.4''/18.0 \times 10.4$; 11.6×6.2 cms.

Written in good nasta'liq, by Muḥammad Amin b. Mullā Walī. A late 11th cent. copy.

Excellent 'unwān. Gold and coloured ruled borders. Headings in red. Dampness stains. Good condition. To be repaired, and re-bound.

Seals: 1. Muḥammad 'Alī.

بود جانشین محمد علی

2. Sayyid Murtaḍā Khān.

سید مرتضی خان

ff. 171. ll. 17. S. 8.4×5.0 ; 6.3×2.9 "/ 22.2×12.6 ; 16.0×7.2 cms.

Written in good naskh and riqā', in 1023/1614.

Gold ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Fair condition. bound.

A rare work, and a presentation copy for the Sulṭān.

2858

Aq. 145/3.

تحفة عباسی

TUḤFA-E-'ABBĀSĪ

A treatise of Shiite laws and theology, compiled by Muḥammad Ṭāhir b. Muḥammad Ḥusain a's-Shirāzī a'n-Najaffī a'l-Qummī, in the form of questions and answers. The work is dedicated to Shāh 'Abbās Ṣafawī (995-1037/1587-1628).

Beginning: الحمد لله ... ای عزیز من بدان و آگاه باش که دنیا موضع راحت - العی

Ending: کائنات اما احتیاط است که سه مرتبه گفته شود

ff. 101. ll. 14. S. 9.4×5.6 "/ 23.8×14.2 cms.

Written in ordinary nasta'liq, on 1 Jumāda II 1195/25 May, 1781, at Hyderābād.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

Ref: IvASB. 1027.

2859

Tas. 178/1. مسالك الأطوار و مشارق الانوار

MASĀLIKU'L-ATWĀR WA MASHĀRIQU'L-ANWĀR

A treatise on Shiite beliefs compiled by Muḥammad Bāqir Wā'iz Tabrizī.

Occasional marginal glosses.

Beginning : بعد از حمد ذوالجلال و درود نبی و آل بر لوح خیال اهل کمال
می نگار دکه - الخ

Ending : و دولت روزافزونش بدوات آنحضرت متصل بالنبی
و آله صلوات الله علیهم

ff. 16, ll. 12. S. 7.0×4.5 "/ 17.8×11.4 cms.

Written in good shikast-nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

A rare work.

2857

Aq. 25. تحفه شاهى و عطیة الهی

TUHFA-E-HHĀHĪ WA 'ATĪYYA-E-ILĀHĪ

A Persian paraphrase of Mullā 'Alī Qushjī's commentary compiled in 1023/1614 on Naṣīruddīn Tūsī's Tajrīdu'l-'Aqā'id, by Zainu'ddīn 'Alī b. 'Abdu'llah Badakhshī.

The translator has enumerated the commentaries on this work (f. 3), but selected Qushjī's commentary on which he has added his own views on the topic of Imāmat. He has however deleted the first two maqṣads, and has taken up the work from maqṣad three to the end. The translation begins from f. 6 and ends on f. 170v.

The work is dedicated to Sultān Muḥammad Quṭb Shāh of Golconda whose name is written in gold on f. 3v, but is left blank on f. 171.

Beginning : شکر و سپاس بادشاهی را بنزد ، و حمد و ثنا بقیاس خالق
زارسد که - الخ

Ending : بحیر اسمائك بحیر افضل انبیائك ذخیرا لی موجبا بجزیل
جزائك و صلی علیه بدوام ارضك و سماءك

Beginning :

الحمد لله ... أما بعد جنين كويد احقر العباد - الخ

Ending :

در کتب مبسوط مذکور است الحمد لله اولاً
و آخراً ... آله الطاهرين

ii. Shakk wa Ṣaḥw dar Namāz, on ff. 28-60.

A tract on doubts and omissions in namāz.

The work is divided into a muqaddima, five faṣls and a *khātima*. It is the same as *Risāla fi Shakkīyātī's-Ṣalāt*. Refer No. 2632/4.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 84. ll. 21 or 22, and 12 on margins. S. 7.2 × 4.1 ; 6.4 × 3.7 ; 4.4 × 2.2⁹ / 18.6 × 10.6 ; 16.6 × 9.6 ; 11.4 × 5.2 cms.

The original work is written in excellent *naskh* and *nasta'liq*, by 'Arab Kātib Shirāzī, at the end of Jumāda I, 1034/end of February, 1625, at Hyderābād; and those on the margins in ordinary *naskh* and *nasta'liq*, in 1172/1759.

Gold and coloured ruled borders. Headings in gold, blue or red. Dampness stains. Margins damaged. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

A note dated Sha'bān, 1041/February, 1632, by Muḥammad Ṣalāh a'l-Anṣārī on the flyleaf.

A rare work.

2856

Aq. 11.

اصول خمسة

UṢŪL-E-KHAMSA

A short treatise on the five principles of Shiite faith compiled by an anonymous person. The work was written by the orders of Sulṭān Muḥammad Quṭb Shāh of Golconda, who had ordained the learned men of his time to collect five Qur'ānic verses for each uṣūl (principle).

This copy which is defective after the first folio contains faṣls 2 to 5, and the *khātima*.

ff. 89. ll. 14. S. 9.6×5.4 ; $5.9 \times 2.8^7/24.2 \times 13.6$; 14.8×7.0 cms.

Written in good shafi'a. An early 12th cent. copy.

Gold sprinkled space for text. Good 'unwān. Gold and coloured ruled borders upto f. 18v; and rubrications upto f. 46v. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2855

I. 1 48

رسالة اصول واحكام

RISĀLA-E-UṢŪL WA AḤKĀM

A treatise on the principles of faith and divine commands found in the Glorious Qur'ān, compiled by Shāh Qādī (Ghāzī) b. Hājī Husain Yazdī, for Sultān Muḥammad Quṭb Shāh of Golconda, (1020-1035/1612-1626). The work was completed on 1 Ramaḍān, 1021/16 October, 1612.

The work is divided into four bābs, as under:—

Bāb 1, in 5 faṣls, on f. 4.

باب اول در اصول دین

Bāb 2, in 8 kitābs, on f. 9v.

باب دوم در عبادات

Bāb 3, in 4 kitābs, on f. 33v.

باب سوم در معاملات

Bāb 4, in 5 kitābs, on f. 66v.

باب چهارم در احکام

Beginning:

الحمد لله و صلى الله على مصطفاه و آله الهداة أما بعد
فرمان - الخ

Ending:

هر چند که عازم بر اعاده آن نباشد - الحمد لله رب العالمين

Besides, there are two short tracts on Shiite beliefs by Muḥammad Bāqir a'l-Majlisi on the margins:—

i. Sharā'iṭ wa Ādāb-e-Namāz, on ff. 1v-27v.

Notes on obligatory prayers.

2852

Man. 37.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 253. ll. 15. S. $8.9 \times 4.9''/22.8 \times 12.6$ cms.

Written in ordinary script. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

2853

Man. 35.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending . جميع دوستان رسول و محبان احفاد بتول باری ائمه اثنا عشر
علیهم السلام در عرصه بحشمت

ff. 130. ll. 15 or 23. S. $9.0 \times 5.5''/23.0 \times 14.0$ cms.

Written in ordinary script, in two different hands. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Seals of Bâqir 'Alī Khān, 1220

باقیر علی خان - ۱۲۲۰

2854

Aq. 116.

Another copy of the same, defective in bāb 7.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly. او نور پست لامع و مہر است ساطع و ماہیت طالع

Beginning : رب اشرح لی صدري و بصر لی امری . . . حمد و سپاس
 فامحدود واجب الوجودی را که خلقا ترا بدین مبین - البخ

Ending : انشاء الله تعالى آن نیز عنقریب محصل و میسر خواهد شد

The following work are on the margins:—

1. Chihil Ḥadīth, on ff. 2v-40.

A collection of forty sayings of the Holy Prophet, with Persian paraphrase and notes compiled by Zainu'ddīn 'Alī b. 'Abdullah Badakhshī, during the reign of Sulṭān Muḥammad Quṭb Shāh of Golconda, (1020-1035/1612-1626).

Beginning : حمد و سپاس نا محدود مر واجب الوجودی را که - البخ

Ending : حکم نماز است حکم روزه ، صلی الله علی خیر خلقه
 محمد و آلہ اجمعین برحمتک یا ارحم الراحمین

2. Qaus-nāma, on ff. 44v-45v.

An extract from a treatise on archery by an anonymous author, in twelve masa'lās.

3. (Qissa-e-Firūz Bakht), on ff. 53v-64v.

A romantic tale compiled by Shamsu'ddīn 'Alī Sharbat dār.

4. (Majmū'a-e-Ruqa'āt), on ff. 65-89v.

A collection of letters.

5. Risāla-e-Ḥasanīyah, on ff. 89v-125v.

Another copy of the same. Refer Nos. 2845 to 2849.

6. Scrappy notes.

ff. 136. ll. 21. S. 10.9×5.7"/28.2×14.6 cms.

Written in ordinary script, by Ṭāhir a'l-Ḥusainī, on 29 Rajab, 1037/25 March, 1628, at Hyderābād.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
 Bound.

ff. 115. ll. 11. S. $7.3 \times 4.4^{\circ}/18.4 \times 11.0$ cms.

Written in excellent nasta'iq. An early 11th cent. copy.

Gold sprinkled paper. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2850

H. 1. 1. اعلام الاحبا في حرمة الغنا في القرآن

I'LĀMU'L-AḤIBBĀ FI ḤURMATI'L-GHINĀ FI'L-QUR'ĀN

A treatise on Shiite beliefs compiled by Muḥammad Hādī b. Luḥayyī'l-Mūsawī a'l-Ḥusainī a's-Subzwārī. The work is based on the traditions etc. and pertains to the illegality of vocal music (غنا) in reciting the Glorious Qur'ān, and in praying (دعاء).

The work is divided into a muqaddima, five faṣls and a khātima.

Beginning: محمد بيحد عزيزي را سزااست كه گوشه كيران - الشيخ

Ending: وهذا آخر ما أردنا إيراده في هذه الرسالة والصلاة والسلام ..
ارحم الراحمين

ff. 58. ll. 15. S. $6.5 \times 4.1^{\circ}/16.8 \times 10.4$ cms.

Written in good naskh, by Nājī Miskīn, on 8 Jumāda II, 1014/11 October, 1605.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2851

Man. 36. كفاية المؤمنين

KIFĀYATU'L-MU'MININ

A Persian paraphrase of an Arabic work of Shaikh Quṭbu'ddīn Abi'l-Ḥusain Sa'id b. Hibatu'llah b. a'l-Ḥasan a'r-Rāmandī, (d. 537/1177), compiled by Muḥammad Sharīf Khādim. The work deals with the miracles performed by the Fourteen Immaculates, and is thus divided into fourteen bābs.

2847

Aq. 66.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 69. ll. 12 to 16. S. $8.0 \times 4.5''/20.6 \times 11.6$ cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Sher 'Alī, on 2 Jumāda I, 1086/15 July, 1675.

Rubrications. Dampness stains. Worm eaten. Fair condition. Bound.

Seal of Ḥasan Riḍā, 1309.

حسن رضا - ۱۳۰۹

2848

Aq. 63.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 82. ll. 14. S. $8.4 \times 5.6''/21.4 \times 14.0$ cms.

Written in ordinary nasta'liq, on 16 Dhīḥajja, 1235/24 September, 1820, at Akbarābād.

Rubrications. Worm holes. Poor condition. preserved in a portfolio.

2849

Aq. 64.

Another copy of the same, defective at both ends.

Beginning : abruptly. پس عالم باشد مصلحت فعل و مصلحت ترك فعل - الخ

Ending : abruptly.

حاکم شرع که امام یا نائب امام است و چون

The work is divided into a muqaddima, two bāb and a khātima.

Beginning : حمد بیحد و ثنای بیحد مر واجب الوجودی را که نظام اصول
از فیض جود اوست - الخ

Ending : امر و نهی واجب باشد پس اگر درین حال ترك كند عاصی
درگاه آله باشد

Besides, the following are found :-

i. A few poems including a mathnawī, on ff. 66v-68v.

ii. A tract on ethics, on f. 68v.

ff. 66+2. ll. 15. S. 8.0×5.6 ; 5.3×3.2"/20.2×14.0 ; 13.4×8.0 cms.

Written in good naskh, on 14 Ramaḍān, 1001/4 June, 1593.

Good 'unwān. Gold and coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Ref : Bk. 1323.

2846

Aq. 65.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 52 ll. 15. 7.5×5.0"/19.0×12.8 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. An early 11th cent. copy.

First and last folios by a later hand. Rubrications. Dampness stains. Worm eaten. Poor condition. Preserved in a portfolio.

A note states that this copy was sent to the Imperial Library, by Āftāb Khān, in 1069/1659.

Seal :

سرفرازی دارد از لطف محن

The work is in two parts, the first deals with the attributes of the Holy Prophet and his family, which is not in this library. This copy is of the second part.

Beginning : زیب و آرایش آغاز و انجام، نعوت و صفات انبیای عظام
و اوصیای کرام محمد و سپاس - الخ

Ending : از دوستان دوستان امیر المؤمنین علیه السلام کند بحق محمد
و آله الطاهرین، آمین رب العالمین

ff. 287. ll. 25. S. 11.3 × 6.9"/28.8 × 17.4 cms.

Written in good nasta'liq, by Mullā Mu'min b. Mullā Muḥammad Brūjardī, on 21 Muḥarram, 1089/ 4 April, 1678.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2844

Aq. 50.

Another copy of the same. A few lines at the end are not found in this copy.

Beginning : as usual.

Ending : دران رساله مذکور شده که همه را علمای شیعه نوشته اند
سوائی آنکه در کتابها دیگر نوشته

ff. 312. ll. 20. S. 13.8 × 8.5"/35.0 × 21.6 cms.

Written in clear shikast-nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

2845

Aq. 141/1. رساله حسنیه

RISĀLA-E-ḤASANIYAH

A treatise on Shiite theology written in an abridged form by an anonymous person

Faṣl 5, on f. 88v.

فصل پنجم در آنکه کسانی که مقدم شده اند بر
انحضرت امام نشینند

Faṣl 6, on f. 90v.

فصل ششم در نسخ و ابطال حجتهای ایشان بر امامت
ابی بکر

Marginal glosses.

Beginning :

شکر و سپاس خدا یرا که قدیست و واحد ، و ستایش
بی قیاس کریمی را که - الخ

Ending :

والحکم بالصلاة علی محمد وآله مظاهر انوار جماله ومصادر
امرار کماله... سنه ۹۸۵

ff. 94+2. ll. 14. S. 7.1 X 4.8"/18.0 X 12.0 cms.

Written in good nasta'liq, by 'Isā b. Asad ḥb. Qubād Mihrānī
Ṭālish, in 985/1577.

Rubrications. Dampness stains. Fairly good condition. Bound.

This copy was transcribed by the grandson of Qubād to whom the
translator had dedicated the work.

Seals : 1. Allāh Qulī, 1118. لا اله الا الله الملك الحق المبين الله قلی - ۱۱۱۸

2. 'Isā Khān. زدل و جان بنده آل علی عیسی خان

3. Malik Muḥammad, 1168. العبد الراجی ملک محمد - ۱۱۶۸

4. اداره معارف و اوقاف فارس

Ref: IvASB (Ar.) 849.

2843

Aq. 49.

حديقة الشيعة

HADIQATU'SH-SHI'AH

A treatise on the attributes of the twelve Shiite Imāms and their
rights to Imamāt according to Shiite beliefs, compiled by Aḥmad b.
Muḥammad Ardabili, (d. 993/1586).

Seals: 1. Shaikh Muḥammad 'Alī Uwāṣ, 1067. ۱۰۶۷ - شیخ محمد علی اویس
 2. Ḥaidar Yār. Khān, two sizes. حیدر یار خان
 Ref: Bk. 509.

2841

Man. 16.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: و درود بادلم که برق نور دهد و باد قبول از مشرق وزد - اللهم
 صل وسلم علیه وآله

ff. 358. ll. 17. S. 11.0 × 7.0"/28.2 × 18.0 cms.

Written in good naskh and nasta'liq, by Muḥammad Āqā b. Khwāja Shukru'llah Samnānī, in Shawwāl, 1091/October, 1680.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
 Bound.

2842

Aq. 37. ترجمه منهاج الکرامه فی معرفه الامامه

TARJAMA-E-MINHĀJU'L-KARĀMĀH FĪ MA'RIFATI'L-IMĀMAH

A Persian paraphrase of the Arabic work of Jamālu'ddīn Ḥasan b. Yūsuf [b. 'Alī Ibn a'l-Muṭahhar a'l-Hillī, (d. 726/1326), dealing with the Shiite doctrine of Imāmat. The Arabic work was dedicated to Sulṭān Khudā Banda Changīzī, (703-710/1304-1311); and the translation by Ḥusainu'l-lahī a'l-Ardabilī, to Amīr Qubād.

This work is divided into six faṣls :-

Faṣl 1, on f. 3. فصل اول در نقل مذاهب درین مسئله

Faṣl 2, on f. 5. فصل دوم در آنکه مذهب امامیه واجب الاتباعست

Faṣl 3, on f. 54. فصل سیوم در دلالت بر امامت امیر المؤمنین علیه السلام

Faṣl 4, on f. 88. فصل چهارم در امامت باقی ائمه اثنی عشر علیهم السلام

Beginning : شریفترین نکته که از و رای سرادق خیال بر زبان ارباب حال
جلوه میشود - الخ

Ending : و امثال آن بسیار است اینجا است ختم کلام و حمد ملک علام
و صلاة بر سید انام ما توالت اللیالی و الايام

ff. 55. ll. 15. S. 6.8×3.6 "/ 17.2×9.2 cms.

Written in clear nasta'liq, in Muharram, 966/October, 1558.

Rubrications. Dampness stains. Fair condition. Preserved in a portfolio.

A rare work.

Seal of Muhammad ? 937 ; on f. 7v.

العبد محمد ؟ - ۹۳۷

2840

Man. 15. ترجمة المناقب

TARJAMATU'L-MANĀQIB

A Persian paraphrase of the Arabic work, *Kashfu'l-Ghumma fi Ma'rifati'l-A'immah* of Bahāu'ddīn Abu'l-Faṭḥ Arbālī, (d. 692/1293), compiled in 970/1466, by 'Alī b. Ḥasan a'z-Zawwārī. It deals with the lives and attributes of the Fourteen Immaculates according to Shiite beliefs.

Beginning : حمد بلاحد و احصا و سیاس بلاعد و انتها معبودی را
رواست که - الخ

Ending : تقدست اسماءه اللهم ارزقنا من عظیم نواله . . . خیر الانام
و آله و عترته الکرام

ff. 535. ll. 17. S. 11.0×7.0 "/ 28.2×18.0 cms.

Written in good naskh, upto f. 273v ; and nasta'liq from f. 274 to the end, by Ḥasan, on 26 Sha'bān, 970/30 April, 1466.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

Beginning : الحمد للخالق البر ايا والشكر لواعب العطايا . . بدانکه مؤلف
و کاتب این کتاب - الخ

Ending : تلفین از اولاد امام اثنا عشر البتہ البتہ خواہد یافت - والله اعلم
بالصواب

ff. 128. ll. 14. S. $8.2 \times 4.8^{\text{H}}/21.4 \times 12.6$ cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Muḥammad Ghaūth on 11 Aḥmadī, 1223 Maulūd-e-Muḥammadī (Tipū's innovation), i.e. 11 Muḥarram, 1209/8 August, 1794, at the Fort of Pattan (Seringāpatan).

European paper. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and reset in existing covers.

2839

Aq 9.

ارکان الایمان

ARKĀNU'L-IYMĀN

A short treatise on Shiite beliefs, compiled by Abu'l-Ḥasan Sharīf, and dedicated to Shāhzādī Sulṭānam, who appears to be a queen of some place.

The work is divided into five aṣls :-

Aṣl 1, in 12 maṭlabs, on f. 2v.

اصل اول در اثبات وجود واجب الوجود و صفات ثبوتی و غیره

Aṣl 2, in 5 maṭlabs, on f. 19v.

اصل دوم در عدل و افعال واجب الوجود

Aṣl 3, in 6 maqṣads, on f. 25.

اصل - یوم در نبوت

Aṣl 4, in 7 maṭlabs, on f. 30v.

اصل چهارم در امامت

Aṣl 5, in 4 maqṣads, on f. 52v.

اصل پنجم در معاد و احوال نشاء آخرت

ff. 100. ll. 14. S. $8.8 \times 5.6''/22.6 \times 14.4$ cms.

Written in ordinary nasta'liq, by 'All Naqī a'l-Mūsawī a'l-Karbalā'ī, on 12 Ramaḍān, 1122/ 24 October, 1710.

Rubrications. Dampness stains. A few worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Seal of Sayyid Anjwi Khān.

سمید انجوی خان

Ref: Bk. 1329.

2837

Aq. 93/1.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 67. ll. 17. S. $10.2 \times 6.3''/25.8 \times 16.0$ cms.

Written in bad nasta'liq, on 19 Muḥarram, 1151/ 28 April, 1738.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes, once repaired. Fair condition. To be re-bound.

2838

Man 5.

ترجمة بحر الأنساب

TARJAMA-E-BAHRU'L-ANSĀB

A Persian paraphrase of an Arabic work ascribed to the sixth Shiite Imām, Ja'far Ṣādiq (d. 148/765), with some additions by the eleventh Shiite Imām, Ḥasan a'l-'Askarī (d. 261/874), which was in the Holy Mosque of Palestine (مسجد انصی), and was brought to 'Irāq, in 653/1255, by Abū Ṭāhir b. Abi Ja'far b. 'Imrān b. Mūsā b. Imām Muḥammad Taqī. Eventually Sayyid Murtadā 'Alamu'l-Hudā (d. 436/1046) translated it. It deals with the trails and tribulations inflicted upon the family of the Holy Prophet according to the Shiite beliefs.

Aq. 28.

ترجمه اعتقادات قمی

TARJAMA-E-I'TIQA'DAT-E-QUMMI

A Persian paraphrase of Ibn Bābūya's Arabic work compiled by Muḥammad Mahdī a'r-Riḍwī, and dedicated to Shāh Taḥmāsp I, the Safavide, (930-984/1524-1576).

The work is divided into forty five bābs.

Beginning: شرایف محمد بی آنها بادشاهی را سزد که مبادی ایادی و نعمای
کرامت - انج

Ending: بتوفیق ملک غفور ازین . . . مؤمنین تراب اقدام مؤمنین

ff. 80. ll. 15. S. 10.0 X 5.7⁹/25.2 X 14.4 cms.

Written in good naskh, in Ṣafar, 1082/June, 1671.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes, repaired. A few folios at the end damaged. Fair condition. Bound.

Ad. 192/4.

حل العقائد

HALLU'L-'AQĀ'ID

Another Persian paraphrase of and commentary on the same Arabic work on Ibn Bābūya, compiled [by Muḥammad b. Shamsu'ddīn a'l-Istahbanātī (Astrābādī).

The work is divided into forty four bābs.

Beginning: و در زبان حال و مقال ذرات موجودات محمد
میدغیست - انج

Ending: از برای مجرد بیان آن کتابی تصنیف کنیم بمشیت الله تعالی
وعونه ؛ و الحمد لله رب العالمین

2834

Ad. 192/1-2. ثواب الاعمال وعقاب الاعمال

THAWĀBU'L-A'MĀL WA 'IQĀBU'L-A'MĀL

This copy contains two short treatises on Shiite beliefs by Abū Ja'far Muḥammad b. 'Alī b. Ḥusain b. Mūsā Ibn Bābūya a's-Ṣadūq a'l-Qummi, (d. 381 or 391/991 or 1001):-

1. Thawābu'l-A'Māl, on ff. Iv-74.

A collection of notes on religious practices which earn a reward (ثواب).

Beginning: الحمد لله الواحد القديم الازلى الذى لا يوصف بحد - الخ

Ending: و يارى خدا بود تا روز قيامت انشاء الله تعالى ، و صلى
الله ... كثيرا

2. 'Iqābu'l-A'māl, on ff. 75v-98.

Another collection of notes on acts which bring forth punishment (عقاب).

Beginning: الحمد لله ... اما بعد گفتم خواجه شميخ ابو جعفر - الخ

Ending: عقاب کسی که لعنت کند کسی را که مستحق لعنت نبود ،
آن لعنت بر سر او فرود رود ... من انعم الهدي

ff. 98. ll. 17. S. 8.8 × 5.6"/22.6 × 14.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by 'Alī Naqf a'l-Mūsawī a'l-Karbalā'i, in 1122/1710, at Aurangābād.

Rubrications. A few worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2833

Aq. 148.

شمع ایمان

SHAMA' IYMĀN

A treatise on Sunnite 'aqā'id by an anonymous author. This copy is defective at the end.

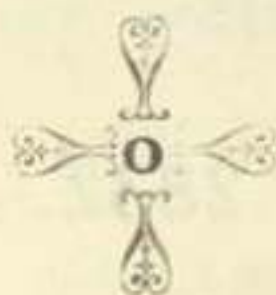
Beginning : الحمد لله رب العالمين که ما را دين محمدی عطا فرمود - الخ

Ending : abruptly. ليعرفون واقع است زیرا که عبادت بی معرفت

ff. 48. ll. 9. S. 5.0×4.1"/12.8×10.4 cms.

Written in ordinary script. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Fair condition. Bound.



2831

Si. 70.

نورنامہ

NŪR-NĀMA

A descriptive account of the Light of the Holy Prophet (نور محمدی) from its creation down to his actual advent, compiled by an anonymous person. It is based on Qur'ānic verse and Traditions.

Isnād-e-Tājnāma on last page.

Beginning : قال النبی علیہ السلام «أول ما خلق الله تعالى نوري»
اول چیزے کہ حضرت خدای تعالیٰ خلق گردانید - البخ

Ending : در آخر حال با نور ایمان از دار فانی بدار البقاء برسانی -
آمین یا رب العالمین

ff. 11. ll. 15. S. $9.6 \times 5.4''/24.2 \times 13.5$ cms.

Written in ordinary script. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition, not bound.

2832

Si. 69.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : ما خود بگذشتیم بهر حال که بود
من بعد بر امتنان من واویلا

ff. 7. ll. 15. S. $7.4 \times 4.5''/18.6 \times 11.4$ cms.

Written in ordinary nasta'liq. An early 13 cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

ff. 10. ll. 17. S. 10.5×6.6 ; $5.9 \times 3.1^{\circ}$ / 26.6×16.6 ; 15.0×7.8 cms.

Written in excellent nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Gold and coloured ruled borders. Worm holes, repaired. Borders renewed. Fairly good condition. Bound.

2829

Aq. 147/2. رسالة قاضی قطب الدین کاشانی

(RISĀLA-E-QĀDĪ QUTBU'DDĪN KĀSHĀNĪ)

A tract on Sunnite beliefs by Qutbu'ddīn Kāshānī, whose identity could not be established.

Beginning : الحمد لله... بدانکه ایمان اقرار کردن است بزبان - الخ

Ending : و نَحْشَى عَذَابَكَ إِنْ عَذَابَكَ بِالْكَفَّارِ مَلْحَقٌ

ff. 16. ll. 11. S. $7.6 \times 4.4^{\circ}$ / 19.2×11.0 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Worm eaten. Poor condition. Not bound.

2830

N. 7/2. رساله در عقائد

(RISĀLA DAR 'AQĀ'ID)

A treatise on Sunnite 'aqā'id about the attributes and eminence of Ḥaḍrat 'Alī and his family on account of their close relations with the Holy Prophet compiled by Sayyid Mudathir b. Barakāt Ḥabibullah Ḥusainī.

Beginning : جميع محامد ثابت است مر خدای را عز وجل که - الخ

Ending : تا مادام که مومن دریاری دادن مومنی باشد

ff. 13+1. ll. 13. S. 8.5×5.0 ; $5.5 \times 2.3^{\circ}$ / 21.6×12.9 ; 14.1×5.8 cms.

Written in ordinary naskh. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2827

جام کوثر

Aq. 42.

JĀM-E-KAŪTHAR

A critical study of the term 'Kaūthar' which is considered to mean:-
i. abundant good (خير كثير) ii. stream (نهر) iii. and prophethood (نبوة). The author, Aḥmad 'Alī Aḥrārī of Muṣṭalābād, has taken an extract from the printed copy of an Arabic work called: Aḥsanu'l-Fawā'id fī Taḥrīj-e-Aḥādīth Sharḥi'l-'Aqā'id, and written this treatise which is dedicated to Sālār Jung Muḥtārū'l-Mulk. He has taken pains to consult several standard works on Tafsīr, Ḥadīth, etc., and invited fatwās from learned men of the age which are also included in this work which begins with a short preface (ثناء و ستایش آن احکم الحاکمین - السخ).

This copy is defective at the end.

Beginning: بعد حمد و صلاة خادم العلماء دين مجدى احمد على احرارى
ميگويد كه - السخ

Ending: فرمود كيست كه گركت بخو مرد اورا گفتمنم دخبر

ff. 72. ll. 16. S. 7.1 × 4.9"/18.0 × 12.4 cms.

Written in clear nasta'liq, most probably by the author, in Jumāda I 1215/August, 1868.

European paper. Good condition. Bound.

2828

رساله در عقائد

Aq. 72.

(RISĀLA DAR 'AQĀ'ID)

An anonymous tract on Sunnite beliefs.

Beginning: بنام خدای مهربان بخشاینده ، حقیقتهای چیز هادر نفس الامر
نایت است - السخ

Ending: و سلامت ایمان در میان بیم و امید است

Beginning :

نحمد الله العظیم... کہ این عاصی سر امر و ماضی بمقتضای

خجورای - البغ

Ending :

(ع) يك نکته ازین دفتر گفتیم و همین کافیست

ff. 533. ll. 17 or 18. S. $11.6 \times 7.3^*/29.6 \times 18.6$ cms.

Written in clear nasta'liq, by the author, on 10 Rajab, 1280/ 21 December, 1836, at Hyderābād, during the reign of Afḡalu'd-Daulah Āsif Jāh V.

European paper. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

An autograph copy.

2826

Ak. 36.

مرقاۃ الجنات

MIRQĀTU'L-JANNĀT

A treatise on Sunnite beliefs compiled by Muḥammad 'Alī b. Muftī Ḥulām Muḥammad Sālār, dedicated to Sālār Jung Mukhtārul Mulk, and presented to him on 16 Shawwāl, 1280/25 March, 1864.

Beginning :

عنوان صحیفهٔ ایجاد و ابداع محمد صانعی است کہ - البخ

Ending :

بمہمان دارالسلامت طفیل . . . اللہم اجعلنا من

عبادك السعداء المقبولين . . . أصحاب البررة الأخيار

ff. 288. ll. 11. S. $9.7 \times 7.9''/25.6 \times 19.8$ cms.

Written in clear naskh and nasta'liq, by the author, in 1280/1864, at Hyderābād.

European greyish paper. Rubrications. Good condition. Bound.

A. N. 356/6.

فتوی

(FATWĀ)

A fatwā on good and bad (خیر و شر) given by Qāḍī Muḥammad Irtidā ('Alī Khān) a's Ṣafawī (a'l-Jūfāmawī), (d. 1270/1854).

Beginning: اگر خالق افعال خیر و شر بندگان حق سبحانه است پس
معنی - البغ

Ending: معنی لا جبر ولا قدر و لیکن امر بین الامرین است .. والله اعلم
بالصواب

ff. 5. ll. 13. S. 8.3×5.9 "/ 20.8×14.8 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Rubrications. Fairly good condition. Bound.

Man. 34.

عمدة المقاصد والمطالب

'UMDATU'L-MAQĀṢID WA'L-MATĀLIB

A collection of notes and extracts from well-known works on Sunnite 'aqā'id about the Holy Prophet, and the four Orthodox Khalifs, compiled by Muḥammad 'Alī, takhallus 'Āshiq, for Sālār Jung Mukhtāru'l-Mulk.

The contents are:-

- i. a commentary on the ninety-nine attributes of Allāh, on ff. 1v-41.
- ii. the lives of the prophets and patriarchs, from Adam down to Aṣ-ḥāb-e-Kahaf, on f. 41.
- iii. the attributes of the Glorious Qur'ān, on f. 77.
- iv. the lives and attributes of the Holy Prophet, and the four Orthodox Khalifs on f. 139v.
- v. the attributes of Ḥaḍrat 'Alī, in forty waṣls, on f. 195.
- vi. his martyrdom on f. 312.
- vii. his life and attributes, in twelve bābs, on f. 315v.

Beginning : الحمد لله الذى جعل نبينا أحمد الكل و محمد الملك و الرسل . . .
و بعد ازین از آگاه هیچمدان - کان الله له فی کل آن - السخ

Ending : و لم یفرق بینهم بالقال و القیل - صلی الله علیه و علیهم و سلم
فی کل غدوة و أصيل

ff. 154. ll. 11. S. $7.1 \times 5.5''/18.0 \times 13.8$ cms.

Written in clear nasta'liq, by Shāh Ibrāhīm a'r-Riḍwī. A mid 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Good condition. Bound.

Seals: 1. Ḥasan 'Alī, 1200.

حسن علی - ۱۲۰۰

2. Sayyid Muḥammad 'Alī Khān.

سید محمد علی خان

2823

F. 9.

ترجمہ سراج الایمان

TARJAMA-E-SIRĀJU'L-IYMĀN

A Persian paraphrase of a Hindi work of Ḥāfiẓ Aḥmad Khān, compiled by Shaikh Muḥammad Mahdī b. Muḥyū'ddīn b. Ḥafīẓ Muḥammad Ma'rūf. The work is on Sunnite beliefs, and is divided into two maqṣads: - one on 'aqā'id, and other on fiqh.

Beginning : الحمد لولیه و الصلاة علی نبیه و علی آله و صحبه ، أما بعد
میگوید بنده کنه گار شیخ محمد مهدی - السخ

Ending : همچو اول زیار کند و سلام خوانده از آنجا بر آید ، اللهم
ارزقنا بحجاء نبیک . . . و سلم

ff. 76. ll. 13. S. $7.9 \times 5.7''/20.0 \times 14.6$ cms.

Written in ordinary nasta'liq, by 'Izzat 'Alī Khān b. Anṣār 'Alī Khān, from the autograph copy dated 29 Dhīqa'da, 1247/ 30 April, 1832.

A late 13th cent. copy.

European blue paper. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

Aq. 43.

جناح النجاح

JANĀHU'N-NAJĀH

A short treatise on Sunnite 'aqā'id based on Arabic work of eminent scholars, compiled by Faiḍu'llah b. Muḥammad b. 'Alī.

The work is divided into four bābs.

Beginning : حمدی حد و ثنای بی عد مر موجودی را که وجود جمله

موجودات از ایجاد اوست - النسخ

Ending : این داعی نیک خواه بدعا، خیر خاتمت و بعفو عاقبت یاد

آورند... ارحم الراحمین

ff. 142. ll. 16. S. 9.4 × 5.6"/23.6 × 14.2 cms.

Written in clear naskh. A mid 12th cent. copy.

Rubrications. [Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seal of Shaikh 'Abdu'l-Qādir b. 'Abdu'l-Ghafūr, 1166.

شیخ عبد القادر بن عبد الغفور - ۱۱۶۶

F. 6.

إيقاظ النيام للاهتمام بمقلد كل امام

IYQĀẒU'NIYĀM LI'L-IHTIMĀM BI-MUQALLIDI KULLI IMĀM

A critical exposition of the beliefs pertaining to the following of any Imām of the four principle jurists, in prayers, compiled by Muḥammad Bāqir' takhalluṣ Āgāh, (d. 1220/1805). The work is based on Traditions and other standard works.

For Āgāh's poetical works refer Nos: 2164-2169, in Vol. V.

Written in good naskh and shikast-nasta'liq, by the author, on 16 Jumāda I, 1193/1 June, 1779, at Raḍā, during the reign of Mīr Nizām 'Alī Khān Āshif Jāh II.

Rubrications. Dampness stains. Fair condition. Bound.

A rare work.

2820

Aq. 57/1.

ذریعة النجاة

DHARĪ'ATU'N-NAJĀT

A collection of forty Quranic verses with their Persian paraphrase, and short commentary thereon, compiled in 1179/1755, by Faiḍ. These are in praise of Ḥaḍrat 'Alī according to Sunnite creed.

Beginning : حوٹباری کہ گلشن بیان ہر نخل بند شجرۂ ستائش را سرسبز
سازد - النخ

Ending : بگفت مصرع تاریخ این صحیفہ فیض
ہزار و یکصد و ہفتاد و نہ ز ہجرت کیر

ff. 15, ll. 14. S. 8.3 × 4.9"/21.0 × 12.2 cms.

Written in good naskh and shikast-nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Good condition. To be re-bound.

A rare work.

Seals: 1. Sayyid Ḥusain 'Alī Bukhārī, 1206. سید حسین علی بخاری - ۱۲۰۶

2. Sayyid Wazīr 'Alī Bukhārī, 1221. سید وزیر علی بخاری - ۱۲۲۱

3. Another seal dated 1235. وزیر علی شہد فدای حسین - ۱۲۳۵

Beginning : الحمد لله الذى خلق الجنة و النار . . . اما بعد چنین گوید
احقر بندگان درگاه آفریدگار - الخ

Ending : در دوش جاودان باشد ، الحمد لله الذى صدقنا . . . وعده
فنعم اجر العاملين

ff. 22. ll. 11. S. $7.8 \times 4.4^{\circ}$ / 19.8×11.0 cms.

Written in ordinary nasta'liq, on 12 Jumāda I, 1193/28 May, 1779.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Preserved in a portfolio.

A rare work.

2819

Man. 17. جوهر الفضائل

JAWHARU'L-FADĀ'IL

A treatise on the Sunnite beliefs about the family of the Holy Prophet, based on Traditions intermixed with Arabic quotations, in prose and verse, together with Persian verse of the compiler and others. The work was compiled in 1166/1753—the title is chronogrammatic—by Ghulām 'Alī a'l-Ḥusainī a'r-Riḍwī a'n-Naqawī a'l-Kirmānī, entitled Mumtāz 'Alī Khān, takhalluṣ Arshad. He was Mutawallī of the shrine of Zainu'ddīn Shirāzī, at Raūḍa (Khuldābād), in whose premises Emperor 'Alamgīr is buried.

Epilogue of the author on f. 72.

Beginning : الحمد لله الفرد المليك المتعال . . . بعد تحمید و ادعت
ومدح کرام - الخ

Ending : کرده ام ختم این کتاب و کلام + بر در و در سول و آل کرام

ff. 71+1. ll. 14+26 on margins. S. $9.4 \times 5.8^{\circ}$ / 24.2×14.8 cms.

Beginning :

الحمد لله رب العالمين و الصلاة و السلام على رسوله محمد
و آله و اصحابه اجمعين ، اما بعد ميگويد خا کسار - الشيخ

Ending :

ياموی های او ایستاده شد خورده شود -
و الله اعلم بالصواب ؛ و إليه المرجع و المآب

ff. 142. ll. 11. to 15. S. 8.3 X 5.0" / 20.8 X 12.8 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Muḥammad 'Azīm b. 'Abdu'l-
'Aziz, a student, on Rabī' I, 1152/16 June, 1139.

Rubrications. Good condition. Bound.

2818

Aq. 8.

اخبار المعاد

AKHBĀRU'L-MA'ĀD

A short treatise on the other world, and forthcoming events before
the end of this world, compiled by Shaikh Muḥammad b. Darwish 'Alī, in
1154/1742.

The work is divided into seven bābs:—

- | | |
|--|--|
| Bāb 1, on the Angel of Death, on f. 2. | باب اول در بیان ملک الموت |
| Bāb 2, on taking a warning, on f. 6. | باب دوم در بیان گرفتن عبرت |
| Bāb 3, on spirits, on f. 6v. | باب سوم در بیان ارواح |
| Bāb 4, on the bodies of the Prophets, on f. 12. | باب چهارم در بیان استخوانهای انبیاء و اوصیا خاك نمی شود - |
| Bāb 5, on Dajjāl, on f. 13v. | باب پنجم در بیان دجال |
| Bāb 6, on the advent of Imām Mahdī, and Christ, on f. 14v. | باب ششم در بیان ظهور حضرت امام محمد مهدی و حضرت عیسی علیه السلام |
| Bāb 7, on Gog and Magog, on f. 18. | باب هفتم در بیان یاجوج و ماجوج مفسدان فی الارض |

Man. 3.

احوال و فضائل ائمه طاهرين

(AḤWĀL WA FAḌĀ'IL-E-A'IMMA-E-ṬĀHIRĪN)

A treatise, in prose, based on Shawāhidu'n-Nabūwat of Maulānā Jāmī, and verse of Majdhūb Tabrizī, (d. 1093/1682), compiled by an anonymous person. It deals with the lives and attributes of the twelve Shiite Imāms.

Mīr Muḥammad of Tabriz, takhalluṣ Majdhūb, had composed poems in praise of the Imāms, and a mathnawī of 3,000 couplets called Shāhrāh-e-Najāt, and ghazals on the lines of Ḥāfiz. He was a devoted Ṣūfī. For his diwān refer No. 1957, in Vol. V.

Beginning :

نقايست صحيح مستمع باش + از نعم دو کون منتفع باش

Ending :

احوال و اقوال و کرامات و خوارق عادات ائمه اهل بيت
رضوان الله عليهم اجمعين

ff. 210. ll. 19. S. 10.0 × 6.2"/25.6 × 16.0 cms.

Written in clear nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fairly good condition. Bound.

Seal of Sayyid Aṭ-har, Alī Khān, 1201.

سيد اطهر علي خان - ۱۲۰۱

F. 3.

إرشاد المؤمنين

IRSHĀDU'L-MU'MINĪN

An elementary treatise on Sunnite beliefs compiled by Ibrāhīm b. Ḥusāin, for children, in the form of questions and answers. The author has based his work on several standard works on fiqh, and compiled this work on the lines of Aḥkāmū's-Ṣalāt.

2814

Aq 38.

Another copy of the same, but defective at the end.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly.

و سلامتی ایمان در میان بیم و امید است

ff. 89. ll. 15. S. $7.2 \times 4.2''/18.2 \times 10.6$ cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Poor condition. Bound.

Seals of Sayyid Aḥmad Ḥusainī.

سید احمد حسینی

2815

M & K. 13.

انیس الاتقیاء

ANISU'L-ATQIYĀ

A rare work on Sunnite 'aqā'id based on the commentaries of the Glorious Qur'ān, and the Traditions, by 'Abdu'r-Raḥīm.

The work is divided into eighteen chapters.

Table of contents in the beginning.

Beginning : الحمد لله الذي هدانا لهذا بالآيات والذكر الحكيم ونور بجلال عظمته
قلوب العارفين - الخ

Ending : خاصة في اليوم الموعود برحمتك يا أرحم الراحمين ،
وصلى الله على خير خلقه محمد وآله أجمعين

ff. v+356. ll. 15. S. 9.3×6.4 ; $6.3 \times 3.5''/23.4 \times 16.2$; 15.8×8.8 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Mullā 'Abdu'l-Qādir, on 14 Rabi' II, 1062/15 March, 1652.

Illuminated 'unwān. Coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2812

Aq. 39.

تكميل الإيمان

TAKMILU'L-IYMAN

A well-known treatise describing the outlines of Muslim doctrines, compiled by Shaikh 'Abdu'l-Haqq Muḥaddith Dihlawī, (d. 1052/1642). The full title of the work is Takmilu'l-Iymān wa Taqwiyyatu'l-Iyqān dar Bayān-e-'Aqā'id-e-Islām.

Beginning :

الحمد لله ... اما بعد ، ميگويد اضعف عباد الله القوي

البارى - الخ

Ending :

يا اشارت است خوف برجا اعلموا ان الله شديد العقاب

وان الله غفور رحيم

ff. 80. ll. 13. S. 7.4 × 4.5"/18.8 × 11.2 cms.

Written in clear nasta'liq, by Nizām Aḥmad, on 14 Šafar, 1210/ 13 August, 1795.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

Ref : EIO. 2583-2585 ; IvASB. 1078 ; IvC. 367 ; Bk. 1283-1284.

2813

Aq. 147/i.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending :

و امکان اشتباه داشت آرا در آخر رساله جدا نوشتم

ff. 110. ll. 17. S. 7.6 × 4.4"/19.2 × 11.0 cms.

Written in ordinary nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Badly worm eaten. Poor condition. Preserved in a portfolio.

Seals of Munirul-Mulk, 1260.

مُنِيرُ الْمَلِك - ۱۲۰۶

2810

F. 7.

تحفة حسین شاہی

TUHFĀ-E-HUSAIN SHĀHĪ

A short treatise on Sunnite beliefs compiled in the form of questions and answers by As'id 'Ali Quraishī. It is dedicated to Sulṭān Ḥusain Shāh b. Ibrāhīm Shāh, the last Sharqī Sulṭān of Jaunpur (d. 905/1499).

Beginning :

حماد این حمیدہ جمیل و قصاد این ثنای جزیل مر
خداوند یرا کہ - العی

Ending :

ہمچنان ہر پنج وقت ہمچنین حکم نگاہدارد

ff. 31. ll. 15. S. 9.3×5.6 "/ 23.6×14.2 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2811

F. 8.

تحفة الصلاة

TUHFĀTU'Ṣ-ṢALĀT

A treatise on presenting blessings on the Holy Prophet. It begins without any preface. First folio is replenished by a later hand. The work by Ḥusain b. 'Alī a'l-W āiz a'l-Kāshifī, (d. 910/1505), has eight faṣls and a khātima, whereas this work is divided into thirty-seven faṣls.

Beginning :

فصل اول ، خاتمہ در تحفہ صلوات بر روح پر فتوح سمید
السادات - العی

Ending :

دور کعت نماز بگذارد و از خدای تعالی

ff. 138. ll. 14. S. 8.9×5.5 ; 5.1×2.5 "/ 22.4×13.8 ; 13.0×6.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Red ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.

Not bound.

Seal of Sayyid Aḥmad, 1138.

سمید احمد - ۱۱۳۸

Ref: Bk. 1281.

Marginal glosses in good naskh.

Beginning : حمد بیحد و تنای بیحد مر آفرید گاری را که - الخ

Ending : کافر نشود و جمله خطاها با همین حکم است - والله
اعلم بالصواب

ff. 52. ll. 15. S. 9.0×5.1 "/ 22.6×12.8 cms.

Written in ordinary nasta'liq, on 27 Sha'bān, 1167/ 19 June, 1754, at Nellore.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

Ref : IvC 370.

2809

Man. 23.

مناقب سادات

MANĀQIB-E-SĀDĀT

A treatise on the attributes of the descendants of the Holy Prophet compiled by Maliku'l-'Ulamā Qāḍī Shihābu'ddīn b. Shamsu'ddīn 'Umar a'z-Zawālī a'd-Daūlatābādī, (d. 849/1445). He is the author of Baḥr-e-Mawwāj; refer Nos. 2433 and 2434.

The work is divided into ten babs.

An Arabic tract on the same topics, on ff. Iv-12.

Beginning : الحمد لله ... اما بعد، عرض میدارد بنده درگاه نبوی
و خویدم بارگاه مصطفوی -

Ending : از بهر آنکه مید کوین گفته است « الصالحون لله
و الطالحون لی »

ff. xii + 82. ll. 13. S. 7.7×4.5 "/ 19.6×11.6 cms.

Written in good naskh and nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

Aq. 128.

نتيجة العالم لنفع العالم

NATIJATU'L-'ĀLIM LI NAF'IL-'ĀLAM

A commentary on the Sunnite Article of Faith (إيمان مجمل) compiled by 'Ālam b. Muḥammad b. 'Alī b. Maḥmūd, and dedicated to Sulṭān Fīrūz Shāh, [probably Tughlaq, (752-790/1351-1388)]. The author had also written another work called Jawāhir-e-Fīrūz Shāhī.

The work is divided into six baḥath, and each baḥath deals with the faith in: Allah, the Angels, the Holy Scriptures, the Prophets, the Last Day, and the Fate respectively.

Beginning : محامد بی قیاس و مدایح عدد النفاس مر خدای را که - البخ

Ending : او عطل فریضة من فرائض الله تعالى - القول

ff. 1+172. ll. 13. S. 10.4×6.2; 6.5×3.5"/26.2×5.4; 16.4×8.8 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by Mir 'Abdu'r-Raḥīm b. Mullā Mīr Sayyid 'Alī Kābulī, on 26 Rabi' II, 1266/ 11 March, 1850.

Ordinary 'unwān. Coloured ruled borders. Worm holes. Fairly good condition. To be repaired, and re-bound.

Seal of 'Abdu'r-Raḥīm.

عبدہ عبد الرحیم

F. 66.

منافع القلوب

MANĀFI'U'L-QULŪB

A collection of complicated and difficult points compiled by an anonymous person. It is dedicated to the author's spiritual guide Pīr Naṣīru'ddīn Maḥmūd Chirāgh-e-Dihlī (d. 793/1392). The name of the patron is given as Bahāu'ddīn Aḥmad b. Hījāh (f. 2).

The work is divided into two qisms: one on 'aqā'id, and the other on usual rules governing daily observances.

Beginning :

الحمد لله... بدا نكه اى فرزند اسعدك الله تعالى
في الاولى والاخرى - النسخ

Ending :

و از كفر و بدعت نكاهدارد و عصمت بخشد آمين
و رب العالمين

ff. 150. ll. 8. S. $9.8 \times 5.5^{\circ} / 24.6 \times 14.0$ cms.

Written in clear nasta'liq, in 1081/1670.

Dampness stains. Worm holes, partly repaired. Fair condition.
Bound.

Seals of Munirul Mulk, 1206.

منير الملك - ۱۲۰۶

Ref: EIO. 2562; IvASB. 1068.

2805

f. 24.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 61. ll. 15. S. $8.4 \times 4.9^{\circ} / 21.2 \times 12.2$ cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2806

f. 25/1.

Another copy of the same, incomplete at the end.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly.

سير دهم آنکه کلوخ و سنگی که بدان استنجا . .

ff. 24+6. ll. 11. S. $5.8 \times 4.2^{\circ} / 14.8 \times 10.4$ cm.

Written in ordinary naskh and shikast-nasta'liq. A late 13th cent. copy.

European paper. Rubrications. Dampness stains. Fair condition.
Not bound.

Aq. 118.

المعتمد في المعتقد

CHINA, JAPAN, INDIA, PERSIA, YIDDISH, HEBREW, ARABIC, TURKISH, SANSKRIT, PRAKRT, PERSIAN, URDU, ENGLISH, FRENCH, GERMAN, ITALIAN, SPANISH, PORTUGUESE, CATALAN, GALICIAN, BASQUE, OCCITAN, PROVENÇAL, LINGUA FRANCA, ROMANIAN, BULGARIAN, SERBIAN, CROATIAN, SLOVENE, HUNGARIAN, POLISH, CZECH, SLOVAK, HEBREW, ARABIC, TURKISH, SANSKRIT, PRAKRT, PERSIAN, URDU, ENGLISH, FRENCH, GERMAN, ITALIAN, SPANISH, PORTUGUESE, CATALAN, GALICIAN, BASQUE, OCCITAN, PROVENÇAL, LINGUA FRANCA, ROMANIAN, BULGARIAN, SERBIAN, CROATIAN, SLOVENE, HUNGARIAN, POLISH, CZECH, SLOVAK

A'L-MU'TAMAD FI'L-MU'TAQID

A treatise on principal beliefs and other connected matters, compiled by Tāju'ddīn Abū Sa'īd a'l-Ḥasan b. a'l-Ḥusain b. Yūsuf Tūrpushtī, (d. 661/1262). The work is dedicated to Sulṭān Salghar Atābek Abū Bakr Sa'd b. Zangī, (d. 658/1260).

The work is divided into three bābs and each bāb into ten faṣls.

Beginning: قال مولانا الصدر الاعظم . . . حمد وثنا من خداوند برا که
مبارزان میدان فصاحت را - النعم

Ending: دور مگردان انك انت الرحيم المنان و الحمد لله . . . الطيبين الطاهرين

ff. 153. ll. 15. S. 11.3 × 7.6*/29.0 × 19.0 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Mir Mu'inuddīn, on 2 Jumāda I 1270/31 January, 1854.

European paper. Rubrications. Good condition. Bound.

F 23.

خلاصة الأحكام في دين الاسلام

KHULĀṢATU'L-AḤKĀM FI DĪNI'L-ISLĀM

A treatise on the principles of Islām, and rules governing the observances that are to be followed by Muslims in relation to God and mankind compiled in 755/1354, by Maḥmūd Aḥmad b. Abū'l-Qāsim b. Aḥmad Tā'ifī Husainī.

A few lines from an Urdu mathnawī on last page.

5. 'AQĀ'ID

1. SUNNITES

THEOLOGY, MORAL DOCTRINES, AND FORMS OF WORSHIP

2802

Tas. 146/1.

لطائف غیاثیہ

LAṬĀ'IF-E-GHĪYĀTHĪYAH

A treatise on scholastic theology compiled by Imām Fakhruddīn Muḥammad b. 'Umar Rāzī, (d. 606/1209). It is dedicated to Mu'izzu'd-Dunyā wa'd-Dīn Ghīyāthu'l-Islām wa'l-Muslimīn Abu'l-Faṭḥ Muḥammad b. Malikshāh, (498-511/1104-1117). The dedication however is questionable, but the authorship is accepted.

The work is divided into three maqālas:-

Maqāla 1, on the attributes of knowledge, in 7 faṣls, on f. 2v.

Maqāla 2, on proofs for the existence of the Creator, in 11 faṣls, on f. 25.

Maqāla 3, on other proofs, in 5 faṣls, on f. 59.

Beginning: حمد بیحد و بی نهایت و مدح بی عد و بیغایت حضرت جلال آن
خدا بر اکھ - الخ

Ending: تفکر کند اور انموداری حاصل آید و تواند بمدد و توفیق در
... دلایل تفکر کند

ff. 107. 17. S. 8.5 × 6.0" / 21.8 × 15.2 cms.

Written in clear nasta'liq, by Sālār Muḥammad b. Pīr Muḥammad, on 22 Jumāda II, 1125/5 July, 1713.

Dampness stains. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Ref: R. 127; Bk. 1279-1280.

Beginning :

سپاس و ستایش خدای راست که ندیم است
بادشاهی او - الخ

Ending :

نبوت و ولایت را با دوستداری ایشان بر انگیزاند
انشاء الله تعالی

2. 'Amdah on ff. 82v-138.

A treatise on *uṣūl* and *furū'* of Shiite fiqh by an anonymous author.

The work is divided into two qism.

Beginning:

حمد بیحد موحدی را که همگی موجودات بیک کر شمه
جود او قدم در دایره وجود نهاده اند - الخ

Ending :

خداوند باذن امام عمارت کند ازان او باشد

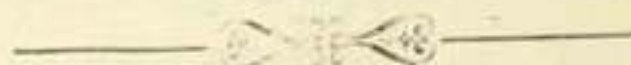
ff. 138. ll. 17. S. 9.1 × 5.5"/23.2 × 14.0 cms.

Written in ordinary nasta'liq. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.

To be re-bound.

1088



Selections from the works on Shiite laws dealing with death (احکام اموات) specially collected by Sayyid Ahmad for Riyāḍat 'Alī Khān Bahādur Maḥbūb Yār Jung (d. 1325/1907).

Beginning : الحمد لله ... اما بعد ، میگوید بنده خاطی سید احمد - الخ

Ending : هفت مرتبه سوره انا انزلنا بنحو انند

2. A'māl-e-Rūz-e-'Āshūrah, on ff. 39v-102.

A collection of prayers to be recited on the tenth day of Muḥarram, compiled on 21 Ṣafar, 1293/18 March, 1876.

Beginning : چون روز عاشوره در آید بیرون رود بسوی صحرا - الخ

Ending : حق تعالی مؤمنین را از او منتفع گرداند

ff. 102. ll. 5 or 6. S. 4.8 × 3.4"/12.4 × 8.6 cms.

Written in good naskh and nasta'liq. An early 14th cent. copy.

Worm holes. Fair condition. To be repaired, and reset in existing covers.

2801

F. I. 13.

رسایل فقه

(RASĀ'IL-E-FIQH)

This copy contains two works:-

1. Tarjuma-e-Tabṣīratu'l-Muta'allimīn fī Aḥkāmī'd-Dīn, on ff. Iv-81v.

A Persian paraphrase of a treatise on Shiite fiqh (furū'), for the benefit of the beginners, attributed to Jamāluddīn Ḥasan b. Yūsuf a'l-Ḥillī, (d. 726/1326). The translator's name is not given.

The work is divided into usual kitābs.

Beginning : الحمد لله... أما بعد ، چون مرجع احکام اشرف انام - الخ

Ending : دران زمان رجوع باوست شده باشد

4. Hadyatu's-Şāliḥīn, on ff. 86v-90v.

A tract on Shiite principles of faith compiled by Gulām Ḥasan, surnamed Mirza Ḥajjū, at Lucknow after the death of Āqā Sayyid Muḥammad Ṭabāṭabāi Karbalāi, and dedicated to Mirza Muḥammad Mahdī Astrābādī.

The work is divided into a muqaddima, three bābs and a takmila.

Beginning : الحمد لله على آلائه... أما بعد ، چنین گوید فقیر حقیر
کثیر التقصیر - الخ

Ending : و مظنون الاجتهاد بر مشکوک الاجتهاد مقدم است -
و الله يهدي من يشاء إلى صراط مستقيم

5. Şirāṭu'n-Najāt, on ff. 91v-263.

Another collection of intricate points of Shiite laws dealing with legal and illegal acts compiled by the same Muḥammad 'Alī Yazdī.

The work is divided into a muqaddima, a few faṣls and a khātima.

Beginning : as usual.

Ending : اما خوردن هر چیز که ضرر رساند شخص را اگرچه
طعام باشد حرام است

ff. 263. ll. 13. S. 8.1 × 5.2" / 20.8 × 13.2 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Muḥammad Bāqir, in 1272/1856.

European coloured paper. Good condition. Bound.

2800

F. 1. 38.

مجموعه

(MAJMU'A)

This copy contains the following works :-

1. Intikhāb-e-Zīnātu'l-'Ibād, on ff. 1v-36v.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by Mīr Sayyid 'Alī Zawwār on 27 Shawwāl, 1242/ 24 May, 1827.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Poor condition. Not bound.

2799

F. 1. 70.

مجموعه

(MAJMU'A)

This copy contains the following works :-

1. A'r-Risālatu's-Ṣaghīra, on ff. 1v-60

A treatise on Shiite laws dealing with ablutions and Namāz. This work is by an anonymous person, and contains two parts :-

i. Kitābu't-Tahārat, divided into a muqaddima, three maqṣads and a khātima.

ii. Kitābu's-Ṣalāt, from 29v, divided into a few maqṣads.

Beginning : الحمد لله ... كتاب الطهارة و دران يك مقدمه و سه مقصد - الشيخ

Ending : و مسجد كوفه و حائر (كذا) جناب سيد الشهداى عليه السلام

2. Kitābu's-Ṣawm, on ff. 61v-82v.

An anonymous treatise on fasting.

Beginning : الحمد لله ... كتاب الصوم ، و دران چند فصل است - الشيخ

Ending : بلکه اقوى جواز است بانهى آنها نیز لکن احوط ترك است

3. Ṣirāṭu'n-Najāt, on ff. 83v-86.

A collection of intricate points (مسائل) pertaining to the legality or otherwise of following the imitators (مقلدين) compiled by Muḥammad 'Alī Yazdī under the guidance of Shaikh Murtaḍā Anṣarī.

(MAJMU'A)

This copy contains the following works:-

1. Uṣūl e-Dīn, on ff. Iv-9.

Another copy of the same. Refer Nos: 2711/6, 2735/2, 2738, 2739 and 2740.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

2. Tarjumatu's-Ṣalat, on ff. 9v-17v.

Another copy of the same. Refer Nos: 2755, 2756, 2757, 2758, and 2763/1.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

3. Uṣūl-e-Dīn Manẓūm, on margins of ff. Iv-5v.

A versified tract on Shiite principles of faith, composed by an anonymous person.

Beginning: ای دل اول بگو تو بسم الله + شاه مرداب علی ولی الله

Ending: هست این نحو مهر آل رسول + یارب این را بکن بفضل قبول

4. Tarjuma-e-Chihil Ḥadīth, on margins of ff. 6-9.

A Persian paraphrase of forty Shiite traditions.

Beginning: این چهل کلمه است که صاحب او تیت جوامع الکلم - الخ

Ending: مهر خیل انبیاء فرمود که علی از من است و من زعلی

5. A note on the position of Ḥadrat 'Alī according to Maulānā Rūmī's estimation, on margins of f. 9-v.

ii. 17. ll. 17. S. 13.9 × 8.1; 10.6 × 5.1; 6.9 × 3.1*/35.8 × 20.8; 27.2 × 13.2; 17.8 × 7.8 cms.

2796

F. I. 67.

هدية الصوم

HADYATU'S-SAWM

A short treatise on fasting according to Shiite faith dedicated to Sir Sālār Jung (d. 1301/1883) by an author whose name is not given.

The work is divided into two bābs, and a few faṣṣ.

Beginning :

حمد و بوجد مر خدای راست که در ثناء بی منتها - الخ

Ending :

علم و خود ازی است - و الله اعلم بالصواب

ff. 24. ll. 13. S. $7.7 \times 5.1^{\circ}$ / 19.7×13.1 cms.

Written in ordinary nasta'liq, on 27 Sha'bān 1273/ 22 April, 1857.

European paper, some coloured. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound. Preserved in a portfolio.

2797

F. I. 54.

زينة العباد

ZINATU'L-'IBĀD

Selections from the works on Shiite fiqh made by Zafnu'l-'Abidīn a'l-Māzindarānī. This copy is left incomplete at the end.

Beginning :

الحمد لله... وبعد چنین گوید اقل عباد زین العابدین المازند رانی

اصلا - الخ

Ending : abruptly

میکشید تکبیر و از و - اکن می کنید

ff. 265. ll. 14. S. $7.8 \times 5.7^{\circ}$ / 20.0×14.6 cms.

Written in clear nasta'liq. A middle 13th cent. copy.

European paper. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

A tract on Shiite uṣūl of fiqh.

Beginning : الحمد لله على نواله . . . پس بگوید خادم بساتین مذهب
جعفری - الشيخ

Ending : باعتبار دوزمان تبعیض جائز نیست - و الله العالم بالأحكام

ff. 35, ll. 12. S. 7.6 × 4.5" / 19.4 × 11.4 cms

A short treatise on prayers and fasting.

Beginning : الحمد لله على نواله . . . اما بعد پس میگوید مجد جعفر
استر ابادی - الشيخ

Ending : بلکه مجموع دو ماه را متوالی روزه بگیرد - و الله العالم
بالأحكام

ff. 35, ll. 12. S. 7.6 × 4.5" / 19.4 × 11.4 cms

Written in ordinary script. A late 13th cent. copy.

Coloured European paper. Worm holes. Fair condition. Not bound.
Preserved in a portfolio.

Seal: Sayyid Sajjād 'Alī Khān Bahādur. سید سجاد علی خان بهادر

2795

F. 1. 36. خلاصة الاحكام

KHULĀṢATU'L-AHKĀM

A short treatise containing an abstract of Shiite laws pertaining to marriage, divorce, etc., compiled by an anonymous author.

Beginning : حمد بیحد و ثنای بیحد مر مبدعی را که ابداع ممکنات - الشيخ

Ending : یا محول الحول والأحوال حول حالنا إلى أحسن الحال

ff. 68, ll. 13. S. 10.0 × 5.9" / 25.7 × 15.3 cms

Written in good naskh and nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2792

Another copy of the same.

F. I. 45.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 102. ll. 17. S. 6.0×4.0 "/ 15.2×10.2 cms.

Written in good nasta'liq. A mid. 13th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2793

Ad. 90/2.

نخبه

NAKHBAH

A treatise on fiqh compiled by Muḥammad Ibrāhīm Iṣfahānī b. Muḥammad Ḥasan a'l-Khūrāsānī (d. 1261/1845).

Beginning : حمد و ثنای بی حد و احصای مخصوص بارگاه کبریاء حکیمی
است - المنع

Ending : و در ظرف اگر پارچه طلا و نقره ببند از دآب خوردن ازان
عیبی ندارد

ff. 33. ll. 15. S. 8.5×5.7 "/ 21.8×14.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Mirza Salāmat 'Alī, on 24 Rabī' I, 1267/27 January, 1851, at Daryāpūr.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

Ref : Bk. 1276.

2794

F. I. 56.

رسائل فقه

(RASĀ'IL-E-FIQH)

This copy contains two short works by Muḥammad Ja'far Astrābādī.

1. Shākh-e-Nabāt, on ff. 1-4.

2790

F. 1. 43.

رساله باقریه

RISĀLA-E-BĀQIRIYAH

A tract on ablutions and prayers by an anonymous author.

The work is divided into a muqaddima, and twelve Imām's.

Beginning : الحمد لله... اما بعد، این مختصر مفید در مرغ واجبات نماز
است - الخ

Ending : پنجم برای شك در چهار و پنج ركعت - الخ

ff. 8. ll. 11. S. $8.5 \times 5.6^{\circ} / 21.8 \times 14.3$ cms.

Written in clear shikast-nasta'liq, by Bande 'Alī Dakanī, on 12 Rajab, 1253/12 October, 1837, at Hyderābād.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2791

F. 1. 44.

رساله در مسائل طهارت و صلاة

RISĀLA DAR MASĀ'IL-E-TAHĀRAT WA ṢALĀT

Another treatise on ablutions and prayers compiled by Muḥammad Husain b. Raḥīm.

The work is divided into two bābs.

Beginning : الحمد لله... چنین گوید محتاج بر رحمت رب کریم محمد حسین
ابن محمد رحیم که - الخ

Ending : مثل این که در اثنای قراءت در تکبیر الاحرام شك
نماید التفات نمی کند بآن شك

ff. 269. ll. 7. S. $7.1 \times 5.1^{\circ} / 18.2 \times 13.1$ cms.

Written in clear nasta'liq. A mid. 13th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and reset in existing covers.

2788

F. 1. 53.

زهر الرياض

ZAHRU'R-RIYÂD

Selections from Riyâdu'l-Masâ'il of Sayyid 'Alī Tabāṭabāi and translated into Persian by Muḥammad b. Ismā'il, surnamed Shaikh Abū 'Alī 'Arab.

The work is divided into nine bābs.

Beginning: الحمد لله... وبعد محفى نمائند که جمعی از فارسی زبانان - الخ

Ending: بروزه روزسیم بعد از ایام مذکوره - تمت

ff. 119. ll. 11. S. 6.6 × 4.5"/16.8 × 11.3 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Dampness stains. A few worm holes. Fairly good condition. Not bound.

2789

F. 1. 9.

تحفة الخاقانیة

TUHFATU'L-KHĀQĀNIYAH

A treatise on Shiite laws compiled by Muḥammad Ḥasan b. Ma'sūm a'l-Qazwīnī, and dedicated to Fath 'Alī Shāh Qāchār (1211/1250/1797-1834).

Beginning: افتتاح بمقال بنام بادشاه بی زوا ابست که
مفاتیح فضل - الخ

Ending: بلکه بعضی نائلند بآنکه اعتکاف اوباطل میشود -
و السلام علی من اتبع الهدی

ff. 128. ll. 18. S. 8.0 × 5.3"/20.5 × 13.6 cms.

Written in clear naskh. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. A few worm holes. Good condition. Not bound.

2785

F. I. 69/1

رسالة النجاة

RISĀLATU'N-NAJĀT

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 83. ll. 10. S. 6.0×4.2 "/ 15.2×10.8 cms.

Written in ordinary naskh. An early 13th cent. copy.

Dampness stains. Fairly good condition. To be repaired, and re-bound.

2786

F. 50.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 78. ll. 10. S. 5.9×4.0 "/ 15.0×10.2 cms.

Written in ordinary nasta'liq. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Good condition. Bound.

2787

F. I. 51.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 93. ll. 12. S. 6.1×4.0 "/ 15.6×10.2 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A mid 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

F. 1. 5.

رسائل فقه

(RASĀ'IL-E-FIQH)

This copy contains two works:—

1. Intik^hāb-e-Iṣlāḥu'l-'Amal, on ff. Iv-22.

Selections from the same compiled by Abu'l Ḥasan a'l-Ḥusainī a'l-Iṣfahānī, better known as Khush-mazāh.

Beginning:

الحمد لله . . . فبعد بنده عاصی درگاه رب العالمین
أبو الحسن - الشيخ

Ending:

و برق میان روزه واجب و سنت نیست - تمت الرسالة

2. Risālatu'n-Najāt, on ff. 23v-120v.

Selections made by Muḥammad Ḥusain Ṭahrānī from the Persian paraphrase of Muḥammad b. Ismā'il, surnamed Shaikh Abū 'Alī 'Arab of the Arabic commentary of Sayyid 'Alī Ṭabāṭabāi on Muk^hṭaṣaru'l-K^hulāṣa, better known as Muk^hṭaṣaru'n-Nafa' of Zainuddin 'Alī b. Aḥmad a'sh-Shahīd ath-Thānī (d. 966/1559), which is a well-known work on Shiite laws.

Beginning:

شکر بی حد و ثنای بی عد مر خدای را سزد که
نی نوع انسان را - الشيخ

Ending:

این سه روز بر کسی که در منی باشد روزه گرفتن حرام است -
والله اعلم بأحكامه و رسواه و اهل بيته

ff. 120. ll. 11 or 13. S. 6.5 × 4.3⁸/16.8 × 11.2 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq. Late 13th cent. copies.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition
Not bound.

Beginning :

الحمد لله الذي أرشدنا إلى إصلاح الأعمال... وبعد چون
أخذ احكام ومعرفته - الشيخ

Ending :

بعضی تجویز کرده اند و دران اشکال و نظرات
و الحمد لله... الطاهرین

ff. 201. ll. 18. S. 8.2×5.9 "/ 21.0×15.0 cms.

Written in good naskh, by Muḥammad b. Ḥajar a'l-Fakhkhār, in
1233/1818.

European paper. Rubrications. Worm holes. Fairly good condition. To be repaired, and reset in existing covers.

Seals of Munṣirū'l-Mulk, 1206.

منیر الملک - ۱۲۰۶

Ref: IvASB. 1020.

2783

F. 1. 64.

مصباح الطريق

MİŞBĀHU'T-TARİQ

Another Persian paraphrase of the same dealing with ablutions, prayers and fasting.

The work is divided into three maqṣads.

Beginning :

الحمد لله الذي أوضح لنا طريق العمل... وبعد چنین
گوید - الشيخ

Ending :

بجهت آن خواب رود و آن خواب نیز ضرر ندهد

ff. 140. ll. 13. S. 5.9×4.1 "/ 15.0×10.6 cms.

Written in good naskh by Rahl' b. Naṣra'llah a'l-Ḥusaini. An
early 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2781

F. 1. 37.

ذخيرة السعادة

DHAKHĪRATU'S-SA'ĀDAT

A treatise on namāz compiled for Muḥammad Ibrāhīm 'Alī Khān Bahādur a'l-Husainī, in 1235/1820.

The work is divided into a muqaddima, three maqālas and a khātima.

Beginning :

الحمد لله الرحمن . . . أما بعد بنده كجج ميج

زبان ضعیف البقیان - الخ

Ending :

الآلف الثانی من الهجرة النبویة صلی الله علیه وآله حامدا ومسلما

ff. 53. ll. 9. S. 9.1×6.1; 5.0×2.6"/23.4×15.6; 12.8×6.6 cms.

Written in good shafi'a, by Muḥammad Ibrāhīm, surnamed Mirza Sayyid, for Mirza Muḥammad Yūsuf, in 1245/1830.

Gold and coloured ruled borders. Rubrications. Margins renewed. Good condition. Bound.

Seal of I'tiṣām-ul-Mulk, 1274.

اعتصام الملك - ۱۲۷۴

2782

F. 1. 65.

ترجمة اصلاح العمل

TARJAMA-E-IṢLĀḤU'L-'AMAL

A Persian paraphrase of the Arabic work of Sayyid Muḥammad b. Sayyid 'Alī Tabāṭabāi, (d. 1240/1825), compiled by his disciple, Ḥasan b. Muḥammad 'Alī Yazdī.

The work is divided into a muqaddima and several maṭlābs.

Beginning :

الحمد لله . . . چنین گوید اقل عباد الله
ابن محسن الجیلانی که - الخ

Ending :

در مباحث اوقات این مسئله مذکور شد - والله يعلم بالصواب

ff. 111+1. ll. 17. S. 6.2×3.9 / 15.8×10.0 cms.

Written in ordinary script, by Ibn Muḥammad Hādī, on 6 Rajab, 1231/2 June, 1816.

Greenish grey paper. Dampness stains. Fair condition. Bound.

Ref: IvASB. 1047. Bk. 1269-1270.

2780

F. 1. 1.

ترجمه اساس الأصول

TARJAMA-E-ASĀSU'L-UṢŪL

Persian paraphrase of the Arabic treatise on the principles of Shiite laws of Sayyid Dildār 'Alī ('Alī Muḥammad b. Muḥammad Mu'īn a'l-Hindī a'n-Naṣīrābādī a'l-Lakhnawī, d. 1235/1820). Compiled by Ḥimāyat Ḥusain a'n-Nishāpūrī a'l-Mūsawī.

The work is divided into a muqaddima, four maqṣads and a khātima

Beginning :

اساس اصول بتفرع علیها افضل القربات - الخ

Ending :

و به اتمام آن ابن کتاب . . . رسید سبحان
ربك رب العزة . . . العالمین

ff. 161. ll. 23. S. 11.6×7.2 / 29.8×18.4 cms.

Written in good nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes, repaired. Fair condition. Bound.

Seals: 1. Dīyān'd-Dāulah, Muẓaffarū'l-Mulk, Kāẓim 'Alī Khān Bahādur,

Dhulfiqār Jung.

ضیاء الدوایه، مظفر الملک، کاظم علی خان بهادر، ذوالفقار جنگ -

2. 'Alī Ibnī'l-Ḥusain, 1220.

علی ابن الحسین - ۱۲۲۰

Ref: IvASB (Ar). 673.

ff. 148, ll. 15. S. 8.0 x 5.7"/20.4 x 14.6 cms.

Written in good naskh, on 15 Ramaḍān, 1227/ 22 September, 1812, at Murshidābād.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fairly good condition. To be repaired and re-bound.

Seal of Muḥammad 'Alī, 1237.

بود جانشین محمد علی - ۱۲۳۷

2778

F. 1. 6.

انيس التجار

ANISU'T-TUJJĀR

A guide for bussines-men based [on Shiite laws, compiled by Maḥdī b. Abī-Dharr a'n-Nirāqī.

The work is divided into seven bābs.

Beginning: حمد و سپاس بی حد کریمی را سزا است که از غایت رحمت - الشيخ

Ending: که زید مدعی یکسال مثلاً در آن خانه ساکن شود - والله
تعالی يعلم

ff. 211, ll. 15. S. 8.1 x 5.8"/20.8 x 14.8 cms.

Written in bad script by Faṭḥ 'Alī b. Ḥājī Ḥasan Tirmidhī in 1230/1815.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2779

F. 63.

مرشد العوام

MURSHIDU'L-'AWĀM

A treatise dealing with the basic principles of Shiite faith compiled by Abu'l-Qāsim Ibn Muḥsin a'l-Jilānī, (d. after 1231/1815).

2776

F. 13.

أجوبة المسائل

AJWIBATU'L-MASÂIL

A collection of questions and answers on difficult points of Shiite laws by an anonymous person.

This copy is defective at both ends.

Beginning : abruptly. « كتاب الطهارة » مسئلة ، هرگاه زنی مستحاضه باستحاضه كميته غسل كرد - الخ

Ending : abruptly. مصلحت حال ایشانست نظر بفهم عرف ، وصاحب كفايه

ff. 179, ll. 30. S. 11.6 × 7.9"/29.6 × 20.2 cms.

Written in clear naskh. An early 13th cent. copy.

Headings in red. Dampness stains. Good condition. Not bound.

2777

F. 1. 55/1.

زينة الهداية

ZINATU'L-HIDĀYA

A treatise on Shiite laws compiled by Muḥammad Rafī' Nūrī.

The work is divided into a muqaddima, a few maṭlābs and a khātima.

Beginning : الحمد لله الذي . . . افسر سلطان سيدن محمد مالك الملوك رالائق
وسزااست كه - الخ

Ending : اعتراضات نفرو شند نسال الله الغفران وهو المستعان وعليه
التكلان

2774

F. 1. 7.

برات النجاة

BARĀTU'N-NAJĀT

A selection of fatwās from the work of Sayyid 'Alī Ṭabāṭabā'ī (d. 1231/1816), compiled by Muḥammad 'Alī Rashtī.

Beginning: الحمد لله... شطر دوم از دوشطر کتاب برات النجات - الشيخ

Ending: وروز سیم بعد از ایام تشریق هرگاه بمی باشد

ff. 132. ll. 19. S. 7.9 × 5.9"/20.4 × 15.0 cms.

Written in clear naskh. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2775

F. 1. 10.

تحفة لاریه

TUḤFA-E-LĀRIYAH

A treatise on Shiite laws compiled by Abū Aḥmad Muḥammad b. 'Abdu'n-Nabī b. 'Abdu's-Ṣāna' a'n-Nishāpūrī a'l-Khurāsānī.

Beginning: الحمد لله... أما بعد چنین گوید بنده جانی او احمد

محمد ابن - الشيخ

Ending: الرام دیت است - والله أعلم، ربنا لا تؤاخذنا... القوم

الكافرين

ff. 162. ll. 18. S. 8.6 × 6.2"/12.0 × 16.2 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. A few worm holes. Fairly good condition. Bound.

ff. 200. ll. 15 to 18. S. $4.3 \times 9.9''/11.2 \times 25.6$ cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by Hājī Sher 'Alī, on Rabi' I, 1203/ 24 December, 1788, at Sūrat Port.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

Ref: IvC. 383 for 2/i.

2773

Ad. 42.

رساله نماز شب

(RISĀLA NAMĀZ-E-SHABB)

A short treatise on night prayers, based on 'Āmili's Miftāḥu'l-Falāḥ, and Kaf'ami's Miṣbāḥ, compiled by Mir 'Ālam of Hyderabad, (d. 1223/1808), in an year in 1219/1804. Two chronograms are given on the fly-leaf, one by Zā'ir (ضیاء چشم بینا - ۱۲۱۸) stands for 1218/1803, for commencement; and the other by Mirza Najmī Tahrānī, (ثم اعمال صاوة لیل الی) 1219/1804, for completion. Marginal glosses by author.

Beginning: الحمد لله وسلام علی عبادہ الذین اصطفی، شکر و سپاس مخصوص
خدا است - الخ

Ending: باعث مضرت من برحمت خودای رحم کنندہ ترین رحم
کنندگان

ff. 46. ll. 9. S. $7.9 \times 4.6''/20.2 \times 11.8$ cms.

Written in naskh and nasta'liq, by Ghulām 'Alī, on I Rabi' 1218/ 21 July, 1803.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

Ad. 112.

مجموعه

(MAJMU'A)

This bayāḍ contains the following works :-

1. Ziyārat-nāma, on ff. 1v-93.

A collection of prayers for the twelve Shiite Imāms.

Beginning : السلام على رسول الله أمين الله ، على وحيد - الشيخ

Ending : علينا وعلى جميع أهل السماوات والأرض

2. Tuḥfatu'l-Ḥusainiyah, on ff. 93v-191v.

A treatise on Shiite laws compiled by Muḥammad Bāqir b. Muḥammad Akmal a'l-Iṣfahānī, surnamed Bihbahānī, (d. 1205/1791).

The work is divided into three sections :

- i. on namāz, and its pre-requisites, from f. 93v.
- ii. on zakāt, from f. 161.
- iii. on khums, from f. 182v.

Beginning : الحمد لله ... أما بعد بر ضمير طالبان درجات عاليه اخرويه مخفى
نماند که - الشيخ

Ending : اورا گفت که دست بردار تا بتو خمس دهم - والله يعلم

3. Du'ā-e-Saḥar, on ff. 192v-194.

An Arabic prayers attributed to Imām Ja'far Ṣādiq.

4. Uṣūl-e-Dīn, on ff. 195-200.

A tract on Shiite principles of faith.

Beginning : الحمد لله ... بعد بدانکه اصول دین پنج است اول
توحيد - الشيخ

Ending : وأخبار وادله براین معنی متعدد است

The work is divided into four bābs.

Beginning : لآلی حمد و سپاس مقرون بانوف خضوع و دراری شکر
بی قیاس - الشيخ

Ending : بر موع در خواب مرد و خلاف کذاب باشد ، و ایکن هذا آخر
الكلام ... الطاهرین الكرام

ff. 47. ll. 17. S. 9.6×6.3 "/ 24.6×16.4 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq, by Mir Ghauth 'Alī 'Alawī, on 1 Shawwāl, 1246/ 15 March, 1831.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes, repaired. Fairly good condition. Bound.

Seal: Zainu'ddīn Aḥmad Khān Bahādur, 1229.

زین الدین احمد خان بهادر - ۱۲۲۹

2771

F. 1. 62.

رسالة فقه

(RISĀLA-E-FIQH)

A treatise on Shiite laws. The title and the name of the author are not given.

The work is divided into eighteen kitābs.

Beginning : حمد اعلیٰ اجتنبی ... اما بعد این رساله ایست در فقه مذهب
حق - الشيخ

Ending : لازم می شود هر يك را كفاره کامله - والله اعلم بالصواب

ff. 288. ll. 21. S. 9.3×5.7 "/ 23.8×14.6 cms

Written in clear naskh. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2769

مجموعه

Ad. 23.

(MAJMO'A)

A bayāḍ containing the following:—

1. Risāla-e-Ādāb-e-Safar, on ff. 1-47v.

A short treatise on religious aspects of travelling, defective in the beginning and in the middle.

Beginning: abruptly. و روز جمعه متولد شدند، و هیچ روزی شوم تر از روز
دوشنبه نیست - الخ

Ending: پس هر حاجتی که خواهد از حق سبحانه تعالی بخواند بطلبد که
البته بر آورده است

2. Miscellaneous prayers, notes on magic and talismans, on ff. 48-180v.

3. Şaidiyah, on ff. 180v-200v.

Another copy of the same by Ḥazīn. (Ref. No 2768)

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

A few more notes, and some verse at the end

ff. 200 + 17. ll. varying. S. 8.9 × 3.9⁸/22.8 × 9.8 cms.

Written in different hands in ordinary naskh and nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2770

تحفة اصفیه

F.1. 8.

TUḤFA-E-ĀṢIFĪYAH

A treatise on Shiite precepts on hunting and slaying of animals, compiled by Fakhrū'ddīn Alwand, surnamed Muḥammad Ja'far, who dedicated the same to Āṣifu'd-Daūlah of Oudh, (1188-1212/1775-1797).

fl. 141. ll. 17. S. $7.8 \times 5.8^{\circ} / 20.0 \times 14.3$ cms.

Written in ordinary nasta'liq, by the grandson of the translator, 'Abdu'llah b. Mḥammad Jawwād b. 'Abdu'llah b. Nūru'ddīn b. Ni'matu'llah a'l-Ḥusainī a'l-Mūsawī a'l-Jazāirī a't-Tustarī, on 7 Ṣafar, 1210/ 23 August, 1795, from the autograph copy of the translator dated 16 Muḥarram, 1176/ 7 August, 1762.

European paper. Rubrications. Dampness stains. Worm holes.
Good condition. To be re-bound.

2768

F. 1. 60

صد د به

SAIDIYAH

A treatise dealing with legal precepts of hunting, slaughter of animals, etc., compiled by Muḥammad surnamed 'Alī b. Abī Ṭālib a'z-Zāhidī a'l-Jilānī, takhalluṣ Ḥazīn, (d. 1180/1766), for whose poetical works refer Nos: 2113-2117, in Vol. V.

The work is divided into a muqaddima, three bābs and a khātima.

Beginning : میاس بی قیاس که مدارك او هام از استقصای اصولش
قاصر - الخ

Ending : والصلاة على خاتم الرسالة وعلى آله الأطهار و صحبه الأخيار

A note in praise of 'Abdu'llah b. Bādhil b. Warqa' a'l-Khazā'i
a'l-Uzdī, on ff. 45v-47.

ff. i+45+2. ll. 15. S. $9.0 \times 5.3^{\circ} / 23.2 \times 13.6$ cms.

Written in good naskh and nasta'liq, in 1172/1759.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Man. 38.

گل گلزار معانی

GUL-E-GULZĀR-E-MA'ĀNĪ

A treatise on Shiite laws, compiled in 1172/1758, by 'Alī Akbar Mūsawī a'l-Ḥusainī Sālārjūngī. The title is chronogrammatic.

The work is divided into twelve bābs, and two lam'as.

Beginning:

زیبا مصرعه قرآنی ۷۸۶، از جهان مر بلند - البغ

Ending:

کز دوری تو همیشه با فریادم مانده یکی که کم کند صاحب را

ff. 196. ll. 13. S. 7.9×4.8"/20 2×12.0 cms.

Written in clear nasta'liq. by Mirza Muḥammad b. Mirza 'Alī Naqī Mashhadī, on 25 Muḥarram, 1174/ 6 September, 1760.

Worm holes. Fair condition. To be repaired, and reset in existing covers.

Seals of Ḥasan Ridā, 1209. (Ashja'u'l-Mulk).

حسن رضا - ۱۲۰۹ (اشجع الملك)

F. I. 16/1.

ترجمه هدیه المؤمنین

TARJAMA-E-HADYATU'L-MU'MININ

A Persian paraphrase of the Arabic work on fiqh, Hadyatu'l-Mu'minin wa Tuḥfatu'r-Rāghibīn of Ni'matu'llah b. 'Abdu'llah a'l-Ḥusainī a'l-Jazāirī, (d. 1130/1718), compiled by 'Abdu'llah b. Nūru'ddīn b. Ni'matu'llah a'l-Ḥusainī a'l-Mūsawī a'l-Jazāirī a't-Tustarī, who completed the same on 2 Muḥarram, 1173/ 26 August, 1759.

Beginning:

الحمد لله... وبعد صورت این معنی بر هیچ مؤمن حق

شماس - البغ

Ending:

انگارند و مصنف و مترجم را بدعای خیر یاد دارند

The work is divided into a muqaddima, twelve bābs and a khātima.

Beginning : تمك خوان حق شناسی شور انگیزی سپاس بی قیاس
منعم جهان آفرینی است که - الخ

Ending : و ازوست آغاز و بسوی اوست انجام و الله الموفق
و به الاعتصام

ff. 96. ll. 21. S. $9.3 \times 5.9^{\circ}/23.8 \times 15.0$ cms.

Written in good naskh, on 17 Muḥarram, 1129/24 December, 1716.

Headings in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

2765

F. I. 17. جامع الرضوی

JĀME'U'R-RIDWĪ

A Persian commentary on Sharā'i'u'l-Islām of Najmuddīn a'l-Hillī, (d. 676/1277), compiled in 1161/1748, by 'Abdu'l-Ghanī b. 'Alī Ṭalīb Kashmīrī. The title is the chronogram for the beginning of the commentary.

Beginning : الحمد لله الذي أوضح ... أما بعد ،
محررين اوراق مستغرق بحار - الخ

Ending : میراث مرشد تعلق بآنها می کرد علی الاصح ،
پس عاقل هم آنها خواهند بود

ff. 661+1. ll. 21. S. $12.4 \times 7.7^{\circ}/31.8 \times 19.8$ cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Muḥammad Qāsim 'Alī, on 2 Dhuḥajja, 1240/21 January, 1874.

European paper. Good condition. Preserved in a portfolio.

Ref: Bk. 1268.

13. *Sharḥ-e-Ḥadīth*, on ff. 141-154v.

A Persian paraphrase of and a commentary on the sayings of Imām Ja'far Ṣādiq based on Kulīnī's version, and compiled by Taqī Majlisī.

Beginning : ثقة الإسلام و رئیس المحدثین محمد بن یعقوب کلینی - السیخ

Ending : او بندگی چو گدایان بشرط منزد مکن ،
که دوست خود روشن بنده پروری داند

ff. 154. ll. 18. S. 8.0 × 5.2"/20.6 × 13.4 cms.

Written in good naskḥ, by Muḥammad Kāẓim b. Mīrza Hammāmī a'l-Iṣfahānī, in Rajab, 1104/March, 1693.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

These works have been copied from the autograph codices of the compilers.

Seals: 1. Amjad 'Alī Shāh.

نسخ هر مهر شد چون شد مزین بر کتاب . . . حاتم امجد علی شاه رمان
عالیجناب . . . ۱۲۶۲

2. Wājid 'Alī Shāh.

حاتم واجد علی سلطان عالم بر کتاب ثابت و پر نور بادا تا فروغ آفتاب - ۱۲۶۳

3. Sulaimān Jāh.

خوش است هر کتبخانه سایمان جاه مهر کتاب مزین چون نقش بسم الله

2764

F. 1. 63.

مائدة السهاویة

MA'IDATU'S-SAMĀWIYAH

A treatise dealing with the legality or otherwise of animals, birds, etc; and of cooking utensils and crockery, compiled by Muḥammad Raḍī b. Ḥusain Khwansārī who dedicated the same to Shāh Ḥusain Ṣafawī (1106-1142/1694-1729).

10. *Fuṣū-e-Sulaimānīyah*. on ff. 93-106v.

A collection of Arabic prayers with their Persian paraphrase compiled by Majīd b. Muḥammad a'l-Ḥusain a'l-Bahrānī for Shāh Sulaimān Ṣafawī, (1077-1105/1667-1694).

Beginning : اسرار حق و یقین و بحالی بدائع آثار - الخ

Ending : برقم اعتراف بعجز و اقرار بقصور ختم
نمائیم ربنا لا تاخذنا الکافرین

11. *Tārjama-e-Kitāb-e-'Alī*, on ff. 107-137v.

A Persian paraphrase of the sayings of Ḥaḍrat 'Alī completed in Rabi' I, 1095/ February, 1684, by the same Bāqir Majlisī.

The work is divided into two faṣls.

Faṣl (i) deals with the admonitions of Ḥaḍrat 'Alī to Mālik a'l-Ushtar a'n-Nakh'i, on f. 107.

Faṣl (ii) contains three sayings :— letters :—

(a). From Ḥaḍrat 'Alī to 'Uthmān b. Ḥanīf Anṣārī, Governor of Baṣrah, on f. 125v.

(b). From Ja'far Ṣādiq to Najāshī, on f. 128v.

(c). An anecdote about Manṣūr Dhu-Iyraqī in the Holy Ka'bā, on f. 135.

Beginning : الحمد لله وسلام على عباده الذين اصطفى . . .
أما بعد، این رساله است در ترجمه - الخ

Ending : باحجت بر او تمام تر گردد، والله تعالى يعلم حقائق
الأمور وهو الهادي إلى سواء السبيل

12. *Tarjama-e-Ḥadīth-e-'Uyūn Akhbārī'r-Riḍā*, on ff. 137v-141v.

A Persian paraphrase of the sayings of 'Alī b. Mūsī Riḍā completed in Rabi' I. 1078/August, 1667, by the same Bāqir Majlisī. It is based on Ibn Bābūya's famous work.

Beginning : الحمد لله . . . أما بعد ، بدرستی که رئیس
المحدثین محمد بن بابویه قمی - الخ

Ending : و بلند گردانیدن نام او ، باینجا ختم شد ترجمه ابن حدیث حسب
التماس . . . حاجی محمد علی وفقه الله تعالى

A tract dealing with the Shiite views on the date of the martyrdom of Ḥadrat 'Umar, the second Orthodox Khalīf, which is fixed as 9 Rabi' I, when they celebrate 'Id-e-Nahum. It is by the same Bāqir Majlisī, and is full of abuses.

Beginning :

الحمد لله أما بعد ، چنین گوید تراب اقدام
طالبان حق - السخ

Ending :

اگر چنین باشد این شرافت نیز برای او کافیهست

6. Risāla fi'l-Jabr wa'l-Ikhtiyār. on ff. 67-72v.

A tract on predestination and choice by the same Bāqir Majlisī, completed on 10 Rajab, 1089/18 August, 1678.

Beginning :

الحمد لله و سلام على عباده الذين اصطفى أما بعد - السخ

Ending :

و جای او جهنم است اینجا ختم کردیم سخن را

7. Risāla-e-Zakāt, on ff. 72v-76.

A tract on poor rate by the same.

Beginning :

الحمد لله . . . بدانکه زکاة در نه چیز واجب میشود - السخ

Ending :

و برای ضرورت باین قدر اکتفا نمود - و السلام

8. Risāla-e-Kaflārah, on ff. 76v-82v.

Another copy of the same. Refer No : 2760.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

9. Risāla dar Madh Raūda-e-Muqaddasa-e-Najaf wa Karbalā, on ff. 83-92v.

A tract in praise of the mausoleums at Najaf and Karbalā completed on 15 Ramaḍān, 1097/26 July, 1686, by the Same Bāqir Majlisī.

Beginning :

محنت زدگان وادی فراق را صلاست

Ending :

و اونچه لطف و احسان تو را سرزد آنم
'و یرحم الله عبدا قال آمینا'

Beginning : الحمد لله ... و بعد چنین گوید احقر عباد الله مجد باقر بن - الشيخ

Ending : و احكام ديگر است که در کتب مبسوط مذکور است
والحمد لله أولا ... آله الطاهرين

2. Tarjuma-e-Taūhīdu'r-Riḍā, on ff. 14-44.

A Persian paraphrase of the sermons of the eighth Shiite Imām 'Alī b. Mūsī Riḍā, compiled by the same Bāqir Majlisī.

Beginning : درة الناج زبور زيب افزای الفاظ و معانی - الشيخ

Ending : مشارکتی باین خطبه دارد در کتاب بحار الانوار
(مذکور) شده است و الحمد لله ... الطاهرين

3. Risāla fī Ahkāmī'n-Nawāṣib wa'l-Ghawāṣib, on ff. 52.

An anonymous tract on Shiite beliefs pertaining to the enemies of Ḥaḍrat 'Alī based on the orders of their Imāms. The enemies (غواصب) are considered as usurpers (فواصب).

Beginning : الحمد لله و سلام علی عبادہ الدین اصطفی - الشيخ

Ending : امامی را که از جانب خدا نیست او مشرک است

4. Risāla-e-Waqf, on ff. 52v-59.

An anonymous tract on endowment.

Beginning : الحمد لله الذي وقف على كل حامد في موقف المعجز عن
أداء حميده - الشيخ

Ending : علی بهج بكون فيه مصلحة الامت كما هو المذبور -
والسلام علی من ابع الهدى و دین الحق

5. Risāla dar Taḥqīq-e-Tā'rikh-e-Kushta Shudan-e 'Umar, on ff. 59-66v.

1. *Ḥadīqatu'l-Muttaqīn*, on ff. 1-72v.

Another copy of the same by Taqī Majlisī containing only three bābs, and defective in the beginning.

Beginning: abruptly.

فاسده ننموده و در اندیشه - الخ

Ending: و خلافت در آنکه این کفاره نخب است چون کفاره رمضان،
بانه، اشهر و اقرب اول است

2. *Risāla fi Shakkīyāti'ş-Şalāt*, on ff. 73v-84v.

Another copy of the same by Bāqir Majlisī.

Beginning: as usual.

Ending: حق تعالی جمیع... را در سایه احوال ارشاد و محفوظ دارد
بمحمد و آل الطاهرین... یا ارحم الراحمین

ff. 84. ll. 22. S. 7.0 × 4.4" / 18.0 × 11.2 cms.

Written in ordinary *naskh*, by Muḥammad Ḥasan b. Ḥājī Muḥammad Qāsim, at the end of Rabi' II, 1151/beginning of August, 1738.

Rubrications. Dampness stains. Worm eaten. Poor condition.
Not bound.

2763

f. 1. 68.

مجموعه رسائل

[(MAJMŪ'A-E-RASĀ'IL)]

This copy contains the following works:-

1. *Tarjumatu'ş-Şalāt*, on ff. 1v-13v.

Another copy of the same. Refer Nos: 2755 to 2758.

ff. 10. ll. 10. S. 7.7×4.7 ; $5.7 \times 3.1^*$ / 19.8×12.2 ; 14.8×8.0 cms.

Written in ordinary script, by Muḥammad 'Alī Khān Bahādur Sālār Jung, (great grandfather of the Collector), on 12 Rabī' II, 1242/13 November, 1826.

European paper. Rubrications. Coloured ruled borders. Fair condition. To be repaired, and reset in existing covers.

Autograph copy of the Collector's ancestor.

Seals of Sayyid Muḥammad 'Alī Khān Bahādur, 1221.

سید محمد علی خان بہادر - ۱۲۲۱

2761

F. I. 39. رسالة في الحدود والديات

RISĀLATU'N FI'L-ḤUDŪD WA'D-DIYĀT

A treatise on penal laws of execution and expiatory mulct for murder according to Shiite faith compiled by the same Bāqir Majlisi.

Beginning: الحمد لله الذي شرع الديات و القصاص و الحدود لرفع - الخ

Ending: و اكر تقصيرا نكرده است ضامن نيست

ff. 127. ll. 14. S. $8.7 \times 4.6^*$ / 22.6×11.8 cms.

Written in clear shikast-nasta'liq, on 1 Muḥarram, 1229/24 December, 1812.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes, repaired. Good condition. Bound.

2762

F. I. 47. رسائل فقه

RASĀ'IL-E FIQH

This copy contains two works:-

2759

F. I. 49.

رسالة في شكيات الصلاة

RISĀLATU'N FI SHAKKIYĀTI'Ş-ŞALĀT

A treatise dealing with doubts in prayers compiled on 10 Dhīq'ada, 1085/26 January, 1675, by the same Bāqir Majlisī.

The work is divided into a muqaddima, five bās and a *khātima*.

Beginning : الحمد لله الذي أراح ظلمات الشبهات و الشكوك... أما بعد ،
جنين كويد حاكسار راه سالكان - الخ

Ending : على محمد و آله المقدسين

ff. 49. ll. 12. S. 6.3 × 3.6"/16.2 × 9.0 cms.

Written in good naskh. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. To be re-bound.

Ref: IvASB. 1034.

2760

F. I. 48.

رسالة كفاره

RISĀLA.E-KAFFĀRAH

A treatise dealing with atonement, compiled in Şafar 1091/February, 1680 by the same Bāqir Majlisī.

Beginning: الحمد لله و سلام على عباده... أما بعد ، كفاره بر دونوع
است - الخ

Ending : كفاره را بعمل بياورد و بايد نجاحه كردم رساله را ،
والحمد لله أولا و آخرا

2756

Ad. 44.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

It is followed by :

- i. Risāla-e-Zakāt wa Khums, on ff. 27-30v.

A tract on poor rate.

- ii. Miscellaneous notes, on ff. 30v-36.

ff. 26+10. ll. 15. S. $9.0 \times 5.3^{\circ}/22.8 \times 13.8$ cms.

Written in clear nasta'liq, in 1133/1721.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2757

Ad. 43.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 49. ll. 9. S. $5.6 \times 3.4^{\circ}/14.32 \times 8.8$ cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2758

Ad. 45.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 27. ll. 11. S. 8.0×5.1 ; $5.5 \times 3.2^{\circ}/20.6 \times 13.0$; 14.0×8.2 cms.

Written in nasta'liq. A 12th cent. copy.

Rubrications. Coloured ruled borders. A few worm holes. Good condition. Bound.

Beginning : الحمد لله و سلام على عباده الذى اصطفى اما بعد ، بدانندى طالبان
حق كه - الخ

Ending : و هر بار بگويد بسم الله الذى لا اله الا هو عالم الغيب و الشهادة
هو الرحمن الرحيم اذهب عنى الغم والحزن

ff. 27. ll. 12. S. 6.9×4.5 ; 6.2×2.5 "/ 17.8×11.6 ; 11.8×6.4 cms.

Written in good shikast, by 'Abdu'r-Rahmān b. Islām Khān in 43
'Ālamgīrī = 1111/1699, at Ajmere.

Rubrications. Gold ruled borders. Dampness stains. Worm holes.
Fair condition. Bound.

2755

Ad. 192/3. ترجمه الصلاة

TARJAMATU'Ş-ŞALĀT

A Persian paraphrase of the Arabic treatise on namāz by Mullā Muḥammad b. Murtaḍā, surnamed Muḥsin a'l-Kāshī, takhalluṣ Faiḍ (d. 1090/1679), for whose poetical works refer Nos. 1963-1964, in Vol. V.

The work is divided into eight dars, and was completed in 1043/1634 by Muḥsin, and the translation on 29 Jumāda I, 1099/22 March, 1688, by Muḥammad Bāqir b. Muḥammad Taqī a'l-Majlisī, (d. 1110 or 1111/1699 or 1700).

Beginning : هر كه نه گوياب تو خاموش - هرچه نه ياد تو فراموش به ...
مباس و ستايش امر كر يمى را كه - الخ

Ending : شرائط فرض نموده الحمد لله ... تسليما كثيرا

ff. 13. ll. 21. S. $8.8 + 5.6$ "/ 22.6×14.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Muḥammad Ridā Qā'inī, on 1
Şafar, 1058/16 February, 1648.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

Seal: Sayyid Anjwī Khān, 1157. سيد انجوى، خان - ۱۱۵۷

Ref : Bk. 1257.

Beginning: بدانکه علما رضوان الله عليهم اجمعين مقرر داشته اند که - الخ

Ending: و از جهت غالب شدن بر انکار منکران ، اینست آخر کلام
درین مقام

ff. 408. ll. 22. S. $8.7 \times 4.8''/22.4 \times 12.4$ cms.

Written in clear nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

A few autographs on the flyleaf.

2754

F. 1 4.

رسائل فقه

RASĀI'L-E-FIQH

This copy contains two works by Muḥammad Amin Mustaghni.

1. Aqalla ma Yujūz bih'iṣ-Ṣalāt (اقل ما يجوز به الصلوة) on ff. Iv-15.

A tract on obligatory prayers written for his friend, 'Abdu'n-Nabī.

The work is divided into a muqaddima, nine bābs and a khātima.

Beginning: بعد از حمد یگانه حمد و درود بر محمد و آل محمد عرضه
میدارد - الخ

Ending: واضح احوال آنکه در صورت اول ترا اعاده نماز
واجب هست

2. Hadyatū'l-Maulā (هدیه المولا) on ff. 15v-27.

Another tract on ablutions, namāz, and prayers thereafter written for 'Abdu'r-Riḍā.

The work is based on the teachings of Amir Sayyid Muḥammad Khail 'Āmilī, and is divided into a muqaddima, five aḥādīth and a khātima.

2752

قبلة الآفاق

F.I. 66.

QIBLATU'L-ĀFAQ

A treatise on the direction of the holy Ka'ba, compiled by Raḍfu'd-dīn Muḥammad Qazwīnī, who mentions his teacher, Mullā Khalīl Qazwīnī, (d. 1089/1678), the author of aṣ-Ṣāfi, Sharḥ-e-Kāfi, who was alive at the time this work was compiled (f. 9).

The work is divided into four rukns.

Beginning : اللهم كما وليت نبيك قبلة ترضاها . . . و بعد هر محرمان كعبه
يقين و محرمان دين متين پوشيده نيست كه - الخ

Ending : تاجين ميصد و ده فرسخ ، سي و نه مرحله

ff. 49. ll. 16. S. 8.0 × 5.4⁹/20.6 × 13.8 cms.

Written in clear nasta'liq, by Muḥammad Hādī, in Ramadān, 1128/
August, 1716.

Dampness stains. Fair condition. To be re-bound.

2753

T. I. 36. ترجمه كنز العرفان في فقه القرآن

TARJUMA-E-KANZU'L-'IRFĀN FI FIQHIL-QUR'ĀN

A Persian paraphrase of the Arabic work, Kanzu'l-'Irfān fī Fiqhi'l-Qur'ān, dealing with Shiite laws based on Qurānic injunctions. The names of the author and the translator are not given, but according to Kashfu'l-Hujūb the author is reported to be Sharfu'ddīn Abū 'Abdu'llah Miqdād b. Jalālu'ddīn 'Abdu'llah a'l-Asadī a'l-Hillī, (IXc/XIVc).

The work is divided into a muqaddima, a few kitābs and khātima. Each kitāb is sub-divided into a few āyāt.

This copy does not contain the khātima, and ends in āyāt 15 of Kitābu'l-Qaḍā wa'sh-Shahādat.

4. Dāmin, 1226.

ثامن ضامن ضامن ضامن - ۱۲۲۶

5. Ghulām Muḥammad Maḥdī, 1226.

غلام امام محمد المهدی - ۱۲۲۶

6. Kafā Billāhi Waliyann wā Kafā Billāhi Naṣirā.

کفی بالله ولیا و کفی بالله نصیرا

7. 'Alī Yāwar Khān Iqbāl 1212.

علی یاور خان اقبال - ۱۲۱۲

2751

F. I. 2.

اجوبة المسائل

AJWIBATU'L-MASĀ'IL

A collection of questions and answers on fiqh compiled by Aḥmad b. Muḥammad a'l-Husaini a'l-Iyḡāni, and dedicated to Shāh Sulāimān Ṣafawī, (1077-1105/1667-1694).

Beginning : الحمد لله... بحیب دعوة المضطرين... أما بعد : قاصر از نیل
معالی و معانی - الخ

Ending : و باب کرم بشویند ظاهرا فصورنداردو شبه بمخاطر ندارد

ff. 130. ll. 17. S. 9.1 x 6.1" / 23.0 x 15.8 cms.

Written in clear nasta'liq, by 'Alāu'ddīn, during the reign of Muḥammad Shāh. A mid 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Poor condition.
Not bound.

Seal: Murād Sharfī, 1171.

مراد شریف - ۱۱۷۱

This copy contains Bāb 4, on fasting, and is defective in the beginning.

Beginning: abruptly. یعنی در بیان احکام صوم است و مراد از - السخ

Ending: بحرمت النبی وآله المعصومین - صلوات الله علیهم أجمعین

ff. 227. ll. 21. S. 10.4×6.3 "/ 26.8×16.2 cms.

Written in good nasta'liq. A mid 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition
Bound.

2750

F. I. 46. رسالة الرضاع

RISĀLATU'R-RIDĀ'

A treatise dealing with the problems of marriage vis-a-vis milk (sucking), compiled by the same Taqī Majlisī.

Beginning: الحمد لله ... و بعد چنین گوید أحوج المربوبین إلى رحمة
ربه الغنى - السخ

Ending: حضرت فرمودند که این فعل مکروه است و شیر و گوشت
آن پاکی ندارد، و الحمد لله ... المعصومین

ff. 17. ll. 18. S. 8.7×4.8 ; 6.7×3.1 "/ 22.4×12.4 ; 17.2×8.0 cms.

Written in good naskh. A late 11th cent. copy.

Gold and colour ruled borders. Rubrications. Dampness stains.
Good condition. Bound.

Seals: 1. Murshid Qulī Khān. عدم تبدیل مهر مرشد قلیخان سنه ۱۰۰۰

2. Ghulam Dāmin, 1243.

غلام ضامن - ۱۲۴۳

3. 'Alī Yāwar Khān, 1170.

علی یاور خان - ۱۱۷۰

2747

F. 1. 34.

Another copy of the same but containing first four bābs only.

Beginning: as usual.

Ending: استمنا باطل می کند اعتکاف را بی دغدغه و کفاره
می دهد احتیاطا

ff. 222. ll. 17. S. $9.5 \times 6.3^{\circ}/24.6 \times 16.0$ cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Mirza Asad b. a'l-Husain Mashhadi, on 6 Jumāda II, 1229/26 May, 1814.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seal of Mirza Asghar 'Alī Baig, 1290.

مرزا اصغر علی بیگ - ۱۲۹۰

2748

F. 1. 35.

Another copy of the same, defective in bāb 4. Table of contents in the beginning.

Beginning: as usual.

Ending: abruptly. و از ابتدائی شب سیم رجب میشود و ترکش حرام است

ff. iii+306. ll. 17. S. 9.1×4.9 ; $6.7 \times 2.7^{\circ}/23.4 \times 12.6$; 17.2×7.0 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 11th cent. copy.

'Unwān. Gold ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2749

F. 1. 57.

شرح حقیقة المتقين

SHARḤ-E-ḤADIQATU'L-MUTTAQĪN

A commentary on the same by Dildār 'Alī Lakhnawī, (d. 1255/1820).

H. I. 27.

Another copy of the same dealing with namâz. It is called Risâla-e-Falâh. This copy is defective in the beginning.

Beginning : abruptly. واگر آفتاب جهانتاب حکمتش از افق انقلاب - الخ

Ending : و دور نیست که امثال اینها ابواب صلاة باشند

ff. 97. ll. 17. S. 7.5×4.9 "/ 19.4×12.6 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

F. I. 33.

حديقة المتقين

HADIQATU'L-MUTTAQIN

A treatise on fiqh compiled in 1064/1653 by the same Taqī Majlisī.

The work is divided into a muqaddima, five bābs and a Khātima. Marginal glosses.

Beginning : الحمد لله . . . اما بعد ، چنین گوید اضعف عباد الله الغنى
محمد تمی بن مجلسی الاصفهانی - الخ

Ending : امیدوار ثواب از کرم کریم و رحمن و رحیم اعوذ بالله
من الشيطان الرجيم

ff. 362. ll. 15. S. $9.1 \times 6.3 \times 3.0$ or 3.6 "/ 23.4×16.2 . ; 15.8×7.8 or 9.2 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by Sayyid Hasan 'Alī Ridwī, on 6 Jumāda I, 1252/19 August, 1836.

Coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seal of Mir Hasan 'Alī, 1253. میر حسن علی - ۱۲۵۳

Ref : Bk. 1261-1264.

2743

H. I. 40.

Another copy of the same, but containing different bābs: from (باب الإبتداء) to (باب ثواب صلاة الأيام) in two parts.

Beginning: سيد الانبياء و المرسلين محمد و عبرته الهادين إلى الحق
و اليقين - الشيخ

Ending: قاحضرت صاحب الأمر خروج فرمايند و الله تعالى يعلم

ff. 249. ll. 31. S. 13.4 × 8.9"/34.3 × 22.8 cms.

Part 2, from ff. Iv-66, in good naskh; and Part 3, from ff. 67v-249, in naskh and nasta'liq. Early 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2744

H. I. 42.

Another copy of the same, from (صلاة الحاجة) to (وجوب الجمعة) defective at both the ends.

Beginning: abruptly. نمودم که پس چهار رکعت ظهر را از جهت خود کرده
باشم - الشيخ

Ending: abruptly. حضرت سيد المرسلين صلعم فرموده است که نحن نحکم
بالظاهر و الله ...

ff. 137. ll. 25. S. 12.0 × 8.3"/30.4 × 21.2 cms.

Written in clear naskh. A late 11th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2741

H. I. 39.

لوامع صاحبقرانی

LAWĀMI'-E-ŞĀHIBQIRĀNĪ

A Persian paraphrase of, and a commentary on *Mal Layaḥḍari'l-Faqīh* of Ibn-e-Babūya a'l-Qummī, (d. 381/991), compiled by Muḥammad Taqī b. Maqṣūd 'Alī Majlisī Iṣfahānī, (d. 1070/1659), who dedicated the work to his patron, Shāh 'Abbās, II, having completed the same in 1065/1654.

This copy contains from the beginning to (باب نوادر الصلوات).

Beginning : حمدی که باقلام اشجار و مداد بحار بر صفحات لیل و نهار - الخ

Ending : و این قانون مصنفین است که بترتیب مجلد معلوم و ده باشد

ff. iv+666. ll. 29. S. 12.9 × 7.4"/33.0 × 19.2 cms.

Written in good *naskh*, by Muḥammad Darwish 'Alī a'l-Mashhadī, on 22 Muḥarram, 1114/7 June, 1702.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Seals: Sayyid 'Ālam 'Alī Khān Bahādur, 1224.

سید عالم علی خان بهادر - ۱۲۲۴

Ref: Bk. 1258-1260.

2742

H. I. 41.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : ذکر آنها فائده ندارد

ff. 410. ll. 22. S. 9.1 × 6.2; 6.7 × 4.0"/23.4 × 16.0; 17.2 × 10.2 cms.

Written in clear *naskh*, in Muḥarram, 1118/April, 1706.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Fair condition. Not bound.

2739

F. 1. 40.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : خون استحاظه زرد و نارنگ است و مطلقا بوی ندارد

ff. 13. ll. 13. S. $6.1 \times 4.4'' / 15.7 \times 11.2$ cms.

Written in ordinary script. A middle 13th cent. copy.

Rubrications. A few worm holes. Fair condition. To be rebound.

Seals: Two. Mustaqīmu'd-Daulah in (beginning and ending).

مستقیم الدواہ -

2740

H.1. 13/2.

واجبات نماز

WĀJIBĀT-E-NAMĀZ

A treatise on the essential items of namāz according to Shiite faith, compiled by Muḥammad Bāqir a's-Sabzwāri during the reign of Shāh 'Abbās II Ṣafawī (1052-1077/1642-1667).

The work is incomplete at the end.

Beginning : الحمد لله ... أما بعد ، در این اوان سعادت نشان که
از میا من - العج

Ending : abruptly. یعنی معتقد نباشد و معابد و منکر آن

ff. 36. ll. 29. S. $11.5 \times 7.5'' / 29.6 \times 19.2$ cms.

Written in ordinary nasta'liq, in two different hands. An early 12th cent. copy.

Gray and pink paper. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2737

F.I. 12.

ترجمة الاثنى عشرية

TARJAMATU'L-ITHNĀ 'ASHARĪYAH

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 12. ll. 15. S. $9.0 \times 5.3^a / 23.0 \times 13.5$ cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals : 1. Qādir Jung Bahādur.

قادر جنگت بهادر

2. Qādiru'd-Daulah, 1274.

قادر الدوله - ۱۲۷۴

2738

F.I. 41.

اصول دين

U'ŞUL-E-DİN

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 22. ll. 7. S. $5.7 \times 3.8^a / 14.5 \times 9.7$ cms.

Written in clear shikast-nasta'liq, by Mīr Aḥmad 'Alī, on 14 Shaw-wal 1242/11 May, 1827 at Hyderābād

Rubrications. Worm holes. Fair condition. To be re-bound.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Poor condition. Preserved in a portfolio.

Seals: Muḥammad 'A l Khān Bahādur, 1219.

محمد علی خان بهادر - ۱۲۱۹

Ghālibu'd-Daūlah.

غالب الدوله -

2736

F. 1. 11.

رسائل فقه

RASĀ'IL-E-FIQH

This copy contains two works:-

1. Tarjamatu'l-Ithnā. 'Ashariyah (ff. Iv-19).

Persian paraphrase of 'Āmili's Arabic treatise on purification, prayers, alms, fasting and pilgrimage. The translator, Ṣadru'ddīn Muḥammad Tabrizī, has taken out the portion on prayers for his work and divided the same in twelve faṣls.

Beginning : حمد و پرستش معبودی را سزا است که آفتاب هدایت - الخ

Ending : پس صبر نخواهی کرد برای تشهد و دعاء

2. Uṣūl-e-Dīn (اصول دین) (ff. Iqv-31).

A tract on Shiite principles of faith for the young, by an anonymous person.

Beginning : الحمد لله .. أما بعد ، بد آنکه بر هر نابالغی و عاقل واجب و لازم است شناختن - الخ

Ending : نمازش باطن است و اعاده میکند - و الله اعلم

Written in clear nasta'liq, by Hājī Darwish 'Alī Raūḍa Khwān, on Dhīqa'dah, 1197/9 October, 1783.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2733

F. I. 27.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 44. ll. 23. S. 14.4×8.2 ; $9.3 \times 4.7^{\circ}$ / 37.0×21.1 ; 23.8×11.9 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq, by Shaikh Muḥammad for Muḥammad Ṣādiq Khān Ghālib Jung, on 11 Ṣafar, 1205/20 October, 1790.

Coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2734

F. I. 31.

Another copy of the same, defective by last folio.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly.

صاحب مال میرسد و اگر فوت ، او بعد ازان

ff. 199. ll. 14. S. 9.7×5.6 ; $6.8 \times 3.2^{\circ}$ / 24.8×14.2 ; 17.4×8.1 cms.

Written in good nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Gold sprinkled spacing for text. Gold and coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2735

F. I. 32.

Another copy of the same containing bābs 6 to 20, defective in the beginning and in between at many places.

Beginning : abruptly.

Ending : as usual.

ff. 437. (ff. 1-16, 23, 24, 341, 348, 356, 357, 380-388, in all 31 folios missing leaving 406). ll. 12. S. $9.2 \times 5.4^{\circ}$ / 23.5×14.9 cms.

Written in clear nasta'liq. An early 13th cent. copy.

2730

F. I. 30.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 153. ll. 15. S. $8.1 \times 4.8''/20.8 \times 12.3$ cms.

Written in ordinary nasta'liq. A middle 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Poor condition. Preserved in a portfolio.

2731

F. I. 25.

Another copy of the same, with marginal glosses by Shamsu'ddin Muḥammad better known as Ibn-Khātūn a'l-'Āmilī (d. 1059/1649).

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. iii+277+1. ll. 12. S. $12.6 \times 7.6''/32.2 \times 19.4$ cms.

Written in clear naskh. A middle 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2732

F. I. 26.

Another copy of the same, with marginal glosses as in preceding copy.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 206. ll. 12. S. $12.1 \times 7.4''/30.9 \times 18.9$ cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2727

F. I. 29.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 210. ll. 2. S. $6.1 \times 4.3''/15.6 \times 10.9$ cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2728

F. I. 24.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 207. ll. 12. S. 8.3×5.6 ; $5.5 \times 3.4''/21.3 \times 14.2$; 14.1×8.6 cms.

Written in clear nasta'liq, by Muḥammad Husain, on 14 Rabī' II, 1126/18 April, 1714.

Ordinary 'unwān. Coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be re-bound.

2729

F. I. 28.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 248. ll. 13. S. $6.4 \times 3.7''/16.4 \times 9.4$ cms.

Written in clear nasta'liq. A middle 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes, once repaired. Fair condition. Bound.

2725

F. 1. 22.

Another copy of the same, with two *ghazals* etc., in praise of Ḥaḍrat 'Alī in between on ff. 173-175.

This copy is defective in bāb 10.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly. چهار کنیز خواستن بنده، و نکاح کردن کافر

ff. 254+1, ll. 15. S. $9.0 \times 5.0^*/23.0 \times 12.9$ cms.

Written in good *naskh* (first five bābs), in ordinary *nasta'liq* (the rest), the former by Muḥammad Taqī b. *Ghiyāth*u'ddīn Muḥammad a'l-Quraishī a'l-Jūnābādī a'l-Khurāsānī, on 29 Ramaḍān, 1094/11 September, 1683, at Kalyān in the Deccan.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals: 1. Mīr Ibrāhīm 'Alī Khān, 1220. میر ابراهیم علی خان - ۱۲۲۰

2. Sayyid Ḥusain Mirza Khān, 1220. سید حسین مرزا خان - ۱۲۲۰

2726

F. 1. 23.

Another copy of the same containing first five bābs (Panj Bāb).

Beginning : as usual.

Ending : بعضی برآند که درین وقت کل مبلغ که وجه اجاره است
بوارث او دهند - تمت

ff. 205, ll. 9 and 14 on margins. S. 4.3×2.5 ; 3.9×1.7 ; $2.6 \times 1.1^*/11.0 \times 6.4$; 9.8×4.3 ; 6.8×2.7 cms.

Written in clear *nasta'liq*, on 6 Dhīqa'dah 1057/ 23 November, 1647.

Good 'unwān, and gold decoration on first two pages. Gold ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Fair condition. Bound.

2723

F. I. 21.

Another copy of the same, with several couplets in praise of Ḥadrat 'All at the end (ff. 211-228v).

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 210+18. ll. 23. S. 10.5×5.8 ; 7.9×4.3 "/ 26.9×14.8 ; 20.2×11.0 cms.

Written in clear nasta'liq, by 'Izzatu'llah, on 27 Dhīḥajja 1148/27 April, 1736, at Jahānābād.

Coloured paper. Ordinary 'unwāns on ff. Iv and 69v. Coloured ruled borders. Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

2724

F. I. 20.

Another copy of the same, in two different hands.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

First 5 bābs: ff. 153. ll. 15. S. 10.4×6.6 ; 6.2×2.8 "/ 26.7×16.7 ; 16.0×7.3 cms.

The rest ff. 182, in all ff. 335. ll. 18 or 19. S. 10.4×6.6 "/ 26.7×16.7 cms.

Written in good naskh and ordinary nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Gold ruled borders, for first 5 bābs. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals: 1. Muḥtaram Khān, 1149.

محرمان - ۱۱۴۹

2. Mu'nu'l-Mulk, 1205.

معين الملك - ۱۲۰۵

With their autographs.

Written in clear nash. A late 11th cent. copy.

Good 'unwāns on ff. Iv and I88v. Gold and coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be re-bound.

Seal: Muḥammad Ḥusain 1099. and his autograph

محمد حسين مرید عالمگیر بادشاہ - ۱۰۹۹

Ref: E.I.O. 2581; Iv ASB III2-III3; IvC 1013-1014; Bk. 1253-1256.

2722

F. I. 19.

Another complete copy of the same in two different hands. First five bābs end on f. 95v followed by extracts from Ṣaidiyah, on ff. 96-99v, and table of contents of bābs 6-20, on ff. 100v-101, followed by the work on ff. 102v-306.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 306. ll. 19 or 25 diagonal. S. $9.9 \times 5.7^{\circ} / 25.3 \times 14.5$ cms.

First five bābs written in ordinary nasta'liq, by Muḥammad Ḥusain b. Mullā 'Alī Shīrāzī, on 20 Shawwāl 1053/ 22 December, 1643; and the rest by a different hand, in 1068/1658, at Muḥammadnūr Fort.

Rubrications. Red ruled borders from f. 102v to end. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be re-bound.

Endowment note by Muḥammad Bāqir b. Shaikh Muḥammad 'Alī.

Seals of: Muḥammad 'Alī Shaikh Awais, 1067.

محمد علی شیخ اویس - ۱۰۶۷

Shaikh Muḥammad 'Alī.

شیخ محمد علی -

Muḥammad Bāqir b. Shaikh Muḥammad 'Alī.

محمد باقر بن شیخ محمد علی -

2720

Ad. 54.

Another copy of the same, defective by two folios at the end.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly.

و نحر یص او بر ملاحظه معانی آنچه گوید

ff. 164. ll. 11 to 22. S. $7.8 \times 4.9^{\circ}/20.0 \times 12.3$ cms.

Written in good naskh and nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

Seals : Ghulām Qanbar, 1161.

نصر من الله و فتح قریب

من غلام قنبرام - ۱۱۶۱

2721

F.I. 18.

جامع عباسی

JĀMA'-E-'ABBĀSĪ

The well-known Shiite exposition of fiqh compiled by Bahāu'ddīn Muḥammad a'l-'Āmilī (d. 1031/1622) dedicated to Shāh 'Abbās I, the Ṣafawide (995-1037/1587-1628).

The author died having left the work incomplete and the first volume containing bābs 1 to 5 was revised and edited by 'Izzu'ddīn Muḥammad b. Abi'l-Ḥasan b. Muḥammad Ismā'il a'l-Ḥusainī a'l-Mūsawī, the second half of the work in 15 bābs were written by Nizām b. Ḥusain Sawjī by the commands of the Shāh and completed in 1032/1622.

Beginning : الحمد لله ... و بعد ، چون توجه خاطر ملکوت ناظر اشرف
اقدس - النخ

Ending : همیشه مقهور و منکوب گرداناد بحق اله و آله الامجاد ...
على من هاجر ألف صلاة و ألف نحية

ff. 321. ll. 19. S. 8.7×5.1 ; $6.0 \times 3.3^{\circ}/22.2 \times 13.0$; 15.2×8.4 cms.

ff. 282. ll. 19. S. $9.6 \times 5.4''/24.4 \times 13.8$ cms.

Written in clear naskh. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. worm holes. Fair condition.
Not bound.

2718

Ad. 142.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 394. ll. 17. S. $10.0 \times 6.3''/25.8 \times 16.2$ cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

2719

Ad. 53.

ترجمه مفتاح الفلاح

TARJAMA-E-MIFTĀHU'L-FALĀH

Another Persian paraphrase of the same by Jamālu'ddīn Muḥammad
b. Ḥusain Khwansārī (f. 2v).

The work is divided into six bābs.

Beginning : مفتاح فلاح دنیا و عقبی و مقدمه نجاح آخرت و اولی ، حمد
و ثنای بارگاه - الخ

Ending : یعنی بعد از عدول از ان مکر گمراهی - مدظله العالی

ff. 124+4. ll. 20. S. $8.1 \times 5.7''/20.7 \times 14.5$ cms.

Written in good naskh and nasta'liq. A middle 13th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Not bound.

Ref: Bk. 1430-1431.

2714

F. 32.

Another copy of the same in which the name is given as Qutb Shāh.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 82. ll. 15. S. $7.7 \times 4.8''/19.6 \times 12.1$ cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Murtaḍā Ḥusainī, on 5 Rabi' II, 1248/1 September, 1832.

European paper. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2715

F. 29.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 15. ll. 15. S. $9.5 \times 5.7''/24.0 \times 14.5$ cms.

Written in clear nasta'liq, by Sayyid Bahādur 'Alī Naqwī, on 12 Rabi' I, 1263/28 February, 1847, at Daryāpūr.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2716

M

on

Bā. I. 15.

ترجمة فقه الرضوى

TARJAMA-E-FIQHU'R-RIDWI

Bā. A Persian paraphrase of the Arabic work on fiqh ascribed to the eighth Shiite Imām, 'Alī b. Mūsī Riḍā (d. 203/818), and translated by the commands of Sulṭān Muḥammad Qutb Shāh of Golconda, (1020-1035/1606 to 1635), by Muḥammad, better known as Qutb Shāh Qāḍī, which he completed on 22 Dhīqa'da, 1029/9 October, 1620, under the supervision Muḥammad Mu'min a'l-Astrābādī.

Bāb IV, on animals, on f. 8v.

باب چهارم در ذکر حیوانات

Bāb V, on hunting by spear, sword, arrow, etc., on f. 13v.

باب پنجم در ذکر صید کردن به نیزه و شمشیر و نیز و باقی آلات

Bāb VI, on fishing, on f. 18.

باب ششم در ذکر صید کردن ماهی

Bāb VII, on how the hunters work, on f. 20v.

باب هفتم در بیان آنکه صید و شکاری بچه نوع ملک صیاد میگردد

Bāb VIII, on rules of slaughtering lawful and forbidden on f. 24.

باب هشتم در مسائل ذبح

Bāb IX, on animals, on f. 30.

باب نهم در بیان حلت و حرمت حیوانات

Bāb X, on rules governing the remains of edible touched by animals on f. 35.

باب دهم در بیان سوز و عروق و لعاب دهن حیوانات

Khātima, on names and rules governing animals. The names arranged alphabetically, on f. 36.

خاتمه در بیان اسامی و احکام حلت و حرمت و کراهیت حیوانات

Beginning :

شکر و سپاس بی قیاس و شکر عبادت

اساس بادشهی را سزاواراست که - الخ

Ending :

و خون یربوع بر انجا طلا نمایند دیگر

موی بر نیاید - والسلام والا کرام

ff. 77. ll. 17. S. 10.1 × 5.6; 7.3 × 3.7²/25.5 × 14.1; 18.4 × 9.2 cms.

Written in ordinary nast'liq, for Aminu'l-Mulk (brother of Muniru'l-Mulk), on 9 Sha'bān, 1231/5 July, 1816.

Coloured ruled borders. Rubrications. Worm holes. Fair condition. Not bound.

Ref: Bk. 1251.

The work is divided into three bābs and a Khātima.

Beginning:

حمد و سپاس بادشاهی را بر مرغ دلها - الخ

Ending:

برای حفظ نفس برو واجب می شود

fl. 21. ll. 13 to 23. S. 12.3 × 8.0" / 31.6 × 20.6 cms.

Written in careless script, on 12 Šafar, 1252/18 May, 1837.

Rubrications. Worm holes. Paper crumbling to pieces. Poor condition. Bound.

2713

F. 31.

صیدیہ

ŞAIDIYAH

A treatise on shikār based on fiqh compiled by Ḥusainu'l-Ḥusainī a't-Ṭabasī, surnamed Šadr-e-Jahān, who duly compared his work with Shāfa'ī and Ḥanafī laws. He complains however that he could not consult works on Mālikī laws.

This work is dedicated to Ibrāhīm Quṭb Shāh (957-989/1550-1581) which does not appear to be in order as the propagation of Shiite doctrine by Shāh Ṭāhir Dakanī took place during the reign of Muḥammad Qulī Quṭb Shāh (989-1020/1581-1611). Hence this dedication appears to be fictitious. The name of Ibrāhīm Quṭb Shāh is not found in No : 2714.

This work is divided into a muqaddima, ten bābs and a khātima.

Muqaddima, in two faṣls, مقدمه در بیان لفظ و تحقیق و معنی کلمه صید

on the work Šaid, on f. 3.

Bāb I, on rules for hunters and religious slaughterers, on f. 4.

باب اول در بیان شروط صیاد و ذابح

Bāb II, on instruments used by hunters and slaughterers, on f. 5v.

باب دوم در بیان آلات اصطیاد و ذبح

Bāb III, on what to recite while slaughtering, on f. 7.

باب سیوم در ذکر تسمیه

Beginning : در بیان سنن آدم روایت است از حضرت امیر المؤمنین - الخ

Ending : جواب ثمره شریعت وفا و ثمره طریقت فنا و ثمر حقیقت بقا است

6. Uṣūl-e-Dīn, on ff. 80v-83.

A tract on the five principles of Shiite faith.

Beginning : الحمد لله ... بد آنکه اصول دین پنج است - الخ

Ending : بقیه نمی باید نشستن

7. Jawāhir-nāma, on ff. 62-64; and on margins of ff. 64v-66.

A tract on precious stones, pearls and other minerals.

The work is divided into twelve bābs :-

1. on diamonds; 2. on sapphire; 3. on ruby; 4. on emerald;
5. on pearl; 6. on turquoise; 7. on bezoar stone; 8. on white amber;
9. on lapis lazuli; 10. on coral; 11. on carnelian; 12. on jade.

Beginning : آغاز نسخه جواهر نامه بر تبیان، سپاس ایزد تعالی بمجموعه
آفرینش جزو کل امتیاز قدرت اوست - الخ

Ending : هر که بشم دارد با خود از علت این باشد و رنگ او مدام
مرح اود و بهی و برص در امان باشد ضعف دل را مفید
باشد - تمت

ff. 83. ll. 15. S. 8.1 × 5.5; 5.4 × 3.2ⁿ/20.4 × 13.8; 13.6 × 8.2 cms.

Written in good naskh, by Ibrāhīm a'l-Makkī b. 'Abdu'r-Raḥmān a'sh-Shīrāzī, in Rajab, 1001/April, 1593, at Mecca.

Good 'unwān. Gold blue ruled borders. Headings in blue or red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2712

F. I. 59.

صیدیة طہا سب صفوی

ṢAIDIYA-E-TAHMĀSP ṢAFAWI

A treatise compiled by one, Da'i for Shāh Ṭahmāsp Ṣafawī, (930-984/1524-1576). It deals with the legality of hunting, etc., and the meat of such animals.

Aq. 141/2.

مجموعه رسائل

(MAJMŪ'A'-E-RASĀ'IL)

This copy contains the following works :-

1. Si wa Haft Bāb dar Bayān-e-Wājibāt, ff. Iv-62.

Another copy of the same.

Beginning : الحمد لله... که این رساله ایست مختصر در بیان واجبات
نماز و آنچه پیوسته - الخ

Ending : as usual.

2. 'Aqā'id-e-Dīniyah, on ff. 64v-73.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : بوقوع آن خبر دهد وقوع آن واجب بود

3. Risāla dar Bayān Tāj wa Arkān-e-Mashāi'kh, on ff. 73v-77.

A tract on the interpretation of Tāj (Crown).

Beginning : أما بعد، بدانکه امام معظم و هادی مکرّم
و مرشد خلائق حضرت امام محمد باقر - الخ

Ending : قرآن وقف است و الله اعلم بالصواب

4. Ṣaigh-e-Nikāḥ, on ff. 77-78.

Arabic sermon for Shiite marriage, with a few lines in Persian.

Beginning : الحمد لله نحمده و نستعينه - الخ

Ending : و ملتزم شدم که این مبلغ بتورسانم

5. (Risāla-e-'Aqā'id), on ff. 78-80.

A tract on Shiite beliefs.

The work begins without any preface, and with Kitābu't-Tahārat. This copy is defective at the end.

Beginning:

کتاب الطهارة تقدير کلام چنین است ای هذا
کتاب الطهارة - الخ

Ending: abruptly.

واگر شرط کند در عقد طعام دادن او را
بواسطه حزب او دور

ff. 298, ll. 18 to 21. S. 11.9 × 7.6²/30.4 × 19.4 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. An early 13th cent. copy.

European paper. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

Ref: K. H. 1844.

2710

Aq. 23/2. سی و هفت باب در بیان واجبات

SI WA HAFT BĀB DAR BAYĀN-E-WĀJIBĀT

A short treatise of fiqh compiled by Ḍiyāu'ddīn b. Saḍīd a'l-Jurjānī.

The work is divided into a muqaddima which is treated as a separate work and given the title of 'Aqā'id-e-Dīniyah, on ff. Iv-5v, followed by 37 bābs on usual topics.

Beginning:

الحمد لله... أما بعد، چنین گوید فقیر حقیر جانی ضیاء الدین
بن سدید الجرجانی - الخ

Ending:

طعام دادن هر مسکینی را یک مد - والله اعلم بالصواب

ff. 37, ll. 21. S. 8.2 × 5.2²/20.8 × 13.2 cms.

Written in clear nasta'liq, on 1 Rajab, 989/1 August, 1581, at Bijāpūr.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Persian paraphrase of a treatise pertaining to namāz, compiled in 917/1511, by 'Alī b. 'Abdu'l-'Alī a'l-Kakrī (a'l-Kurkī). (d. 945/1538), translated by Abu'l-Ma'ālī b. Badru'ddīn a'l-Ḥasan a'l-Ḥusainī.

The work is divided into a muqaddima, a few bābs and a Khātima.

Beginning : الحمد لله ... چون رساله مشهور رساله جعفریه که
از جمله تصانیف - الشيخ

Ending : رب اجعل سعینا مشکورا وعملنا مبرورا - والسلام و الإكرام

2. Alfīyah Fārsī (الفیه فارسی) on ff. 36v-48v.

Another Persian paraphrase of a similar work by Muḥammad b. Makki, (d. 786/1384). The translator's name is not given.

The work is divided into a muqaddima, three faṣls and a Khātima.

Beginning : الحمد لله ... اما بعد این رساله است
فارسی الفیه که در بیان واجبات نماز - الشيخ

Ending : قضا در خارج وقت می باشد و ایشان را وقت معین نیست - والسلام

ff. 48. ll. 17 S. 10.0 × 5.9"/25.6 × 15.2 cms.

Written in ordinary nasta'liq, on 2 Rajab, 1094/17 June, 1683.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

Ref: 1. Bk. 1250.

2. K. H. 276.

2709

F.I. 58. شرح شرائع الإسلام

SHARḤ-E-SHARĀ'U'L-ISLĀM

Persian paraphrase of, and commentary on Sharā'ī'u'l-Islām, the Arabic treatise on fiqh of Najmu'ddīn a'l-Ḥillī. (d. 676/1278), compiled by Zainu'ddīn 'Alī, surnamed Shahīd-e-Thānī, (d. 966/1559).

2707

ii. SHIITES

F.1. 66.

نیل المرام

NAILU'L-MARĀM

A treatise on fiqh compiled by Raḥīm b. Ma'rūf.

This work is of the period of Shāh Ismā'il Ṣafawī, (906-930/1500-1524), who is praised as the liberator of Khurāsān from the yoke of the Sunnites:-

Beginning:

حمد وافر و ثناء متکثر حضرت خالق را که - الخ

Ending:

بر آدمی ذکور و آنات واقع مشود

ff. 385. ll. 11. S. 7.4×5.4"/19.0×14.0 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, on 26 Sha'bān, 1097/7 August, 1686.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals:- 1. Muḥammad Mīr.

یا محمد میر

2. 'Alī Naqī.

یا امام علی النقی

3. Yā Ṣāhibu'z-Zamān Adriknī.

یا صاحب الزمان ادرکنی

4. Ṣafī Qulī.

صفی قلی

5. Ṣafī Qulī.

صفی قلی زجان شده غلام شاه صفی -

Ref: K. H. 3370.

2708

F. 14.

رسائل فقه

RASĀ'IL-E-FIQH

This copy contains two works:-

1. Tarjumatu'l-Ja'fariyah (ترجمة الجعفریه) on ff. Iv-35v.

Beginning :

جدول در بیان احکام حلت و حرمت و کراهت
حیوانات - الخ

Ending :

باقی همگی مکروه است - حرام

ff. 7. ll. 7 Columns S. 7.9×6.7 ; 5.9×4.5 "/ 19.8×14.5 ; 15.0×11.3 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy.

European paper. Red ruled borders. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2706

F. 56.

قواعد نماز و وضو

QAWĀ'ID-E-NAMĀZ WA WAḌŪ

A short treatise on ablution and prayers, by an anonymous person.

Beginning :

ترتیب : وضو اولاً پنجه های هر دودست
سه مرتبه بشوید - الخ

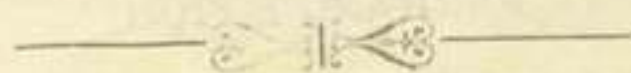
Ending :

ربنا لك الحمد گفتن و باقی همه مستحبات و آداب است

ff. 13. ll. 8. S. 8.0×5.7 "/ 20.3×14.4 cms.

Written in good nasta'liq, and naskh. A late 13th cent. copy.

European bluish grey paper. Rubrications. Worm holes. Good condition. Not bound.



ii. 55-5=50. ll. 17 S. 7.4×3.8 ; 5.0×2.0 "/ 18.7×9.4 ; 12.6×5.0 cms.

Written in clear naskh. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Red ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Poor condition. Preserved in a portfolio.

2704

F. 36.

رساله در فقه

(RISĀLA DAR FIQH)

A short treatise explaining the couplets embodying 130 points (مسئله) and three other couplets each letter of which throws light on important points worth committing to memory for daily routine of a devout Muslim.

The work is preceded by surās ix to cxiv of the Glorious Qur'ān.

Beginning :

الحمد لله . . . بدان تا نیکبخت کند ترا خدای تعالی که

دانستن فرض بر عاقل و بالغ - البخ

Ending :

آمین گفتن خفیه بعد از تمامی فاتحه

ff. ii+3. ll. 9. S. 8.1×4.6 "/ 20.3×11.5 cms.

Written in clear naskh. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2705

F. 53.

فرهنگ فقه

FARHANG-E-FIQH

A tabulated list of animals in Arabic with their meanings in Persian with four columns for the four schools of Sunnites-Hanafī, Shāfi'i, Mālikī and Hanbalī, giving against each animal whether it is "Ḥalāl" permissible or "Ḥarām" forbidden. Notes on some, where there is difference of opinion.

2702

مسائل فقه

Fat. 7.

MASĀIL-E-FIQH

A collection of notes on fiqh, compiled by person whose name is not given. At the end the compiler states that he has collected them for his sister's son Shaikh Aḥmad b. Sulaimān.

Beginning: الحمد لله . . . بدانکه نیک بخت کند ترا خدای تعالی که - الشيخ

Ending: این قدر بجهت عمل کافیست - و الله الموفق و المعین الوافی

ff. 107. ll. 13. S. 9.8 × 7.9; 6.2 × 4.1"/24.6 × 19.9; 15.8 × 10.3 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy.

European paper. Rubrications. Red ruled borders. Dampness stains. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2703

(رساله در فقه)

F. 35.

(RISĀLA DAR FIQH)

A short treatise by an anonymous person, defective in the beginning by three folios. From original pagination ff. 6 and 7 are also missing. The work is divided into 5 bābs. Each bāb sub-divided into faṣls.

Bāb 1, missing.

Bāb 2, on abstaining from sin, on f. 10v. باب دوم در اجتناب از گناه

Bāb 3, on divine worship, on f. 13. باب سوم در عبادات

Bāb 4, on detestable acts on f. 39v. باب چهارم در بیان محظورات و مکروهات

Bāb 5, on good manners on f. 41v. باب پنجم در بیان آداب و اخلاق

Beginning: abruptly. سوال در صفت ایمان یعنی امنیت بالله - الشيخ

Ending: سبحان ربك رب العزة عما يصفون . . . رب العالمين

Beginning: سپاس فراوان و ثنای بی پایان شایان مالک الملکی که
نظام عالم را بعدل - السخ

Ending: خدا و رسول و مؤمنان را و صلی الله علی خیر خلقه محمد
و آله و صحبه و سلم

ff. i+47. ll. 9. S. $7.7 \times 5.8^{\circ}/19.5 \times 14.6$ cms.

Written in ordinary nasta'liq, on 26 Rabi' II, 1248/25 August, 1867.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

Autograph copy presented by the author to the Collector's grandfather.

2701

F. 26. *خمسه محبوب شاهي*

KHAMSA-E-MAHBUB SHĀHI

A short treatise on the five principles of Islam, compiled in 1290/1873, by Shāh 'Abdu'llah Mashsha Qādirī. It was written for the young Nizām, Mīr Maḥbūb 'Alī Khān Āṣif Jāh VI (1285-1329/1869-1911), when he was seven years old, and is dedicated to the Nizām.

Beginning: ابتدای حمد معبود و علام بنای اسلام است و اختتام
نعت سرور انام - السخ

Ending: سال تالیفش چه خوش آمد ز روی یادگار -
خمسه محبوب شاه والی ملک دکن

ff. 20. ll. 13. S. 13.1×8.2 ; $9.3 \times 4.8^{\circ}/33.2 \times 20.2$; 23.6×12.1 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 13th cent. copy.

European paper. Gaudy 'unwān. Coloured ruled borders. Rubrications. Good condition. Bound.

Illustrated with calligraphic panels and drawings.

ff. 78. ll. 11. S. 9.1×6.3"/22.9×15.9 cms.

Written in clear nasta'liq' on Rabi' 1281/ August, 1864, at Hyderābād.

Coloured paper. Headings in blue. A few worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

A work of local interest in which the collector's ancestor is highly praised.

2700

F. 69.

منهاج العدالة

MINHĀJU'L-'ADĀLAT

A short treatise pertaining to judicial matters in the light of fiqh, compiled by Muḥammad Sa'id b. Qāḍī'l-Mulk Badru'd-Daūlah Ṣibghat-u'llah a'l-Madrāsī.

The work was dedicated to Muḥtāru'l-Mulk Sir Sālār Jung the then Prime Minister of Hyderābād and grandfather of the Collector.

The work is divided into a muqaddima, five bābs and a Khātimah as under :-

Muqaddima, on justice, on f. 3.

مقدمه بر عدل و انصاف

Bāb I, on major crimes, on ff. 11.

باب اول در بیان حدود

Bāb II, on reprimands, on f. 22v.

باب دوم در بیان تعزیر

Bāb III, on forbidden acts, on f. 28v.

باب سوم در جنایات

Bāb IV, on compensation for wrong done, on f. 34.

باب چهارم در دیت

Bāb V, on those who pay the compensation, on f. 40.

باب پنجم در عاقله

Khātima on correct application of laws and award of justice illustrated by several anecdotes, on f. 41v.

F. 39/1. رسالة پنج کلمه و ادعیات ضروری

RISĀLA-E-PANJ KALIMA WA-AD'İYĀT-E-ḌURŪRĪ

A short treatise on the five principles of Islam and other short prayers compiled by Allah Wāle Ṣāhib.

Beginning : الحمد لله ... أما بعد ، میگوید خبر خواہ مسلمین کہ درین زمانہ
در میان پنج کلمہ - النسخ

Ending : چنانچہ بندہ حق گفته است - کذا فی حصن الحصین

ff. 20. ll. 11. S. 8.9×6.0"/22.4×15.1 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by Bibahā Jung Bahādur, on 21 Shawwāl 1265/9 September, 1849, at Zafarābād.

Rubrications. Dampness stains. Fair condition. Not Bound.

F. 52. فرائض الأعظمیه

FARĀ'IDU'L-A'ẒAMĪYAH

A treatise on laws of inheritances compiled by A'ẓamu'ddīn, during the reign of Afḍalu'd-Daulah Āṣif Jāh V (1273=1285/1857-1869), the Nizām of Hyderābād, when Sir Sālār Jung Mukhtārū'l-Mulk was the Prime Minister and Mukarramu'd-Daulah, Minister-in-charge of Judicial Department.

Arabic preface ends on f. 4v and the work begins from onwards in Persian.

Beginning : الحمد لو ارث الأرض والسماء ... أما بعد، فيقول العبد
المعتصم بحبل الله المتين - النسخ

Ending : و بعض ازین اموات از بعضی وارث نمی شوند و همین
است مذهب مختار ... و علی آله و اصحابه اهل الشرف و الکرامه

Faṣl 2, on the general rule for all animals, on f. 12v.

Khātima, on laws governing sacrifice and hunting (ذبح وصيد) on f. 15v.

Beginning :

الحمد لله الذى خلق الحيوانات... أما بعد ،
این رساله لطیفه مشتمل بر بیان احکام حیات و حرمت
و کراهیت حیوانات - السخ

Ending :

حرفه و پیشه خود گردانیدن نیز مکروه گفته اند

ff. 17 ll. 17. S. 8.2×5.5 ; 6.6×4.1 20.6 \times 13.8; 16.8 \times 10.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Rubrications. Ruled borders. Dampness stains. Good condition.
Bound.

Printed in Madras in 1240/1825.

2697

F, 73.

احکام الصلاة

AḤKĀMU'Ṣ-ṢALĀT

A treatise on the elementary principles of Islamic faith and namāz composed by an anonymous author in the form of questions and answers.

Beginning :

حمد متواتر و ثناء متکثر من حضرت بی نیازی مرا که - السخ

Ending :

و بعد زان فاتحه دهد و دعای مغفرت میت بخواند

ff. 47. ll. 11. S. 7.8×6.0 19.8 \times 15.2 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, on 22 Muḥarram, 1247/3 July, 1831.

Rubrications. Dampness stains. Fair condition. Bound.

Ref: Iv ASB 1094.

2695

فرائض ارتضائية

F. 51.

FARĀ'ID-E-IRTADĀ'İYAH

A popular treatise on Muslim laws of inheritance and partition compiled in 1226/1811, by Muḥammad Irtidā 'Alī Khān Bahādur, Muftī of Madras Presidency.

The work is divided into a muqaddima, a few faṣls and a khātima. This copy is made from a printed copy and contains a foreword by Ḥasan 'Alī a'l-Māḥill on pp. I and II. Marginal notes.

Beginning : فرض عين است حمد ايزد ياك + كه نصيبى ز علم داد بخاك

... اما بعد اين رساله است موسومه بفرائض ارتضيه - الخ

Ending : و اكر ابتدا از دو دينار بود جارى است

كالا ينفى على المتدرب فى على الحساب ... والله تعالى اعلم بالصواب

ff. ii+30. ll. 17 S. 10.0×7.0"/27.2×7.6. cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq. A late 13th cent. copy.

2666

احكام الحيوان

F. 2.

AḤKĀMU'L-ḤAIWĀN

A short treatise on all animals that are lawful or forbidden for eating by the Muslims, based on all the four schools of the Sunnites, by Faṣīḥuddin, Qāḍī of Nellore.

The work is divided into a muqaddima, two bābs, two faṣls and a khātima. Muqaddima, on the definition of animals (حيوان) on f. Iv.

Bāb. 1, on all animals of the land, on f. 2

Bāb 2, on all animals of the sea, on f. 19v.

Fāṣl 1, on laws relating to all reptiles and (زواحف وحشرات الارض) insects on f. 11v.

The author was the descendant of Shaikh Bahā'u'ddīn Najam who is alleged to be the founder of the city of Burhānpur, and claimed descent from the second Orthodox Khalīf, Haḍrat 'Umar. He had already compiled a bigger work called Munabbihāt-e Muḥammad Shāhī in 1137/1784.

This work is based on the holy Qur'ān, the Traditions, and standard works of fiqh. It is divided into two qisms (parts).

Qism 1, on beliefs, on f. 3v. قسم اول در بیان مسائل اعتقادیہ

Qism 2, on religious orders, on f. 7v. قسم دوم در بیان احکام شرعیہ فرعیہ

List of contents in the beginning.

Beginning : الحمد لله الذى علم أبانا آدم الأسماء . . .

قبل ازین در سنه الف و مائه و سبع و ثلاثین - المنع

Ending : بخطا کرده کافر شود . . . و در جمله خطایاهمین حکم است

ff. iv+85, ll. 11. S. 8.2 × 5.9"/20.7 × 14.9 cms.

Written in ordinary nasta'liq, on 21 Şafar, 1259/23 March 1843, at Aḥmadnagar.

European paper. Rubrications. Dampness stains. Fair condition Bound.

2694

F. 5. أساس المصلى

ASĀSU'L-MUṢALLĪ

A short treatise on prayers compiled by Badar Rukn Sanbādī.

Beginning : الحمد لله . . . بدان - أسعدك الله تعالى

فی الدارین - کہ در فتاویٰ کبری - المنع

Ending : و چون باتیمم نمازی گذارد و آب یافت تیمم دور شود

ff. 15, ll. 11. S. 8.3 × 5.7"/21.1 × 14.3. cms.

Written in bad script, on 21 Dhīqa'da 1165/19 September, 1752.

Dampness stains. Inter margins repaired. Fair condition. Preserved in a portfolio.

Beginning :

الحمد لله الذي جعل الصلاة وسيلة إلى النجاة . . .

بسم الله الرحمن الرحيم - الخ

Ending :

چهار بابان حقیقه است سرکین و غیره

ff. 268. ll. 16 or 17. S. 9.4×5.5 "/ 23.8×14.0 cms.

Written in ordinary script. A late 12th cent. copy.

A few folios at both ends damaged but subsequently repaired.
Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals: Munfrū'l-Mulk, 1206.

منیر الملک - ۱۲۰۶

Ref: E.I.O. 2608; Bk. 1230.

2692

F. 18.

Another copy of the same, older but defective in the beginning by a folio with notes at the end.

Beginning : abruptly.

شود و اگر از عهد نماز بیرون نیاید

بعذاب دوزخ گرفتار شود - الخ

Ending :

اما نزد يك امام شافعی رحمه الله آب منی

یاك است خواه ترخواه خشك . . . برحمتك یا ارحم الراحمین

ff. 185+5. ll. 13 to 16 S. 7.0×4.9 "/ 17.7×12.2 cms.

Written in good naskh. An early 11th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.

Preserved in a portfolio.

2693

F. 61.

مرآة المسائل محمد شاهي

MIRĀTU'L-MASĀ'IL-E-MUḤAMMAD SHĀHĪ

A collection of complicated and difficult points (مسائل) compiled by the orders of the Emperor, Muḥammad Shāh by 'Izzat Khān.

2689

F. 72/1.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 36. ll. 15. S. $9.0 \times 5.0''/23.0 \times 12.6$ cms.

Written in clear shikast-nasta'liq. A middle 13th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2690

F. 62.

مرآة المصلي

MIRĀTU'L-MUṢALLĪ

A short treatise on elementary rules of fiqh in 20 bābs, compiled by an anonymous person.

Beginning :

الحمد لله ... بدان أيدك الله تعالى في الدارين - كه - الخ

Ending :

غير اينها همه - منت است و ادب حج است -
الحمد لله أولا و آخر . . . مجد و آله اجمعين

ff. 14. ll. 9 to 11. S. 7.5×4.6 ; $5.8 \times 3.5''/18.9 \times 11.6$; 14.9×8.9 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Coloured ruled borders. Dampness stains. Fair condition. Binding damaged.

Ref: Iv ASB 1043-1045; Bk. 1243.

2691

F. 17

ترغيب الصلاة

TARGHĪBU'Ṣ-ṢALĀT

A treatise on prayers.

The work is based on traditions and famous works on fiqh. It is divided into 66 faṣls.

2687

F. 21.

تيسير الأحكام

TAISIRU'L-AḤKĀM

A short treatise on fiqh based on the Glorious Qur'ān and the Traditions, compiled by Shihāb Shams 'Umar. The work was written for Ashraf Khān (d. 1097/1686) who was the son of Islām Khān Rūmī.

It is divided into four bābs.

Beginning :

حمدوافرو نهای متکثر مر حضرت

صمدیت ایدو ابلال جل جلاله - النخ

Ending :

محال ارا بنسبیح و تهایل ... ختم کند مجلس

بخیر باشد اء - بحانك اللهم ... رب العالمین

ff. 136. ll. 9. S. 8.0 × 4.6"/20.2 × 11.6 cms.

Written in clear naskh. A late 11th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition
Not bound.

Ref: E.I.O. 2595 and 2596.

2688

F. 20.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 56. ll. 11. S. 8.5 × 4.9 : 5.6 × 3.0"/21.5 × 12.4 : 14.1 × 7.5 cms.

Written in clear shikast-nasta'liq, by Shaikh Waliu'llah surnamed Muḥammad Yūsuf and Shaikh 'Azmatu'llah, on 13 Ramaḍān 1171/21 May, 1758.

Red ruled borders. Headings in red. Dampness stains. Worm holes. Poor condition. Not bound.

Seal: Shaikh 'Azmatu'llah, 1171.

شیخ عظمت الله - ۱۱۷۱

ff: 132. ll. 13. S. $7.4 \times 4.5^{\circ}$ / 18.6×11.2 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Allāh Bakhsh b. Dīndār Khān, on 13 Rabi' I, 1155/7 May, 1742.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Poor condition. Bound.

2686

رسائل فقہ

F. 75.

RASĀ'IL-E-FIQH

This copy contains two works :

1. Risāla-e-Fiqh (ff. 1-8).

A collection of questions and answers, incomplete from the beginning. The compiler's name is not given.

Beginning : abruptly. باب دوم در بیان اجوبہ مسائل چہل و چہارم - الخ

Ending : و باز آن دیگر کشتی را آرد ، باز هر دو
بسر گذرند - و الله اعلم

2. Mushkilātu'l-Fiqh (ff. 8v-16v).

Another collection of questions and answers compiled by Ahmad b. Hamid surnamed Nizām. It deals with intricate points of fiqh and is divided into six bābs.

Beginning : الحمد لله ذي العزة و البقا... سوال اگر ترا
پر سند مر دی در صبح صادق - الخ

Ending : برین مجنون نمی آید زراع شرع تقریری
جواب این جهله را گفتند از تائید ربانی

ff. 16. ll. 22. S. $7.1 \times 4.7^{\circ}$ / 18.0×11.9 cms.

Written in clear nasta'liq, in Dhīḥajja, 1033/ September, 1624 at Burhānpūr.

Rubrications. Worm holes, repaired. Fair condition. Bound.

Seals: 1. 'Aṭā.

العطاء من الله تعالى

2. Muḥammad Umīd.

شفاعت ز محمد جو دارد امید

3. Shaikh Ismā'īl bin Shaikh Ilyās. شعیخ اسماعیل ابن شعیخ الیاس

Ref: EIO. 2587; IvASB. 1039; IvC. 358; Bk. 1234.

2684

F. 59.

مجموع سلطانی

MAJMU'-E-SULTĀNĪ

A collection of questions and answers on complicated of religious practices, compiled by an anonymous person. The work is arranged in 25 bābs.

Beginning:

الحمد لله . . . بدانکه این کتاب در بیان مسائل فقه در
عبادات - الحج

Ending:

قیمت خمر و خوک و مهر مثل - کذا فی الکای

ff. 166. ll. 11. S. 5.8×3.9"/14.8×9.8 cms.

Written in ordinary shikast-nasta'liq. A late 13th cent. copy.

European paper. Dampness stains. Worm holes. Headings in red upto f. 111, and thereafter spacings left blank. Fair condition. Preserved in a portfolio.

Ref: EIO. 2551; IvASB. 1046; IvC. 359.

2685

F. 38

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

Beginning :

الحمد لله الذى جعل البيت . . . اما بعد ،
فهذه عجالة في مناسك الحج من كل فحج - الخ

Ending :

هذا ما قصدنا من بيان المناسك لطالب الحج و العمرة
و الناسك ؛ و حرر ذلك و تم - الخ

ff. 60. ll. 15. S. 7.7×4.5 ; 5.4×2.6 "/ 19.4×11.2 ; 13.6×6.5 cms.

Written in good naskh, in Rabī' I, 1030/January, 1621.

Good 'unwān. Gold ruled borders. Rubrications. Dampness stains.
Worm holes repaired. Fair condition. Bound.

An autograph copy.

A rare work.

2683

F. 64.

مفتاح الصلاة

MIFTĀḤU'Ṣ-ṢALĀT

A treatise on the details of prayers and other observances connected therewith. According to the colophon the author Shaikh Fath Muḥammad Burhānpūrī b. Masīḥu'l-Auliā Shaikh 'Isa (Jundullah), completed this work in his own hand in Dhilḥajjā 1061/November, 1651.

Notes, and a few ghazals at the end: one by Maula Ghānī Qalandar, and the other by Khwāja Abū Ismā'il 'Abdu'llah.

Beginning :

الحمد لله . . . بدان قانیک بخت کند ترا حق تعالی که
دانستن فرض - الخ

Ending :

این قدر بجهت عمل کافی است - والله الموفق و المعین

ff. III. ll. 19. S. 7.8×4.2 "/ 19.6×10.6 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Shaikh Ismā'il b. Ilyās Qādirī, on 4 Rabī' I, 3 Julūs (Muḥammadshāhī) = 1134/12 December, 1721.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

ff. 213. ll. 17 to 19. S. $8.9 \times 5.1''/22.4 \times 12.9$ cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Shujā'at Khān, in 1098/1686.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

Seal: Qāḍī Muḥammad Qiyāmu'ddīn, 1161. قاضی محمد قیام الدین - ۱۱۶۱

Ref: E. I. O. 2572-2574; Iv ASB 1033, Bk. 1228.

2681

F. 58.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 199. ll. 17. S. $8.5 \times 5.4''/21.5 \times 13.7$ cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. A few folios at both ends by a later hand. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2682

F. 1. اثارة الشوق والغرام إلى حج بيت الله الحرام

ITHĀRATU'SH SHAUQ WA'L GHARĀM ILĀ ḤAJJĪ
BAIT'ILLAHIL-ḤARĀM

A treatise describing the rituals and observance laid down for pilgrims to the holy cities of Mecca and Madīna, compiled in 1030/1621, by Shāh Muḥammad a'l-Makkī.

The work is divided into a muqaddima, three bābs and a khatima. It was undertaken with a view to gain the patronage of Sulṭān Ibrāhīm 'Ādil Shāh II of Bijāpūr who was of Sunnite faith.

A few Persian verse at the end.

Fat. 5.

Another copy of the same, with notes and tables of the contents in the beginning.

Vol. I, ff. 1v-206.

Beginning: as usual.

Ending: کما فی الحیرة مگر سوار و هنگام دعا روی بقبله کند

Vol. II, ff. 206v-324.

Beginning: باب چهارم در بیان زکاة و فی الحديث: حصنوا اموالکم بالزکاة

Ending: as usual.

ff. vi+324. ll. 17. S. 10.4×5.9; 7.7×3.7"/26.3×15.0; 19.4×9.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Şiddiq b. Muḥammad Ibrāhīm b. Muḥammad Ḥasan a'ş-Şiddiqī on 3 Rabi' I, 1124/30 March, 1712, during the reign of Bahādur Shāh I, at the Port of Sūrat.

Red ruled borders. Rubrications. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

F. 57.

مجموعه خانی فی عزالمکانی

MAJMU'A-E-KHĀNĪ FĪ 'IZZI'L-MAKĀNĪ

A treatise on fiqh based on well-known works, compiled by Kamāl b. Karīm (probably Kamālū'ddīn Karīm Nāgūrī). The work is dedicated to 'Izzu'ddīn Ulugh Qutluḡ Khān (bin) Bahrām Khān whose (عزالملة والدين ابغ اعظم قتلغ خان معظم بهرام خان) identity could not be established.

Beginning: حمد و سپاس مر بادشاهی را که دار الملک دولت آباد

نام نهاده اوست - البیخ

Ending: ده یدم اون طعام درهر کانسه یک هزار یعنی یک ستمند

- والله اعلم بالصواب

Written in good shikast-nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals of Munīru'l-Mulk, 1206.

Autograph of Dargāh Qulī when he was Governor of Aurangābād, in 1171.

ایام نظامت خجسته بنیاد ... درگاه قلی

2678

Fat. 4.

فقه برهنه

FIQH-E-BARAHNA

A well-known treatise on Hanafite fiqh, compiled by Naṣīru'ddīn Lāhūrī, after 989/1581.

The work is divided into two volumes, and it is also called Fatāwī-e-Barahana. Table of contents in the beginning.

Vol. I, ff. Iv-190v, contents bābs 1 to 3.

Beginning : حمد مرخدای جها ترا که یکتاست باوصاف کمال - الخ

Ending : دردل اورا یاد داری بیکاری را درکار عقی
یکباری را مفید الطالبین

Vol. II, ff. 191-332v, contents bābs 4 to 26.

Beginning : باب اول درزکاة، و فی الحدیث : حصنوا اموالکم - الخ

Ending : ثم توجه إلى دمشق فی سنة عشر و سبع مائة

ff. i+332. ll. 19. S. 9.8×5.6 ; 6.7×3.4 "/ 24.6×14.3 : 17.0×8.3 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Ashraf Baig Khāfī, on 21 Jumāda II, 42 Julūs ('Ālamgīrī) = 1110/15 December, 1698.

Ordinary 'unwāns at the beginning of each volume. Gold and coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Poor condition. To be repaired and re-bound.

Ref: Iv ASB 1037. Bk. 1226.

Beginning :

بهترین طایر با فال مبارک دبال که طبران کند در هوای
ابتدا امر ذی بال - الخ

Ending :

و خون یربوع بر انجا کنند موی زیادتى بر نیاید و چشم
صلاح یابد - و الله اعلم

ff. 63. ll. 13. S. 6.9×4.4 ; 4.7×2.7 "/ 17.4×11.2 ; 11.9×6.9 cms.

Written in clear nasta'liq, in Dhilhajja 960/ November, 1553.

Good 'unwān. Red ruled borders. Headings in red. Dampness stains.
Worm holes. Fair condition. Bound.

Seal: Ghulām Muḥammad.

محمود چون اياز غلام محمد است

Ref: Iv ASB 1042, IvC 622.

2676

F. 28.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 85. ll. 11. S. 8.4×4.4 ; 4.0×2.6 "/ 17.1×10.9 ; 10.1×6.5 cms.

Written in good naskh and nasta'liq. An early 10th cent. copy.

Gold and coloured ruled borders. Headings in gold red and blue.
Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2677

F. 30.

Another copy of the same.

The name of Sultān Badī'u'z-Zamān Bahādur Khān is fictitiously introduced in the preface. It is not found in the preceding copies.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 61. ll. 15. S. 8.1×4.4 "/ 20.4×11.0 cms.

2673

Fat. 2.

Another copy of the same, with notes at both ends.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 165. ll. 15. S. $8.6 \times 5.4'' / 21.8 \times 13.5$ cms.

Written in clear nasta'liq, in Jumāda I, 1079/ October, 1668.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

2674

Fat. 1.

Another copy of the same with notes at both ends.

Beginning : as usual.!

Ending : as usual.

ff. iii+186. ll. 15. S. $10.0 \times 5.9'' / 25.1 \times 14.8$ cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Hāji Rashīd b. Shaikh Dost Muḥammad, at Aurangābād. A late 12th cent. copy.

Rubrications. [Dampness stains. ;Worm holes. Fair condition.
Bound.

2675

F. 33.

رساله صیدیہ

RISĀLA-E-ṢAIDIYAH

A treatise on the legal and religious aspects of hunting and fishing and the training of dogs, hawks and other such animals and birds for shikār, compiled by an anonymous person. It also deals with the lawfulness of the flesh of such animals.

The work is divided into twelve faṣls and a khātima which begins from f. 23 and contains names in alphabetical order.

مبحث دوم در ذکر شروط از حج
و وثایق و آنچه بدان احتیاج است از قیود و دقائق

Part II, on documents missing. on f. 157 (f. 87 existing).

مبحث سیوم در بیان محاصل و سجلات و ما يتعلق بها من النہی و الإثبات

This copy is defective by 70 folios according to original pagination (ff. 61 to 130 are missing) and ff. 160 to end are by a later hand.

Beginning: خطبة الكتاب، کریم حجة فاطمة لم تثبت فاق بطغرا - الخ

Ending: و آن بطریق است که ما نوشتیم - و الله اعلم بحقیقة الحال

ff. 175-70=105. ll. 17 to 21. S. 10.5×7.4"/26.6×18.6 cms.

Written in ordinary naskh. A late 10th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Poor condition. To be repaired and re-bound.

Ref: Iv ASB 1035; IVC 357.

2672

Fat. 3. فتاوی امینیہ

FATĀWĪ-E-AMĪNĪYA

A treatise on the usual topics of fiqh, compiled by Muḥammad Amin b. 'Abdullah (in this copy, and 'Ubaidu'llah in other two), a'l-Mu'nābādī. It was compiled after 948/1541.

Notes at both ends.

Beginning: یاد آئنا للفضل علینا بتوفیق محامدک، و یا باسطة لا یدینا التعمیق - الخ

Ending: و صلی الله علی سیدنا محمد و آله اجمعین و کرام الأصحاب

ff. 135+1. ll. 27. S. 7.2×4.8"/18.2×12.1 cms.

Written in good nasta'liq, by Sher Muḥammad b. Muḥammad b. Muḥammad Ṣalāḥ b. 'Uṭhmān b. Manṣūr Quljīn, in 1003/1595.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Ref: Iv ASB 1036.

The work is divided into five usual kitābs (Parts) and sub-divided into bābs, faṣls, etc.,

- i. Ṭahārat, on f. 6; ii, Ṣalāt, on f. 65; iii, Zakāt, on f. 192v,
iv. Ṣawm, on f. 221; and v, Ḥajj, on f. 235.

List of contents in the beginning.

Prescriptions at both ends.

Beginning :

مندوب ترین فرضی که فقهای دین پرور که
مسالک مسالک سعی و اجتهاد اند - الخ

Ending :

از ظلمات ظلم و بدعت از باقی نگذارد، إنه
على كل شيء قدير... يا أرحم الراحمين

ff. iv + 261 = 265. ll. 17. S. 8.7×5.2 "/ 22.1×13.1 . cms.

Written in clear shikast-nasta'liq' on 15 Sha'bān, 1178/7 February, 1765.

Rubrications. Worm holes, repaired. Bound.

Ref: Bk. 1227.

2671

F. 60.

مختار الاختيار على مذهب المختار

MUKHTĀRU'L-IKHTIYĀR 'ALĀ MADHHABI'L-MUKHTĀR

A treatise on the rules and regulations pertaining to the office of the Qāḍī (Judge), compiled by Ghiyāth-u'l-Ḥusainī, (or Ikhtiyāru'd-dīn Ḥusainī Herātī (d.c. 928/1522).

The work is divided into three mubḥath (Parts).

Part I, on rules governing the post of the Qāḍī, on f. 3.

مبحث اول در بیان آداب و رسوم قضاة و حکام و آنچه از توابع آنست از
منظر انط و احکام

Seals : 1. Mirza Muḥammad Muḥsin 'Alī Khān, 1203.

مرزا محمد محسن علی خان - ۱۲۰۳

2. Raff'u'd-Daulah, 1214.

رفیع الدوله - ۱۲۱۴

2669

Fat. 6.

فتاوی قراخانی

FATĀWĪ-E-QARĀKHĀNĪ

A well-known treatise on Ḥanafite fiqh compiled by Ṣadru'ddīn Ya'qūb Muẓaffar Kirmānī, and Qabūl Qarākhān. It is dedicated to Fīrūz Shāh Taghlaq III (752-790/1351-1388).

This copy is left incomplete at the end. Table of contents in the beginning.

Beginning : حمد و سپاس و ثناء بی قیاس مرعایہ مطلق و ملک برحق - الخ

Ending : ... کہ غیر نازلہ فاراد ان مجمل

ff. iii + 345, ll. 17 to 26. S. 9.6 × 5.7" / 24.2 × 14.4. cms.

Written in a few different hands, in ordinary naskh. An early 12th cent. copy.

Headings in red. Dampness stains. A few worm holes. Fair condition. Bound.

Ref : E.I.O. 2971; Iv ASB 1034; IVC 356.

2670

F. 54.

فقہ باری

FIQH-E-BĀBURĪ

A treatise on fiqh compiled by Nūru'ddīn b. Quṭbu'ddīn b. Aḥmad b. Zainu'ddīn a'l-Khwāfi, by the orders of Zāhiru'ddīn Muḥammad Bābur Pādshāh (899-937/1494-1530) and dedicated to him (f. 3). The work is based on seven famous works :—Hidāya, Kāfi, Sharḥ-e-Wiqāya, Sharḥ-e-Mukhtaṣar-e-Wiqāya, Khazāna, Khulāṣa, and Fatāwī-e-Qāḍī Khānī.

The work begins with a short introduction in Arabic followed by the commentary.

Beginning : الحمد لله الذى أحكم أصول الشريعة ... الحمد لله الذى
هدانا إلى الصراط المستقيم ، تمام حمد - الشيخ

Ending : الحمد لله الذى أحكم أصول الشريعة ...
يس هيج محرم باين مباح شود ور نه با آن معامله مباح است الحمد لله ...
و أصحابه أجمعين

ff. 138. ll. 24. S. 12.4 × 8.5ⁿ/31.2 × 21.4 cms

Written in clear naskh and shikast-nasta'liq, by Shaikh Karam 'Ali, on 19 Jumāda I. 1241/30 December, 1825.

Rubrications. Worm holes, repaired. Fairly good condition. Preserved in a portfolio.

2668

F. 55. فوائد محمود خانی

FAWĀ'ID-E-MAḤMŪD KHĀNĪ

A collection of complicated and difficult points (مسائل) of fiqh dedicated to Maḥmūd Khān Sultān. The compiler whose name is not given was a disciple of Pīr Naṣīru'ddīn Chirāgh-e-Dehle, (d. 757/1356).

Beginning : حمد بی حد و ثنای بی عد مر آفرید گاری
را که بصنع قدیم و حکمت مستقیم - الشيخ

Ending : یا گفت خدای برین دروغ تو برکت کند ،
این سخن نزدیک بکفر است

ff. 58. ll. 15. S. 8.1 × 4.9ⁿ/20.8 × 12.4. cms.

Written in clear nasta'liq, by 'Abdu'l-Ma'ālī b. Shaikh 'Abdu'l-Hakīm of Bihār, on 24 Ṣafar, 1096/20 January, 1685.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

2665

F. 10.

Another copy of the same, defective by a folio in the beginning. First two folios from a different work. Notes at the end.

Beginning : abruptly. الطهارة ، فرائض وضو شستن روی امت - الشيخ

Ending : as usual.

ff. ii + 255 + 2. ll. 17. 19, or 7. S. 7.5 × 4.6" / 19.0 × 11.8 cms.

Written in two different hands, in clear nasta'liq and naskh. The latter by Sharifu'ddin Muḥammad. A late 12th cent. copy.

Headings in red. Worm holes. Fairly good condition. Bound.

2666

F. 12.

Another copy of the same, defective at the end.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly. و تفقه می کنند بی امر قاضی ضامن شود ،
و لو أنفق ما عندهما - الشيخ

ff. 155. ll. 19 or 23. S. 9.9 × 5.5" / 25.0 × 14.0 cms.

Written in three different hands, and in ordinary nasta'liq. An early 13th cent. copy.

Headings in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2667

F. 19.

تنوير المنار

TANWIRU'L-MANĀR

A Persian commentary by 'Abdu'l-'Alī Muḥammad b. Niẓāmuddin Muḥammad a'l-Anṣārī, on Nasaff's famous Arabic work (Manāru'l-Anwār) on Ḥanafite Uṣūlu'l-Fiqh. The commentary is dedicated to 'Abdu'l-Ghaffār Khān Thābit Jung of Arkāt.

ff. 62. ll. 22 to 36. S. 8.3×5.1 "/ 21.0×13.0 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Qādir Qulī, on 21 Jumāda II, 1172/
19 February, 1759, at Sūrat.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired
and re-bound.

Seals: Zubdatu'l-'Ulamā Shaiḫu'l-Islām Khān, 1189.

زبدة العلماء شيخ الإسلام خان - ۱۱۸۹

Autograph of Zafar 'Alī Baig.

Ref: IvASB. 1024.

2664

F. 11.

ترجمة كنز الدقائق

TARJAMA-E-KANZU'D-DAQĀ'IQ

A Persian paraphrase by Naṣrullah b. Jamāl a'l-Izdī, surnamed
a'l-Kirmānī, on the Arabic work on Ḥanafite fiqh, Kanzu'd-Daqā'iḳ of
Abu'l-Barkāt 'Abdullah b. Aḥmad b. Maḥmūd a'n-Nasafī, surnamed
Ḥafīzu'ddīn, (d. 710 or 711/1310 or 1311).

Table of contents in the beginning.

Beginning :

الحمد لله الذي اوضح مناهج الشريعة والسلام ...
كتاب الطهارة فرايض وضو شستن روى - الخ

Ending :

و يك سبهم عمر را بود

ff. ii + 147. ll. 23. S. 10.1×6.7 ; 7.3×3.9 "/ 25.2×16.8 ; 18.4×9.8 cms.

Written in good nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Ordinary 'unwān. Gold and coloured ruled borders. Headings in
red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a
portfolio.

Ref: EIO. 2575-2579; IvASB. 1026-1030; Bk. 1231-1233.

The work is dedicated to Sultān Nawāz Baig, who is shown as the king of Khurāsān and Irāq, and ruled over a territory from Egypt to the Oxus. In the preface the author states that after A. H. 195, which should read 695/1296, the condition of Muslims had deteriorated so much that [the Jews and the Christians openly suppressed them with the result that the Muslims were obliged to disown the faith. Eventually Sultān Nawāz Baig did his best to revive the lost glory of the Muslims. His capital became [the seat of learning, and his power brought him people from the surrounding countries who professed afresh their allegiance to Islām, and acknowledged him as their Sovereign. Since the learned had easy access to the Court, the author wrote this book for presentation to the Sultān.

Beginning : الحمد لله... چون ایزد تعالی بعد از قاریخ بھرت مصطفی
صلی الله علیه و سلم صدونود و پنجسال خواست کہ - السخ

Ending : جمیع مسلمان علم ربانی اہل نصیبت گردان ، اللهم اغفر لی ...
إنيك على كل شيء قدير

Besides the above work this copy contains :

2. A Fatwā, (on ff. 55-62).

Hayātu'l-Arwāḥ fī Taḥqīq Bai'i'l-Amā wa'l-'Abīd, is the heading of this fatwā by Muḥammadu'l-Qā'im. The issue was that an inhabitant of Aḥmadābād by name Allah Rakhī, daughter of Ḥāfiz Khān b. Sultān Khān was given by her father, due to famine, to a person called Bhāi Miyān for bringing her up. On Bhāi Miyān's death, his relatives handed her over to a slave-dealer called Babta, who named her Kanakā for Gangā, and sold her to Shaikh Kamāl, a new convert to Islam, for Rs. 62. 00. Now Shaikh Kamāl made her to lead an immoral life for four years. During this period Gangā saved Rs. 62. 00 from her earnings and paid back Shaikh Kamāl, and claimed her right to live as a free woman, and away from his company. When the case was referred to the Muftī the judgement was pronounced against her claim.

The compiler has quoted extracts from Arabic works against this judgement.

Beginning : الحمد لله المولى المنعم الوهاب ، الحق الملهم السداد - السخ

Ending : فان الإنسان ينساق بالطبع إلى النسيان
والله هو الهادي الحافظ عن الخطأ والخطاء والطغيان

ff. 262. ll. 15. S. 8.5 × 5.8"/21.6 × 14.6 cms.

Written in clear nasta'liq, by Fath Muḥammad, on 2 Rabi' I, 1067/
10 November, 1656.

Brownish glossy paper. Rubrications. Dampness stains. Worm
holes. Fair condition. To be re-bound.

2662

F. 48.

شرح صلاة مسعودی

SHARH-E-ṢALĀT-E-MAS'ŪDĪ

A commentary on Part I of the same, compiled by a learned person who has introduced Quranic verse and traditions to explain the points in the text.

Beginning:

الحمد لله الذي أعز العلم والعلماء، . . . أما بعد جنين كويد

جمع كنده این مسائل - الخ

Ending:

از برای آنکه تا پاک و پاک كنده شود

ff. 352. ll. 16 or 17. S. 8.9 × 6.5"/22.4 × 16.2 cms.

Written in clear nasta'liq, by Mullā 'Alī Muḥammad b. Fath Muḥammad. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be re-bound.

Seals: 1. Aūliā Nawāb, 1152.

اولیا نواب - ۱۱۵۲

2. Muḥammad Aḥsanu'llah, 1180.

محمد احسن الله - ۱۱۸۰

2663

F. 22.

خیرة الفقهاء. وحجة الفصلاء

1 KHIARATU'L-FUQAḤĀ WA ḤUJJATU'L-FUDALĀ

A collection of complicated and difficult points (مسائل) of fiqh compiled by 'Alāu'ddīn 'Umar Bukhārī, after referring one hundred and eight books, (list on f. 3).

2659

F. 46.

Another copy of the same Part II, in 45 bâbs.

Beginning :

الحمد لله الذي وعدنا الجنة للطيعين

بكرمه ومنه وفتح باب التوبة - الخ

Ending :

وفعدة و سهواز... يرون آيد - والله اعلم

ff. 287. ll. 15. S. 8.9×6.4 "/ 22.6×16.2 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2660

F. 471.

Another copy of the same in 44 bâbs.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 296. ll. 15. S. 8.5×5.8 "/ 21.6×14.6 cms.

Written in clear nasta'liq, by Fath Muḥammad, on 24 Şafar 1066/13 December, 1655.

Brownish glossy paper. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be re-bound.

2661

F. 47/2.

Another copy of the same containing Part III, from poor rate (متفرقات) to miscellaneous topics (زکوة).

Beginning : باید دانستن که زکوة دادن فرضیه است - الخ

Ending :

ایشان از پیغمبر صلی الله علیه و سلم بلطف یاد گرفته اند

The work is divided into three parts, (daftars), and the division of bābs and faṣls is according to the usual divisions followed by all authors on the system of fiqh.

This copy contains first two parts, but part II does not begin separately as in other copies. The author's name is not given in the preface.

Part I, contains 26 bābs, and begins with knowledge (علم) and faith (ایمان) and ends with well water (مسائل چاه) on f. 6r.

Part II, contains 43 bābs, and begins with (مسح موره) and ends with prayers over the dead (صاوة الجنائزة).

Table of contents in the beginning.

Beginning :

سپاس و ستایش مر خدای را عز وجل ،
و شکر و منه مر کرد گاری راکه - السبح

Ending :

معلوم شد

ff. ii+172. ll. 25. S. 10.4×6.6; 7.4×4.0*/26.4×16.8; 18.8×10.2 cms.

Written in clear naskh, by Yūsuf b. Ḥājī? A late 11th cent. copy.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. ff. 85 to 113 by a later hand. Last ten folios damaged. Poor condition. Bound.

Seals: 1. Abu'l-Faṭḥ Akramu'ddin Muḥammad. ابو الفتح اکرم الدین محمد

2. Abu'l-Baqā Arḥamu'ddin Maḥmūd, 1134.

ابو البقا ارحم الدین محمود - ۱۱۳۴

Autograph of Ja'far a'r-Riḍwī.

مالک مملوک اهل البيت النبوی جعفر بن جلال الساهی الرضوی

Ref: IvASB. 1023; Bk. 1223.

ff. 126, ll. 27. S. $12.5 \times 7.2''/31.6 \times 18.2$ cms.

Written in good nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Arabic text in red. A few worm holes. Fairly good condition.
Bound.

Seals of Sayyid Muḥammad 'Alī Khān Bahādur, 1221.

سید محمد علی خان بہادر - ۱۲۲۱

2657

F. 41.

شرح فرائض السراجیة

SHARḤ-E-FARĀ'IDU'S-SIRĀJĪYAH

A commentary on the famous work of Sirāju'ddīn Abū Tāhir Muḥammad b. Muḥammad b. 'Abdu'r-Rashīd a's-Sajāwandī, who flourished at the end of VIc/XIc. It deals with the law of inheritance as per Hanafite school.

This copy is defective in the beginning, and the name of the commentator is missing.

Beginning: abruptly.

صرف کرده بود و بعضی از طلبہ

ازین بندہ التماس میگردند کہ - السخ

Ending: کل منها عشرون و اربع ستون و لمولام عشره و الله تعالى اعلم

ff. 134 + 1. ll. 21. S. $9.9 \times 6.6''/25.0 \times 16.6$ cms.

Written in ordinary nasta'liq, by 'Abdu'l-Wāḥid b. Shamsu'ddīn-a'ṣ-Ṣiddiqī, on 7 Rabī' I, 1097/22 January, 1686.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

2658

F. 45.

صلاة مسعودی

ṢALĀT-E-MAS'ŪDĪ

An old treatise on fiqh compiled by Mas'ūd b. Maḥmūd b. Yūsuf Samarqandī.

ff. 262+2. ll. 17. S. 11.6 × 8.0"/29.4 × 20.2 cms.

Written in ordinary shikast-nasta'liq. An early 13th cent. copy.

European paper. Worm holes, partly repaired. Fair condition
Bound.

2655

F. 67.

منافع المسلمين

MANĀFI'U'L-MUSLIMĪN

A Persian paraphrase compiled by Muḥammad b. Badru'ddīn Muḥammad Jarzūwānī, on the Arabic Sharḥu'l-Wiqāya of 'Ubaidu'llah b. Mas'ūd (Maḥmūd), (d. 747/1346), a commentary on his father's Wiqāyatu'r-Riwayāt.

It was first undertaken at the instance of the translator's spiritual guide, Kamāluddīn 'Abdu'l-Jalīl b. Maḥmūd b. Muḥammad a's-Ṣāfi, and finally of Burhānu'ddīn Muḥammad.

Beginning :

جميع اجناس حمد و سپاس و انواع محامد بن قياس
مر حضرت معبودی را که - السخ

Ending :

از قليل عفو می کند - عفی الله عنا بحرمه نبیما
اشرف الانبیاء والمرسلین . . . رب العالمین

ff. 322. ll. 21. S. 10 8 × 5.5"/27.2 × 13.8 cms.

Written in good nasta'liq, at Burhānpūr. A late 11th cent. copy.

Arabic text in red. Dampness stains. Worm holes. Outer margins renewed. A few folios at the end damaged. Fair condition. Bound.

Ref: Bk. 1229.

2656

F. 68.

Another copy of the same, incomplete at the end.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly.

و لفظ « حین » و زمان بنی مقارنت نیست

ff. iii+295. ll. 21. S. $12.3 \times 7.9^*/31.4 \times 19.8$ cms.

Written in clear naskh by Sayyid Muḥammad Pīrān, on 29 Muḥarram, 1290/29 March, 1873, for the collector's grandfather.

European paper. Good condition. Binding damaged.

2653

F. 44.

شرح وقایة

SHARH-E-WIQĀYA

A Persian commentary by 'Abdu'l-Ḥaqq Sajāwal Sarhindī, on the famous Arabic work, *Wiqāyatu'r-Riwāyāt* of Burhānu'sh-Sharī'at (or Burhānu'ddin) Maḥmūd b. Ṣadru'sh-Sharī'at 'Abdu'llah (or 'Ubaīdu'llah) b. Maḥmūd b. Muḥammad a'l-Maḥbūbī a'l-Ḥanafī, who flourished at the end of VIIc/XIIc. *Wiqāya* is a commentary on the same *Hidāya*.

The commentator was a murīd of Muḥammad Ma'sūm b. Mujaddid Alf Thānī. The work was undertaken during the reign of Emperor 'Ālamgīr, and completed in 1076/1665.

Beginning:

الحمد لله... بعد هذا میگوید احقر عباد الله
انغنی عبد الحق بمجاول سرهندی - الشيخ

Ending:

مر دار معین جائز است پس مسئله اولی جائز باشد

ff. 299. ll. 18 to 20. S. $11.5 \times 7.6^*/29.2 \times 19.2$ cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Preserved in a portfolio.

Ref: IvASB. 1040.

2654

F. 43.

Another copy of the same. Table of contents at the end.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

2650

F. 15.

Another copy of the same, containing Vol. III. from Kitābu'l-Ba'i to Kitābu'l-I'dhn.

Beginning: کتاب البیع، باید دانست که بیع فروختن و خریدن است - البیخ

Ending: و دایل جانبین سابق مذکور شده است در کتاب العتاق

ff. 534. ll. 17. S. 12.8×7.7 / 32.4×19.6 cms.

Written in good naskh. A late 13th cent. copy.

European paper. Good condition. Bound.

2651

F. 14.

Another copy of the same

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 393. ll. 21. S. 12.2×7.6 / 31.0×19.2 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Muḥammad Qāsim 'Alī, on 22 Jumāda I, 1292/26 June, 1875.

European paper. Good condition. Bound.

2652

F. 16.

Another copy of the same, containing Vol. IV. from Kitābu'sh-Shif'a to Kitābu'l-Khunthā.

Table of contents in the beginning.

Beginning: کتاب الشفعه و آن در شرع عبارت است

از مالک شدن زمین مبیم - البیخ

Ending: در میان هر دو صورت در حالت اختیار هیچ ضرورت نیست

2649

F. 13

ترجمة الهداية في شرح البداية

TARJAMATU'L-HIDĀYA FĪ SHARHI'L-BIDĀYA

A Persian paraphrase compiled by Ghulām Yahyā Khān Bihārī, on the famous Arabic work on Ḥanafite fiqh, a'l--Hidāya, which itself is a commentary by Burhānu'ddīn 'Alī b. Abī Bakr b. 'Abdu'l-Jalīl a'r-Rishtānī a'l-Farghānī a'l-Murghinānī, (d. 593/1197), on his own earlier and shorter work, Bidāyātu'l-Mubtadi.

This copy contains :

Vol. I, from Kitābu't-Ṭahārat to Kitābu'l-Ḥajj, on ff. Iv-208.

Beginning : کتاب الطهارت و آن در لغت بمعنی تنزه
و پاکی است از نجاست - الخ

Ending : و اولی همین است چه درین تعظیم امر
حج است - و الله اعلم بالصواب

Vol. II, from Kitābu'n-'Nikāḥ to Kitābu'l-wuqūf' on ff. 209v-545v.

Beginning : کتاب النکاح ، و آن در لغت عبارت است از وطی ،
و بعضی گفته اند که - الخ

Ending : بسبب عنای خود و تقید محتاج است بآن - و الله اعلم بالصواب

ff. 545. ll. 21. S. 12.3×7.7"/31.0×19.6 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Muḥammad Qāsim 'Alī, on 27 Dhīqa'da, 1291/5 January, 1875.

European paper. Good condition. Bound.

Arabic Fiqhul-Akbar of Imām Abū Ḥanīfa a'n-Nu'mān b. Thābit a'l-Kūfī, (d. 150 or 151/767 or 768).

Beginning : الحمد لله ... قال رضى الله عنه لا يكفر أحد بذنوب
ولا يخرج - الخ

Ending : أما همام و فرعون (از) ابتدا بدبخت اند ، اللهم ارشدنا
والحقنا بالصالحين ... برحمتك يا أرحم الراحمين

The scribe who was of Mahdawī sect has added a tract. on ff. 47v-53.

It is a query by Sayyid Ma'rūf, and reply by Sayyid Aḥmad. The topic dealt is (رد تاويل) refuting interpretation.

Beginning : بعد از حمد الله الصمد و پس از درود هر دو محمد
مكتشف باد - الخ

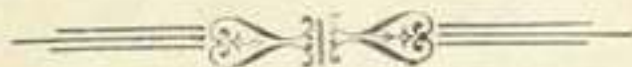
Ending ; این قول بر حال و قال شما دال است اللهم أرنا الحق حقا...
وانصرنا على المبتدعين

ff. 46+7. ll. 11. S. 6.4×3.9"/16.2×9.8 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by Sayyid Ḥāshim, on 1 Rabi' II, 1254/24 June, 1838, at Hyderābād.

European paper. Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

Printed.



2647

H. 9.

مجموعه

(MAJMŪ'A)

This copy contains two works:-

1. Tuḥfatu'l-Waṣāyā, on ff. 1v-19.

A collection of 145 aḥādīth rendered in to Persian by an anonymous person. These pertain to the admonitions of the holy Prophet to Ḥadrat 'Alī on several topics.

Beginning: محامد باسر ها سزای ذات بی همتای که هستی اعیان
موجودات - الخ

Ending: رهنمای مکن یهود و نصاری را یعنی یهودی و نصرانی نابینارا

2. (Aḥwāl-e-Aḥmad bin Jadīr), on ff. 20v-48.

A biography of Aḥmad b. Abu'l-Ḥasan b. Muḥammad b. Jadīr, compiled by an anonymous person.

This copy is incomplete at the end.

Beginning: شیخ عربی نسب بود و پدر و مادر او عرب بودند - الخ

Ending: abruptly. از شیخ الإسلام قطب الدین فایدها و تربیتها یافت
و چون وقت مراجعت شد التماس

ff. 48. ll. 15. S. 3.4 × 4.6; 5.5 × 3.0^{*}/21.4 × 11.4; 14.0 × 7.6 cms.

Written in good naskh. An early 11th cent. copy.

Red ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

2648

Aq. 94.

شرح فقه اکبر

SHARḤ-E-FIQH AKBAR

A Persian commentary compiled by Abu'l-Faṭḥ Ṣadru'ddīn Muḥammad Gisūdarāz of Gulbarga, (d. 825/1422), on the

This copy contains the following works:-

1. *Risāla fi Ikhtiyārātī's-Sā'āt*, on ff. 1v-24.

Another copy of the same, *vide* Nos: 2620 to 2624, 2632/v-2645/i.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

2. *Risāla-e-Kaffārāt*, on ff. 25v-32.

A tract on atonements and penances compiled by the same Bāqir a'l-Majlisī, in Šafar, 1091/September, 1680.

Beginning: الحمد لله... أما بعد چنین گوید احقر عباد الله الغنی
محمد باقر بن محمد تقی - الخ

Ending: کفارہ را بعمل بیاورد اینجا ختم کردیم رساله را.

3. *Risālat fi'l-Jabr wa'l-Ikhtiyār*, on ff. 33v-39v.

A tract on the doctrine of (جبر و اختیار) by the same. It is based on the works of Ibn Bābūya a'l-Qummi.

Beginning: الحمد لله... أما بعد شیخ صدوق بن بابویه قمی...
در کتاب توحید - الخ

Ending: و جای اوجہم، اینجا ختم کردیم سخن را، و الحمد لله...
و آله الطاهرين

ff. 39. ll. 12. S. 6.0X4.1"/15.2X10.4 cms.

Written in good nasta'liq, on 10 Rajab, 1242/7 February, 1827.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

2. Taqwīmu'l-Muḥsinīn wa Aḥsanu't-Taqwīm, ff. 112-132.

Another work on the same topic ascribed to Muḥammad b. Murtaḍā, surnamed Muḥsin a'l-Kāshī.

The work is divided into a muqaddima, a faṣal, a few jadwals, a Khātima, a takmila, and a naṣīḥat.

Beginning : الحمد لله الذى خلقنا فى أحسن التقويم . . . أما بعد
چون دیدم که - الخ

Ending : ذی حجه : یکشنبه - پنجشنبه - سه شنبه

3. Mira'tu'l-Muṣṭhallīn, ff. 133v-140.

A treatise on prayers to be offered on looking at the crescent moon, based on Shiite traditions, compiled by Ab'i-Mafākhīr Muḥammad Hādī a'l-Ḥusainī a'l-'Alawī aṣ-Ṣafawī, surnamed Shāh Mirza b. Muḥammad Mahdī.

This xii/xviii cent. work is divided into a muqaddima, and four maṭlabs.

Beginning : اهله بصائر ناظرین و حامدین و اجلاء ضمائر شما کرین
صورت اقرار - الخ

Ending : والتقوى والتوفيق لما نحب وترضى

ff. 140. ll. 13. S. 8.9×5.8⁹/22.8×14.8 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by 'Alī Nawāz khān, in 1214/1799, at Hyderābād.

Rubrications. Dampness stains. Worm eaten. Poor condition. Not bound.

ff. 11. ll. 11. S. 8.7×5.4 ; 6.2×3.1 "/ 22.0×3.6 ; 15.6×7.8 cms.

Written in excellent Shaff'a. A late 12th cent. copy.

Marbelling in between lines, and on borders. Headings in red or blue. Good condition. To be re-bound.

2644

H.I. 45/1.

رسالة سعد ونحس

RISĀLA-E-SA'D WA NAḤAS

A treatise on auspicious and inauspicious hours based on Shiite traditions, compiled by an anonymous person.

Short Arabic prayers at the end.

Beginning :

الحمد لله ... اما بعد اين رساله ايست در باب سعد
ونحس - الخ

Ending :

در اول برج مي آيد نامهاي دوازده

ff. 19+4. ll. 60. S. 7.9×4.6 "/ 20.2×11.8 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2645

H.I. 33.

مجموعه

(MAJMU'A)

This copy contains the following works :-

1. Risāla fi Ikhtiyārāti's-Sā'āt, ff. 1v-112.

Another copy of the same, *vide* Nos. 2620 to 2624, 2632/v-2646/1.

Written in clear naskh and nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2642

H. I. 46.

کلمات امیر المؤمنین

KALIMĀT-E-AMĪRU'L-MU'MINĪN

Persian paraphrase of one thousand Arabic sayings of Ḥaḍrat 'Alī. The translator's name is not given.

Beginning :

دین آدمی را از شرفگاه دارد - دنیا آدمی را هلاکی
میدهد - الخ

Ending : اخت ترا ز طلب کردن تو اورا ، بس نیک معامله باش ... رزق

ff. 36. ll. 13. S. 7.4 × 5.8" / 19.0 × 14.8 cms.

Written in ordinary script, by Sayyid Muḥammad Raḥīmu'ddīn, on 6 Ṣafar, 1291/25 March, 1874, (from a copy made in 1166/1753).

European paper. Rubrications. Good condition. Bound.

2643

M. and K. 27.

رسالة حدیث

(RISĀLA-E-HADĪTH)

A collection of Arabic sayings of the holy Prophet, ff. 3-7v; followed by Persian paraphrase, and other traditions, ff. 8-11.

Beginning :

قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم عنوان صحيفة المؤمن
حب على ابن ابی طالب - الخ

Ending :

حضرت باقر علیه السلام فرمود که دشوارترین
عبادتها ورع است

Written in ordinary nasta'liq. A mid 12th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2640

Man. 22.

احادیث نبی فی شان علی

(AHĀDĪTH-E-NABĪ FĪ SHĀN-E-'ALĪ)

A collection of traditions in praise of Ḥaḍrat 'Alī based on Sunnite works, but compiled by a Shi'ite with Persian paraphrase, and explanation.

Beginning: حدیث اول در صحاح شیعه (سته) اهل سنت است، قال النبی...
مثل اهل بیتی - الخ

Ending: مرا وضو کردن آموختند از شما دیدم امر و ز آموختم

ff. 59+1. ll. 12. S. $7.9 \times 5.4''/20.6 \times 13.8$ cms.

Written in ordinary and careless script, by Malik Maḥmūd. A late 12th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2641

Man. 23.

رساله حدیث

(RISĀLA-E-ḤADĪTH)

Another similar collection with Persian paraphrase and explanations by an anonymous person.

Beginning: بعد حمد خالق ارض و سما و زبانی نعت رسول مجتبی
بر مرآت صمائر صافیہ - الخ

Ending: مر گیسست بنام ز ند گانی... بخشی بصاحبک حتی تدفعها الیکما

f. 51. ll. 14. S. 7.1×4.4 ; $5.7 \times 3.1''/18.2 \times 11.2$; 14.6×7.8 cms.

The work is divided into twelve fasls.

Beginning : الحمد لله... أما بعد این رساله ایست مشتمل بر
دوازده فصل - البخ

Ending : که در هر زمان بوده اند ، اللهم عجل لنا ظهوره واجعلنا
من انصاره... یا ارحم الراحمین

Arabic 'sūras', on ff. 51v-57.

These are : (سورة النورین و هی سورة علی علیه السلام)

Sūratu'n-Nūrain and Sūratu'l-Wilāyah (سورة الولاية) followed by some verses which the Shiites alleged to have been omitted from the Glorious Qur'ān from sūras: v, xiii, xxvi, xxxvii, xliii, and xciv, on ff. 57-58v.

ff. 50+8. ll. 7. S. 5.8×4.0"/14.8×10.4 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

Seals: 1. Bahrahmand Khān. بهره مند خان فدوی محمد شاه نادر شاه غازی

2. Haidar Yār Khān. حیدر یار خان

Autograph of Bahrahmand Khān.

2639

H. 1. 3. ترجمه احادیث قدسی

(TARJAMA-E-AḤĀDĪTH-E-QUDSĪ)

A Persian paraphrase of several traditions based on Shiite beliefs. The title of the work, and the name of compiler are missing. This copy is defective at both ends.

Beginning : abruptly. بر کتاب و حدیث باید کرد
بند گانیم عاصی و بی ناک - البخ

Ending : abruptly. نگذشته ام و دستهای روی خود را

ff. 211. ll. 17. S. 7.1×4.0"/19.4×10.2 cms.

H. 1. 43. معارف اليقين في شرح احاديث اربعين

MA'ĀRIFU'L-YAQĪN FĪ SHARḤ AḤĀDITH-I 'ARBA'IN

A Persian commentary on the forty selected traditions, compiled by Muḥammad Bāqir Wā'iz Tabrizī.

Beginning : مجموع ترین حدیثی که راویان خواص بطریق تواتر از
رسول امین - الخ

Ending : چون روح در نظاره فنا گشت و این بگفت
نظاره جمال خدا جز خدا نکرد

ft. 149. ll. 16. S. 8.2 × 5.0⁹/20.8 × 12.8 cms.

Written in clear nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

Seals :- 1. Sayyid Muḥammad 'Alī Khān Bahādur, 1221.

سید محمد علی خان بهادر - ۱۲۲۱

2. Sayyid 'Ālam 'Alī.

سید عالم علی -

Man. 7. بشارة المصطفى لشيعه المرتضى

BASHĀRATU'L-MUṢṬAFĀ LI SHĪ'ATI'L-MURTAḌĀ

A collection of traditions in Arabic with their Persian paraphrase and glosses, pertaining to the happy news given by the holy Prophet for the friends of Ḥaḍrat 'Alī, compiled by an anonymous person.

Part II, on nine Shiite Imāms, from Zainu'l-'Ābidin to Mahdī.

Beginning : محمدك یا من اقرب به الجنة...

امام او رهنا و پیشوای مومنان بکسر + علی مرتضی شیر خدا دا ماد پیغمبر - الخ

Ending : هرگز روز حشر نیندیشی از حساب

داری بدست دامن آل ابوراب

ff. 167. ll. 31. S. 11.9 × 7.7"/30.0 × 19.6 cms.

Written in clear naskh, by Muḥammad Bāqir b. 'Abdu'r-Riḍā, on 30 Rajab, 1244/5 February, 1829.

European paper. Headings in red. Worm holes. Fairly good condition. To be repaired, and re-set in existing covers.

2636

H.I. 25.

خواتیم الصالحین

KHWĀTĪMU'Ṣ-ṢĀLIḤĪN

A collection of Shiite traditions pertaining to the wearing of rings set with carnelian, rock crystal, and other stones, compiled by Abū 'Alī, surnamed Muḥammad b. Muḥammad Amān. The work is dedicated to Iftikhāru'd-Daūlah Afḍalu'l-Mulk Ṣalābat Jung, an Oudh noble.

The author refers to his earlier work—Tuḥfatu'l-Mutakhattamīn (تحفة المتختمین).

Beginning : الحمد لله الذى جعل التختيم... اما بعد چنین گوید

حاقه بکوش - الخ

Ending : کرد نایاب رساله تصنیف + اثر او نظم فیضجان باد

ff. 54. ll. 12. S. 8.0 × 5.1"/20.6 × 13.0 cms.

Written in ordinary script, on 8 Dhī'qada, 1249/19 March, 1834, at Lucknow.

European paper. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

لسان الذاکرين

LISĀNU'DH-DHĀKIRĪN

A work dealing with the lives of the holy Prophet and his family based on Shiite traditions, compiled by Mirza Muḥammad Hādī Nā'ini at the instance of Hājī Mir Muḥammad Ḥusain Isfahānī.

The work is divided into two parts :—

Part I, is subdivided into a muqaddima, four bābs, and a khâtima :—

Muqaddima, on true love (عشق حقیقی) on f. 4.

Bāb 1, in three majlis dealing with twelve Qur'ānic verses, twelve traditions, and twelve Prophets, on f. 5.

Further, there are three more majlis :—

i. Dealing with the trials and tribulations of the family of the holy Prophet after his passing away, on f. 32.

ii. Shiite views on the first two Orthodox Khalifs, on f. 33v.

iii. Death of Fāṭima, on f. 36v.

Bāb 2, in thirty-seven majlis dealing with the life of Imām Ḥusain, on f. 46.

Bāb 3, in twelve dhikrs dealing with the Battle of Karbala, on f. 79.

Bāb 4, in eighteen majlis on the hardships through which the family of Imām Ḥusain underwent, on f. 89v.

Khâtima, in three majlis, on the high status of the Family of the holy Prophet, on f. 106.

Epilogue (ختم الخاتمه) on f. 109.

Beginning : الحمد لله الذي جعل مصائب دارا لغرور... خواهم که حمد و نعت خدا و رسول را هر دم ز روی شوق بلفظ دیگر کنم - الخ

Ending : قواعد حق گذاری ناهنج مناهج سید المرسلین... حاجی میر محمد حسین اصفهانی رحمه الله علیه

Written in clear naskh and nasta'liq, by the author, on 7 Rabi' II, 1172/8 December, 1758.

Rubrications. Worm holes, partly repaired. Fairly good condition Bound.

A rare work and an autograph copy.

Seal: Sayyid Aṭ'har 'Alī Khān, 1200.

سید اطهر علی خان - ۱۲۰۰

2634

H.I. 2.

انيس الاخيار

ANĪSU'L-AKHIYĀR

A treatise on Shiite traditions, etc., compiled by Muḥammad Ḥusain b. Muḥammad 'Alī a'l-Ḥusainī and dedicated to a nobleman of Oudh, Muḥammad Āfrīn 'Alī Khān, hence the chronogram (انيس آفرين على خان) = 1225/1810? on fly-leaf.

The compiler has drawn the contents in the beginning for easy reference.

The work is divided into a muqaddimah and 8 faṣls.

Beginning: of the table: الحمد لله و كفى . . . أما بعد بدانکه
چون این مجموعه - النسخ

and of the work: الحمد لله و فقنا . . . این مجموعه را محتاج بعفو پروردگار - النسخ
Ending: بدعای خیر یاد و شاد نمایند

ff. IX+135+2. ll. 9. S. 8.9×5.4; 6.1×3.5"/22.8×13.8; 15.7×8.9 cms.

Written in good naskh by the author, on 22 Rabi', II, 1225/27 May, 1810, at Lucknow.

Rubrications. Gold and coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

An autograph work.

The work is divided into a muqaddimah, five faṣls, and a *khātima*.

Beginning :

الحمد لله الذى أراح ظلمات... أما بعد جنين
كوبد خاك راه سالكان - البخ

Ending :

در سایر احوال از سرار محفوظ دارد بمحمد وآله الطاهرين

5. *Risāla fī Ikhtiyārātī's-Sā'āt wa'l-Ayyām* (ff. 116v-124).

Another copy of the same, *vide* Nos. 2620 to 2624, 2632/5, 2645/1 and 2646/1.

This copy is incomplete at the end.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly.

دیگر شایسته است برای همه کار خصوصاً ملاقات

ff. 124. ll. 14. S. 6.2 × 3.9; 4.5 × 2.0"/15.9 × 9.6; 11.5 × 5.2 cms.

Written in good *naskh*. Early 12th, cent. copies.

Good 'unwāns at the beginnings of 1, 2 and 4. Gold ruled borders for all except last item. Rubrications. Dampness stains. Worm holes, repaired. Fairly good condition. Bound.

2633

H.I. 26.

دستور الخائفین

DASTŪRU'L-KHĀ'IFĪN

Another Shiite work on the practices and observances of daily life based on traditions compiled by Mīr Kamālu'ddīn Ḥusain a'l-Mūsawī a'l-Ḥusainī b. Mīr Muḥammad Kāẓim aṭ-Ṭahrānī, for his children.

The work is divided into fourteen bābs and a *khātima*.

Beginning :

الحمد لله الذى
أما بعد غرض اصلى و مقصد كلى
از ترتيب كلمات آنك - البخ

Ending :

اولاد خود ترتيب داده تا از مطالعه اين فيض ياب شوند

ff. 183. ll. 11. S. 9.4 × 6.0"/24.2 × 15.2 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by Ghuām Imām, for Sayyid Faḍal 'Alī Khān, on 28 Dhīḥajja, 1267/24 October, 1851, at Murshidābād.

European paper. Rubrications. Dampness stains. Fair condition. Not bound.

2632

H.I. 44.

مجموعة رسائل باقر مجلسی

MAJMŪ'A-E-RASĀ'IL-E-BĀQIR MAJLISI

This copy contains the following five works:—

1. Mafātiḥu'l-Ghā'ib (ff. 1v-65).

A treatise on Istikhārā based on Shiite traditions, compiled in Ramaḍān, 1104/May, 1169, by the prolific writer Bāqir a'l-Majlisi.

The work is divided into a fātiḥa eight miftāḥ (for eight gates of Heaven) and khātima.

Beginning : الحمد لله الذي لا يعلم خير عباده . . . و بعد مستعمل فيوض قدسي
مجد باقر مجلسی - الخ

Ending : ولعنه الله على أعدائهم اجمعين

2. Risāla fi Qawā'id Ṣiḡhi'l-'Uqūd Wa'n-Nikāḥ (ff. 66v-72v).

A treatise on reciting Arabic prayers at a marriage ceremony compiled by the same.

Beginning : الحمد لله الذي أحل النكاح . . . اما بعد غرض از تحریر این
رساله وجیزه آنست که - الخ

Ending : زو قبک نفسی متعة میگوید . . . والله الموفق لكل خير

3. Khuṭba-e-Nikāḥ (ff. 72v-74).

An Arabic sermon to be recited before the ṣiḡha.

4. Risāla fi Shakkīyāti's-Ṣalāt (ff. 75v-115v).

A treatise on doubts and blunders (شك و سهو) in namāz compiled by the same.

3. Muḥtaramu'd-Daūlah, 1257.

محترم الدوله - ١٢٥٧

4. I'tiṣāmu'l-Mulk, 1274.

اعتصام الملك - ١٢٧٤

2629

Ad/29.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 46. ll. 17. S. $4.7 \times 9.3''/23.7 \times 12.1$ cms.

Written in clear naskh and nasta'liq, on 19 Rabi' I, 1137/15 November, 1724, at Hyderābād.

Dampness stains. Worm holes. Poor condition. To be repaired and re-bound. Written as a bayāḍ. Preserved in a portfolio.

2630

Man. 12.

Another copy of the same. Stray notes at the beginning.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. iii + III. ll. 11. S. $6.4 \times 4.1''/16.4 \times 10.6$ cms.

Written in good naskh. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Fair condition. To be re-bound.

2631

Man. 14.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 75. ll. 13. S. $7.2 \times 4.6''/18.4 \times 11.8$ cms.

Written in clear nasta'liq, by Muḥammad 'Abdu'llah a'l-Bukhārī, on 18 Dhīḥajja, 1190/28 January, 1777.

European paper. Rubrications. Good condition. Bound.

Seals: Mustaqīmud-Daūlah, 1246.

مستقیم الدوله - ۱۲۴۶

'Alī Mūsā Riḍā, 1198.

کرد نعلین علی موسی رضا - ۱۱۹۸

2628

Man. 13.

رسالة في الرجعة

RISĀLATU FI'R-RAJ'AT

A collection of fourteen aḥādīth together with Persian paraphrase and notes compiled by the same Bāqir a'l-Majlisi who extracted them from his huge work, Baḥāru'l-Anwār.

It deals with the return of Twelfth Shiite Imām, Mahdī, and is dedicated to Shāh Sulaimān Ṣafawī (1077-1105/1667-1694).

Beginning : الحمد لله ... اما بعد چنین گوید فقیر خا کسار محمد باقر بن محمد تقی - الخ

Ending : سه مرتبه می گوئی العجل العجل : یا مولائی یا صاب الزمان و صلی الله محمد و آله اجمعین و سلم تسلیما کثیر کثیر

ff. 120, ll. 11, S. 8.6 × 4.8"/22.0 × 12.4 cms.

Written in good naskh and nasta'liq, on 22 Shawwal, 1092/25 October, 1681.

Dampness stains. Fairly good condition. Bound.

This work has been printed.

Seals: 1. Mīr 'Abbās 'Alī Khān Bahādur, 1221.

میر عباس علیخان بهادر - ۱۲۲۱

2. I'tiṣāmu'l-Mulk, 1245

اعتصام الملك - ۱۲۴۵

Table of contents in the beginning by a later hand.

Beginning : الحمد لله الذي هدانا إلى توحيده بصفوته محمد المفضل - الخ

Ending : باينجا منتهى شد

ff. i+132. ll. 15. S. 7.0×4.1 ; 4.9×2.2 "/ 17.9×10.6 ; 12.6×5.6 cms.

Written in good naskh by the author, in Rajab, 1094/June, 1683.

Good 'unwān. Gold and coloured ruled borders. Rubrications on margins. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

An autograph copy.

Note dated 20 Jumāda II, 43 Julūs ('Ālamgīrī) = 1111/ 3 December, 1699 on flyleaf.

2626

H.I. 5.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 123+1. ll. 14. S. 6.2×4.3 "/ 17.2×11.0 cms.

Written in good nasta'liq, by Afḍal a'l-Ḥusainī a'r-Riḍwī. An early 12th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Poor condition. Bound.

2627

H.I. 6.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 135. ll. 10. S. 7.5×5.0 "/ 19.3×12.8 cms.

2623

H.I. 34.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 24. ll. 10. S. 5.4×3.8 "/ 13.8×9.6 cms.

Written in good naskh. A late 12th cent. copy.

Dampness stains, Worm holes. Margins renewed. Poor condition. Not bound.

2624

H. I. 31.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 21. ll. 12, S. 7.7×4.9 ; 6.0×3.4 "/ 19.8×12.5 ; 15.2×8.6 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq. An early 13th cent. copy.

Blue paper. Rubrications and red ruled borders. Good condition. To be rest in existing covers.

Seals: Mustaqimu'd-Daluah 1246.

مستقيم الدولة - ١٢٤٦

2625

H.I. 7.

ترجمة توحيد مفضل

TARJUMA-E-TAUHID-E-MUFADDAL

A Persian paraphrase and a commentary on the tradition pertaining to the Unity of God narrated by Mufaddal b. 'Umar Ja'fi, compiled in Rajab 1094/June, 1683, by the same Bāqir a'l-Majlisi.

Written in good nasta'liq, by Muḥammad 'Azīmu'ddīn a'l-Mūsawī a'l-Burhānpūrī, on 14 Rajab, 1181/6 December, 1767.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

2621

H.I. 32.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

(a) Notes on Istikhāras, ff. 117v-119v).

(b) Risāla-e-Qir'āt (ff. 120-123).

(c) A tract on tajwid by Qāḍī Khān.

(d) A tract on the knowledge of life and death (دانستن لوح حیات و ممات)
ff. 123-125v).

ff. 117+8. ll. 13. S. $7.8 \times 5.1''/20.1 \times 13.0$ cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy.

European paper. Rubrications. Dampness stains. A few worm holes. Preserved in a portfolio.

2622

H.I. 29.

Another copy of the same, but in an abridged form.

Beginning : as usual.

Ending : و مرد فاجر و فاسق دعوی بادشاهی کند - إلى هنا انتهى ما أردنا

ff. 15. ll. 14. S. $6.3 \times 3.7''/16.1 \times 9.1$ cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Margins damaged. A few worm holes. Fair condition. Not bound.

Majlis IX, on Ḥusain's departure for Karbala, on f. 159.

Majlis X, on the martyrdom of Ḥusain, on f. 207.

Khātima, on the events which befell on Ḥusain's family after his martyrdom, on f. 245v.

Beginning : سپا (س قد سی آسا) س و ... مالک الملکی - الخ

Ending : و احشرنا فی زمرة عن استشهاده معه بفضلک و جودک

ff. 295. ll. 12. S. 8.6×5.1 ; 7.6×3.5 "/ 21.6×12.8 ; 19.0×8.7 cms.

Written in ordinary nasta'liq, for Faḍal 'Azim Khān Bahādur, on 9 Rajab 1205/14 March, 1791.

Borders in colours. Headings in red. Worm holes. Fair condition. Bound.

Ref: IVC. 377.

2620

H.I. 30 رسالة فی اختیارات الساعات

و الأيام و التواریک

RISĀLA FI IKHTIYĀRĀTI'S-SĀ'ĀT
WA'L-AYYĀM WA'T-TAWĀRIKH

A treatise on the auspicious and inauspicious hours, days and dates based on the traditions of the Shiite Imāms, compiled in Dhīḥajja 1078/May, 1668, by Muḥammad Bāqir b. Muḥammad Taqī a'l-Majlisī.

The work is divided into 40 faṣls and *khātima*.

Beginning : الحمد لله ... اما بعد چنین گوید احقر عباد الله الغنی
محمد باقر بن محمد تقی - الخ

Ending : تاهردوبهم رسندان خانه غره ماه هست ، باقی والله يعلم

ff. 81. ll. 19. S. 8.0×5.1 "/ 20.5×13.0 cms.

Beginning :

الحمد لله الذى جعل العباده فى الارض... و بعد چون
فرمان لازم الاذعان- البغ

Ending :

جميع المؤمنين والمؤمنات

ff. 371. ll. 19. S. 10.0 × 6.4" / 25.7 × 16.3 cms.

Written in good naskh and nasta'liq, on Dhīqa'da, 1075/22 May, 1665.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound. Preserved in a portfolio.

2619

Ta. 367.

مجالس الأحرار

MAJĀLISU'L-AḤZĀN

Shiite legends concerning the deaths of the holy Prophet, his uncle Ḥamza, his daughter Fāṭima, 'Alī, Ḥasan, Ḥusain and Muslim and others. The work is dedicated to Prince Muḥammad Baland Akhtar (d. 1118/1206), son of 'Ālamgri's rebellious son, Prince Muḥammad Akbar.

The author's name given in IVC No: 377 is 'Alī Aṣghar Khān which differs from the name found in this copy on f. 2v, as 'Abdullah, surnamed 'Abdu'l-Jalīl Khān. The date of compilation appears to be before the date on which the Prince surrendered to his grandfather, i. e. 1109/1697.

The work is divided into ten Majlis and Khātima as under:-

- Majlis I, on lamenting the fate of Ḥusain, f. 4v.
- Majlis II, on the sufferings of the holy Prophet at the hands of the Quraishites and the massacre of Ḥamza on f. 30.
- Majlis III, on the passing away of the holy Prophet, on f. 40.
- Majlis IV, on the death of Fāṭima, on f. 64.
- Majlis V, on the martyrdom of 'Alī, on f. 82.
- Majlis VI, on the martyrdom of Ḥasan, on f. 113.
- Majlis VII, on the death of Muslim b. 'Aqīl on f. 127v.
- Majlis VIII, on the massacre of the two sons of Muslim, on f. 150.

Beginning :

الحمد لله الذى قال فى كتابه . . . وبعد چون نواب
هميون اشرف - الخ

Ending :

من لائق آثم كه عدل و عذاب باشد

2. Book VI. (كتاب فضل القرآن) (ff. 175v-230v) divided into 14 bābs:

Beginning : الحمد لله . . . وبعد چون فقير حقير خليل بن الغازى القزوينى - الخ

Ending : هزاران درود و هزاران سلام + زماير مجد و آتش تمام

ff. 230+1. ll. 9. S. 19.1×6.2; 6.7×3.9"/23.3×15.8; 17.1×9.8 cms.

Written in good naskh and nasta'liq, by Taqī b. Muḥammad Ḥusain a'l-Mudhahhab a'l-Qazwīnī, on Dhīqa'da, 1093/2 November, 1682.

Good 'unwān at the beginning of each kitāb. Gold ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fairly good condition. Bound.

2617

H. I. 37.

Another copy of the same containing extracts from the preceding work.

Beginning : محدثان نعم متواليه و ذاكران - من متواليه را - الخ

Ending : عملش را بضعفهای بسیار - والله سبحانه يعلم . . . عليهم السلام

ff. 141. ll. 17. S. 9.3×6.7"/23.7×17.0 cms.

Written in good naskh. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Fairly good condition. Bound.

2618

H. I. 38.

Another copy of the same, containing Book XVI (كتاب المعيشة) subdivided into 159 bābs and completed in Ramaḍān 1064/ July 1654.

2615

H. I. 35.

الصافي شرح كافي

A'Ṣ-ṢĀFĪ, SHARḤ-E-KĀFĪ

A'l-Kāfi, an Arabic collection of Shiite traditions was compiled by Abū Ja'far b. Muḥammad b. Ya'qūb b. Ishāq a'r-Rāzī a'l-Kalīnī (d. 328 or 329/940 or 941). Mullā Khalīl b. Ghāzī a'l-Qazwīnī (d. 1089/1678) wrote an Arabic commentary thereon called a'sh-Shāfi, but when Shāh 'Abbās II Ṣafawī visited Qazwīn in 1064/1653, Khalīl was requested to undertake a Persian commentary. This he did and completed the work in twenty years time.

The work is divided into thirty-three books (*vide* Ethe's India Office Catalogue, p. 1451).

This copy contains Book IV (كتاب الايمان والكفر) sub-divided into 209 bābs, but ends abruptly in Bāb 205.

This portion was compiled in Jumāda II, 1068/February, 1658.

Beginning: الحمد لله الذي ... و بعد چون بتوفيق آلهی و توجه
بادشاهی - الخ

Ending: abruptly. حسن اسلام عبار تست از اسلام بی نفاق
و بی شک در شک شرکت

ff. 410. ll. 23. S. 9.4×6.3; 7.0×3.9"/24.1×16.2; 18.0×10.0 cms.

Written in good naskh and nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fairly good condition. Bound.

Ref: E. I. O. 2667, Bk. 1221.

2616

H. I. 36.

Another copy of the same containing:-

1. Book V (كتاب الدعاء) (ff. 1v-175) divided into 60 bābs.

Beginning : کو هر مرادی غواض فکرت را از دریای حیرت - الخ
Ending : هر آئینه بحق و صول رسیده باشد بلغنی الله . . .
 اهل بته الغر الکرام

ff. 229. ll. 23. S. $10.4 \times 5.9''/26.7 \times 15.0$ cms.

Written in good naskh and nasta'liq, by Muḥammad b. Jamāl Asīrī, in Jumāda II, 1104/ February, 1693.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

Ref: Iv ASB 1116; IvC 374. Bk. 1304.

2613

Fal. 15.

- Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 294. ll. 15. S. 9.3×5.3 ; $7.1 \times 3.6''/23.8 \times 14.1$; 18.3×9.2 cms.

Written in good nasta'liq. An early 13th cent. copy.

Good 'unwān. Gold and coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Good condition. To be repaired and re-bound. Preserved in a portfolio.

2614

Fal. 16.

Another copy of the same, defective at the end.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 248. ll. 17. S. 9.7×5.7 ; $7.0 \times 3.4''/25.1 \times 14.6$; 7.9×8.7 cms.

Written in good nasta'liq. A middle 11th cent. copy.

Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound. Preserved in a portfolio.

H.I. 8.

ترجمہ عیون اخبار الرضا

TARJAMA-E-'UYŪN AKHBĀRI'R-RIDĀ

The Persian paraphrase of the popular Arabic treatise on Shiite tradition compiled by Abū Ja'far Muḥammad b. 'Alī b. Ḥusain b. Mūsā Ibn Bābūya aṣ-Ṣadūq a'l-Qummī (d. 381 or 391/991 or 1001). The translation was done by Muḥammad Ṣāliḥ b. Muḥammad Bāqir a'l-Qazwīnī in 1075/1664.

The work deals with the life and sayings of the 8th Shiite Imām, 'Alī b. Mūsā a'r-Riḍā (d. 203/818).

The work is divided into 28 bābs with which Vol. I ends.

Beginning :

حمد و سپاس خدی را که واحد قهار و عزیز
جبار و رحیم غفار است - الخ

Ending :

محمد صالح ابن محمد یاقر القزوینی فی شهر الله
الاعظم سنه خمس و سبعین بعد الف

ff. 205. ll. 14. S. 7.3 × 4.9"/18.6 × 12.4 cms.

Written in clear nasta'liq, by Ghulām Ismā'il for Mirza 'Askarī, on 26 Jumāda I, 1105/13 January, 1694, at Siālkot.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Fal. 14.

گوهر مراد

GAUHAR-E-MURĀD

A famous treatise, on Shiite tradition and theology, by 'Abdu'r-Razzāq b. 'Alī b. Ḥusain Lāhijī Qummī, who compiled this work, between 1052, and 1077/1642 and 1667, and dedicated the same to 'Abbās II Ṣafawī.

Written in ordinary nasta'liq, by Muḥammad Riḍā, for Nawwab Mutohwar Khān Khāishqī, on 3 Rabi' II, 1141/26 October, 1728, at Aḥrangābād.

Headings in red. Dampness stains. A few worm holes. Fairly good condition. Bound.

2609

Ta. 391.

Another copy of the same.

The Majlises are not specifically marked in this copy.

Beginning :

الحمد لله... أما بعد این چند کلمه از خروج
کردن مختار بن عبید الله الثقفی - الخ

Ending :

بعد از نماز ظهر شهید شد - سال هفتاد و سه
از هجرت پیغمبر صلی الله علیه وسلم گذشته بود

ff. 258. ll. 12. S. 8.3×5.1 "/ 21.8×12.8 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Sayyid Muṣṭafā Ḥusainī, on 1 Sha'bān, 1242/28 February, 1827, at Madras.

European paper. A few worm holes. Good condition. Bound.

2610

Ta. 392.

Another copy of the same, with fourteen majlis.

Beginning :

الحمد لله... خداوند اخبار محمد بن احمد
النخعی رحمه الله چنین روایت کند - الخ

Ending :

پس خروج ثابت بن مختار است و آن مصاف
عظیم و عجیب است از قصاص خواستین

ff. 212. ll. 15. S. 9.0×5.9 "/ 27.6×15.0 cms.

Written in clear naskh, by Mirza Faḍal 'Alī, on 1st Ramaḍān, 1258/6 October, 1842.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2607

Ta 389.

Another copy of the same.

This copy however has seventeen majlis, with majlis, 1 and 2, missing. Unlike other copies, therefore, this copy has fifteen majlis in all. Majlis 3-17 are on ff. 18v, 36v, 52v, 67v, 81v, 93v, 107, 115, 124, 148v, 160v, 175v, 189, 203v, and 216.

Beginning :

الحمد لله اما بعد ، خداوند اخبار

محمد بن احمد النخعي - الشيخ

Ending :

وآن مصاف عظیم و قصه عجیب است از قصاص

ff. 227. ll. 15. S. 9.5×5.5 ; 6.7×3.1 " / 23.9×13.6 ; 17.6×7.9 cms.

Written in excellent nasta'liq, in 1125/1713, at Hyderābād. An early 11th cent. copy. (First two and last one folios are by a later hand, hence the date 1125. This copy is of much earlier date).

Gold ruled borders. Headings in white on gold set in illuminated cartouches. Worm holes, partly repaired. Not bound.

Seal: Sayyid Muḥammad 'Alī Khān Bahādur. سيد محمد علي خان بهادر -

2608

Ta. 390.

Another copy of the same.

This copy has twenty-seven Majlis of which first nine are noted in red, and for others spacings are left blank.

Beginning :

الحمد لله بدانکه تسلی دل و راحت مجرد جان کرده . . .

بدانکه بن محمد احمد ز محی - الشيخ

Ending :

در ماه رمضان بروز آدینه بوقت نماز جمعه و سال شصت

و پنجم از هجرت پیغمبر صلی الله علیه وودیداد

ff. 144. ll. 15. S. 8.5×4.8 " / 21.4×12.2 cms.

MUKHTĀR-NĀMA

Religious legends pertaining to a Shiite hero, Mukhtār b. Abī 'Ubaīda b. Masū'd a'th-Thaqāfi. Born in a miraculous manner, Mukhtār rebelled in Kūfa in 66/685 to take revenge on the Massacre of Imām Husain and his noble companions in the Battle of Karbalā, fought in 61/680.

Mukhtār originated a peculiar sect amongst the Shiite extremists who defy the third son of 'Alī, Muḥammad Ibn Ḥanafiyya.

The chief narrator (خداوند اخبار) (راوي) who is given here as (خداوند اخبار) is Mukhtār himself. The work begins straight off with his birth and the author's name is given as Muḥammad b. Aḥmad Zamchī who heard from Ziyād b. Qadāma about Mukhtār's exploits. Mukhtār died in 73/692.

The work is divided into fourteen Majlis, but these are not marked in this copy.

Muhtasham's marthiyya on ff. 204v-207v.

Beginning :

الحمد لله بدان ای خدا ونداخبار که محمد زحی
علیه رحمته الله چنین گوید از زیاده ابن قدامه که - الخ

Ending :

بعد از مختار ثابت برون آمد و طلب خون وی
بکرد و آن مصافی عظیم است

ff. 204+3. ll. 15. S. 9.5×5.3"/23.9×13.1 cms.

Written in good nasta'liq, on 4 Jumāda II, 1024/21 June, 1615.

Rubrications. Badly worm eaten. Poor condition. Bound.

Seals: 1. Raff'u'd-Daulah.

رفیع الدوله

2. Muḥammad Kamāl.

محمد کمال الدرجات

Ref: IVC 378.

ff. 255. ll. 19. S. 9.8×6.1 ; 7.7×3.9 "/ 24.8×15.6 ; 19.4×9.8 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Pir Muḥammad Anṣārī of Karā Manikpūr, on 21 Jumāda I, 1062/20 April, 1652, at Multān.

Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Ink damaging paper. Poor condition. Bound.

Ref: Bk. 1218-1219.

2605

Si. 11. ترجمہ مکارم الاخلاق

TARJAMA-E-MAKĀRIMU'L-AKHLĀQ

A third translation of the same by 'Alī b. Taifūr a'l-Buṣṭāmī, who did the work for Mīr 'Alī Sher b. Sayyid 'Abdu'llah b. Mīr 'Abdu'l-Karīm a'l-Māzindarānī, vide f. 2.

The work was completed on 7 Sha'bān, 1061/26 July, 1651, vide last page; and the chronogram is given in the couplet. The date given in IvC 751 is 8 Sh'abān 1061; and in Bk. 1220, as Muḥarram, 1065.

The work is divided into twelve bābs as usual. This copy was transcribed 23 years after the translation was completed, and it has been collated as well.

Beginning : ای نام تو عنوان کتاب اخلاق + وصف تو کتابه رواق نه طاق

The translation begins, on f. 3 thus:

سیاس بی قیاس مر معبودی را که - الخ

Ending : إلى يوم القيام إنك ولي الانعام ، الصلاة على محمد وآله الغر الكرام

ff. 376. ll. 17. S. 9.4×5.4 ; 6.6×3.2 "/ 23.4×13.6 ; 16.8×8.2 cms.

Written in good shikast-nasta'liq, on 9 Rabī' I, 1084/14 June, 1673.

Good 'unwān. Margins of first two pages decorated with gold foliage. Gold and coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Repaired and re-bound.

Ref: IvC. 751; Bk. 1220.

Beginning: abruptly.

فطنت پوشیده و مخفی نماید که نامکان مناسبك

شریعت - الشيخ

The translation begins on f. 2 thus:

ابتدا میکنم بنام خدای عزای پر شمش - الشيخ

Ending: فی لیله الثامن من شهور سنة ثلاثة وستين و تسعمائة فی دار
السلطنة براءة - صانها الله عن الآفات

ff. 269. ll. 17. S. 11.9 × 7.3 ; 7.5 × 4.3" / 30.2 × 18.4 ; 19.0 × 10.8 cms.

Written in good shikast-nasta'liq, by Muḥammad Ṣādiq b. Qāḍī Zaynū'l 'Ābidīn Astrābādī, on 5, Jumāda I, 1083/14 August, 1672.

Red ruled borders. A few worm holes. Fairly good condition. To be repaired, and re-bound.

2604

Si. 12. مكارم الكرائم (ترجمة مكارم الأخلاق)

MAKĀRIMU'L-KARĀ'IM, (TARJUMA-E-MAKĀRIMU'L-AKHLĀQ)

Another translation of the same by 'Alī b. Ḥasan a'z-Zawwārī. The name of the author, the translator and the work are on f. 2. The title of the work is given here as (مكارم الكريم) which should read (مكارم الكرائم).

The work is divided into twelve bābs, and each bāb in a number of faṣals. The contents are noted on ff. 6-8.

Beginning: حمد بی حد و شکر بی عد حضرت احدى رانزد که سید
بشر و امه عشر را - الشيخ

The translation begins thus

بنام خدای بخشاینده و جود و روزی رساننده - الشيخ

Ending: یمنه و فضله و جوده و رحمته و ماتوفیقی إلا بالله علیه
توکلت و إليه أنیب

H. I. 4.

ترجمہ چہل حدیث

TARJIMA-E-CHIHAL ḤADĪTH

Another Persian paraphrase of the same tradition by 'Alī, surnamed Ḥakīm Ṣūfī, on 1 Ramaḍān, 1039/ 4 April, 1630.

This copy is defective by a folio or two at the end.

Beginning: احسن حدیثی کہ زیور زبانست حمد خداوند جهانست۔۔ الخ

Ending: abruptly. بحق جعفر صادق علیہ السلام از ارواح مؤمنان

ff. 130. ll. 17. S. 9.5×4.6 ; 5.9×2.0 "/ 24.4×11.8 ; 15.0×5.1 cms.

Written in good nasta'liq. A middle 11th cent. copy.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

Autograph and seal of Jānsipār Khān, 1174.

جان سپار خان بن رسول محمد خان - ۱۱۷۴

S.I. 13. محاسن الآداب (ترجمہ مکارم الاخلاق)

MAḤĀSINU'L-ĀDĀB, (TARJAMA-E-MAKĀRIMU'L-AKHLĀQ)

Persian paraphrase of the Arabic work, Makārimu'l-Akhlāq of Abu'n-Naṣru'l-Ḥasan b. Abī 'Alī a'l-Faḍal a't-Ṭabrisī, (d. c 548/1153), dealing with the mode of life suitable for the Shī'ites based on the examples of the lives of the holy Prophet and the Imāms. This authorship is according to Bahāru'l-Anwār of Bāqir a'l-Majlisī, whereas the one given in Miṣbāḥ by Kaf'amī as Raḍīu'ddīn Ṭabrisī is not in order.

The translation was completed in 963/1556, at Herāt, by Naṣīru'ddīn Muḥammad b. 'Abdu'l-Karīm a'l-Ansārī a'l-Astrābābī, who dedicated the work to Shāh Ṭahmāsp Ṣafawī, (930-984/1524-1576).

This copy is defective by a folio in the beginning.

2599

H. I. 15.

Another copy of the same with table of contents in the beginning.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. xiv + 390. ll. 17. S. 9.3×6.3 "/ 23.8×16.1 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by Mu'Inu'ddin 'Alī b. Shaikh Muḥammad Ḥusain Makki, on 9 Ramaḍān, 1144/24 February 1732.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound. Preserved in a portfolio.

2600

H. I. 17.

Another copy of the same with table of contents in the beginning.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. ix + 260. ll. 20. S. 12.2×7.3 "/ 31.2×18.5 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2601

H. I. 16.

Another copy of the same, with table of contents in the beginning.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. xxi + 476. ll. 11. S. 10.3×6.7 "/ 26.3×17.1 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by Muḥammad Ṣafī b. Ismā'il a'l-Mūsawī, on 25 Jumāda I, 1271/15 March, 1855.

European paper. Worm holes. Fair condition. Not bound.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by Husain b. 'Alī a'l-Jahānī, on 30 Rajab, 1099/21 May, 1688.

Gray and pink paper. Rubrications. Dampness stains. A few worm holes. Fair condition. Not bound.

2597

H. I. 18.

Another copy of the same, without table of contents.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 442. ll. 17. S. $9.8 \times 6.0^9 / 25.3 \times 15.2$ cms.

Written in good naskh. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals: 1. Ḥaidar Yār Khān.

حیدر یار خان

2. Ḥaidar Yār Khān Bahādur.

حیدر یار خان بہادر

3. Munīru'l-Mulk, 1206.

منیر الملک - ۱۲۰۶

2598

H. I. 14.

Another copy of the same. Table of contents in the beginning.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. xii + 281. ll. 20. S. 8.7×4.9 ; $6.4 \times 3.0^9 / 22.4 \times 12.5$; 16.5×7.6 cms.

Written in good naskh and nasta'liq, by Afḡal b. Ṣādiq a'r-Riḍwī, at the end of Ṣafar, 1114/ early July, 1702.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes, repaired. Good condition. Bound.

2594

H. I. 11.

Another copy of the same, with the table of contents in the beginning.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. xi+256. ll. 22. S. 12.3×7.0 ; 7.3×3.5 " 31.6×17.8 : 18.8×9.0 cms.

Gray paper. Excellent 'unwāns at the beginning of the fihrist and work. Gold ruled borders. Rubrications. Dampness stains. A few worm holes. Good condition. Bound.

2595

H. I. 12.

Another copy of the same, defective by folio in the beginning. Table of contents is missing.

Beginning : abruptly. کبری که اربعین داران معابد قدس را مرآة ضمیر - النسخ

Ending : as usual.

ff. 280+2. ll. 19. S. 10.7×7.0 " 27.4×18.0 cms.

Written in good *naskh*, and *nasta'liq*, by Muḥammad Dhulfiqār b. 'Alī b. Nuru'ddīn Muḥammad b. Muḥibb 'Alī a'l- 'Āmirī a'n-Najadī, in Dhīqa'dah 1086/January, 1676.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Collated in Ṣafar 1087/ April, 1676.

2596

H. I. 13/1.

Another copy of the same, without table of contents.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 133. ll. 29. S. 11.5×7.5 " $29. \times 6.19.2$ cms.

ff. 69+1. ll. 14. S. 6.5×3.3 ; 4.3×1.8 "/ 16.6×8.4 ; 11.0×4.6 cms.

Written in good naskh. A late 10th cent. copy.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2592

H.I. 10.

ترجمہ قطب شاہی

TARJAMA-E-QUTB SHĀHĪ

A Persian paraphrase of the Arabic *Arba'ūnā Ḥadīth*an, a collection of forty selected Shiite ḥadīth with detailed explanations, compiled in 971/1564, by Bahāu'ddīn Muḥammad a'l-'Āmilī a'l-Hārithī, (d. c 1031/1622).), and translated, in 1027/1618, by Muḥammad b. 'Alī, surnamed Ibn Khātūn a'l-'Āmilī, (d. 1059/1649).

The translation is dedicated to Sulṭān Muḥammad Qutb Shāh of Golconda, (1020-1035/1612-1626).

Table of contents at the end, defective in the beginning by one folio

Beginning: abruptly

ای از تو حدیث معرفت را بین
وی ترجمہ وصف تو تنزیل مبین
... بہتر حدیثی کہ مجلس آرایان انجمن یقین - الخ

Ending: علی رسولہ سید الانام و آلہ البررة الکرام و مسلما و مستغفرا

ff. 353+11. ll. 17. S. 12.6×7.6 ; 7.6×4.5 "/ 32.4×19.6 ; 19.6×11.6 cms.

Written in good nasta'liq, by Ḥasan Kitāb dār Khushnawīs Khānī, in 1024/1615.

Excellent 'uṣṣalāḥ. Decorations on first four and last pages. Gold and red colour. Rubrications. Headings in gold and red. Bound. Fairly good condition. Bound. Nam. ll. 15. S. 8.4×3.9 "/ 21.2×10

Written in ordinary nasta'liq, in 1203/1789. Khātūn took this work to Irān wher Abbās the Great. Headings in red. Worm holes. Fair condition. Bound. Ibn Khātūn's

2590

Ta. 374.

دوازده مجلس

DŪWĀZDAH MAJLIS

Another copy of the same Dah Majlis with two extra ones added at the end.

Beginning : اما راویان اخبار جگر سوز ناقلان آثار غم اندوز - الشيخ

Ending : بنماز مشغول شد شمر لعین صبر نکرد ، إن الله و إنما إليه راجعون

ff. 64. ll. 12. S. $8.5 \times 5.2''/21.6 \times 12.6$ cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Headings in red. Worm holes. Fair condition. Not bound.

Seals : 1. Mīr Yūsuf 'Alī Khān, 1212. میر یوسف علی خان - ۱۲۱۲

2. Mustaqīm Jung, 1208. مستقیم جنگ - ۱۲۰۸

3. Mustaqīmu'd-Daulah, 1209. مستقیم الدوله - ۱۲۰۹

4. Muḥammad 'Alī, 1234. محمد علی - ۱۲۳۴

5. Mustaqīmu'd-Daulah, 1246. مستقیم الدوله - ۱۲۴۶

2591

Man. 9.

تحفة شاهي

TUḤFA-E-SHĀHI

A collection of traditions dealing with the attributes of Ḥadrat 'Alī compiled by 'Ināyatullah, and dedicated to ḥāshī Tahmāsp Ṣafawī, (930-984/1524-1576).

Beginning احسن حدیث و کلام شکر و ثناء ملک سلاطینست - الشيخ

Ending : اسمها چون ز آسمان آمد - آمدش نام تحفة شاهي

2588

Ta. 372.

یازده مجلس

YĀZDAH MAJLIS

Another copy of the same, but with an extra majlis added after the copy was transcribed, vide ff. 141v-166v.

Beginning: الحمد لله الذي روح أرواح المحبين - الخ and then as usual.

Ending: on f. 141v مكر قيامت قايم شد ، إنا لله و إنا اليه راجعون
on f. 166v. في الحال جان بحق تسليم نمود ، إنا لله و إنا اليه راجعون

ff. 166. ll. 9. S. 8.9×5.5 ; 7.1×3.6 "/ 22.6×14.4 ; 18.2×9.0 cms.

Written in good naskh and nasta'liq, by Shaikh Faiz Muhammad, on 27 Šafar, 29 Muḥammadshāhī = 1160/30 January, 1747.

Ordinary 'unwān. Gold and coloured ruled borders. Headings in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Binding torn.

2589

Ta. 373.

Another copy of the same, but defective in the beginning with First Majlis missing.

Two short Arabic prayers, and twelve bands of Muḥtasham's marthiya at the end, on ff. 55-62v.

Beginning: abruptly. نساختند هر که از دروازه عدم ، قدم در فضای صحرای وجود نهاد - الخ

Ending: حضرت حق در قیامت حاکم ما و شماست

ff. 62. ll. 15. S. 8.4×3.9 "/ 21.2×9.8 mcs.

Written in ordinary nasta'liq, in 1203/1789.

Headings in red. Worm holes. Fair condition. Bound.

2585

Ta. 371.

Another copy of the same. Muḥtasham's marthiya is preceded by a short Arabic prayer (الحمد لله الذى جعلنا - الخ)

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

Tarkīb-e-Fātiḥa (ترکیب فاتحه) at the end.

ff. 113 + 1. ll. 10. S. 8.1×5.6 ; $6.1 \times 3.6''/20.6 \times 14.4$; 15.4×9.2 cms.

Written in good nasta'liq. A late 12th cent. copy.

'Unwān. Gold and coloured ruled borders. Headings in red. Dampness stains. A few worm holes. Fair condition. Not bound.

2586

Ta. 370.

Another copy of the same, with divisions in Majlis, and not in bābs.

Beginning: as usual.

Ending: که نفرین خدا بر شمر و بر انصار بهر ارغوان

ff. 118. ll. 11. S. $7.8 \times 4.9''/19.8 \times 12.4$ cms.

Written in ordinary script. An early 13th cent. copy. Headings in red. Worm holes, repaired. Good condition. Bound.

2587

Ta. 377.

Another copy of the same bound as a bayāḍ.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 54. ll. 15. S. $4.7 \times 8.3''/11.8 \times 21.0$ cms.

Written in ordinary nasta'liq. An early 13th cent. copy

Headings in red. Worm holes. Good condition. Not bound.

2583

Ta. 376.

Another copy of the same bound as a bayāḍ.

Beginning : مجلس اول در ذکر شهادت . . . آورده اند که در سال دهم
هجرت آنحضرت حجة الوداع ادا فرمود - الشيخ

Ending : ز دست کافر بیدین + همه اهل حرم عمکین - حسینم کو حسینم کو

ff. 48. ll. 15. S. 4.9×8.3 "/ 12.4×21.6 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Shamsu'ddīn 'Alī, on 2 Sha'bān, 1189/28 September, 1765.

Headings in red. Worm holes. Good condition. Not bound.

2584

Ta. 369.

Another copy of the same with the marthiyya of Muḥtasham Kāshī, in the beginning.

Beginning : باز این چه شورش که در خلق عالم است . . . راویان
اخبار جانسوز و ناقلان آثار غم اندوه - الشيخ

Ending : بعالم بقا و از حضيض باوج عزت پرواز نمود ، انالله و انا اليه راجعون

ff. 86. ll. 12. S. 10.4×7.2 ; 7.3×3.2 "/ 26.4×18.2 ; 18.4×10.6 cms.

Written in good nasta'liq, by Raḥīm Bakhsh, in 1193/1779.

'Unwān. Gold and coloured ruled borders. Headings in red. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals: 1. Ḥaidar Yār Khān.

حیدر یار خان

2. Sakīna Begum bint-e-Muḥammad Ja'far.

سکینه بیگم بنت محمد جعفر

Autograph of Ḥaidar Yār Khān dated 10 Rabi' I, 1083.

2582

Ha. 386.

ده مجلس

DAH MAJLIS

A collection of legends pertaining to the deaths of the holy Prophet, the Shii'te Imāms, and other saints. Although the work is based on *Rauḍatu'sh-Shuhadā* of Ḥusain Wā'iz Kāshifi, (d. 910/1505), it has been reviewed on Shii'te traditions and legends.

The name of the author, and date of compilation are not known.

The work is divided into ten bābs.

Beginning: مجلس اول در ذکر وفات... برخواطر ز اکیه عقلای عالم و ضمائر
صافیه کرده - الخ

Ending: که هست قصه آنروسیاه عالمگیر انا لله وانا الیه راجعون

ff. 75. ll. 16. S. 9.4×5.0"/23.8×12.6 cms.

Written in good nasta'liq, by Muḥammad Akbar, surnamed Muḥammad Aḥsan, Shāh 'Ālam II, on 17 Rabi' I, 1183/22 July, 1769, in his 11th Regnal Year, at Ilāhābād.

Dampness stains. Worm holes, repaired. A few folios at the end damaged. Poor condition. Bound.

Ref: IvASB. 1106; IvC. 373.

Written in clear naskh, by Nūru'ddīn Muḥammad Dhu'sh-Sharaffīn b. Muḥammad as'h-Sharīf, in Rajab, 1074/ January, 1664, Kirmān.

'Unwān. Arabic in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seal: Muḥammad 'Alī, Akbar, 1097. ز بعد مجد علی اکبر است - ۱۰۹۷

2580

M and K. 32.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 335. ll. 24. S. 12.7×7.4 "/ 32.1×18.6 cms.

Written in ordinary naskh. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

Seal: Mīr Yādgār 'Alī, 1221.

میر یادگار علی - ۱۲۲۱

2581

M and K. 60.

شرح نهج البلاغة

SHARH-E-NAHJU'L-BALĀGHAT

Another commentary on the same by 'Alī Husain b. 'Abdu'l-Ḥaqq a'l-Ilāhī a'l-Ardabēlī.

This copy left incomplete at the end by a few lines or so.

Beginning: بهترین خطبها که سخن دران معارف ما ینطق عن الهوی - الخ

Ending: شر و خیر او در رازها و فتنها کبار هست با وقار

ff. 397. ll. 19. S. 10.0×5.7 "/ 25.3×14.6 cms.

Written in ordinary nasta'liq. An early 12th cent. copy.

ff. 214. ll. 19. S. $12.4 \times 7.3''/31.2 \times 18.4$ cms.

Written in ordinary nasta'liq. An early 14th cent. copy.

European paper. A few worm holes. Good condition. Bound.

2578

M. and K. 30. تنبيه الغافلين و تذكرة العارفين

TANBIHU'L-GHĀFILĪN WA TADHKIRATU'L-ĀRIFĪN

A Persian paraphrase of a commentary on the same Nahju'l-Balāgha compiled in 955/1548, by Fathu'llah b. Shukru'llah Kāshānī (d. 978/1571).

Beginning: الحمد لله الذي هدانا لهذا وما كنا لنهتدي اولا ان هدانا الله - الخ

Ending: سلام و تحيت فرستاد برو ، سلامی بروحه تمام و کمال ،
الحمد لله بتوفيقنا على تحرير هذه النسخة الشريفة العلية العالية

ff. 324. ll. 29. S. $12.2 \times 7.6''/30.7 \times 19.0$ cms.

Written in clear nasta'liq. An early 11th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. To be repaired and re-bound.

Seals: Shaikh Muḥammad 'Alī Uwaīs, 1067. شيخ محمد علي اويس - ١٠٦٧

Ref: IVC 372.

2579

M and K. 31.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: و جدهای ایشان درین جهان در عمل کردنست و مشغول
بعبادت منان - الخ

ff. 360. ll. 19. S. $11.5 \times 6.9''/29.0 \times 17.4$ cms.

H. I. 48 (M. No. 119).

روضة الأبرار

RAUDATU'L-ABRĀR

A Persian commentary on 'the same Nahju'l-Balāghat, compiled in 947/1540 by 'Alī b. Ḥasan of Zawwārāh, a village under Isfahān. The commentator is better known in 'Irāq as Ḥāfiẓ Zawwārī. He flourished under Shāh Tahmāsp Ṣafawī (930-984/1524-1576).

Beginning :

الحمد لله على نعمائه والشكر على آلائه اما بعد محمى
نیست که بعد از سلام - النبح

Ending :

از روی لطف و شفقت اصلاح فرمایند - اللهم
اغفر لنا . . . عليهم اجمعين

ff. 300. ll. 21. S. 11.8 × 7.0; 7.0 × 3.5*/30.3 × 17.8; 17.8 × 8.9 cms.

Written in good *naskh* and *nasta'liq*, by 'Abdu'l-Laṭīf, on Shawwāl 1027/20 September, 1618, at Hyderābād, for the Library of Sulṭān Muḥammad Quṭb Shāh of Golconda.

Excellent 'unwān. Interlinear gold work, and gold foliage, on margins of ff. iv-2. Gold ruled border. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. First and last folios damaged. Fair condition. To be repaired. Bound.

Seals of Hyder Yār Khān.

حیدر یار خان

Autograph of Sulṭān Muḥammad Quṭb Shāh of Golconda. (۲) والعلی الاعلی

A rare work and a Royal copy with a full page autograph of the Founder of Mecca Masjid.

M. and K. 54.

Another copy of the same, left incomplete at the end.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly.

یعنی بکنه مصنوعات بی اشتباه زیرا که شناخته

Beginning : اصل و من وصيته عليه السلام ايها الناس انما الدنيا - الخ

Ending : ترك محبت کرده است و مفارقت اورا مى خواهم

ff. 343. ll. 15. S. 9.0 × 5.0" / 22.8 × 12.5 cms.

Written in good naskh, by Muḥammad Sharīf of Aurangābād.
An early 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Last 60 folios crumbling to pieces.
Poor condition. Bound.

Seal: Haider Yār Khān.

حیدر یار خان

Autograph of the same dated 7 Rabī' 1, 1183/11 July, 1769.

2575

M. and K. 59.

ترجمه نهج البلاغة

TARJAMA-E-NAHJU'L-BALĀGHAT

Another copy of the same, containing a collection of extracts with their Persian paraphrase. These pertain to ethical and political topics addressed to his relatives.

Beginning : اصل و من وصيته عليه السلام للحسن ابنه عليه السلام ...
این وصیتی است که بجانب پسر خود - الخ

Ending : این تفسیر از جمله غرائب تفسیر است که از
آنحضرت مقبول شده است

ff. 116. ll. 15. S. 10.6 × 6.1; 6.8 × 3.0" / 26.7 × 15.4; 17.1 × 7.6 cms.

Written in good naskh and nasta'liq, by Jawāhar Qalam, in
1170/1757.

Greenish paper. Rubrications. Gold and coloured ruled borders.
Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and
re-bound.

ff. 21. ll. 16. (diagonal) S. $6.1 \times 3.2^{\circ}/15.4 \times 8.1$ cms.

Written in clear nasta'liq, by Muḥammad Taqī a't-Tahrānī on 13 Rabī' I, 1088/6 May, 1677, at Bijāpūr.

Worm holes. Good condition. Not bound.

2573

M. & K. 28.

ترجمہ نہج البلاغہ

TARJAMA-E-NAHJU'L-BALĀGHAT

Nahju'l-Balāghat contains the Arabic sermons attributed to Ḥaḍrat 'Alī. These were collected and compiled by Raḍīu'ddīn Muḥammad Mūsawī, better known as Sayyid Sharīf Raḍī (d. 406/1015).

The Persian paraphrase is by Muḥammad Ṣāliḥ b. Ḥājī Bāqir Qazwīnī.

This copy contains Vol. I.

Beginning :

الحمد لله على ما اولانا من لسانه و انعم علينا من
آلائه و من علينا - الخ

Ending :

از دراز کردن دست بغیر خود بدرستی
که نوبراپیچی می خواهمی

ff. 180. ll. 16 S. $7.4 \times 4.7^{\circ}/18.6 \times 11.8$ cms.

Written in good naskh. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Fair condition. To be repaired and re-bound.

2574

M. and K. 29.

ترجمہ نہج البلاغہ

TARJAMA-E-NAHJU'L-BALĀGHAT

Another translation of the same by an anonymous person.

Black and gold ruled borders. Rubrications. Worm holes. Fairly good condition. Bound.

Seals: 1. Muhtaram-Jung

محترم جنک

2. Muhtaramu'd-Da'ulah, 1257.

محترم الدوله - ۱۲۵۷

3. I'tisāmu'l-Mulk.

اعصام الملك

2571

A. Nm. 660.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 161. ll. 10. S. 7.6×5.6 / 19.5×14.5 cms.

Written in clear nasta'liq, on 8 Sha'bān, 1083/19 November, 1672.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Poor condition. Not bound.

Seals: 1. Dargāh Quli.

درگاه قلی

2. Munīru'l-Mulk, 1206.

2572

Aq 22/2 and 3.

حدیث بساط

HADITH-E-BISĀT

An Arabic Saying of Ḥaḍrat 'Alī quoted by Salmān Fārsī extracted from Majma'u'r-Rā'iq alleged to have been compiled by Ibn Bābūya aṣ-Ṣadūq a'l-Qummī (d. 381 or 391/991 or 1001) pertaining to the time when people were acclaiming Ḥaḍrat 'Umar as the commander of the Faithful.

This copy contains the Arabic saying together with its Persian paraphrase.

Beginning: خبر من خزانه مولانا الإمام - امام حدیث بساط بروایتی که علماء امامیه - کثرهم الله - ذکر نموده اند - الخ

Ending: رد شان آن حضرت حرفی گفتند، بعضی هدایت یافتند و بعضی بضالت یافتند

2568

A. Nm. 657.

Another copy of the same, but without the preface.

Beginning : as usual.

Ending :

فی نظمہ ود زہر الجہنم تضحیٰ

ff. 345. ll. 15. S. 8.3×4.7 ; 6.0×2.9 "/ 21.2×12.0 ; 15.2×7.4 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Red ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals: 1. Haidar Yār Khān.

حیدر یار خان -

2. Najmu'd-Daūlah Haidar Yār Khān Bahādur Sher Jung, 1171.

نجم الدولہ حیدر یار خان بہادر شیر جنگ - ۱۱۷۱

2569

A. Nm. 659.

Another copy of the same, defective at the end.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly.

بحوایف نفس محشر و تہدید او بنشر

ff. 265. ll. 17. S. 11.5×7.4 ; 7.5×4.3 "/ 29.4×19.0 ; 19.2×11.0 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Blue ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Poor condition. Not bound.

2570

A. Nm. 658.

Another copy of the same containing the preface only.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 116. ll. 19. S. 8.6×4.9 ; $6.0 + 2.6$ "/ 22.0×12.5 ; 15.2×6.8 cms

Written in good naskh, on 19 Sha'bān 1122/2 October, 1710, during the governorship of Husain 'Alī Khān, at 'Azīmābād Patna.

Ref: R. 19-20; EIO. 2663-2666.

2566

A. Nm. 655.

Another copy of the same, with the preface. The commentary begins from f. 118v.

Profuse marginal glosses.

Beginning: as usual.

Ending:

من أهل الفناء و رزقه رحيق البقاء

ff. 436. ll. 15. S. 11.1 × 7.1; 7.4 × 3.9"/28.6 × 18.0; 18.8 × 10.0 cms.

Written in good naskh, by Abū Bakr b. Muḥammad Dā'ūd, during Ramḍān, 1019/November, 1610.

Good 'unwān. gold and coloured ruled borders. Arabic verse in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Seals of Munīru'l Mulk, 1209.

منیر الملک - ۱۲۰۶

2567

A. Nm. 656.

Another copy of the same, with the commentary from f. 83v, defective by a folio at the end.

Beginning: as usual.

Ending: abruptly

سعادت انجام امید آنکه از غیره محرم محفوظ

ff. 317. ll. 19. S. 8.5 × 5.6; 5.4 × 3.4 × 21.8 × 14.4; 13.8 × 8.8 cms.

Written in clear nasta'liq. An early 11th cent. copy.

Good medallion, on f. 1, and 'unwāns, on ff. Iv, and 83v. Gold and coloured ruled borders. Arabic text in red or blue. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2565

A. Nm 1125. فواتح (شرح دیوان حضرت علی)

FAWĀTIḤ, (SHARḤ-E-DĪWĀN-E-ḤADRAT 'ALĪ)

A Persian commentary on the Arabic Dīwān ascribed to Ḥadrat 'Alī, compiled by Ḥusain b. Mu'Inu'ddin b. Maibudhī, takhallu's Manṭiqī, (d. 890/1485).

The commentary is preceded by a lengthy prose-preface, a discourse on metaphysical and allied topics in seven fātiḥas on ff. iv-iii.

Beginning : سپاس سعادت اسام و شکر عبادت لباس
معبودی را که - البخ

Ending : فهم آن از ترجمه میتوان و أسأل الله التوفیق

The commentary begins from f. iiiv.

Beginning : الناس من جهة التمثال أ كفاء - أبوهم آدم والام حواء
مفهوم تعریف اشار تست بنوعین و تمیز معنی در ذهن سامع - البخ

Ending : بصدق تکرار این دعا کند مجربست بهر حاجت که بخواند

ff. 403. ll. 17. S. 8.1 x 5.4; 5.2 x 3.3"/20.6 x 13.8; 13.2 x 8.4 cms.

Written in good naskh, in 890/1485.

Good 'unwāns on ff. iv and iiiv, and a medallion on f. i. Gold and coloured ruled borders. Arabic verse in red or blue. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals : 1. Shaikh Muḥammad 'Alī Uwais, 1067. ۱۰۶۷ - شیخ محمد علی اوایس

2. Ḥaidar Yār Khān.

حیدر یار خان

H.I. 47, (M. Nos. 208.) ترجمه انوار العقول

من اشعار وصی الرسول

TARJAMA-E-ANWĀRU'L-'UQŪL MIN 'ASH'ĀRI WAṢĪI'R-RASŪL

A Persian translation of the Arabic work, *Anwāru'l-'Uqūl min Ash'āri Waṣīi'r-Rasūl*, containing prose and poetry ascribed to Ḥaḍrat 'Alī, the fourth Orthodox Khalīf and the first Shiite Imām, (d. 41 661), collected by Abu'l-Ḥasan a'l-Fijkarri, Abu'l-Barakāt Hibatu'llah b. Muḥammad a'l-Ḥusaini and others; and edited by Quṭbu'ddīn a'r-Rāmandī. The interlinear Persian paraphrase is by an anonymous person.

Beginning. الحمد لله الذي دانت له عزه الجبابرة - الشيخ ...
مر خدای را آنکه ذایل شدند برای عزوی او.

The poetry ...

الغاس من جهة النحل ا كفاء - او هم آدم و الالم حواء
بصورت مرد ما کفو - همه فرزندان آدم و آن حوا

Ending: يا اهل العالمين اغفر لنا كل الخطايا - يا اهل المؤمنين فانظر اليها معصية

f. 235. ll. 15. S. 8.2 x 4 7/8 / 21.2 x 12.0 cms.

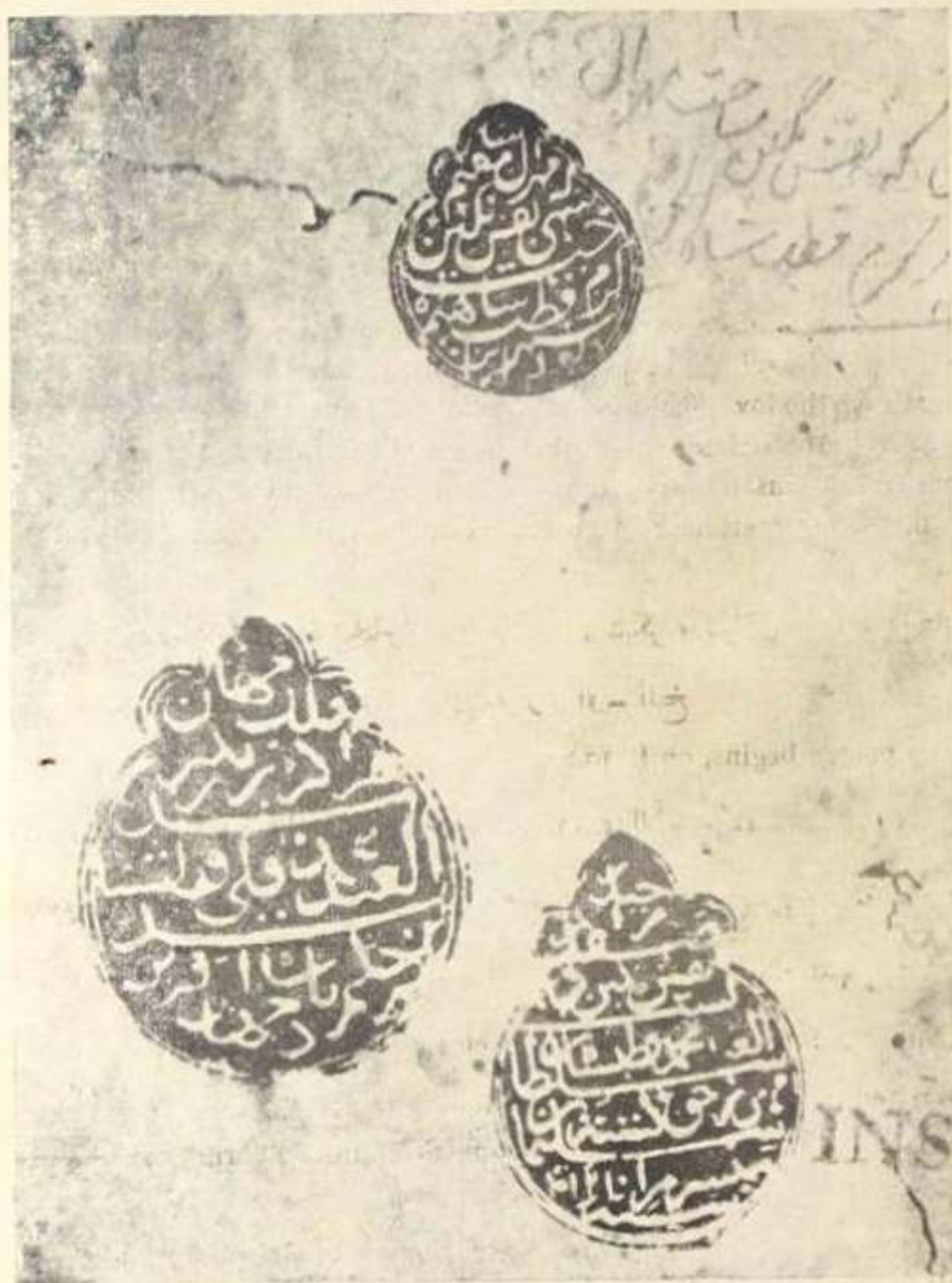
Written in good naskh and nasta'liq, on 25 Ṣafar, 918/12 May. 1512.

Persian paraphrase in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

This copy once adorned the Royal library of Golconda, and bears the seals of three Quṭb Shāhī kings

Seals: 1 Ibrāhīm Quṭb Shāh. شاهی که نقش نگین ساخت مهر آل مقیم
بود سپهر کرم قطب شاه ابراهیم

2. Muḥammad Qūlī Quṭb Shāh. ملك جهان مرا که بزیر نگین شده
از حکم بادشاه جهان آفرین شده



A Royal codex bearing Royal seals (with couplet) of the
 3 Golconda Kings—1, Ibrâhim Quṭb Shâh,
 2. Muḥammad Qulî Quṭb Shâh and
 3. Muḥammad Quṭb Shâh
 respectively.

Beginning : الحمد لله ... أما بعد فإن أضعف عباد الله و أضعف خلقه - الخ

Ending : باری تعالیٰ اورا هزار پیراھن ار آتش

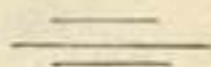
ff. 81. ll. 11. S. $7.1 \times 4.8''/17.8 \times 12.0$ cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq. An early 13th cent. copy.

Rubrications. Worm eaten. Poor condition. Preserved in a portfolio.

Seal of Sayyid Muḥammad 'Alī Khān Bahādur, 1221.

سید محمد علی خان بہادر - ۱۲۲۱



Beginning: as usual.

Ending: abruptly. ويكره كلام الفضول والشغب والخصومة في المسجد

ff. 96+1. ll. 15. S. 9.1×6.2 ; 5.4×3.5 "/ 23.0×15.6 ; 13.6×9.0 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Red ruled borders. Worm holes. Fair condition. Bound.

2562

Ha. 7. اعلام بفضائل يوم هو سيد الأيام

E'LĀMUN BI FAḌĀ'ILA YAUMIN HUWA SAYYIDU'L-AYYĀM

A collection of Traditions on the attributes of Friday, compiled in 1289/1872, by Sayyid Wajihu'ddīn Aḥmad b. Abū Muḥammad Sayyid Shah Aḥsanullah Qādirī. The title is the chronogram for the year of compilation.

The work is based on forty aḥādīth and several other works on Fiqh, a list of which is given in the *khātimah* on ff. 97v-98.

Beginning: جائيكه جامع جميع اوصاف كماله و صفات جلاله و بحالیه - البخ

Ending: و آله و صحبه الطيبين الطاهرين برحمتك يا أرحم الراحمين

ff. 99. ll. 13. S. 8.2×5.1 "/ 20.6×13.0 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by the author, in early Ṣafar, 1290/April, 1873, at Hyderābād.

European paper. Rubrications. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

An autograph copy.

2563

Ha. 10. ترجمة احاديث نبوی

TARJAMA-E-AḤĀDĪTH-E-NABAWI

A collection of several Traditions with their Persian paraphrase, compiled by an anonymous person.

Beginning :

الحمد لله بنده عاصی دوست محمد قادری

ولد دوست بار خان - البخ

Ending :

نباران حضرت شاه فرستادند - البخ

ff. 107+3. ll. S. 88 × 5.0"/22.2 × 12.6 cms.

Written in clear shikast, on 9 Dhiḥajja, 1193/18 December, 1779, at Chinnāpatan, Madras.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2560

Ha. 29.

بستان المحدثین

BUSTĀNU'L-MUḤADDITHĪN

A bibliography of works on Hadith, and their commentaries together with the lives of the Muḥaddithīn—Traditionists—and commentators, compiled by 'Abdu'l-'Azīz Muḥaddith Dihlawī, (d. in 1239 or 1248/1824 or 1833).

Beginning :

الحمد لله حق حمده این رساله ایست مسمی به

بستان المحدثین که - البخ

Ending :

مثل امتی مثل المطر لا یدری اوله خیر ام آخره

ff. 126. ll. 14. S. 8.5 × 5.5 ; 6.2 × 3.8"/21.6 × 13.8 ; 15.6 × 9.6 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy.

European papers of different colours. Coloured ruled borders. A few worm holes. Good condition. Bound.

Seal of Abu'l-Makārim, 1291.

ابوالمکارم عفا عنه - ۱۲۹۱

Printed in Delhi in 1898.

2561

Ha. 28.

Another copy of the same, but defective at the end.

2558

Aq. 57/2.

ثمره گلزار ایمان

THAMRA-E-GULZĀR-E-IYMĀN

A collection of forty Traditions with their Persian paraphrase, and short notes thereon compiled, in 1175/1761, by Faiḍ. These are in praise of Ḥaḍrat 'Alī, Fāṭima, Ḥasan and Ḥusain according to Sunnite beliefs.

The date of compilation and the title are given at the end.

Beginning :

حدیثی کہ ناطقہ محدثان شیرین بیان را رطب
اللسان سازد، حمد خداوند یست کہ - الخ

Ending :

رسیده مصرعی از غیب در گوش - کہ آمد ثمره گلزار ایمان

ff. 21. ll. 14. S. 8.3 × 4.9" / 21.0 × 12.2 cms.

Written in good naskh and shikast-nasta'liq, in Rajab, 1176 January, 1763.

Rubrications. Dampness stains. Good condition. To be re-bound.

A rare work.

Seals: 1. Sayyid Ḥusain 'Alī Bukhārī, 1206. سید حسین علی بخاری - ۱۲۰۶

2. Wazīr 'Alī Bukhārī, 1221.

وزیر علی بخاری - ۱۲۲۱

3. The same, 1235.

وزیر علی شد فدای حسین - ۱۲۳۵

2559

Ha. 18.

رساله حدیث

RISĀLA-E-ḤADĪTH

A collection of Traditions with their Persian paraphrase compiled by Dost Muḥammad Qādirī b. Dost Yār Khān.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2557

H. 23.

مخازن المعروف

MAKHĀZINU'L-MA'RŪF

Another commentary on *Mishkātu'l-Maṣābiḥ* like *Ashī'atu'l-Lama'āt*, compiled in 1116/1705, by *Khwāṣ Khān a'l-Hanafī a'l-Qādiri a'l-Madanī*.

This copy contains Vol. IV, Kitābs 18 to 20.

Kitāb 18, on manners (الآداب) on f. lv.

Kitāb 19, on slaves (الرقاق) on f. 101.

Kitāb 20, on temptations (الفتن) on f. 153v.

This copy is defective at the end by five or six folios, ending abruptly in the section dealing with the account of Yeman and Syria.

باب ذکر اليمن و الشام

Detailed table of contents in the beginning.

Beginning : طیبی گفته که ادب اسمی است که بر هر ریاضت مجوده که
انسان در کسب فضیلتی - الخ

Ending : abruptly ما را دعا کن، گفت: دعای من همه مسلم و مسلم را

ff. xiii+418. ll. 21. S. 13.7×9.2; 10.7×6.1"/34.8×23.4; 27.0×15.4 cms.

Written in good *naskh* and *nasta'liq*. An early 12th cent. copy.

Good 'unwān. Coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Ref: E.I.O. 2660 2662.

3. Names of the ancestors of the Holy Prophet upto 'Alī, on pp. 8 and 9.

4. Arabic qit'a of Ḥaḍrat 'Alī, pp. 13.

5. Sayings of Ḥaḍrat 'Alī, on pp. 15, 18, 19, 20, 21.

Beginning: قال النبي صلى الله عليه وآله وسلم : عنوان صحيفة المؤمن من حب علي
ابن أبي طالب يعني كلفت نبي مرثاه ديوان ايمان - الخ

Ending : يا علي نشنود نوى بهشت و در نيايد درد

ff. 25. ll. 7. S. 9.7×6.2 ; 5.8×3.3 "/ 24.6×15.8 ; 14.6×8.4 cms.

Written in excellent calligraphic nasta'liq, by the compiler, for Mirza'i Mirza Mubārak Rū. A mid 11th cent. copy.

Excellent 'unwān. Interlinear gold work on pp. 2 to 5, 8, 9, 12, 13, 16, 18 to 25, and floral designs on other pages. Margins renewed. Dampness stains. A few worm holes. Fair condition. Bound.

This copy is defective in the middle.

2556

Ha. 17. الرسالة في علم أصول الأحاديث

A'R-RISĀLATU FI 'ILMI UṢŪLI'L-AḤĀDĪTH

A tract on Uṣul-e-Ḥadīth, technical terms, compiled by 'Abdu'l-Awwal b. 'Alāu'l-Husainī, at the instance of his friend, Abu'l-Faḍl Shaikh Yūsuf b. 'Alīu'ddīn. It is divided into a few short faṣls.

Miscellaneous notes on last two folios.

Beginning : الحمد لله رب العالمين و الصلاة والسلام الأتمان الأكرمان ...
أما بعد، إني مذكور بدين فقير عبد الأول - الخ

Ending : و هر یکی تصنیفات عظیم النسخ دارند - رضی الله
تعالی عنهم أجمعین

ff. 14+2. ll. 21. S. 9.4×5.4 "/ 23.8×13.8 cms.

Written in good shikast-nasta'liq, on 9. Šafar, 1106/19 September, 1693.

Names of the Fourteen Immaculates transcribed by Ḥāfiẓ Nūrullah in the beginning.

Beginning : قال النبي صلى الله عليه وآله واصحابه وسلم : خير الحديث كتاب الله ... يعنى بهترين كلام قرآن مجيد است - الخ

Ending : إن حبنا واهل البيت ليحط الذنوب ... بتحقيق دوستى من و فرزندان دور ميكند معاصى را از بند گان عاصى چنانچه دور مى كند باد تند بر كهرا را از درخت

ff. i+18. ll. 5. S. 10.0×6.5; 5.8×3.4"/25.4×16.4; 14.6×8.6 cms.

Written in excellent calligraphic nasta'liq, by Muḥammad Ṣāliḥ a'l-Ḥusainī b. Mir 'Abdu'llah Mushkīn Qalam. A mid 11th cent. copy.

Excellent 'unwān Interlinear spacing painted in gold. Gold and coloured ruled borders. Golden foliage on the margins. A few worm holes. Good condition. Bound.

An Imperial codex.

Seals: 1. Qābil Khān. قابل خان خاه زاد عالمگیر بادشاه -
2. Arshad Khān. ارشد خان خاه زاد عالمگیر بادشاه -

*Arḍdāshts and Taḥwīlnāmas of the Imperial Librarians.

2555

Ha. 12. رساله حدیث در فضیلت حضرت علی

RISĀLA-E-ḤADITH DAR FAḌĪLAT-E-ḤADRAT 'ALĪ

A collection of a few Traditions pertaining to the attributes of Ḥadart 'Alī together with Persian rubā'is etc. Compiled by Muḥammad Ṣāliḥ a'l-Ḥusainī Shāh Ni'matullhī, whose takhallus was Kashfī, (d. 1060/1615). He was an excellent calligrapher, and the son of Mushkīn Qalam Jahāngīrshāhī. This copy and the preceding one are transcribed by him.

The contents are as under:-

1. The sayings of the Holy Prophet, on pp. 2-5, 9, 12, 13, 24, 25.
2. Rubā'is by the compiler, on pp. 6, 7, 11, 14, 16, 17, 22, 23.

Beginning : بسم الله والحمد لله والصلاة والسلام على رسول الله
و على آله واصحابه محي دين الله اما بعد اين صحيحه كرامت - الخ

Ending : و عايشه در حجره خود بودي كه متصل مسجد بود
ومي داد آنحضرت عايشه را سر خود - و الله اعلم

ff. 402. ll. 25. S. 14.6×9.6 ; 11.3×6.9 */ 36.8×24.3 ; 28.7×17.3 cms.

Written in ordinary nasta'liq, on 14 Shawwāl, 1196/22 September, 1782.

Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Seal of Muhammad 'Abdu'l-Qāder. محمد عبد القادر قدوي آصفجاء -

Ref : E.I.O. 2659.

2553

Ha. 15.

Another copy of the same containing commentary on two Kitābs (الغسل و الصلاة) on ff. Iv and 34v respectively.

Beginning : در روايت غير او در كتاب مقدم است بر بسمه - الخ

Ending : در آخرت مردود و مطرود شدند از رحمت حق -

ff. 90. ll. 19. S. 9.9×6.0 ; 7.7×3.9 */ 25.0×15.2 ; 19.6×9.8 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Rubrications. Red ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2554

Ha. 11.

چهل حديث

CHIHIL ḤADĪTH

A collection of forty Traditions with their Persian paraphrase by an anonymous person.

Beginning: abruptly.

بر دستار و پراهن و جبه و کلاه و ردای - البخ

Ending: as usual.

ff. 11. ll. 15. S. 7.5×4.5 "/ 18.8×11.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Fair condition. Preserved in a portfolio.

2551

Aq. 147/3.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 9. ll. 17 to 22. S. 7.6×4.4 "/ 19.2×11.0 cms.

- Written in ordinary shikast-nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Worm eaten. Poor condition. Not bound.

2552

H. 14. تیسیر القاری فی شرح صحیح البخاری

TAISIRU'L-QĀRĪ FI SHARḤ ṢAḤĪḤI'L-BUKHĀRĪ

A Persian commentary, compiled, in 1055/1645, by Nūr Muḥammad, surnamed Nūru'l-Ḥaqq at Turk a'l-Bukhārī Shāhjahānābādī b. 'Abdu'l-Ḥaqq Muḥaddith Dihlawī (d. 1073/1662), on the famous collection of Traditions, called Jāmiu's-Ṣaḥīḥ of Imām Abū 'Abdi'llah Muḥammad b. Ismā'il a'l-Bukhārī a'l-Jūfī (d. 256/870).

This work is divided into four volumes of which this copy is vol. I. It is dedicated to the Mughal Emperor Shāh Jahān.

This volume was completed on Ramaḍān 'Id Day in 1055/ 10 November, 1645.

2548

Ha. 20.

Another copy of the same. Table of contents in the beginning.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. iii + 433. ll. 21. S. $11.5 \times 8.0^{\circ}/29.1 \times 20.1$ cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. A few folios at the end damaged. Fair condition. Bound.

2549

Ha. 1.

رساله در اداب لباس

RISĀLA DAR ĀDĀB-E-LIBĀS

A collection of Traditions with their Persian paraphrase dealing with the dress of the Holy Prophet, compiled by the same.

It is part of Dastūr-e-Fa'īdī'n-Nūr vide Ethe No. 2658.

Beginning: بعد حمد و ستایش الهی و پس نعت و تحیت حضرت رسالت
پیامی اظهار نموده می آید که - الخ

Ending: درین اجر بسیار و ثواب بیشمار است و صلی الله علی خیر
خلقه و الحمد لله رب العالمین

ff. 11. ll. 13. S. 8.7×5.7 ; $6.6 \times 3.7^{\circ}/21.9 \times 14$; 16.6×9.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Ghulām Qādir, in 1262/1846.

Coloured [ruled] borders. Rubrications. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

Ref: E.I.O- 2658

2550

F. 37.

Another copy of the same, defective by a folio in the beginning.

Ha 21.

شرح سفر السعادة

SHARH SUFARU'S-SA'ADAT

(صراط مستقيم. Şirât-e-Mustaqīm.)

A Persian commentary by the same on the Arabic work (Sufaru's-Sa'adat) of Muḥammad b. Yaḳūb b. Muḥammad b. Ibrāhīm, surnamed Majdu'ddīn Firūzābādī d. (817/1415), which is a collection of Traditions dealing with the teachings and customs of the holy Prophet.

Beginning

مبجالتك لا علم لنا لا ما علمتنا لك أنت العليم الحكيم ...
همچنانکه محمد و سپاس صانع پروردگار - الخ

Ending :

شرح هذا الكتاب المستطاب - والله أعلم بالصواب
وإليه المرجع والمآب

ff. 62. ll. 25. S. 13.6 × 7.8ⁿ/34.4 × 19.8 cms.

Written in clear naskh. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fairly good condition. Bound.

Seals: Muḥammad Ghīyāth Khān Bahādur, 1146. محمد غیاث خان بهادر - ۱۱۴۶

Ref: E I.O. 2656-2657; Iv ASB 1002.

Ha 22.

Another copy of the same.. List of contents in the beginning.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. viii+334. ll. 25. S. 12.0 × 8.7ⁿ/30.2 × 22.0 cms.

Written in clear nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

Epilogue on last page (f. 846) in which the author says that this copy was transcribed at the end of 1044/Middle 1635 and was collated in the same year. These lines were written on 1st Rabī' I, 1045/5 August, 1635.

ff. 846. ll. 27. S. 10.8×6.5 ; 7.3×3.4 "/ 27.5×16.3 ; 18.4×8.6 cms.

Written in clear nasta'liq, by Shaiḥ Mahmūd (?), in 1053/1643.

'Unwān. Gold and coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fairly good condition. To be repaired and reset in existing covers.

2544

Ha 25.

Another copy of the same. Part III, (Kitābs IX to XVII). This copy is left incomplete in Kitāb XVI, on Dress (اللباس) which begins on f. 180.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly.

رعایت مضیات بمن است که در وی

سه بار کشیدی وابتدا و انتها بوی کرد

ff. 205. ll. 27. S. 12.7×7.3 "/ 32.1×18.5 cms.

Written in good nasta'liq. An early 17th cent. copy.

Rubrication. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Binding damaged.

2545

Ha. 24.

Another copy of the same, containing Part IV (Kitābs XVIII to XX).

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 583. ll. 25. S. 12.7×8.1 ; 9.5×4.4 "/ 32.0×20.4 ; 24.0×12.2 cms.

Just like preceding one.

Kitāb 15, on Food (کتاب الأَطعمه), on f. 283v.

Beginning :

در بیان انواع طعامها که آنحضرت

صلی الله علیه و سلم خورد - الشيخ

Ending :

این را سابقه گفته ایم فلیتذکر

Kitāb 16, on Dress (کتاب اللباس), on f. 316.

Beginning :

مصدر است بمعنی ملبوس چنانکه کتاب بمعنی مکتوب - الشيخ

Ending :

و برین تقدیر که به از جنس سبع نباشد

والله أعلم رواه الدارقطنی

Kitāb 17, on medical treatment and magic (کتاب الطب و الرق), on f. 358v.

Beginning :

طب - بحركات ثلاثة علاج کردن ، و بفارمی - الشيخ

Ending :

وقت سعادت و احابت است ، رواه الترمذی و الدارمی

Vol. IV

Kitāb 18, on manners (کتاب الآداب), on f. 376v.

Beginning :

طیبی گفته ادب اسمی است که واقع میشود - الشيخ

Ending :

نمی دارند ایشانرا مکر بیوسن و چپیدن را بوی

Kitāb 19, on Slaves (کتاب الرقاق), on f. 509.

Beginning :

بکمر را بجمع رفیق چنانکه صغار و کبار - الشيخ

Ending :

سخن خوش آمد او را یعنی عمر بن عبد العزیز -

رواه أحمد و البيهقي في دلائل النبوة -

Kitāb 20, on Temptations (کتاب الفتن), on f. 562.

Beginning :

فتن جمع فتنة مثل محن جمع محنة - الشيخ

Ending :

بحرمت النبی آخر الزمان صلی الله علیه و علی

آله و اصحابه ذو الفضل و الإحسان

Kitāb 9, on commercial dealings (کتاب البيوع) on f. iv.

Beginning : بیع گاهی بمعنی عقد آید که اثر آن بر آمدن مالست -- الخ

Ending : يوم القيامة روز محشر -- رواه ابن ماجه و رواه

البیهقی فی شعب الایمان عن ابی هريرة رض -- الخ

Kitāb 10, on marriage (کتاب النکاح), on f. 56v.

Beginning : نکاح در اصل بمعنی ضم و جمع است و اطلاق آن بروطی -- الخ

Ending : از کثرت سماع او آن حضرة این را -- رواه الترمذی و ابن ماجه
وقال الترمذی ، هذا حديث حسن

Kitāb 11, on Penal Laws (کتاب الحدود) on f. 144.

Beginning : حد در اصل بمعنی منع است از جهت منع کردن -- الخ

Ending : بر فاسقین و جاهلین -- كما لا يخفى -- والله اعلم

Kitāb 12, on authority and justice (کتاب الامارة و القضاة), f. 167v.

Beginning : امارت فرمان فرمای کردن و اسیر ساختن
و إمارة بکسر همزة -- الخ

Ending : مدعی و مدعا علیه بنشینند پیش حاکم -- رواه احمد و ابو داؤد

Kitāb 13, on Holy War (کتاب الجهاد)

Beginning : الجهاد : بفتح و ضم -- طاقت و مشقت ، و جهاد - بکسر -- الخ

Ending : و باطیل که نیست وثوق و اعتماد بران --
والله اعلم بحقیقة الحال

Kitāb 14, on Hunting games and sacrifices (کتاب الصيد و الذبائح), on f. 264v.

Beginning : صید در اصل بمعنی شکار کردن است -- الخ

Ending : بجهة تغافل بحلاوت اخلاء مولود

Ending : نه سؤال از تقديم و تاخير قبائل - رواه احمد و الترمذی و ابو داؤد

Kitāb 6, on Non-obligatory Prayers (کتاب الدعوات) on f. 129.

Beginning : کتاب الدعوات - باید دانست که در قرآن و حدیث امر
بدعا و اقم و ظاهر - الخ

Ending ; شك نیست که وی افضل خواهد بود - و الله اعلم - رواه البيهقي

Kitāb 7, on Attributes of Allah (اسماء الله تعالى) on f. 147.

Beginning : کتاب اسماء الله تعالى - بدانکه اسماء الله توییقی است
یعنی موقوفست - الخ

Ending : این اهل و ولد و مال گمراه و گمراه کننده باشد رواه الترمذی

Kitāb 8, on Pilgrimage Rites (کتاب المناسك) on f. 233.

Beginning : کتاب المناسك - جمع منسك بفتح سین و كسر ان بمعنی
مصدر و زمان و مكان

Ending : که حکم عمره و حج دارد ، رواه البخاری -

ff. 308, ll. 25. S. 12.5 × 8.2; 9.5 × 4.9"/31.6 × 20.6; 24.0 × 12.4 cms.

Written in good naskh. A late 12th cent. copy.

'Unwān. Gold and coloured ruled borders. Arabic text in red.

Worm holes, repaired. Good condition. Bound.

2542

Ha. 6.

Another copy of the same Vol. II.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 239, ll. 20. S. 11.5 × 7.9"/29.0 × 19.8 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by 'Ināyatullah, in Rabi I, 1127/
March, 1715.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Good condition.
Bound.

2543

Ha. 4.

Another copy of Vol. III and IV, containing twelve Kitābs, as
under.

ff. 585. ll. 25. S. 12.2×8.5 ; $9.4 \times 4.8^*$ / 31.0×21.4 ; 23.8×12.2 cms

Written in good naskh. An early 12th cent. copy.

'Unwān. Gold and coloured ruled borders. Arabic text in red.
Worm holes, repaired. Good condition. Bound.

Ref: EIO. 2654-2655; IvASB. 997-1001.

2540

Ha. 5.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 372. ll. 27 or 28. S. 12.6×8.7 ; $9.4 \times 5.4^*$ / 32.0×22.0 ; 23.8×13.6 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Sher Muhammad, in 1091/1680.

Good 'unwān. Coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. A few worm holes. Good condition. Bound.

2541

Ha. 3.

Another copy of the same, Vol II, a continuation of the preceding work.

This copy contains six Kitābs.

Kitāb 3, on Poor Rate (كتاب الزكاة) on f. Iv.

Beginning: كتاب الزكاة - زكاة در لغت بمعنی نما و تطهیر آید و زكاة
موجب نما - البخ

Ending: حج نفل بود فافهم و الله اعلم

Kitāb 4, on Fasting (كتاب الصوم) on f. 56v.

Beginning: كتاب الصوم - صوم و صيام در لغت بمعنی امساک و در شرح
عبارت است - البخ

Ending: روایت کرده اند از جریر رواه ابن ماجه

Kitāb 5, on the attributes of the Glorious Qur'ān (كتاب فضائل القرآن) on f. 195.

Beginning: كتاب فضائل القرآن - فضائل جمع فضیلت مشتق از فضل - البخ

M and K 52.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 205. ll. 14. S. 6.9×4.6 / 17.4×11.7 cms.

Written in good naskh and nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

Ha. 2 اشعة الالامعات في شرح المشكاة

ASHI'ATU'L-LĀME'ĀT FI SHARHI'L-MISHKĀT

A commentary on Mishkātu'l-Maṣābiḥ of Wallu'ddīn Abū 'Abdu'l-lah Muḥammad a't-Tabrizī, compiled in 777/1336, which in itself is a commentary and a revised edition of Maṣābiḥu's-Sunnat, the famous collection of 4179 aḥādith collected by Abū Muḥammad a'l-Ḥusain b. Mas'ūd a'l-Farrā a'l-Baghawī, (died in between 510-516/1116-1122).

This commentary was compiled by 'Abdu'l-Ḥaqq b. Saifu'ddīn a't-Turk a'd-Dihlawī, (d. 1052/1642), in twenty kitābs spread in four volumes, during 1019-1025/1610-1616.

This copy contains first two kitābs.

Kitāb 1, on Faith (كتاب الإيمان) on f. iv.

Beginning: as usual.

Ending: فرموده آنحضرت که جمع کند میان دو نماز یک غسل تمام شد

Kitāb 2, on Obligatory Prayers (كتاب الصلوة) on f. 226.

Beginning: كتاب الصلاة، صلاة در اغت بمعنی

دعا و رحمت و استغفار آمده و نماز را صلاة

Ending: تمام شد كتاب الصلاة بفضل خدا و كرم وی

صلی الله علی خیر خلقه . . . بالله العلی العظیم

Waṣl 4, on manners of the rich, on f. 145v.

Waṣl 5, on manners of the artisans, f. 153v.

Aṣl VII, on times, places, dress, food and drinks, (اصل سابع در آنچه
تعلق بازمنه و امکانه و البسه و اطعمه و اشربه دارد)
in five waṣls :-

Waṣl 1, on attributes of certain times, on f. 155v.

Waṣl 2, on attributes of certain places, on f. 169v.

Waṣl 3, on dress, on f. 173v.

Waṣl 4, on food, on f. 174v.

Waṣl 5, on drinks on f. 175.

Aṣl VIII, on miscellaneous ḥadīth on different topics, (اصل ثامن در احادیث
متفرقه از هر نوع)
in five waṣls :-

Waṣl 1, on health, on f. 176v.

Waṣl 2, on the Day of Judgement, on f. 181v.

Waṣl 3, on the stages after death, on f. 187.

Waṣl 4, on marriage, on f. 194.

Waṣl 5, on travelling, on f. 200v.

Beginning : الحمد لله زين سماء شرف السيادة باضواء آثار . . اما بعد
بفتحواي اين حديث شريف - الخ

Ending : هر ساعتی دولتی تازه ده دولت دهی بیش از اندازه ده

ff. 202. ll. 16 or 17. S. 7.7×4.1 ; $58. \times 2.0$ / 19.4×10.2 ; 14.6×5.0 cms.

Written in good naskh and nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Good 'unwān. Coloured ruled borders. Rubrications. Margins renewed. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

A rare work.

Waṣl 4, on the attributes of the holy Prophet, his family and companions, on f. 13v.

Waṣl 5, on the attributes of the divines, on f. 26.

Aṣal II, on Prayer, etc., (أصل دوم در عبارت و آنچه متعلق بدان است)
five waṣls, call for prayer, mosques and congregation.

Waṣl 1, on Prayers, (نماز - اذان - شرف مساجد و فضیلت جماعت)

Waṣl 2, on Fasting (روزه), on f. 42v.

Waṣl 3, on Poor-rate (زکاة), on f. 97v.

Waṣl 4, on Pilgrimage (حج), f. 53v.

Waṣl 5, on Holy War (جهاد), on f. 58v.

Aṣal III, on attributes of the holy Qur'ān in five waṣls:

أصل سوم در فضائل قرآن و بعضی اردعوات و غیره

Waṣl 1, on attributes of the holy Qur'ān, on f. 62.

Waṣl 2, on praise for Allah (تسبیح), on f. 68v.

Waṣl 3, on Dhikr (ذکر) on f. 71.

Waṣl 4, on invocation (دعا), on f. 75v.

Waṣl 5, on prayers based on traditions, (دعوات مأثورہ), f. 77v.

Aṣl IV, on good manners (أصل چهارم در مکارم اخلاق و محاسن اوصاف)
in five waṣls. The waṣls are not given titles. These are on ff. 79v, 112 and 116v.

Aṣl V, on bad manners (أصل پنجم در اوصاف رویه و رذائل اخلاق)
in five waṣls on ff. 119, 123v, 128, 131, and 132.

Aṣl VI, on manners of kings (أصل ششم در آداب اهل سلطنت و امارات
و آرباب علم و اصحاب غنا و ثروة پيشه و ران و ما يتعلق بها)
in five waṣls:

Waṣl 1, on kingly manners, on f. 134v.

Waṣl 2, on manners of the Amirs, vaziers and high people, on f. 138v.

Waṣl 3, on manners of the learned of high status, on f. 143.

Beginning :

وهو الفتح العليم - الخ

Ending : abruptly.

التعظيم والاحترام وانك مقتدای أهل مدینه

ff. 95. ll. 17. S. $7.9 \times 5.3''/10.9 \times 13.3$ cms.

Written in good naskh. A late 11th cent. copy.

Text in red. Dampness stains. A few worm holes. Fairly good condition. To be repaired.

A rare work.

Seals : Abu'l-Fath Muḥammad Akramu'ddīn, 39.

أبو الفتح محمد اکرم الدین - ۳۹

Abu'l-Qāsim Arḥamūddīn Maḥmūd.

أبو القاسم أرحم الدین محمود

2537

Ha. 16.

الرسالة العلية في الاحاديث النبويه

A'R-RISĀLATU'L-'ALIYYAH FI'L-AḤĀDITHI'N-NABAWIYYAH

A collection of forty Traditions with elaborate notes, and illustrated by anecdotes, compiled by Ḥusain b. 'Alī a'l-Wā'iz a'l-Kashif, (d. 910/1505).

The work is divided into eight aṣls and each aṣl subdivided into five waṣls.

The work is dedicated to Kāshif's patron, 'Alī Sher.

The contents are as under :-

Preface, on f. Iv.

Aṣl I, on Unity of God, أصل اول در توحيد و ايمان و اسلام و نعت و ذکر اولياء
the faith, Islām, praise for the Holy Prophet and the
divines, on f. 3, in five waṣl.

Waṣl 1, on Unity of God, on f. 3.

Waṣl 2, on Faith, on f. 5v.

Waṣl 3, on Islām, on f. 12.

Tas. 82.

رياض عباسی

RIYĀD-E-'ABBĀSĪ

A Persian commentary on the Arabic work, "Al-Munabbihāt 'ala Isti'dād" of Shihābuddīn Abū'l-Faḍl Aḥmad b. Alī b. Muḥammad a'l-Kinānī ash-Shāf'ī, better known as Ibn Hajar a'l-Asqalānī (d. 832/1449) of which is a collection of short aḥādīth and invocative prayers for use in the namāz.

The commentator is Najmu'ddīn b. 'Abbās a'l-'Abbāsi a'l-Hanafī.

Beginning :

الحمد لله وسلام على عباده الذين اصطفى .

بعد ازین احقر الناس بحم الدين بن عباس - الخ

Ending :

و دردمندان سبیل صدق رادوای بخشیده اند

- ندا در دام بفضلی رب الرحیم می آتی می کتاب کریم

ff. 101. ll. 15. S. 9.3×5.8 ; 6.7×3.6"/23.6×14.5 ; 17.1×9.1 cms.

Written in ordinary script, on 28 Jumāda II, 1157/28 July, 1744.

Coloured ruled borders. Rubrications. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

Ref: Iv ASB (Ar) 232.

Ha 19.

شرح المشكاة

SHARḤU'L-MISHKĀT

A commentary on Mishkāṭu'l-Maṣābiḥ of Walīu'ddīn Abū 'Abdī'llah Muḥammad by 'Aṭāu'llah b. Faḍlu'llah, surnamed Jamālu'ddīn a'l-Muḥaddīth a'l-Hussainī ash-Shīrāzī a'l-Harawī (author of Rauḍatul-Aḥbāb), (d. 926/1520).

This copy contains the preface and only one ḥadīth of the first kitāb (کتاب الايمان). This copy in spite of being collated from the autograph copy has many lacunæ and is left incomplete at the end.

Written in ordinary nasta'liq, by Shaikh Ibrāhīm b. Shaikh Ismā'il of Kokan, on 27 Shabān, 1089/4 October, 1678.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and reset in existing covers.

2534

Ad. 46.

مجموعه

MAJMU'A

This contains the following works:

1. Tarjama-e-'Uddatu'l-Hisni'l-Hasin ترجمه عده الحصن الحصين (ff. 1v-47v).

Another Persian paraphrase of the abbreviated version of the same. The names of the compiler and the translator are not given.

The work is divided into 10 bābs.

Beginning:

الحمد لله... اما بعد، بدان اعزك الله تعالى اذمة
وظائف الطاعات - الخ

Ending:

و الدنيا و الآخرة فاستجب - و صلى الله خير خلقه
محمد و آله اجمعين

2. D'uā'-e-Kīmiyā-e-Sa'ādat (ff. 48-49v).

A short Arabic prayers.

3. Adi'ya (l. 50v-109v). A collection of different du'ās and ḥirz.

Beginning:

چون خواهد که دعوت حرز بمانی آغاز کند - الخ

Ending:

و صلى الله على خير خلقه محمد... بر سمتك يا ارحم الراحمين

ff. 109. ll. 17. S. 10.0×6.2"/25.5×15.8 cms.

Written in clear naskh. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

Seals: Mfr. Sultān Husain, 1164. مير سلطان حسين فدوى محمد شاه بادشاه

غازی - ۱۱۶۴

2532

Ad. 134.

فتح المبين

FATHU'L-MUBIN

A Persian paraphrase of Ḥiṣnu'l-Ḥaṣin of Shamsu'ddīn Abu'l-Khair Muḥammad b. Muḥammad b. Muḥammad b. 'Alī b. Yūsuf al-'Umari a'd-Damishqī a'sh-Shirāzī, surnamed Ibn a'l-Jazarī, (d. 833/1429). It is a collection of Traditions with special reference to prayers. The translator, Abū Bakr b. Muḥammad Bahrūchi, completed the work in 910/1505, and dedicated it to Sulṭān Abu'l-Faṭḥ Maḥmūd Shāh b. Muḥammad Shāh b. Muẓaffar Shāh of Gujarāt, (869-917/1453-1511).

Beginning : الحمد لله الواحد الفرد الصمد - الذي حتم رسوله محمد - الخ

Ending : درود و سلام بر محمد است صلی الله علیه و سلم

ff. 212. ll. 15. S. 7.5 × 4.4; 6.2 × 3.1"/19.2 × 11.2; 15.8 × 8.0 cms.

Written in clear nasta'liq, by Jān Muḥammad b. Naṣīru'ddīn.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Ref: EIO 2641.

2533

Ad. 49.

ترجمة الماثوره

TARJAMATU'L-MĀTHŪRAH

A Persian paraphrase of the same by Nūru'ddīn Muḥammad a'l-Fārūqī b. Muḥammad Amīn a'l-Husainī.

This copy is defective in the middle (ff. 87 to 94 are missing).

Beginning : الحمد لله التام ، الشامل رافة العام ، الكامل - الخ

Ending : والله المهام إلى الرشاد والهداد

ff. 441. ll. 17. S. 10.4 × 6.1"/26.8 × 15.4 cms.

2530

A. Nm. 597.

Another commentary on the same by Ibrāhīm b. Muḥammad b. 'Arab Shāh a'l-Isfārā'ini.

Beginning

بدانکه ناظم این قصیده سعیده که - الخ

Ending:

با جوانان عداى بی حجابی باین نوع مقاتله

ff. 73. ll. 14. S. 9.4 × 5.1⁸/24.0 × 13.0 cms.

Written in clear naskh. A late 12th cent. copy.

Dampness stains Worm holes. Fair condition. Bound.

2531

A. N. 84. الجواهر الفريدة فى شرح القصيدة

A'L-JAWĀHIRU'L-FARĪDAH FĪ SHARḤI'L-QAṢĪDAH

A Persian paraphrase and commentary on the same qaṣīda compiled, in 1257/1841, by Abu'l-Ḥāmid Muḥammad Yūsuf 'Alī 'Uṭhmānī Gopā-mawī, and dedicated to the then Prime Minister of Hyderābād, Mukhtā-ru'l-Mulk Mir Turāb 'Alī Khān Sir Sālār Jung, G.C.S.I.

Beginning:

زیب مطلع دیوان نظم و بیان سقايش
و ثنائى ناظمى است که - الخ

Ending:

اللهم اغفرلى خطيئتي و جهلى و جدى و عزالى و ما أمرت
و ما آمنت بحرمة النبى العربى محمد صلى الله عليه و سلم

ff. 150. ll. 21. S. 11.8 × 7.5; 8.9 × 4.9⁸/29.8 × 19.0; 22.4 × 12.4 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, on 6 Muḥarram, 1282/
1 June, 1865.

European paper. 'Unwān. Double ruled borders. Arabic text
and words in red. Good condition. Bound.

ff. 138. ll. 14. S. $9.8 \times 5.7''/25.2 \times 14.6$ cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, on 20 Jumāda II, 27 Julūs ('Ālamgīrī)=1095/25 May, 1684.

Rubrications. Worm eaten. Poor condition. Not bound.

2528

A. Nm. 598.

Another commentary on the same by a person whose name is missing. It was compiled in 917/1511, vide colophon.

This copy is defective in the beginning.

Beginning: abruptly توفیق که صاحب قصیده را درین ترتیب شد - البخ

Ending: و العیس ایلام الحمة و الفانحة

ff. 110. ll. 23. S. $9.0 \times 5.1''/25.0 \times 13.0$ cms.

Written in ordinary naskh, by 'Abdu'llah Iahdād Hājī, on 1 Jumāda II, 1075/10 December, 1664.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2529

A. Nm. 594.

Another commentary on the same, compiled in 921/1515, by Faḍl-ullah, surnamed Khwāja Iṣfahānī.

Beginning: الحمد لله ... قل الشيخ الفقير إلى لطف الله
السبحاني بفضل الله - البخ

Ending: همچو گناهایی کو چک حقیر است ، خطاب می کند نفس خود را

ff. 113. ll. 17. S. 7.8×4.7 ; $5.4 \times 2.8''/20.0 \times 11.8$; 13.4×7.2 cms.

Written in clear naskh. An early 11th cent. copy.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Ref: EIO. 2647 2652; IvASB. 989; IvC. 350.

A. Nm. 595.

شرح قصیده برده

SHARH QAṢĪDA-E-BURDAH

A Persian commentary on the popular Arabic qaṣīda in praise of the holy Prophet composed by Sharafu'd-dīn Abū 'Abdī'l-lah Muḥammad b. Sa'id a'l-Būṣīrī a'd-Dalāsi a'd-Damishqī, (d. between 694 and 697/1295 and 1298). The commentary is by Ḥaḍanfar b. Ja'far a'l-Ḥusainī. Marginal glosses.

The full title of the Arabic qaṣīda is: A'l-Kawākibu'd-Durriyah fi Madh-e-Khairi'l-Bariyyah.

Beginning: درون ترین کلامی، که ارکان بیت المعمور قصیده - السخ

Ending: تاوازه های خوش، و مراد دوام و استمرار اراکان است

ff. ii+60. ll. 25. S. 9.8 × 6.0⁶/25.2 × 15.2 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. An early 10th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals: 1. 'Abdu'r-Rahīm b. Muḥammad Bairam, 991. (Khān-e Khānān).

عبد الرحیم بن محمد بیرم - ۹۹۱

2. Ruḥu'l-Amīn b. Muḥammad Amīn Ridwī.

روح الامین بن محمد امین رضوی -

3. Muḥammad Akmal, 1111.

محمد اکمل - ۱۱۱۱

4. Zubdatu'l-'Ulamā Shaikhū'l-Islām Khān, 1189

زبدة العلماء شیخ الإسلام خان - ۱۱۸۹

A. Nm. 596.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

To face p. 79.



Photo showing gated seal of 'Abdu'r-Rahim
(Khān-e-Khānān) on f. 3 (a) of Sharḥ
Qasida-e-Burdah.

ff. 56, ll. 15. S. $7.8 \times 5.0''/19.8 \times 12.6$ cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Worm holes. Fair condition. To be repaired, and rebound.

Seal: Muniru'l-Mulk, 1206.

منير الملك - ١٢٠٦

2525

ff. 8.

Another copy of the same.

Beginning: الحمد لله اولى به ، والصلوة على رسوله محمد وآله واصحابه
اجمعين اما بعد ، ان اضعف عباد الله - الشيخ

Ending: بكم نعم خویش صدق یا رسول الله صلی الله علیه و سلم
برحمتك یا ارحم الراحمین

Besides the above work this copy also contains:-

Chihil Hadith (ff. 50-57).

A collection of forty Traditions with their Persian paraphrase.

Beginning: قال النبي صلى الله عليه وسلم من قرأ وحفظ أربعين حديثاً -
رسول فرمورد - عليه السلام - هر که چهل حدیث - الشيخ

Ending: یعنی زیاده شدن اهل و عیال رسوائی مردمان است

A few more ahādith by a later hand on ff. 57v-58.

ff. 49+8=57, ll. 13 or 14. S. $11.0 \times 6.5; 8.2 \times 3.9''/27.8 \times 16.6; 21.8 \times 9.8$ cms.

Written in good naskh. An early 13th cent. copy

Red ruled borders. Heading in red. Dampness stains. Worm holes.
Fair condition. To be rebound.

fl. 70. ll. 15. S. $7.5 \times 4.9''/19.0 \times 12.4$ cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by Raff' Muḥammad b. Dāniyāl b. Da'ūd b. Khwāja, in Rajab, 1036/March, 1620 at Burhānpūr.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

Ref: EIO. 2639; IVASB. 987; Ivc. 348.

2523

Ha. 27.

Another copy of the same.

Beginning: بنده ضعیف امیدوار پروردگار محمود بن محمد - اصلح امور
دینہ و دنیاہ - الخ

Ending: و طالب المولی عارف است - و الله اعلم بالصواب
و إليه المرجع و المآب

fl. 63. ll. 15. S. $9.4 \times 5.2''/23.8 \times 13.2$ cms.

Written in bad script, by Muḥammad Sharif b. Makhdūm Jamāl, on 4 Jumāda II, 1103/12 February, 1692.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

Seal: Faṭḥullah Baig.

فتح الله بیگ

2524

Aq. 144/4

Another copy of the same.

Beginning: الحمد لله... اما بعد بنای این کتاب بر چهل باب و در هر باب
ده حدیث - الخ

Ending: یعنی خواب عالم فضل تر است از عبادت جاهل

3. HADITH-TRADITIONS

i. SUNNITES

2521

رسالة حدیث

A. Nm. 996/2.

RISĀLA-E-HADĪTH

A tract dealing with the queries of an A'rābi-wanderer and the answers given to him by the holy Prophet as narrated by Salmān from Anas Mālik.

Beginning: روایت می کند انس مالک (از) سلمان رضی الله عنه که
روزی حضرت رسالت صلی الله علیه و سلم - الخ

Ending: ولا حول ولا قوة الا بالله العلي العظيم

ff. 7. ll. 9. S. 7.2×4.1; 5.0×2.3ⁿ/18.4×10.4; 12.6×5.8 cms.

Written in excellent calligraphic nasta'liq. An early 11th cent. copy.

Good 'unwān. Gold and coloured ruled borders. Zangār damaging folios at the borders. Fair condition. To be repaired and re-bound.

2522

لباب الأخبار

Ha. 26.

LUBĀBU'L-AKHBĀR

A collection of 400 selected traditions made by Aḥmad b. 'Abdu'l-lah, who divided them into 40 bābs, each containing 10 Traditions. The Persian paraphrase and short notes were compiled by Muḥammad b. Maḥmūd, for the benefit of those who are not well versed in Arabic.

Beginning: حمد بی حد و ثنای بی عد مر خدای را جل جلاله
و عم نواله که - الخ

Ending: و بطعم دست پیش کس فرا نکردی - صلی الله علیه و سلم
و علی آله الاخبار و الأنصار و سلم تسلیم کثیرا کثیرا

Written in excellent naskh by Zafnu 'ddin 'Alī a'sh-Shifrāzī b. Darwīsh Muhammad, for the perusal of Nawāb Shaikh Farīd, surnamed Murtaḍā Khān, (paymaster of the Imperial Forces, a panj hazārī Amir under Jahāngīr who died in 1025/1616). An early 11th cent. copy.

Arabic in red. Gold and coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

Seals: Muniru'l-Mulk, 1206.

منير الملك - ١٢٠٦

2520

A. D| 119.

شرح چهل آیه

SHARḤ-E-CHIHIL ĀYAH

A commentary on forty Qu'rānic verses selected from Sūras ii to lxxiii, and based on Part 29 of Baḥāru'l-Anwār of Shaikh Ṣudūq a'l-Qummi, (d. 381 or 391/991 or 1001). It is by an anonymous person.

Beginning: در مجاد نوزدهم بحار الأنوار شيخ صدوق - الخ

Ending: ان تكشف عنى ضرر ما امسيت وما اصبحت فيه

ff. 8. ll. 12. S. 6.4 × 4.3; 4.9" × 2.9/17.8 × 10.8; 12.4 × 7.4 cms.

Written in good naskh and nasta'liq, by Muḥammad Ḥusain Mahājir Ḥarawī, surnamed Ḥashmatu'l-Āyālah, in 1335/1917.

European paper. Good 'unwān. Gold ruled borders. Good condition. Bound.

Written in ordinary nasta'liq, by Qāsim Khān, at the instance of Faiḍ Ṣāhib, on 8 Ramaḍān 1261/10 September, 1845, at Hyderābād.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. To be rapaired, and re-bound.

2518

T. I. 47/1.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 84. ll. 12. S. $6.9 \times 4.4''/17.8 \times 11.2$ cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, in four days, on 1 Jumāda 1 1324/23 June, 1906, from the preceding copy, and collated.

European paper. Rubrications. Good condition. To be re-bound.

2519

T. I. 5.

تفسير القرآن

TAFSIRU'L-QUR'ĀN

A Shi'ite commentary on the Glorious Qur'ān by Sayyid Murtaḍā (according to a note on flyleaf and on last folio).

This copy is the second half, and defective at both ends, by a folio each.

Beginning : abruptly.

کس نمی شنید و ندای او این بود که از
روی نیاز قال رب گفت - الخ

Ending : abruptly.

این بی بضاعتی خود را در بحر عمیق
انداخته و باین امر خطیر

ff. 451-1=550. ll. 27. S. 12.5×7.9 ; $8.8 \times 5.0''/32.2 \times 20.4$; 22.6×12.8 cms.

Beginning :

« سورة يس » هشتاد و سه آیهست،
مکیست، از انس مالک - الخ

Ending : as usual.

ff. 378+1. ll. 25. S. 9.5×5.8 "/ 24.4×15.0 cms.

Written in ordinary naskh, by Najmu'ddīn, on 2 Ramaḍān, 1078/
5 February, 1668, from a copy transcribed by Ḥasan b. 'Abdu'llah b. 'Alī
a'l-Mu'allam, on 30 Dhiḥajja, 978/ 13 May, 1572.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Poor condition. To be
repaired, and re-bound.

Seals: 1. Verse 32 of Sūra ix.

یریدون... الکافرون

2. Mu'tamanu'd-Daulah.

مؤمن الدولة

Autograph of Dargāh Qulī, 1172.

2517

T. I. 4.

ترجمة آیات الأحكام

TARJAMAT-U-ĀYĀTI'L-AḤKAM

A Shi'ite commentary of the First Sūra, and the commands in the
Holy Book, compiled by Shāh Qādī (or Ghāzī) a'l-Yazdī, in 1021/1612,
for Ṣultān Muḥammad Quṭb Shāh of Golconda, (1020-1035/1612-1626).

The work is divided as under :-

1. Commentary on the First Sūra, on f. 3v. تفسیر سورة فاتحه و توحید

2. Bāb I, in eight kitābs, on f. 30. باب اول در عبادات

3. Bāb II, in three kitābs, on f. 114. باب دوم از کتاب در معاملات

Beginning :

بعد از سپاس و ستایش رب العالمین

که منشور دوات سلطان المرسلین را - الخ

Ending :

هر چند که آن شخص مستغنی باشد از ان صانع الله رب العالمین

ff. 205. ll. 13. S. 10.4×6.6 "/ 26.8×17.0 cms.

2514

T. I. 9.

Another copy of the same, (Vol. III), containing Sūras xix to cxiv, the end.

Beginning: سورة مريم عليها السلام مسكية، نود وهشت آية است،
ابو امامة از ابی بن کعب - الخ

Ending: خوانده باشی بکوی قل اعوذ برب الناس ... المعصومین

ff. 377. ll. 25. S. $8.8 \times 6.7^*/22.6 \times 17.4$ cms.

Written in good nashī and nasta'liq, by Shāh 'Alī b. 'Imādu'ddīn a'sh-Shi'ī a'z-Zawwārī, on 20 Jumādā I, 977/31 October, 1569.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2515

T. I. 8.

Another copy of the same.

Beginning: گاهی عص ذکر رحمة ربك عبده زكريا اذ نادى ربه - الخ

Ending: as usual.

ff. 395. ll. 25. S. 12.9×8.6 ; $9.5 \times 5.6^*/33.2 \times 22.2$; 24.4×14.4 cms.

Written in clear nasta'liq. A mid 12th cent. copy.

Ordinary 'unwān. Gold and coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2516

T. I. 10.

Another copy of the same Vol. III, but containing Sūras xxxvi to the end.

This copy contains commentary on the first five Sūras.

Beginning: سپاس و ثنا و حمد بی منتها خدای را که این هفت ایوان - الخ

Ending: کس را نبود که از ان منع کند یا اعتراض کند بران -
و الله اعلم بالصواب و بالله التوفیق والاعلام

ff. 292. ll. 25. S. 13.4 × 9.4"/34.4 × 24.0 cms.

Written in good thulth and naskh by Muḥammad Mu'min b. Mīr Husain Tūnī, on 9 Shawwal, 993/21 July, 1591.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

A rare work, and an old copy transcribed during the lifetime of the author.

2513

T. I. 7.

Another copy of the same, (Vol. II), containing Sūras vi to xviii.

Beginning: سورة الأنعام، این سوره مکیت و ششصد
و شصت و پنج آیه است - الخ

Ending: هر که همه سوره بخواند وی را نوری باشد از زمین تا آسمان

ff. 271. ll. 25. S. 13.1 × 8.8"/33.6 × 22.6 cms.

Written in good naskh, on 25 Shawwal, 1050/28 January, 1641, at Burhānpūr.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

This copy was made for Fakḥru'ddīn a'l-Husaini as per his autograph, and seal.

Seal: Fakḥru'ddīn

از لطف حق چون شد بفخرالدین نصیب
مرید خاص سلطان جهان اور زنگنه زیب

2510

T. I. 31.

Another copy of the same containing Sūras xxxvi to liv.

This copy is defective at the end.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly.

ایشانرا اهلاك ساخت يا مستمر بود بر جميع

ff. 391. ll. 15. S. $12.2 \times 6.8''/31.3 \times 17.5$ cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. A middle 12th cent. Copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2511

T. I. 34.

Another copy of the same containing Sūra liv to the end.

This copy is defective in the beginning by a few folios.

Beginning : abruptly.

صغیره کبره ایشان ... تزع الناس - الخ

Ending : as usual.

ff. 412. ll. 15. S. $12.5 \times 7.0''/32.0 \times 17.8$ cms.

Written in good naskh and nasta'liq, by Mullā Muḥammad Kāẓim, in 1085/1674.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2512

T. I. 6.

جلاء الأذهان و جلاء الأحزان

در تفسیر قرآن

JALĀU'I-ADHHĀN WA JALĀU'L-AHZĀN
DAR TAFSĪR-E-QUR'ĀN

A Shi'ite commentary on the Glorious Qur'ān compiled by Abu'l-Maḥāsīn a'l-Ḥusain b. Ḥasan a'l-Jurjānī, (d. 997/1588).

2507

T. I. 33.

Another copy of the same containing Sūras xxxiv to the end.

Beginning : ایشان را برای آنچه آوریده باند جابر انصاری - الشيخ

Ending : as usual.

ff. 720. ll. 21. S. $11.8 \times 6.8''/30.2 \times 17.5$ cms.

Written in clear naskh, on 13 Rabi' I, 1077/3 September, 1666.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2508

T. I. 35.

Another copy of the same.

Beginning : بسم الله الرحمن الرحيم سورة ايسا بن كعب رضى الله عنه از پيغمبر ا - الشيخ

Ending : as usual.

ff. 406. ll. 21. S. $11.8 \times 6.9''/30.4 \times 17.5$ cms.

Written in clear naskh by Muḥammad Sharif b. Muḥammad 'Ali a'l-Jurjānī, on 15 Muḥarram, 1057/10 February, 1647.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

2. Seals: Muniru'l-Mulk, 1206.

منير الملك - ١٢٠٦

2509

T. I. 15.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 558. ll. 17-23. S. $11.9 \times 7.8''/30.4 \times 19.9$ cms.

Written in ordinary script by few different hands, in Rabi' II, 1272/December, 1855.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Not bound. Preserved in a portfolio.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly.

محبوس ساقند این سخن

ff. 519. ll. 17. S. 12.4×7.1 "/ 31.7×18.2 cms.

Written in clear naskh. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

Seals: Muḥammad Qādirī.

محمد قادری فدوی محمد شاه بادشاه غازی

Haidar Yār Khān.

حیدر یار خان

2505

T. I. 17.

Another copy of the same, from Sūra xix to Sūra xxxv.

Beginning : as usual.

Ending : خلاص و نجات کدام هر يك را فراخور آن پاداش دهد

ff. 342. ll. 23. S. 11.9×7.8 "/ 30.4×19.9 cms.

Written in ordinary script by Mir Ḥasan a'l-Mūsawī surnamed Shustarī, on 3 Dhīḥajja, 1272 5 August, 1856, at Hyderābād.

European paper. Rubrications. Worm holes. Poor condition. Not bound.

Preserved in a portfolio.

Seals: Mir Muḥammad Ḥusain Shustarī.

میر محمد حسین شستری

2506

T. I. 18.

Another copy of the same from Sūra xix to Sūra xxxii.

Beginning : as usual.

Ending : یا آنکه چون وعید الهی بایشان خواهد رسید بس گوئیا منتظر اند

ff. 280. ll. 23. S. 12.8×7.5 ; 8.3×4.4 "/ 32.9×19.2 ; 21.3×11.2 cms.

Written in good naskh. An early 12th cent. copy.

Arabic in red. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2502

T. I. 12.

Another copy of the same, containing the second half Juz 16 to 30.

Beginning:

قال ألم أقل إنك ، كفت خضر عليه السلام
كه آيا نه كفتم كه - الخ

Ending: as usual.

ff. 379. ll. 33. S. 13.8 × 7.7 ; 9.4 × 4.4" / 35.4 × 19.9 ; 24.1 × 11.3 cms.

Written in good naskh, the last folio by 'Alī b. 'Abdu'llah Kulānī near Damāvand. on 22 Rajab, 1008/28 January, 1600, at Hyderābād.

Rubrications. Gold and coloured ruled borders. Worm holes. Fair condition. Not bound. Preserved in a portfolio.

2503

T. I. 13.

Another copy of the same, defective in the beginning by a folio, and a good few folios between Sūras lxiii and lxxv (ff. 436-437).

Beginning: abruptly.

كه خدای تعالی اورا اجات نمی كند زیرا كه طلاق
زن در دست اوست - الخ

Ending: as usual.

ff. 574. ll. 19. S. 9.1 × 6.2" / 23.4 × 16.0 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Arabic in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be re-bound. Preserved in a portfolio.

2504

T. I. 37.

Another copy of the same from Sūra xix to the end of Rukū' 1 of Sūra xxxvi.

This copy is left incomplete at the end.

2500

T. I. 46.

Another copy of the same (a continuation of No. 2492), from Sūra xix to the end.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 561. ll. 29. S. 12.2×7.4 "/ 31.3×19.0 cms.

Written in good naskh. A middle 11th cent. copy.

Collated by learned men, in 1072/1662, at Hyderābād.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. To be repaired and re-bound.

An heirloom of the collector with endorsement and seals of his ancestors and Endowment Note (وقف) on every page and autograph of Muḥammad Bāqir on last folio.

Seals: Muḥammad Bāqir b. Shaikh. Muḥammad 'Alī, 1169.

محمد باقر ابن شيخ محمد علي - ۱۱۶۹

2501

T. I. 16.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 457. ll. 27. S. 13.6×5.9 ; 11.6×9.3 "/ 35.0×15.0 ; 29.8×24.0 cms.

Written in good naskh and nasta'liq. by Mullā Fath Muḥammad, in 41 Julūs 'Alamgīr = 1109/1698.

Ordinary 'unwān. Gold and coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. About 90 folios in the beginning burnt out replaced. Fair condition. Not bound.

Written in clear nasta'liq, by Mirza Jānī Baig, on 11 Ramaḍān, 29 (Julūs 'Ālamgīrī) = 1097/22 July, 1685, at Burhānpūr.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Poor condition. Not bound. Preserved in a portfolio.

2498

T. I. 29.

Another copy of the same from the beginning of Sūra viii to the end of Sūra xviii.

Beginning: « یسئلونک » می پر سئند از تو محمد عن الانفال - الخ

Ending: as usual.

ff. 263. ll. 22. S. $12.1 \times 6.0 \times 9.6 \times 4.0$ "/ 30.9×15.2 ; 24.7×10.3 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by Muḥammad a'l-Ḥusainī, on 4 Rajab, 1095/7 June, 1684.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2499

T. I. 36..

Another fragment of the same containing first 192 verses of Sūra ii, defective at the end.

Beginning: as usual.

Ending: abruptly. او به اذی یاباورسد رنجی من راسه از سر او

ff. 53. ll. 22. S. 11.1×7.7 "/ 28.6×19.6 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. A late 13th cent. copy.

European paper. Crumbling to pieces all round. Poor condition. Not bound.

2495

T. 1. 32.

Another copy of the same from the beginning to the end of Sūrah vi.

Beginning : as usual.

Ending : حق تعالی میان او و ابلیس ستری پیدا کند تا
اورا وسوسه نکند و آدم

ff. 466. ll. 15. S. $12.2 \times 6.7''/31.3 \times 17.1$ cms

Written in good broad nas'ih, and 'good nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Dampness, stains Worm holes. Fair condition. Bound.

2496

T. 1. 30.

Another copy of the same containing Sūras vii-xviii.

Beginning : بسم الله الرحمن الرحيم - سورة الاعراف مكية وهي
مائتان وست آيات و رکوعانها عشرون - الخ

Ending : as usual.

ff. 496 ll. 15. S. $11.3 \times 6.3''/28.9 \times 16.3$ cms.

Written in good naskh and nasta'liq, by Mullā Muḥammad Kāẓim b. Muḥammad Husain Ṭālib, on 17 Ṣafar, 1084/21 May, 1673.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2497

T. 1. 14.

Another copy of the same, containing Sūras vii to xviii.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 578. ll. 14. S. 11.4×7.2 ; $8.6 \times 4.6''/29.3 \times 18.4$; 22.0×11.8 cms.

An heirloom of the Collector with endorsements and seals of his ancestors, and Endowment Note (وقف) on every page.

Seals: Muḥammad Bāqir b. Shaikh Muḥammad 'Alī, 1069.

محمد باقر ابن شيخ محمد علي - ۱۰۶۹

Muḥammad Ḥaidar.

محمد حيدر

Ḥaidar Yār Khān.

حيدر يار خان

2493

T. I. 11.

Another copy of the same, from the beginning to verse 70 of Sūra xviii.

Beginning: as usual.

Ending: شيئا امرا - چیزی شکفت و شنیم و بر دل گران - قال الم اقل

ff. 290. ll. 33. S. 13.6 × 7.7; 9.3 × 4.5"/35.0 × 19.9; 23.9 × 11.5 cms.

Written in good naskh. A late 11th cent. copy.

Good 'unwān. Gold and coloured ruled borders. Arabic in red. First folio replenished by a later hand. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2494

T. I. 22.

Another copy of the same, from the beginning to the end of sūra vi; with six folios of Sūra vii, defective at both ends.

Beginning: as usual.

Ending: abruptly. هر آئینه امر زنده است و مهربان بر صابران و شاگران -

ff. 520+6. ll. 14. S. 11.1 × 7.4; 8.6 × 4.7"/28.5 × 18.8; 22.1 × 12.0 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq, by Mirza Muḥammad Amān and Muḥammad Yūsuf 'Alī, on 23 Ramaḍān, 1158/8 October, 1745.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm eaten. Poor condition. Not bound.

ff. 219+208+183+274+267+356+507=2,014. ll. 21. S. 17.5×10.0"/
34.6×25.4 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq, by Gul Muhammad. Late 12th cent. copies.

Arabic in red. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

2491

T. I. 21.

Another copy of the same from Sūra i to Sūra xviii.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 400. ll. 25. S. 11.2×6.0"/28.8×17.6 cms.

Written in clear naskh, by Ghiyāthuddin Muhammad Mashhadī on 1. Ramaḍān, 1057/20 September, 1647, in Kashmīr.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

Seals of Sayyid Muhammad 'Alī Khān Bahādur, 1221.

سید محمد علی خان بہادر - ۱۲۲۱

2492

T. I. 20.

Another copy of the same. Two folios missing between ff. 2-3.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 372. ll. 29. S. 11.8×7.4"/30.2×19.0 cms.

Written in good naskh. A mid 11th cent. copy.

Collated by learned men, in 1070/1660, at Hyderābād.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2485-2490

T. I. 23-28.

A complete copy of the same bound in six volumes :-

Vol. I. From Sūra i to Sūra iv.

Beginning : as usual.

Ending : عليم دانا است و بر وجه مصلحت ایشان حکم می فرماید

Vol. II. From Sūra v to Sūra ix.

Beginning : ابی بن کعب از سید کائنات صلی الله علیه وسلم روایت کرده که - الخ

Ending : و هو رب العرش العظيم

Vol. III. From Sūra x to Sūra xviii.

Beginning : ابی بن کعب از پیغمبر روایت کرده هر که این سوره - الخ

Ending : در آن ساعتی که خواسته باشد - و الله اعلم بالصواب

Vol. IV. From Sūra xix to Sūra xxix.

Beginning : as usual.

Ending : و اعانت در دنیا و ثواب و مغفرت در آخرت

Vol. V. From Sūra xxx to Sūra xlv.

Beginning : ابی بن کعب از حضرت رسالت صلی الله علیه وسلم روایت کرده که - الخ

Ending : او را بیند از م در جهنم که طبقه آخرین دوزخ است

Vol. VI. From Sūra xlvi to Sūra cxiv, the end.

Beginning : حم تنزيل الكتاب فرستادن این سوره فرستادن کتابیست - الخ

Ending : as usual.

2483

T. I. 45.

Another copy of the same Vol I, containing the commentary upto verse 279 of Sūrah II, left incomplete at the end.

Beginning: as usual. ما را هیچ چیز نمی ماند و بی برکت شویم آنچه شمار است.

Ending: abruptly.

ff. 375, ll. 24. S. $13.3 \times 7.5''/33.4 \times 19.2$ cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq. A late 12 cent. copy.

Arabic in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2484

T. I. 19.

خلاصه المنهج

KHULĀṢATU'L-MANHAJ

An abridged version of the above work by the same commentator.

This excellent copy contains the complete work.

Beginning: حمدی چون کلمات ربانی بیغایت شائسته لطیفیست که - الخ

Ending: یعنی اندر ره دین رهبر تو قرآن بس - حسبنا الله ونعم
النصیر و الیه المرجع والمصیر

ff. 616, ll. 31. S. $13.3 \times 3.4; 9.6 \times 5.1''/34.4 \times 21.6; 24.6 \times 13.0$ cms.

Written in good naskh and nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Good 'unwān. Gold and coloured ruled borders. Arabic text in red. Dampness stains. Good condition. Bound.

Ref. EIO. 2692-2695: Iv. ASB. 989.

Ending : بد آنکه این سوره بیشتر در عزوه بدر فرود آمده
در هفتم ماه رمضان دهم ماه از هجره

Vol. III. From Sūra ix to Sūra xviii.

Beginning : سورة التوبة هم این سوره مدنیست و نزد بعضی
آنست که - البخ

Ending : آخر سوره کهف بخواند مکر که بیدار شود
در آن ساعتی که خواسته

Vol. IV. From Sūra xix to Sūra xxxv.

Beginning : سوره مریم علیها السلام مکی است باجماع امت
و نود و بیست آیت است - البخ

Ending : و صلاح خاق را که خواهد میسازد

Vol. V. From Sūra xxxvi to Sūra cxiv.

Beginning : سوره یاس مکیست نزد جمیع مفسرین و ابن عباس آیه - البخ

Ending : یعنی اندر ره دین رهبر تو قرآن بس - حسبنا الله و نعم النصیر

ff. 191 + 158 + 126 + 191 + 242 = 908. ll. 3.5 S. 14.8 × 9.3; 9.6 × 5.6"/38.0 × 23.8; 24.6 × 14.4 cms.

Written in good naskh, by 'Abdu'llah Ḥakīm b. Muḥammad Ṣādiq Lāhūrī, on 14 Jumādā I, 27 Julūs = 1094/1 May, 1683; from a copy transcribed by 'Alī b. Aḥmad a'l-Kāshānī, in 971/1564.

Collated from the autograph codex in 1094 and 1095.

Good 'unwān at the beginning of each volume. Gold and coloured ruled borders. Arabic in red. Dampness stains. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Seals : 1. Majdu'llah, 1169

المجد لله - ۱۱۶۹

2. Muḥammad 'Askarī. عهد عسکری خانه زاد عهد معظم بهادر شاه

2477

T. I. 3.

Another copy of the same, defective at the end. This copy contains Sūra i to versé 31 of xii.

Beginning: as usual.

Ending: abruptly.

و تاج مكل بر فرش نهاد و گفت برون آي دين
زان يوسف ابا

ff. 378. ll. 23. S. 12.2×8.2 "/ 31.2×21.2 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Arabic text in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2478-2482

T. I. 40-44.

منهج الصادقين

MANHAJU'S-ŞADIQIN

A detailed commentary on the Glorious Qur'ān according to the Shi'ite doctrine, compiled by Fathu'llah b. Shukru'llah as'h-Sharif a'l-Kāshānī, (d. 978/1571).

The full title of the work is: Manhaju's-Şadiqin fī Ilzāmi'l-Mukhālifin.

(منهج الصادقين في الزام المخالفين).

The works are divided into five volumes :-

Vol. I. From Sūra i to Sūra iii.

Beginning: حمدى چون كلمات ربانى بى غايت شائسته لطيفيست كه - الخ

Ending: واتقوا محبة سوائى لعلىكم تفلحون

Vol. II. From Sūra iv to Sūra viii.

Beginning: سورة النساء همه آيات اين مورد مدفست

و نزد بعضى مكى - الخ

2475

T. I. 1.

الاختصاص بترجمة الخواص

A'L-IKHTESÂŞ-BI-TARJUMATI'L-KHAWÂŞ

A detailed commentary on the Glorious Qur'ân based on Shi'ite beliefs, compiled in 946/1540, by 'Alî b. Ḥasan a'z-Zawwārî.

The work is divided into two halves, and this copy contains the first half from Sūra i to Sūra xviii.

Beginning : حمد بی حد و شکر بلا عد منعمی را سزد که شقائق
حقایق قرآنی - الخ

Ending : و آن نور از و تا آسمان برسد ، صدق الله العظیم ... الطاهرین

ff. 408. ll. 24. S. 14.6 × 8.7 ; 11.3 × 5.8" / 37.4 × 22.2 ; 29.0 × 14.8 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq, by Ḥusain Khān b. Khudā Bakhsh, in 1083/1672.

Good 'unwān. Coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Seals : 1. Ibrāhīm. أفوض امری إلى الله الغنی عبده إبراهيم

2. Sayyid Muḥammad 'Alî Khān Bahādur. 1221

سید محمد علی خان بهادر - ۱۲۲۱

Ref : EIO. 269r.

2476

T. I. 2.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 556. ll. 21. S. 11.4 × 7.1" / 29.2 × 18.2 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

2474

T.1. 39.

لوامع التأويل

LAWĀME' U'T-TĀWĪL

A Persian paraphrase of Tāwīlu'l-Āyāt, which in turn appears to be a commentary on Tafsīru'l-Qur'ān of the eleventh Shi'ite Imām, Ḥasan 'Askari, (d. 261/874).

The translator, Muḥammad Ma'sūm b. Muḥammad Amin b. 'Alī b. a'l-Ḥusain a'l-Ḥusainī a'l-Astrābādī undertook this work at the instance of Muḥammad Mu'min during the reign of Shāh 'Abbās II, (1052-1077/1642-1667), and completed the same in 1059/1649, vide chronogram at the end.

The work deals with the attributes of the Holy Prophet and his family.

Beginning : صدر الكتاب صحيفه آمال مفسران آيات كلام دانش - الشيخ

Ending : جوید ز تو اندیشه اگر تاریخش کو یک چهرست از حقائق ابریز

ff. 422. ll. 17. S. 9.5 × 7.2"/24.4 × 18.2 cms.

Written in good shafi'a by Hājī Muḥammad Ridā Mashrab Jurbād-qānī, on Shawwāl, 1090/17 November, 1679, at Isfahān.

Rubrications. Dampness stains. A few worm holes. Fairly good condition. To be repaired, and re-bound.

Seals: 1. Asadu'llah a'l-Ghālīb.

اسد الله الغالب

2. Muḥammad 'Alī.

رب نختی بمحمد و علی

3. Muḥammad Ṣālīh a'l-Ḥusainī.

افوض امری إلى الله محمد صالح

الحسینی

4. Muḥammad 'Alī.

العبد المذنب محمد علی

5. Hasan ?

بر فوق حسن تاج

6. A seal dated 1181.

صراط علی حق مسکه

2472

فتح المثنانى

Taf. 28.

FATHU'L-MATHĀNĪ

A glossary of Qur'anic words arranged alphabetically and divided into a bāb for each alphabet.

It was compiled by Uthmānu's-Samānī. It begins with (الابد) and ends with (يونس).

Beginning: حمد و ثنا مزاور خالقست که بر صفت پاک خداوندی - النخ

Ending: یونس نام پیغمبر است علی نبینا و علیه السلام

ff. 46. ll. 23. S. 11.0 × 6.6"/27.8 × 16.7 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq, by Mirza Fidā 'Alī Baig, for Sayyid 'Alī Husain, in 1321/1903, at Hyderābād.

Arabic words in red. Good condition. To be re-bound.

2473

تفسیر سورة بقره

Taf. 10.

TAFSĪR-E-SŪRA-E-BAQARAH

A comprehensive commentary on the second and longest sūrah of the Glorious Qur'ān, by an anonymous person. The commentary begins on f. 4v.

Beginning: این سوره را در قرآن بهکثرت عدد آیات نظیر نیست - النخ

Ending: دل را بهجت و مسرت بيفزايد جعلها الله من المبتهجين بعطائه
من اهل أرضه و مماته -

ff. 557. ll. 15. S. 11.5 × 7.0"/29.0 × 17.7 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Rubrications. Arabic text in broad naskh. Dampness stains. Fairly good condition. Bound.

Good 'unwān. Gold and coloured ruled borders. Headings and text in red and blue. Margins renewed by European paper. Bound.

Ref: IVC .990.

2471

Taf. 25.

سالار التفاسیر

SĀLĀRU'T-TAFĀSIR

A critical study of the Glorious Qur'ān compiled by Maẓhar 'Alī b. Maulānā Sayyid Jamālu'ddīn Ibrāhīm Aḥmad Bukhārī, and dedicated to Mīr Turāb 'Alī Khān Sālār Jung (grandfather of the collector, f. 4).

The work begins with an introduction in prose and verse. The title is on f. 6v. The date of compilation is not given but it can be assumed as between 1273 and 1277/1857 and 1861 as Mīr Turāb 'Alī Khān was honoured by the title of Sālār Jung by the Nizām in 1273. He became Mukhtāru'l-Mulk, in 1277.

Muqaddima (without any title), on recitation of Qur'ān on f. 6v.

Tabṣīrah (Notes) , on (آیات ناسخ و منسوخ) arranged according to the sūrah, on f. 7v, and ending on f. 13.

ff. 13 to end are covered by several fā'idās (notes) on common controversial topics dealing with Qur'anic subjects.

Beginning: تفسیر، حمد و ثناء خالق راست که بکلمات طیبات آیات قرآنی
نوع انسانی را - الخ

Ending: و ایشان میگویند که آمین کلام آدمی است و کلام
آدمی در نماز کفین منع است

ff. 137. ll. 17. S. 8.3 × 5.3"/20.9 × 13.3 cms.

Written in clear nasta'liq. A late 13th cent. copy.

European paper. Rubrications. Worm holes. Fairly good condition.
To be repaired and re-bound.

A work pertaining to the Collector's family.

2. Muqaddima-e-Tafsir-e-Qādirī (ff. 13-14). Similar introduction to Urdū paraphrase by 'Abdu'l-Qādir b. Waliu'llah.

Beginning: 1. حمدنا محدود خدای را تبارک و تعالی که - الخ

2. الہی شکر تیرے احسان کا ادا کروں کس زبان سے
کہ - الخ

Ending: 1. "من الشیطان الرجیم" می پناہم بخدا از شیطان راندہ شد

2. توہی قبول کر اپنے فضل و کرم سے یا رؤف یا رحیم یا مالک
الملك یا ذوالجلال والا کرام

ff. 14. ll. 23. S. 11.0×6.6"/27.8×16.7 cms.

Written in clear naskh and nasta'liq, by Fidā 'All Baig for 'All Husaīn, in 1321/1903 at Hyderābād.

Good condition. Bound.

2470

Taf. 27.

تفسیر فتح العزیز

TAFSIR FATHU'L-'AZIZ

A commentary, on the last two parts (juz) of the Glorious Qur'ān, containing Chapters 67 to 114 just like Tafsir Ya'qūb Charkhī, compiled by Shāh 'Abdu'l-'Azīz b. Shāh Waliullah Dihlawī, (d. 1239/1824).

This copy contains the last part, i.e., Chapters 78 to 114. Incomplete list of contents in the beginning.

Beginning: سورة تساول و این سوره را سورة نبأ نیز گویند،

مکی است - الخ

Ending: مثل قرآن و حدیث و تفسیر و کتب سلوک اجازت من نیست

ff. iii+319. ll. 15. S. 11.0×7.5; 7.0×4.2"/27.7×18.9; 17.7×10.4 cms.

Written in good naskh and nasta'liq, in 1282/1865.

Beginning :

محامد حسنی واثبه أسنی سزاوار حضرت محمد بنی
است که - الخ

Ending :

۱۳ ذی یثیسن ۲۸۵۶ یثیسن ۲۸ یر یثیسو ۲۰ ۲۸ ح

ff. 149. ll. 19. S. 9.0×51 ; 5.9×2.7 "/ 22.7×12.9 ; 15.0×6.7 . cms.

Written in good nasta'liq, by 'Ināyatullah, on 8 Rajab, 1131/16 May, 1719, at Bijāpūr.

Golden 'unwān. Gold and red lined borders. Rubrications. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

A rare work.

Ref. Cf. Iv ASB 977.

2468

Taf. 2.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 116. ll. 21. S. 8.4×4.7 "/ 21.1×11.7 . cms.

Written in good naskh. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Bound.

2469

Taf. 28/1. فتح الرحمن بترجمة القرآن ، مقدمه تفسیر قادری

FATHU'R-RAḤMĀN BI TARJUMATI'L QUR'ĀN AND
MUQADDIMA-E-TAFSĪR-E-QĀDIRI

This copy contains two works :-

1. Fathu'r-Raḥmān (ff. 1-12). Introduction to the literal Persian paraphrase of the complete text of the Glorious Qur'ān compiled in 1158/1738, by Aḥmad b. 'Abdu'r-Raḥmān, better known as Shāh Wall'ullah Muḥaddith a'd-Dihlawī (d. 1176/1762).

2466

Taf. 8.

تفسیر بسم الله

TAFSĪR-E-BISMILLAH

A commentary on the verse Bismillah a'r-Rahmān a'r-Rahīm, compiled by Muḥammad Amīn.

Beginning :

اشاره معنی "بسم الله الرحمن الرحيم" اینست که اسم الله
خاص کرده شده است - الخ

Ending :

از من و در من نه چیزی در وسط - هر چه هستم
از تو من گویم کرا

ff. 20. ll. 9. S. 7.7×4.5 ; 5.0×2.4 / 19.5×11.4 ; 12.6×6.0 . cms.

Written in good naskh. A late 11th cent. copy.

Illuminated 'unwān. Gold ruled borders, text in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2467

Taf. 1.

أمارات الكلم الرحمانی

AMĀRĀTU'L-KALĀMI'R-RAḤMĀNĪ

A detailed index of the Glorious Qur'ān compiled in 1103/1692, by Muṣṭafā b. Muḥammad Sa'īd, alias Muqarrab Khān, author of 'Alāmāt-e-Nujūmū'l-Furqān. It is arranged alphabetically with reference to parts (جزء) and the places of sections (ركوع) in each of the thirty parts. The work begins with a short preface followed by a muqaddima on (ضوابط وقواعد استعراج) illustrated by two fā'idās on how to find out a particular verse from the Glorious Qur'ān.

General enumeration of 30 parts into sections begins on f. 4v, and the alphabetical index from f. 8v.

After each word Arabic numeral indicates the parts and a letter or two in abjad system show the section in which that word could be found, for example (القاع لاریب) means that this word is in section 12 of part 17 (chapter 22, verse 37).

ff. 478. ll. 27. S. $12.5 \times 9.4''/31.7 \times 23.7$ cms.

Written in good naskh, on 4 Dhilhajja, 1076/28 March 1666.

Good 'unwān and gold work on first two pages. Arabic text in red. Dampness stains. Worm holes. To be repaired and re-bound.

A rare work written during author's life time with marginal notes most probably in author's hand.

Endowment note dated 1219.

2465

M and K. 56.

احسن القصص

AḤSANU'L-QAṢAṢ

A Persian paraphrase and commentary on the Arabic work Kitābu's Sittin a'l-Jāma'i'l-Laṭā'if of Saifu'n-Nazar Jamālu'l-A'immā Abū Bakr b. Muḥammad b. Zaid a'ṭ-Ṭūsī, which is based on Sūra-e-Yūsuf (Chapter XII of the Glorious Qur'ān) dealing with the life of Joseph. The compiler's name is not given.

The work is divided in 60 majlis in which attributes, elegance, wit and humour are blended with wonderful occurrences narrated in this sūra.

Beginning : سپاس مر حضرت خداوندی را که قادر کمال است و آفریدگار
روز و شب ماه و سال است - الخ

Ending : و بهتان ناصواب بگوید چه درد و حسرت
بیند - و الله اعلم بالصواب .

ff. 352. ll. 15. S. 8.9×4.9 , $6.1 \times 2.9''/22.8 \times 12.4$; 15.4×7.4 cms.

Written in excellent naskh and nasta'liq, for Mir Shamsu'ddīn, in 1097/1686.

Good 'unwān. Interlinear gold work on first two pages. Arabic in red. Gold ruled borders. Worm holes. Fair condition. Bound.

A rare work.

ff. 135. ll. 15. S. 6.5 × 4.1"/16.5 × 10.3. cms.

Written in good nasta'liq. on Dhīqa'da 1045/April, 1636.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Last two folios by a later hand. Bound.

2464

Taf. 26.

شرح القرآن معینی

SHARHU'L-QUR'ĀN-E-MU'ĪNĪ

A rare commentary on the Glorious Qur'ān compiled by Mu'īnuddīn b. (Sirāju'ddīn Khāwand Maḥmūd) b. Khwāja Mīr Sayyid Sharīf b. Diya b. Mīr Muḥammad b. Tāju'ddīn Ḥusain b. 'Alāu'ddīn 'Aṭṭār at the instance of his pupils and disciples who requested him to undertake this work after he had completed his Arabic commentary called Zubdatu't-Tafsīr. He dedicated this work to the Emperor 'Ālamgīr.

The author who flourished during the reign of Shāh Jahān and 'Ālamgīr was a sufīc Shaikh of Naqshbandī affiliation. Besides this work he compiled the following works, most of them are rare and scarce.

1. Zubdatu't-Tafsīr (comp. 1062/1052), an abridged commentary in Arabic. ASB Arabic No. 106
2. Intikhāb-e-Ṣaḥīḥ Bukhārī.
3. Intikhāb-e-Ṣaḥīḥ Muslim.
4. Intikhāb-e-Jāma'-e-Tirmidhī.
5. Muraqqatu'l-Qulūb, an Arabic work on sufism.
6. Mir'ātu'l 'Adālat, Persian.
7. Raddu'l-Malāḥid, Persian.

The above works are mentioned in his introduction.

Later on he compiled Ganj-e-Sa'adat, a Persian work on sufism, which he completed in 1073/1663, vide Iv. ASB. 1275.

Beginning : حمد نامحدود و ثنای نامحدود مر معبودی را سزا است که
حمد جمیع حامدان - الخ

Ending : گفت و الله آب آن چاه چون رنگ حناء است و نخلستان
او چون رؤس شیطان بود

2461

Taf. 40.

Another copy of Part II. According to previous pagination 81 folios are missing between ff. 32 and 33.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 308. ll. 19. S. 9.6×5.8 ; $7.4 \times 3.9^*$ / 24.2×14.6 ; 18.6×9.8 cms.

Written in ordinary naskh. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2462

Taf. 15.

An incomplete copy of Part II ending in verse 32 of chapter 22.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly. و نا بود شود، ملخص کلام هلاکت مشرکان است

ff. 107. ll. 13 to 16. S. $8.7 \times 5.7^*$ / 21.8×13.1 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Margins repaired. Fair condition. Preserved in a portfolio. A worthless copy.

2463

Taf. 21.

تفسیر سورة یوسف

TAFSĪR-E-SŪRA-E-YŪSUF

Another detailed commentary on chapter XII, by Hāji Muẓaffar Husain a'l-Kūnhānī (الکونهای) a'l-Klrmānī (f. 3).

Beginning :

أحسن قصص و اخبار و ابین ذکات و آثار حمد واجب
الوجود است - الخ

Ending :

بتوحید خدای تعالی و نبوت محمد مصطفی صلی الله علیه و آله و سلم

2458

Taf. 44.

Another copy of Part II.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 319. ll. 29. S. 9.0×5.4 ; 6.1×3.2 "/ 22.7×13.7 ; 15.3×8.0 cms.

Written in good naskh. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Headings of suras in red. Coloured ruled borders. A few worm holes. Good condition. To be slightly repaired. Bound.

2459

Taf. 47.

Another copy of Part II.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 482. ll. 21. S. 12.1×9.3 ; 9.7×5.5 "/ 30.5×23.5 ; 24.5×14.0 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Coloured ruled borders. Text in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seal: I'tidādu'd-Daulah, 1256.

اعتضاد الدولة - ١٢٥٦

2460

Taf. 49.

Another copy of Part II.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 342. ll. 21+34 on margins. S. 11.3×6.2 "/ 28.6×15.8 cms.

Written in clear naskh and shikast-nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Arabic text in red. Dampness stains. Worm holes. Poor condition. Binding damaged.

Seal: Ibrāhīm.

اتخذ الله إبراهيم خليلاً

2455

Taf. 46.

Another copy of Part II.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 560. ll. 19. S. 9.5×6.9 ; 6.4×3.8 / 23.9×17.3 ; 16.1×9.6 . cms.

Written in good naskh. A late 10th cent. copy.

Rubrications. Gold and coloured ruled borders. Dampness stains.
Worm holes. Fair condition. Bound.

2456

Taf. 35.

An other copy of Part II.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 388. ll. 21. S. 12.5×8.4 ; 9.3×5.5 / 31.5×21.2 ; 23.3×13.8 . cms.

Written in good naskh and nasta'liq. A late 11th cent. copy.

Gold and coloured ruled borders. Arabic text in red. Worm holes.
Fair condition. To be repaired and re-bound.

2457

Taf. 32.

Another copy of Part II.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 354. ll. 23. S. 9.8×6.2 ; 7.2×4.2 / 24.8×15.6 ; 18.2×10.5 . cms.

Transcribed by Ḥāfiẓ Ḥusain b. Ḥasan, in clear naskh, on 15 Rabi' I, 1102/7 December, 1690, at Aurangābād.

Red ruled borders. Text in red. Dampness stains. Worm holes.
Fair condition. Not bound.

Seal: Ḥaidar Yār Khān.

حیدر یار خان

ff. 390. ll. 19. S. 9.8×6.1 ; 7.4×3.9 "/ 25.0×15.4 ; 18.6×9.9 cms.

Written in clear naskh, on 9th Shawwâl, 1111/19 March 1700.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Worm holes. Poor condition. Not bound.

2453

Taf. 41.

Another copy of Part I, defective by two folios at the end. This copy ends in verse 85.

Beginning: as usual.

Ending: abruptly.

آفتاب نبود، و زمین ایشان نیز بنا نمی داشت

ff. 343. ll. 25 to 31. S. 13.3×7.2 ; 11.0×5.1 "/ 33.6×18.1 ; 27.7×12.8 cms.

Written in ordinary naskh. A late 12th cent. copy.

Coloured ruled borders. In two different hands and sizes of written space. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2454

Taf. 37.

Another copy of Part I, defective in the beginning by a folio, and ending in verse 96 of Chapter 17.

Beginning: abruptly.

عنان توجه بتالیف کتاب حواهر الفتیر - الخ

Ending: abruptly.

و هل كنت اياهسم من الا بشرأ مكر آدمی

ff. 236. ll. 21. S. 10.8×6.6 "/ 27.2×16.8 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq. An early 13th cent. copy. Arabic text in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2450

Taf. 43.

Another copy of Part I.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 420. ll. 21. S. 12. 1×7.1 ; 8.3×4.3 "/ 30.5×17.9 ; 21.0×10.9 . cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Ordinary 'unwān. Coloured ruled borders upto f. 34. Rubrications. and then Arabic text in red. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals: Haidar Yār Khān.

حیدر یار خان

2451

Taf. 48.

Another copy of Part I, defective at the end in verse 44 of Sūra 8. This copy was left incomplete (f. 106). Mirza Muḥammad b. Mirza 'Alī Akbar transcribed ff. 107v. onwards in 1022/1613.

Beginning : as usual.

Ending : abruptly.

و اورا حجتی و عذر نیست یا مراد از من هلك

ff. 146. ll. 21. S. 8.9×6.7 "/ 22.5×17.0 . cms.

Written in ordinary nasta'liq. An early 11th cent. copy.

Arabic text in red. Dampness stains. Fair condition. Bound.

Seals: Abu'l-Qāsim a'l-Husainī.

ابوالقاسم الحسيني

2452

Taf. 39.

Another copy of Part I, defective in the middle. First 72 folios by a later hand.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 392. ll. 23. S. 10.9×6.8 ; $7.3 \times 3.9^{\circ}/27.6 \times 17.1$; 18.5×9.9 cms.

Written in clear naskh, by Luṭfu'llah, on 25 Rajab, 1095/28 June, 1684.

Illuminated 'unwān. Coloured ruled borders. Arabic text in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Binding damaged.

Seals: of Munirul-Mulk, 1206.

منیر الملک - ۱۲۰۶

2448

Taf. 34.

Another copy of Part I.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 526. ll. 19. S. 11.5×7.5 ; $8.3 \times 4.6^{\circ}/29.0 \times 18.9$; 21.1×11.6 cms.

Written in ordinary naskh. An early 12th cent. copy.

Ordinary 'unwān. Coloured ruled borders. Arabic text in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2449

Taf. 31.

Another copy of Part I.

Beginning: as usual.

Ending: احدایکی را، یعنی بریا و تصنع عمل نکنند که ...
و علی آاه و اصحابه اجمعین

ff. 421. ll. 23. S. 9.7×5.8 ; $7.2 \times 3.7^{\circ}/24.4 \times 14.5$; 18.1×9.2 cms.

Written in ordinary naskh. An early 12th cent. copy.

Double red ruled borders. Text in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Binding to be repaired.

Seals: Haidar Yār Khān.

حیدر یار خان

2445

Taf. 45.

Another complete copy.

Beginning: as usual.

Ending : as usual.

ff. 719. ll. 25. S. 10.6×6.3 ; 7.1×3.7 / 26.8×15.9 ; 17.9×9.4 . cms.

Written in clear nasta'liq. A late 12th cent. copy.

*Unwān. Gold and coloured ruled borders. Arabic text in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Binding damaged.

Seal: Khwāja Muḥammad Sikandar, 1300.

خواجہ محمد سکندر - ۱۳۰۰

2446

Taf. 36.

Another complete copy, defective at both ends. It begins with verse 58 of chapter 9 and ends with verse 102 of chapter 23.

Beginning: abruptly.

إذا هم يستخطون ایشان خشم گیرند

و ناخشنود باشند - الخ

Ending: abruptly.

و از پس مشرکان برزخ مانعیت میان رجعت

ff. 170. ll. 27. S. 11.0×6.5 / 27.7×16.5 . cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2447

Taf. 33.

Another copy of Part I.

Beginning: as usual.

Ending : as usual.

Two full page vignettes in the beginning. Gold and coloured ruled borders. Headings of of suras in red on gold. Marginal signs indicated by medallions. Text in bold script. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

Ref: Ri 29, Rs. 1-3; E.I.O. 2681-2690.

2443

Taf. 29.

Another complete copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 693. ll. 29. S. 10.3×6.2 ; 7.3×6.6 "/ 26.1×15.7 ; 18.4×7.0 cms.

Written in good naskh. An early 11th cent. copy.

Good 'unwān. Gold and coloured ruled borders. Text in red. Margins of a few folios at both ends renewed. Worm holes, repaired. Fair condition. Bound.

2444

Taf. 30.

Another complete copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 529. ll. 27. S. 11.2×7.7 ; 7.7×4.8 "/ 28.2×19.3 ; 10.3×12.0 cms.

Transcribed in good naskh by Ḥasan 'Alī b. a'l-'Imādī a'l-Kâtib of Şan'ân, in 1057/1647.

Two full page ornate vignettes. Gold and coloured ruled borders. Text in red.

Heading of suras in white on gold set in illuminated cartouches. Worm holes. Damaged folios repaired. Fairly good condition. Bound.

Beginning: abruptly. اعنى كرام الكاتبين که محرمان سر پردۀ جبروت - الخ

Ending: abruptly. يغفر بيا مرزد من يشاء هر كرا خواهد و يعذب

ff. 549. ll. 25. S. 11.0×6.5 ; 7.2×3.9 "/ 27.8×16.2 ; 18.1×9.8 cms.

Written in good naskh. A late 10th cent. copy.

Good 'unwān, at the beginning of chapters 2 and 3. Gold and coloured ruled borders. Arabic text in red. Dampness stains. Worm holes. Margins once renewed. 218-221 damaged. Fair condition. Bound.

2442

Taf. 38.

مواهب عليه

MAWĀHIB-E-'ALĪYYAH (Tafsir-e-Husaini)

A complete copy of the well known and popular commentary on the Glorious Qur'ān, by the same Kāshifī compiled in 899/1494.

Part I. Beginning: بعيد از تمهید قواعد محامد الهی و تائیس مبانی
ثنا خوانی - الخ

Ending: نعرذ بالله من الربا فی العمل و نعتصم به
الزلل برحمتك يا ارحم الراحمين

Part II. Beginning: که بعض در مذهب صوفیان بادیه از مواهب الهی
که بر حضرت شیخ رکن الدین - الخ

Ending: کفتم مه و روز و سال تاریخ نویس
فی الحال دوم ز شهر شوال نوشت

f. 679. ll. 31. S. 11.2×7.6 ; 8.8×5.6 "/ 28.2×19.3 ; 22.2×14.0 cms.

Written in good Bahār. An early 10th cent. copy

The commentary is on :

Chapter 1 (سورة فاتحه), on f. 51.

Chapter 2 (سورة البقرة), on f. 121v.

Chapter 3 (سورة آل عمران), on f. 292.

Chapter 4 (سورة النساء), on f. 428.

Beginning :

بسم الله اعلم حكيم-

زينت فاتحه هر كتاب و زير خاتمه هر خطاب ... اما بعد فاضل ترين عبادتي

مرامت حضرت رسالت صلوات الله وسلامه عليه وآله را

قرآن خواند است - الخ

Ending :

بدوزينت گرفته لوح مسطور

همه نور است بل نور على نور

ff. 467. ll. 30. S. 9.9 x 5.6 ; 7.8 x 3.8" / 25.0 x 13.8 ; 19.7 x 9.6. cms.

Written in good naskh, fine script. An early 11th cent. copy.

Good 'unwān. Golden foliage on margins and interlinear gold work on first two folios. Gold and coloured borders. Rubrications. Worm holes. Folio 168 damaged. Fair condition. To be repaired and re-bound.

Ref : R. 11, E.I.O. 2680.

2441

Taf. 23.

Another copy of the same, defective at both ends. One folio in the beginning and several at the end are missing. The contents are :

Chapter 1, on f. 66.

Chapter 2, on f. 144v.

Chapter 3, on f. 419v., containing upto verse 129.

Good 'unwān. Gold and coloured ruled borders. Rubrications.
Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2439

Taf. 20.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending :

بِزَرَعَةِ خَلِيلٍ وَ مَشْهُدِ اسْرَائِيلَ رَسَانِيدَنْدِ ،
وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى نَبِيِّنَا وَ عَلَيْهِمُ اَجْمَعِينَ

ff. 234. ll. 23. S. 8.7 × 5.4" / 12.0 × 13.6. cms.

Transcribed by Muḥammad Sa'īd b. Muḥammad Murād in ordinary
naskh and nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

Seals: Ḥaidar Yār Khān.

باحیدر کرارادرکنی - حیدریار خان

- Mīr Sulṭān Ḥusain 1164.

میر سلطان حسین قدوی احمد شاه

بادشاه غازی - ۱۱۶۴

Autograph of previous owner.

2440

Taf. 22.

جواهر التفسیر لتحفة الأمير

JAWĀHIRU'T-TAFSĪR LI-TUḤFATI'L-AMĪR

A detailed commentary on the Glorious Qur'ān compiled at the
request of Mīr 'Alīsher, by Ḥusain b. 'Alī a'l-Wā'iz a'l-Kāshifī (d. 910/
1505). This huge work was intended to cover four volumes, but the
commentator completed the first volume and then took up his abridged
commentary the Mawāhib 'Alīyyah, better known as Tafsir-e-Ḥusani.

The first and only known volume of the commentary covers chap-
ters, 1, 2, 3, and part of 4 upto verse 84 (لَوْحَدِ وَافِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا).
The work begins with a lengthy introduction dealing with the attributes
of the Glorious Qur'ān divided into 4 faṣls and six 'unwāns (vide E.I.O.
2680).

Written in good naskh. A late 10th cent. copy with missing folios replenished by a later hand.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Preserved in a portfolio.

2437

Taf. 17.

Another copy of the same. It contains extra matter on ff. 348v-362v.

Beginning: as usual.

Ending : as usual. on f. 348v, otherwise.

دیان جل ذکره مومن را گوید ان المتقین فی مقام امین... محمد وآله
و صحبه وسلم

ff. 362. ll. 19. S. 9.1×5.1 ; 7.3×3.1 "/ 23.0×12.9 ; 18.4×7.7 . cms.

Written in good nasta'liq. An early 11th cent. copy.

Brownish glazed paper. Good 'unwān. Coloured ruled borders. Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

Seals: Shāh Nawāz Khān.

عبدہ شاہ نواز خان

Muhammad Shāh on f. 19v.

محمد شاہ

2438

Taf. 19.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. ll. 23. S. 12.9×7.2 ; 9.3×4.4 "/ 32.7×18.1 ; 23.5×11.1 . cms.

Written in good nasta'liq, by Dargāh 'Alī Khān Afghān Multānī, for his master's son Sayyid Maḥmūd, on 19 Rabī II, 1091/ 1 July, 1610, at Daulatābād Fort.

Autograph of Muḥammad Fāḍil b. as'h-Shaikh Hāmīd.

2435

Taf. 16.

تفسير سورة يوسف

TAFSĪR-E-SŪRA-E-YŪSUF

A comprehensive commentary on chapter XII (Sūra-e-Yūsuf), of the Glorious Qur'ān which is described therein as the best story (أحسن القصص). The chapter deals with the history of Joseph. It was compiled by Mu'īnu'ddīn b. Muḥammad Farāhī Herātī, also known as Mu'īnu'l-Miskīn (d. 907/1502).

Beginning :

ربنا انا من لدلك رحمة... بعد همى كويد لندة ضعيف

مستكين معين المسكين - الخ

Ending :

و على سائر احبابهم و اخوانهم من الشهداء و الصديقين

ff. 302. ll. 21. S. 11.8×6.7; 8.4×4.2ⁿ/29.9×16.8; 21.2×10.6. cms.

Written in clear naskh, in 1073/1664.

Coloured ruled borders. Rubrications. Worm holes. Fair condition.
Bound.

Ref: IVC 335.

2436

Taf. 18.

Another copy of the same. It contains extra matter, on ff. 168-173^v.

Beginning: as usual.

Ending: as usual, on f. 168 and like next copy (f. 354) as under:

من اهل السماوات و اهل الارضين و الحمد لله رب العالمين

ff. 172 ll. 21. or. 22. S. 9.4×5.8ⁿ/23.8×14.5. cms.

Part II. Beginning:

قال ألم أقل . . . قال أى قال الخضر جملة مستأنفة
است تا كيد از جهت دفع انكار است - الخ

Ending:

و مشير برانتهاء مرام است مستحسن بود - و الله اعلم

ff. 675. ll. 41. S. 18.9×12.7 ; 16.4×9.8 "/ 47.7×31.9 ; 41.4×24.7 . cms.

Written in good Behār. A late 9th cent. copy.

Vignettes in the beginning. Marginal signs at the beginning of each juz. Coloured ruled borders. Arabic text in broad script. Rubrications. Worm holes. Fair condition. To be repaired and bound, in two parts.

Seals: 'Abdu'r-Raḥīm

سالك راه عمل حق عبد الرحيم

Munir'l-Mulk, 1206.

منير الملك - ۱۲۰۶

In 992/1584 this volume, which must have been bound in two parts, came to the Library of 'Abdu'r-Raḥīm, in Aḥmadābād. After a few months he presented the work to Amīr Nu'mān who appears to be a ṣūfī Shaikh of that time.

Ref E. I. O. 2679.

2434

1 af. 4.

Another copy of the same but containing portion of Part I from chapter 7 (a'l-a'rāf) to end of chapter 18 (a'l-Kahaf), defective by a folio at the end.

Beginning:

سوره اعراف تمام مکی است و بعضی گویند
هشت آیات از و - الخ

Ending: abruptly.

قل انما انا بشر مثلكم يوحى الى انما الحكم الله واحد

ff. 30. ll. 25. S. 13.3×9.0 ; 9.1×5.2 "/ 33.7×22.6 ; 28.0×13.5 . cms.

Written in clear naskh. A late 12th cent. copy.

Coloured ruled borders. Text in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Repaired and re-bound.

Seals: 1. Maḥmūd.

یا محمود

2. Shaikh Bahādur.

شیخ بها در

Written in good nasta'liq, by **Khusraw** b. Muhammad Amin, on 20 Rajab. An early 11th cent. copy.

Gold ruled borders, for first 15 folios. Rubrications. Worm holes. Fair condition. Bound.

2432

Taf. 12.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 135. ll. 19. S. 9.4. x 6.1" / 23.6 x 15.4. cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq, by Mirza Mahdi of Bhopal. A late 13th cent. copy.

A few worm holes. Fair condition. Binding damaged.

2433

Taf. 3.

بحر مواج

BAHR-E-MAWWAJ

An exhaustive commentary on the Glorious Qur'an, compiled by Wall Shihab Shams 'Umar Daulatābādī Zawālī Dihlawī (d. 849/1445). Āzād Bilgrāmī in this work, Ma'āthiru'l-Kirām gives his full name as: Qāḍī Shihābu'ddīn Maliku'l-'Ulama b. Shamsu'ddīn b. 'Umar a'z-Zawālī a'd-Daulatābādī.

It is dedicated to Shamsu'd Dunyā wa'd-Dīn Abu'l-Muẓaffar Ibrāhīm Shāh Sultān who was the Sharqī king of Jaunpūr between 804-844/1401-1440. The authorities quoted by the author are eminent commentators.

The work is divided into two parts:

Part I. **Beginning:**

حماد ای حمد طیب کہ رانجہ فائجہ آن بنفجہ

آلاء مطاہ - الخ

Ending: on f. 375v. چه کشته زنده نتوان کرد و روح رفته باز نتوان آورد

Marginal glosses. Notes in Arabic and Persian on different topics by a later hand on six folios in the beginning.

Beginning : لك الحمد يا من بيده الملك وهو على كل شيء قدير . . اما بعد

فيقول العبد الفقير - الخ

Ending : سهو و نسيان را مبدل كن بيلم من هم جهله مرا كن جملة حلم

آمين يا رب العالمين

ff. vi + 132. ll. 23. S. 9. 3×5.6 ; 6.6×3.2 "/ 23.5×14.1 ; 16.7×8.0 . cms.

Written in clear nasta'liq. A late 10th cent. copy.

'Unwān. Red ruled borders. Arabic text in red. Dampness stains.

Worm holes. Fair condition. To be repaired and re-bound.

Ref: IvASB 957; IVC 334.

2430

Taf. 14.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 152. ll. 15. S. 7.9×4.7 "/ 20.0×11.8 . cms.

Written in clear naskh and nasta'liq, on 13 Sha'bān 949/28 November, 1542.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Binding damaged.

Seals: Mīr Aḥmad 'Alī, 1227.

میر احمد علی - ۱۲۲۷

Previous owner's autograph.

2431

Taf. 13.

Another copy of the same.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

ff. 239. ll. 15 S. 6.7×3.6 "/ 16.9×9.1 . cms.

2428

Taf. 9.

تفسیر زاهدی

TAFSĪR-E-ZĀHIDĪ

A well-known commentary on the Glorious Qur'ān, compiled by Abū'n-Naṣr Aḥmad b. a'l-Ḥasan b. a'd-Durāinī a's-Sulaimānī a'd-Dāruājaki (الدارواجکی) better known as Zāhidī, (d. 658/1260). He has given the Arabic text with its meanings and notes duly explaining points wherever necessary.

This copy contains the first half from Sūra-e-Fātiḥa to the end of Sūra-e-Kahaf.

Beginning : ... معیا ، و جعل اتباعه دینا رضیا ... قال الشيخ الإمام
الاجل - الخ

Ending : از بهر رضاء حق تعالی را ، نه روی نه ریاء خلق را ، عمل که
خالص بود

ff. 362. ll. 31. S. 14.1 x 10.3 ; 11.0 x 7.3" / 35.6 x 26.2 ; 27.8 x 18.6 cms.

Written in good Baḥār. A late 9th cent copy.

Coloured ruled borders. Ornate shamsa at the beginning of each juz, and circles indicating each section (رکوع) drawn on the margins. Rubrications. Arabic text in broad script. Dampness stains. Worm holes. Damaged folios repaired. First two folios by a later hand. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Ref. IVC 333.

2429

Taf. 11.

تفسیر یعقوب چرخى

TAFSĪR-E-YA'QŪB CHARKHĪ

A commentary on the last two parts (29 and 30) of the Glorious Qur'ān preceded by Sūra-e-Fātiḥa i.e. chapters 1, 67 to 114. by Ya'qūb b. Uṭmān b. Maḥmūd a'l-Ḥaznavī a'l-Charkhī, (d. 838/1435).

Beginning: abruptly یاد کن انگاه کہ الہام دادم . . . ان اقدفہ فی التابوت
... و القیت علیک

Ending: در سینہ ہاے مردمان از دیو و آدمیان

ff. 377. ll. 23. S. 11.3 X 6.3; 8.9 X 4.3¹/28.6 X 15.8; 22.6 X 10.8 cms.

Written in good Bahār. A late 9th cent. copy.

Coloured ruled borders. Text in broad script with the word ALLAH in red. Headings of chapters, and marginal signs in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Seals of Mushīrul-Mamālik.

مشیر الممالک -

2427

Taf. 5. البصائر فی الوجوه و النظائر

A'L-BAṢĀ'IR FI'L-WUJŪH WA'N-NAẒĀ'IR

A critical study of the Glorious Qur'ān, compiled by Abu'l-Faḍā'il Muḥammad b. a'l-Husain a'l-Mu'īnī an-Nīshāpūrī, (d. 577/1181).

In the preface, divided into six faṣls, the commentator begins with the usual praise for Allah, the Holy Prophet, the Orthodox Khaliīs, and the Prophet's Family.

Faṣl 1, on f. 2 begins with the attributes of the Glorious Qur'ān. The commentator states that the truths and subtleties (حقائق و دقائق) of the Holy Book are manifest as well as obscure (ظاہری و باطنی). There are twelve doctrines like the twelve zodiacal signs, and 360 ways of life just like 360 degrees. This book is a source of pleasure for the devout and that of warning for the wicked. It is full of sublime truth and beauty to describe which the water of all the oceans turned into ink will not suffice.

Faṣl 2, on f. 2v. since it is ordained that the Muslims should understand the text properly he undertook this work but felt nervous as there is a warning in a hadīth that the commentator should not give vent to his personal views.

2. TAFSIR—CRITICAL STUDIES AND COMMENTARIES

(1) SUNNITES

2425

Taf. 6.

ترجمہ تفسیر طبری

TARJUMA-E-TAFSIR-E-TABARĪ

The earliest known commentary on the Glorious Qur'ān compiled by Muḥammad b. Jarir a't-Tabarī, (d. 310/923), translated into Persian by Abū Bakr Muḥammad b. a'l-Faḍal, Abū Bakr Muḥammad b. Ismā'il, Abū Bakr Aḥmad b. Hāmid, Muḥammad b. 'Alī and others.

This work was undertaken by the orders of the Samanide Prince, Abū Šāliḥ Maṣṣūr b. Nūḥ, (350-365/961-976), by a special committee of the divines of Bukhārā, Samarqand and Farghāna. The original work was in forty volumes whereas the Persian version is in an abbreviated form.

This old copy contains the peculiarities of the language and the orthography mentioned in IVASB. 955. It is however defective by a folio or two in the beginning, and contains first half of the Glorious Qur'ān. It is defective at the end as well.

Beginning: abruptly وانه شيد الله من هذا اركانہ ... واین کتاب تفسیر

بزرگست از روایت محمد بن جریر الطبری - الخ

Ending: abruptly

قال لوشئت لاخذت

ff. 361, ll. 20. S. 12.0 × 7.1"/30.2 × 18.0 cms

Written in good archaic naskh. A late 8th cent. copy.

Rubrications. Arabic text in broad script, and Persian paraphrase in red. Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be repaired, and re-bound.

Ref. R. 8; IVASB. 955.

2426

Taf. 7.

Another copy of the same, containing part II.

This copy is defective in the beginning, and whole of Chapter xix, and verse 1-39 of Chapter xx are missing.

5. Risāla-e-Waqf-e-Lāzim, (ff. 56-58v).

A tract on obligatory stops by an anonymous person.

Beginning: الحمد لله... أما بعد، بدان ای خواننده قرآن - ایخ

Ending: و پنج سوره است وقف لازم نیست. و الله اعلم بالصواب

6. Mukhtaṣar dar Bayān-e-Tajwid-e-Qur'ān, (ff. 58v-64v).

Another version of the same as in Nos: 2409/1 and 2410, defective at the end.

Beginning: as usual.

Ending: abruptly. وهم آنست که در وقت تلفظ

ff. 64. ll 15. S. $9.4 \times 6.4^{\circ} / 23.6 \times 162$ cms.

Written in ordinary script. A late 13th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Poor condition. Not bound.

ff. 102. ll. varying. S. $6 \times 4.1''/15.2 \times 10.4$ cms.

Written in a few different hands in ordinary naskh and nasta'liq.
A mid 13th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Preserved in a portfolio.

2424

Aq. 138/2-7.

مجموعه

MAJMU'A

This copy contains the following works on tajwīd.

1. Maqṣūdu'l-Qārī, (ff. 1-6v).

Another copy of the same. Refer Nos; 2406 and 2422/2.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

2. Risāla-e-Qir'at, (ff. 7-31).

- A tract by an anonymous person.

Beginning :

الحمد لله وفقني بحمدك حمد الواصلين الكاملين - الخ

Ending :

ثم بين المغرب إلى العشاء

3. Tuḥfa-e-Sulaimānī, (ff. 31v-52).

A tract compiled by Ḥasan a'l-Khādim a'l-Qārī, and dedicated to Shāh Sulaimān Ṣafawī, (1077-1105/1667-1694).

The work is divided into a muqaddima, ten bābs and a Khātima.

Beginning :

الحمد لله الذي أنزل الفرقان على عبده ليكون للعالمين نذيرا - الخ

Ending :

زياده از حد نبايد كر دمثل إياك نعيد و إياك نستعين

4. Risāla dar Bayān-e-Nūn-e-Sākin, (ff. 53-56).

A tract on silent nūn, etc, by an anonymous person.

Beginning :

الحمد لله ... ذكر احكام النون الساكنة و التنوين - الخ

Ending :

با همتی ادا کند قاهر یکی بکمال مودی شود -

و الله اعلم بالصواب

Beginning : شرائط کہ در تعامل کلام اللہ این است اول باید کہ - الخ
Ending : abruptly. بہ یکجا بدہ روزت ازین فال
 میانہ کردہ احوال تو امسال

4. *Risāla-e-Qir'at*, (ff. 19-34v).

An anonymous tract on *tajwīd* defective at both ends.

Beginning : abruptly. باب المخارج بدانکہ پیش از معرفت مخارج دانستن - الخ
Ending : abruptly. و مخرج نون ساکنی نزد حروف

5. *Chihil Sūrah*, (ff. 36v-56).

A collection of forty *ḥadīth* rendered into Persian by an anonymous person.

Beginning : الحمد لله ... اما بعد این فائدہ جلیلہ و موعظہ بلیغہ است - الخ
Ending : عذاب دیگر بر ایشان بانیچہ کسب کردند از گناہان -
 و اللہ اعلم بالصواب

Stray notes on ff. 56-64, 77-87v.

6. (*Naẓm-e-Ḥāfiẓī*), (ff. 65-69v).

A versified tract on Shiite 'aqā'id composed by Ḥāfiẓī. It is defective in the beginning.

Beginning : abruptly. بعد سلطان انبیاست امام شہ مردان علی علیہ سلام
Ending : حافظی نظم کرد این ابیات در بہشتش خدا دہد درجات

7. A few Persian *ghazals* of Mīr 'Abbās 'Alī, on ff. 88-93v.

8. *Mathnawī-e-Mīr Ḥasan* (ff. 94v-102v).

The popular Urdu poem called *Saḥrū'l-Bayān*, defective at the end.

Beginning : کروں پہلے توحید یزدان رقم
 جہاں جسکے مجھ سے کو اول فلم
Ending : abruptly. اب آکے کہانیکی ہے داستان
 ذرا سنیو دل دیکے اسکا بیان

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.
Not bound.

Ref:- 1. EIO. 2705.
3. IvASB (Ar). 133.

2423

F.I. 69/2.

مجموعه

MAJMU'A

This copy contains the following works:—

1. Nazmu'l-La'ālī, (ff. Iv-10).

A versified treatise on correct recitation composed by Abu'l-Qāsim, better known as Qārī, and dedicated to Shāh 'Abbās II. It is different from the one with the same title noted in No: 2408.

This copy is defective at the end.

Beginning:

ای کلام از انتظام ذات پاکت در نظام
وی زشهد شکرین شکر ت زبان شیرین بکام

Ending: abruptly.

رمز بو جعفر . . . بهر یعقوب و اویس و روح
آمد مرطفس

2. Fāl-Nāmā, (ff. 11-13).

A versified tract on divination by the aid of the Glorious Qur'ān by an anonymous person.

Beginning:

هر که از قرآن کشاید فال خویش
بی شک. او واقف شود از حال خویش

Ending: abruptly.

ز غایب آیدت اخبار خویش
پا بکود در کنارش یار خویش

3. Fāl-Nāmā, (ff. 13-18v).

Another versified tract with a few lines in prose by an anonymous person. It is defective in mīm (میم).

Taj. 16.

مجموعه

MAJMO'A

The copy contains three works on tajwīd.

1. Mufīdu'l-Qurr'ā, (ff. iv-50).

A short treatise compiled by Ni'matu'llah b. Raḥmatu'llah Lāhūrī during the reign of 'Ālamgīr. At the end the author gives names of those qāris from whom he acquired the knowledge on tajwīd.

The work is divided into 14 bābs on usual topics.

Beginning : من غیر آو نه بینم در جهان قدر را پروردگار را حاودان - الخ

Ending : و لیتلطف تا در نصف اول است و لام در نصف

آخر است در سورة كهف

2. Maqṣūdu'l-Qārī, (ff. 51V-59).

Another copy of the same noted in No 2406 and 2424/1.

Beginning : as usual.

Ending : as usual.

3. A'l-Muqaddimatu'l-Jazariyya' (ff. 59v-66).

A short versified treatise in Arabic with Persian paraphrase written in between the lines, compiled by Shamsu'ddīn Abu'l-Khair Muḥammad b. a'l-Jazarī a'l-Quraishī a'd-Damishqī as'h-Shāfa'ī, (d. 833/1429).

Beginning : يقول راجي وهو رب سامع - محمد ابن الجزري الشافعي

Beginning : على النبي المصطفى المختار - وآله وصحبه الاحبار

A Persian munājāt, in verse, and notes on dreams on ff. 66v-68. Marginal glosses.

ff. 66+2. ll. 15 × 11, 9. S. 9.8 × 6.1"/24.6 × 15.4 cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Ilāh Dīn, in Muḥarram, 1089/February, 1678.

2420

Taj. 8.

عجائب التجويد

'AJĀIBU'T-TAJWID

A short treatise dealing with Ḥaṣṣ's reading compiled by an anonymous author. It is divided into 19 bābs. Bab 17 is on last folio as this copy is defective at the end.

Beginning :

الحمد لله الذي أنزل الفرقان ... أما بعد فيكون

أضعف عباد الله - الخ

Ending: abruptly.

ما شرم دارم هم نام حبیب خود را عذابی کنیم - انتهى

ff. 16, 11, 12. S. 9.3 × 6.0" / 28.6 × 15.2 cms.

Written in good naskh and nasta'liq. A late 12th cent. copy

Headings in red. Worm holes. Poor condition. Preserved in a portfolio.

2421

Taj. 5.

رساله تجويد

RISĀLA-E-TAJWID

A short treatise on correct recitation compiled by an anonymous person. It deals with some main topics of tajwīd.

The work is divided into 8 faṣls.

Beginning :

الحمد لله الذي خلق الانسان و علمه البيان ... أما بعد بدانکه این

رساله ایست - الخ

Ending :

سبح و ظل ، و الحمد لله أولا و آخر و ظاهرا و باطنا

ff. 6, 11, 11 or 12. S. 8.0 × 3.1" / 20.6 × 13.0 cms.

Written in ordinary naskh and shikast-nasta'liq, on 2 Rajab, 1206 / 25 February, 1792, at Pāngal (Maḥbūbnagar District).

Rubrications. Worm eaten. Poor condition. Preserved in a portfolio.

Taj. 9. فصول جماليه و رساله تجويد

FUṢŪL-E-JAMĀLĪYA AND RISĀLA-E-TAJWĪD

This copy contains two works :—

1. Fuṣūl-e-Jamālīya, (ff. 1v-41v).

A short treatise on correct recitation compiled at the request of those fond of tajwīd. The title is on f. 1v, but the author has not given his name.

The work is divided into a muqaddima, 10 faṣls, (11 in text), and a *khātima* on usual topics.

Beginning : الحمد لله هادي المؤمنين بفضله على الإيمان - أما بعد بدأ این
مختصریست در بیان تجوید قرآن - الخ

Ending : با ما بعد خود بجهان مستانفه است - والله اعلم

2. Risāla-e-Tajwīd, (ff. 42v-77).

Another short treatise by Muḥammad b. 'Alī b. Muḥammad a'l-Ḥusāinī.

This copy which is left incomplete at the end, is divided into a muqaddima, 2 bābs and a *khātima*. The divisions and sub-divisions are not properly marked, and spacings are left blank. There is great confusion, and hence these are not enumerated.

Beginning : الحمد لله الذي هدانا للإيمان ... أما بعد چنین گوید
افقر العباد - الخ

Ending : abruptly چون کوفی و بصری در ...

ff. 77. ll. 14. S. 6.1 × 3.3" / 15.6 × 8.6 cms.

Written in good naskh, in 1095/1684.

Rubrications. Dampness stains. Fair condition. Bound.

Both works are rare.

Muhammad Husain. This work deals with the revelation of the Glorious Qur'ān and how to recite it according to tajwid, and the orthography, etc.

Beginning :

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ
أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

Ending :

حَبِيبُكَ سَيِّدُ الْأَبْرَارِ وَصَلِّ عَلَيْهِ وَاصْحَابِهِ الْأَحْيَارِ

ff. 28. ll. 12. S. 11.6 × 6.6"/27.8 × 16.7. cms.

Written in clear naskh and nasta'liq, by Fidā 'Alī Baig, for 'Alī Husain, in 1321/1903, at Hyderabad.

European paper. Rubrications. Good condition. Bound.

2418

Taj. 17/1.

رساله در تعدادات آیات قران

RISĀLA DAR TA'DĀDĀT-E-ĀYĀT-E-QUR'ĀN

A critical study of the Glorious Qur'ān dealing with the number of verses in each chapter according to different schools of Qur'ās, compiled by Hairān Husain b. 'Uthmān, whose period is not known.

Beginning :

الاجزاء ، دیگر این فقیر حقیر کہ حیران حسین بن عثمان و قام
الله کید الشیطان می گوید کہ۔ الخ

Ending :

حرم لی الارض أن یا کل أجساد الانبیاء ، اخرجہ ابو داود
والنسانی فی تیسیر الوصول فی علم الحديث

ff. 19. ll. 19. S. 8.2 × 4.6 ; 5.5 × 2.7"/20.6 × 11.6 ; 13.8 × 6.8 cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Coloured ruled borders. Dampness stains. Some folios damaged. Worm holes. Fair condition. To be re-bound.

A rare work.

The work is divided into ten bābs and a *Khātima*.

| | |
|-----------------------------|--|
| Bāb i, on f. 11. | باب اول در مخارج حروف |
| Bāb ii, on f. 16. | باب دوم در صفات حروف هجا |
| Bāb iii, on f. 21. | باب سیم در تفخیم و اولام جلا |
| Bāb iv, on f. 24. | باب چهارم در مدات حروف |
| Bāb v, on f. 29v. | باب پنجم در ادغام حروف |
| Bāb vi, on f. 35v. | باب ششم در نون ماکنه و نون نقوین |
| Bāb vii, on f. 41. | باب هفتم در کیفیت و وقف و وصل |
| Bāb viii, on f. 46. | باب هشتم در استعاده |
| Bāb ix, on f. 46v. | باب نهم در اسم الله گفتن |
| Bāb x, on f. 48. | باب دهم در وقف نقوی و اصطلاحی |
| <i>Khātima</i> , on f. 52v. | خاتمه در باب اختلافات راویان امام عاصم |

Beginning: حمد بی حد و نهای بی عدد ثمار ارگاه کبیر پای احدیت و مراوقات معظیات صعدت

Ending: کسانی کوفی راوی او او الحارث دومی
ff. 125. ll. 9. S. 9.7 × 6.4; 6.8 × 3.1"/24.6 × 16.4; 17.3 × 7.7. cms.

Written in ordinary nasta'liq, on 7 Rabi' I, 1242/9 October, 1826.

Grotesque 'unwān. Interlinear decoration. Ruled borders. Rubrications. Worm holes. Acid used with gold has damaged the folios. Poor condition. To be repaired and re-bound.

A work of local interest.

2417

Taf. 28/5.

خلاصة النوادر

KHULĀṢATU'N-NAWĀDIR

An abridged version of Muḥammad Sa'dullah's own work, *Nawādiru'l-Bayān fi 'Ulūmi'l Qur'ān*, undertaken at the instance of Hājī

Beginning : محمد الله شاكر اباसान - نشكر الله حامداً بجنان

Ending : چون بتاربخ او نمودم غور - گفت تمت رساله دل في الغور

ff. 25. ll. 12. S. 8.0 × 5.1"/20.1 × 12.7. cms.

Written in ordinary nasta'liq, by Muhammad Brahna, on 11 Rajab, 1206/5 March, 1792, at Pāngal (Mahbūbnagar) Camp of Āsif Jāh II (for the Second Mysore War).

Rubrications. Headings in red. Worm holes. Fair condition. Not bound.

2415

Taj. 14. مرغوب القاري

MARGHŪBU'L-QĀRI

A short treatise in Persian verse dealing with the usual topics of tajwīd, compiled by 'Abdu'llah b. Ahmad b. Bāyazīd a'l-Kalyānī. The poem is preceded by a short preface in Arabic prose.

Beginning : الحمد لله الذي فضل العلم في الأعصار

نون ساكن هم ذكر تنوين دارد حل جار
قلب و ادغام است هم اظهار و احقار اشمار

Ending : در فغن اظم اكر حوى و راياي شتاب
درر كوع حامسى و الله أعلم بالصواب

ff. 10. ll. 10 or 11. S. 8.7 × 5.7"/21.9 × 14.4. cms.

Written in ordinary naskh and shikast-nasta'liq. In 1240/1825

Worm holes. Poor condition. Preserved in a portfolio.

Ref: Iv ASB 985/3.

2416

Taj. 2. حدائق القرات

HADĀ'IQU'L-QIRĀ'ĀT

A treatise on correct recitation based on 'Āsam version. The work was compiled by Muhammad Ja'far Husaini Yazdī, in an year's time and completed in 1242/1826. It was dedicated to Sikandar Jāh, Āsif Jāh III (f. 6). Author's name is on f. 7v and the title on f. 9. The author had a patron in Dargāh Qulī Khān (f. 9v). List of contents on f. 11.

After completing his education the author left his native land of Samarqand, and stayed for a while in Bukhārā. When he was over 40 he decided to go on the pilgrimage for which he came to India, in 1104/1693 and proceeded to the Deccan where the Mughal Emperor, 'Ālamgīr was staying. He was employed as an Amīn in Qāḍī's Court, and honoured by the title of Faḍal Khān. In 1108/1697 when Qāḍī Karīm Khān died, he was promoted to that post.

In 1119/1707 however, the Emperor, Shāh 'Ālam Bahādur Shāh I, permitted him to proceed on the pilgrimage, and gave him more than enough to defray the expenses. He went to Sūrat and stayed there with Amānat Khān and Diyānat Khān.

In 1120/1708 he left Sūrat for Jaddah and spent three years in Mecca and Madīna where he met eminent Qurṛās of the time.

He started this work, in Mecca, in 1123/1711 (رساله بدوش نظام) (▲ 1123 and completed it in the same years in Madīna (ff. 3-7 and 52v-53v).

Beginning : این نامه بنام آنکه نامش - نتوان دانست بی کلامش

Ending : از مصنف اگر کسی کند یاد - عیش دو جهان بکام او باد

ff. 54 + 2. ll. 25. S. 9.5 × 6.4" / 24.0 × 16.2. cms.

Written in good nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Headings in red, with many spacings left blank. Dampness stains. Worm holes. Fairly good condition.

A rare and valuable work.

2414

Taj. 12.

کفایة القاری

KIFĀYATU'L-QĀRĪ

A versified and concise treatise on correct recitation composed in 1136/1724, by Saifuddīn. The mathnawī has 550 couplets, and is divided into 15 bābs on usual topics.

The date of composition is given in the last couplet as

(تمت رساله ۱۱۳۶ هـ)

Bāb viii, on (إلى آت), on f. 21.

Bāb ix, on (الرسم), on f. 23v.

Bāb x, on (الماءات), on f. 29v.

Bāb xi, on (الوقوف), on f. 30v.

Bāb xii on (آيات و كلمات و حروف و نقاط و جزآن), on f. 33.

Rukū' on (الفرش), on f. 34.

Khātima, on necessary points for the Qārī, on f. 152v.

Beginning : الحمد لله عالم السر و الخفيات . . . أما بعد جنين
كويد عبد الباري - الخ

Ending : والله الهادي و إليه أنق قد فرغت من تأليفه و كتابته - الخ

ff. 156. ll. 21. S. 10.9 × 6.3 ; 8.5 × 3.8" / 27.5 × 16.1 ; 21.4 × 9.5. cms.

Written in good naskh, on 8 Jumāda I, 1086/21 July, 1675 at
Dacca (Jahāngirnagar).

Rubrications: Red ruled borders. Worm holes. Fair condition.
Bound.

Seals: Muḥammad Maḥmūd, 1105. المفتقر إلى شفاعته محمد محمود ١١٠٥

Shaikh 'Abdu'l-Qādir. 1161

شيخ عبد القادر بن
شيخ عبد الغفور - ١١٦١

2413

Taj. 6.

سبعة الثواني

SABA'TU'TH-THAWĀNĪ

A versified treatise on the "usual topics" of tajwīd, with marginal
additions. This copy, in all probability, is an autograph one by Faḍal
Khān takhallus Yūsuf.

It is different from the partly versified treatise having the same title and described in IVC 345/1.

Beginning: الحمد لله ... بدائع جملة که این تحریر مشتافانه و تقریر مبتدیان
در قلم آورده شود - الخ

Ending: واذ رايت ثم رايت ثم بمطاع ثم آمين - والله أعلم بالصواب

ff. 8. ll. S. 8.2 X 4.6ⁿ/20.6 X 11.5. cms.

Written in ordinary naskh, on 16 Rajab 1079/10 December, 1668.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. To be re-bound.

Ref: IVASB 985/2.

2412

Taj. 13. کز الإيمان فی قواعد القرآن

KANZU'L-IMĀN FI QAWĀ'IDI'L-QUR'ĀN

A treatise on correct recitation of the Glorious Qur'ān, compiled by 'Abdu'l-Bārī Taqīu'ddīn Muḥammad b. Abu'l-Faṭḥ a'l-Hamadānī a'l-Qārī, in 1086/1675.

The work is divided into a muqaddima, 12 bābs, one rukū' and a khātima, as under :-

Muqaddima on lives of qurrā, on f. 2.

Bāb i, on 29 alphabets, on f. 7.

Bāb ii, on (المد والقصر), on f. 9.

Bāb iii, on (التنوين و نون الساكنه), on f. 12.

Bāb iv, on (الراءات), on f. 15.

Bāb v, on (همزات), on f. 16v.

Bāb vi, on (الفتح و الاماله), on f. 18v.

Bāb vii, on (الروم و الانعام), on f. 20.

Ref: Nos. 2410 and 2424/6.

The work is divided into three bābs and a *khātima*.

Folios in between ff. 115 and 116 are missing. Notes at the end.

Beginning: نحمد الله الذي هدانا إلى تلاوة القرآن... أما بعد ، بدان
وفقك الله وإيانا كه - الخ

Ending: ز نظم هر كه كر دد منتفع حتى برودارم
تمبا شد جز (ایش جو) دعا استاد شكري را

ff. 138+4. ll. 10 or 11. S. 3.5×5.6; 6.6×3.4"/21.5×14.0; 16.7×8.5.
Cms.

Written in ordinary *naskh* and *nasta'liq*. A late 12th cent. copy.

'Unwān. Rubrications. Red ruled borders. Worm holes. Fair condition. Bound.

Ref: (2) Iv ASB 984.

2410

Taj. 3.

Another copy of the same by Shukrī. Ref: Nos. 2409/1 and 2424/6.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 43+1. ll. 7. S. 8.3×5.9"/20.9×15.0. cms.

Written in bad *naskh* and *nasta'liq*. An early 13th cent. copy.

Dampness stains. Worm holes. Fair condition. Bound.

2411

Taj. 17/2.

زينة القارى

ZINATA'L-QĀRI

A short treatise on correct recitation of the Glorious Qur'ān, compiled by Nuṣrat b. 'Umar, alias Iskandar.

The work was undertaken by Ibn Ibrāhīm a'l-Muṣṭafā Qārī, during the reign of Shāh 'Abbās II (1052-1077/1642-1666) the Safavide (f. 3). It was commenced in Mecca and completed in Madīna. (f. 4) in 1067 1657.

This work is for the Shiites and is divided into a muqaddima, bābs and a khātima, as under:

Muqaddima, on the attributes of recitation and

Bāb 1, on f. 7. باب اول در مخارج حروف و لوازم آن

Bāb 2, on f. 9v. باب دوم در بیان صفات حروف

Bāb 3, on f. 15v. باب سوم در بیان حروف مرققه و مفخمه

Bāb 4, on f. 18v. باب چهارم در بیان احکام نون ساکن و تنوین

Bāb 5, on f. 21v. باب پنجم در بیان ادغام

Bāb 6, on f. 26v. باب ششم در هاء کفایه

Bāb 7, on f. 27. باب هفتم در بیان مد و حروف مد

Bāb 8, on f. 36. باب هشتم در بیان اعوذ بالله گفتن و بسم الله خواندن

Bāb 9, on f. 38. باب نهم در بیان وقف

Bāb 10, on f. 43. باب دهم در بیان رسم الخط و کیفیت وقف بران

Bāb 11, on f. 60. باب یازدهم در بیان اختلافات راویان عاصم

Bāb 12, on f. 103v. باب دوازدهم در بیان اختلافات قراء سبعه در سوره فاتحه و اخلاص

Beginning: حمد بیحد و ثنای بیحد حضرت قادر و حکیمی راسخ در که
ب قدرت کامله - انخ

Ending: و از ان انتفاع دگر مطلبی دیگر نبود

2. Mukhtaṣar dar 'Ilm-e-Tajwīd (ff. 111v-138v). A short treatise on correct recitation with special reference to مخارج حروف compiled by Ustād Shukrī whose name is given at the end.

2408

Taj. 18.

نظم لالی

NAẒM-E-LU'ĀLĪ

A versified treatise dealing with the usual topics of tajwīd, composed during the reign of Sulṭān 'Abdullah Quṭb Shāh of Golconda, compiled by Abu'l-Qāsim Mashhadī, takhallus Nāẓim, in 1061/1651, (نظم لالی f. 159)

There are 87 (لؤلؤیه) couplets in this poem.

Profuse marginal glosses.

Beginning : زود ارباب بلاغت ان سخن دان معتبر - کان بود بسیار
معنی و مفید و مختصر

Ending : مولاش مشهد امام رضا - برضاست در دکن برضا

ff. 16. ll. 6. S. 9.4 × 5.6"/28.8 × 14.2. cms.

Written in good naskh. A late 12th cent. copy.

Headings in red. Worm holes. Poor condition. To be repaired and re-bound.

A rare work.

2409

Taj. 1. تحفة القراء - مختصر در علم تجوید

TUḤFATU'L-QURRĀ and MUKHTAṢAR DAR 'ILM-E-TAJWĪD

This copy contains two works :-

1. Tuḥfatu'l Qurṛā (ff. lv-110v).

A treatise on correct recitation of the Glorious Qur'ān, based on Āṣam's (a'l-Kūfī) reading.

Faṣl 1, on f. Iv.

8045 فصل اول در بیان مخارج حروف

Faṣl 2, on f. 3.

فصل دوم در بیان مد و قصر

Faṣl 3, on f. 4

فصل سوم در بیان ادغام

Faṣl 4, on f. 4v.

فصل چهارم در بیان اظهار

Faṣl 5, ibid.

فصل پنجم در بیان قلب

Faṣl 6, ibid.

فصل ششم در بیان اخفا

Faṣl 7, on f. 5.

فصل هفتم در بیان اظهار بعضی از حروف

Faṣl 8, on f. 5v.

فصل هشتم در بیان میم ساکن

Faṣl 9, ibid.

فصل نهم در بیان تفخیم و ترفیق را آت

Faṣl 10, on f. 6.

فصل دهم در بیان تغلیظ و ترفیق لامات

Faṣl 11, ibid.

فصل یازدهم در بیان تفخیم و ترفیق ألفات

Faṣl 12, on f. 6v.

فصل دوازدهم در بیان وقف بر او آخر کلمات

Khātimah, on f. 7.

خاتمه در بیان رموز که مصاحف وضع کرده اند

Notes on فضیلت دعا بعد نماز on ff. Iv-3, by a later hand.

Beginning :

الحمد لله المتكلم بالحواد المبین . . . اما بعد ، این رساله ایست
مختصر مفید در بیان تجوید - النسخ

Ending :

و « لب » علامت غیر بصری - تمت بحمد الله المنعم
الذی انعم لطفه . . . و آله الطاهرین

ff. ii+7. 11.20. S. 8.6×5.2"/21.7×13.3. cms.

Written in good nasta'liq, by Husain Khān Ardabellī, on 14 Ṣafar 1051/15 May, 1614, at Jahānābād.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Fair condition.

Ref: IVC 342 (Margins of ff. Iv-3).

Seals : 3 : Muḥammad Zuhūr Aḥmad.

Muḥammad Fayyād.

Muḥammad Shukūr.

Autographs of previous owners.

محمد ظهیر احمدی

محمد فیاض

محمد شکور

2406

M and K 74/2.

مقصود القاری

MAQṢUDU'L-QĀRĪ

A short treatise on correct recitation of the Glorious Qur'ān by Mu'izu'-ddīn Qāḍī, alias Qāḍī Khān Jahāngīrī. The work was dedicated to the Emperor Jahāngīr (1014-1037/1605-1628). It is divided into a muqaddima and several short faṣls.

Beginning : حمد بی حد و ثنای بی عد مرحضرت قادری را که قرآن مجید
و فرقان حمید بر ما فرو فرستاد - الخ

Ending : و بد آنکه اکثر اینها موافق تفسیر نیست بخلاف ادنھا
که همه اینها موافق تفسیر است - والله اعلم

ff. 68. ll. 11. S. 6.3 × 5.0"/15.9 × 10.0. cms.

Written in good nasta'liq. An early 12th cent. copy.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes, repaired. Fair condition. Bound.

2407

Taj. 4.

رساله تجوید

RISĀLA-E-TAJWĪD

A short treatise on correct recitation compiled by the father of Hidāyātu'llah.

The work is divided into twelve faṣls and a khātima, as under :

- On f. 16v. باب اول در بیان استعاذه
- On f. 17. باب دوم در بیان سمله
- On f. 18. باب سوم در بیان رعایت کردن حروف (در سه فصل)
- On f. 39. باب چهارم در بیان همزه (در سه فصل)
- On f. 42v. باب پنجم در بیان مد و قصر
- On f. 48v. باب ششم در بیان اشباع و عدم اشباع (در دو فصل)
- On f. 52v. باب نهم در بیان تفخیم و ترقیق (در دو فصل)
- On f. 57v. باب دهم در بیان آیات (در دو فصل)
- On f. 69v. باب یازدهم در بیان وقف (در دو فصل)
- On f. 79v. باب دوازدهم در بیان موصول و مقطوع
- On f. 85v. باب سیزدهم در بیان فرش حروف
- On f. 177v. باب چهاردهم در بیان تکبیر
- On f. 180. خاتمه در بیان مستحبات ختم قرآن

A short note giving more details about Bāb 13 on ff. 182-187.

Beginning: حمدی حد و ثنای بی عد مرمتکلمی را - حل جلاله - که فراءت
قرآن مجید - الخ

Ending: احضار جماعت علماء و صلحاء - بحسب است در حین ختم قرآن

Bābs 7 and 8 are missing from this copy.

ff. 182+5. ll. 15. S. 8.0 × 4.5" / 20.1 × 11.4. cms.

Written in good naskh and nasta'liq, on 25 Rajab, 1034/34 April.
1625.

Rubrications. Dampness stains. Worm holes. Partly repaired.
Fairly good condition. Bound.

2404

Taj. 11.

Another copy of the same.

Beginning: as usual.

Ending: as usual.

ff. 32. ll. 17. S. 8.5×5.7 / 21.5×14.6 cms.

Written in ordinary nasta'liq. A late 13th cent. copy.

Dampness stains. A few worm holes. Fair condition. Bound.

2405

Taj. 15.

معدن القرات

MA'DANU'L-QIR'ĀĀT

A comprehensive work on correct recitation, compiled by Mubārak Phūl Ibrāhīm, a pupil of Ḥāfiẓ Qārī Shaikh Faḍlullah, alias Shāikh Chāndan (d. 983 / 1575), and dedicated to the Emperor, Akbar the Great (f. 4).

The date of completion, 984/1576, is given in a qit'a on f. 3v, as (تصنيف دلکش ۹۸۴) and the title is on f. 3.

The work is divided into a muqaddima, in 5 faṣls 14 bābs, and a khātima.

On f. 5v. فصل اول در ذکر فضیلت قرآن و قاری

On f. 8v. فصل دوم در آداب قرآن

On f. 9v. فصل سوم در ذکر تنبیه بر طلب صحت قرات قرآن
و در ذکر تعریف حضرت مجددی شیخ چندن رح

On f. 11. فصل چهارم در اثبات هفت قرات

On f. 21v. فصل پنجم در تعداد اشیای هفت قاری مع سیزده راوی

Taj. 10.

قواعد القرآن

QAWĀ'IDU'L-QURĀN

A treatise on correct recitation of the Glorious Qur'ān compiled by Yār Muḥammad ibn Khudaīdād a's-Samarqandī. The work was dedicated to the Shalbānī Prince, 'Ubaīdu'llah, (940-946/1533-1539), and is divided into 12 bābs.

Besides marginal glosses, this copy contains:—

1. Sajāwandī's poem on tajwīd, on ff. 94-95.

It deals with— (ختم احزاب) hizb or manzli.

Beginning: حافظا این نظم را بشنو کنون - تا ترادر وقف باشد رهنمون

Ending: این ذکر تشدید را لازم بکیر - تا نیاید کفر ذات تو پذیر

2. A note on معانیات قرآن, on ff. 95-101

3. A note on the famous ten— العشرة الكرام بأسمائهم ورموزهم

to Shaikh a'l-Jaūzi's father, on f. 100v.

4. A note on different readings of "Ta'wudh". (تعوذ)

Beginning: حمد بی حد و ثنای بی عد حضرت قادری را که قرآن مجید
و فرقان حمید بر ما فرستاد - الخ

Ending: سورة الإخلاص كفؤا - والله اعلم بالصواب وإليه المرجع والمآب

ff. 94+7. ll. 9. S. 9.4×6.2"/24.0×15.6. cms.

Written in good naskh. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Worm holes. Poor condition. Preserved in a portfolio.

Ref: E.I.O. 2703; IVASB 973-974.

Appendix: A table is drawn on ff. 101v-102, wherein all such words occurring in the whole text are tabulated which are recited differently by different schools of Qāris—Saba'—'Ashar.

Tables are drawn on ff. 103v-133 giving description about such words throughout the text from the beginning to the end.

Beginning: البقرة، اتخذتم كيف وقع - الخ

Ending: وقياس مذهبه نقل حركة الهمزة إلى الغاء وقد ذكر في الأصول

ff. 133. ll. 17. S. 10.2×6.8 ; 7.7×4.7 */ 15.8×17.2 ; 19.6×12.0 cms.

Written in good naskh, by Fathullah b. 'Umar a'l-Hāfiẓ as'h-Shirwānī, Dhilhajja, 867/August, 1463.

Ruled borders. Dampness stains. Worm holes, repaired. Good condition. Bound.

An important and rare work.

2402

Taj. 17. منهل العطشان في رسم أحرف القرآن

MANHALU'L-'ATSHĀN FĪ RASM AḤRUFIL-QUR'ĀN

A critical study of the Glorious Qur'ān dealing with the orthography in different countries. The author, Tāḥir Ḥāfiẓ Iṣḥāhānī, submitted to the ruling Sulṭān, Abu'n-Naṣar Shāhrukh Bahādur, (808-850/1405-1447), and obtained his permission to note corrections on all available copies in the metropolis of Iṣḥāhān. He compiled this treatise as a guide, and divided it into a few faṣls.

The title stands for "The drinking place for the thirsty in (quenching the thirst for) the orthography of the Qur'ān."

Beginning: حمد و سپاس بی حد و قیاس پادشاهی را که - الخ

Ending: بعد از لام ألف چنانچه در اسم است معنی فاسد کرد و همچنین جزاؤ او، بآئید - والله أعلم بالصواب

ff. 41. ll. 19. S. 8.2×4.6 ; 6.1×2.7 */ 20.6×11.6 ; 15.2×6.8 . cms.

Written in ordinary naskh and nasta'liq. A late 12th cent. copy.

Rubrications. Coloured ruled borders. Worm holes Fair condition. Bound.

A rare work.

Bāb 9, on f. 91. الباب التاسع في الهجزة المتوسطة في مذهب حمزة
وهشام في الوقف

Bāb 10, on 91v. الباب العاشر في الهجزة المتطرفة في مذهب حمزة
وهشام في الوقف

Bāb 11, on f. 92. الباب الحادي عشر في الاظهار والادغام

Bāb 12, on f. 23. الباب الثاني عشر في اتفاهم في ادغام إذ وقد واء التانيث
وهل وبل وقل

Bāb 13, ibid. الباب الثالث عشر في ادغام حروف قربت مخارجها

Bāb 14, ibid. الباب الرابع عشر في احكام النون الساكنة والتنوين

Bāb 15, on f. 93v. الباب الخامس عشر في الفتح والامالة بين اللفظين

Bāb 16, on f. 94. الباب السادس عشر في امالة هاء التانيث في الوقف
في مذهب الكسائي

Bāb 17, ibid. الباب السابع عشر في مذاهبهم في الراآت

Bāb 18, on f. 94v. الباب الثامن عشر في اللامات

Bāb 19, on f. 95. الباب التاسع عشر في الوقف على اواخر الكلم

Bāb 20, ibid. الباب العشرون في الوقف على مرسوم الخط

Bāb 21, on f. 95. الباب الحادي والعشرون في مذاهبهم في ياآت الإضافة

Bāb 22, on f. 97. الباب الثاني والعشرون في مذاهبهم في ياآت الزوائد

Bāb 23, on 97v. الباب الثالث والعشرون في التكبير في قراءة ابن كثير

Bāb 24, on ibid. الباب الرابع والعشرون في مخارج الحروف وصفاتها

Beginning : صحيح لفظ التمود أعوذ بالله من الشيطان الرجيم - الخ

Ending : تمنون ، و فظلم تفكهنون ، وجهان عنه

Volume II (ff. 52v-86v) وفي الكتاب الثاني جعلتها مشجرا مصورا مشروحا
مبيناً مرتبا غاية التبيين والتزيين

This volume is given the name of a'l-Tashjir 'ala Tariqi't-Tashjir (ff. 53v), and it begins with an Arabic preface followed by diagrammatic trees explaining all the salient points raised in the 30 bābs of Volume I.

A few more charts are appended on f. 79v-86v :

Beginning : الحمد لله الذي زين بكال قدرته و نوال نعمته - الخ

Ending : عن اللوح المحفوظ بأمر الله عز وجل

Volume III (ff. 87v-100) وضعت الأصول في الجدول محصورة
مقصورة مضبوطة

In this volume the author claims to have explained all relevant points by tabulated charts covering 11 folios which no other author has done.

These tables are divided into 24 bābs, as under :—

Bāb 1, on f. 87v. الباب الأول في التعوذ والبسطة

Bāb 2, on ibid. الباب الثاني في مذهب أبي عمرو في الإدغام الكبير ذي المثليين
في كلمة وفي كلمتين

Bāb 3, on f. 88. الباب الثالث في مذهبه في الإدغام الكبير ذي المتقاربين في
كلمة وكلمتين

Bāb 4, on f. 89v. الباب الرابع في بيان المد والقصر

Bāb 5, on f. 90. الباب الخامس في بيان الهمزتين من كلمة

Bāb 6, ibid. الباب السادس في بيان الهمزتين من كلمتين

Bāb 7, on f. 90v. الباب السابع في الهمزة المفردة في مذهب
ورش وأبي عمرو

Bāb 8, on f. 91. الباب الثامن في نقل حركة الهمزة في مذهب « ج ، ف »
والسكوت على الساكن

Bāb 18, on f. 30v. الباب الثامن عشر في اتفاقهم على إدغام إذ وقد و تاء
التانيث و هل و بل

Bāb 19, on f. 31r. الباب التاسع عشر في ادغام الحروف قربت مخزجها

Bāb 20, on f. 31v. الباب العشرون في أحكام النون الساكنة و التنوين

Bāb 21, on f. 32v. الباب الحادي والعشرون في ذكر الفتح و الإمالة
و بين اللفظين

Bāb 22, on f. 37. الباب الثاني والعشرون في إمالة هاء التانيث في الوقف
في مذهب الكسائي

Bāb 23, on f. 37v. الباب الثالث والعشرون في مذاهبهم في الراآت

Bāb 24, on f. 39v. الباب الرابع والعشرون في تغليظ الالامات و ترفيقها

Bāb 25, on f. 40. الباب الخامس والعشرون في الوقف على أواخر الكلم

Bāb 26, on f. 41. الباب السادس والعشرون في الوقف على مرسوم الخط

Bāb 27, on f. 42. الباب السابع والعشرون في ياآت الإضافة

Bāb 28, on f. 45. الباب الثامن والعشرون في الياآت المحذونات
من الرسم

Bāb 29, on f. 46. الباب التاسع والعشرون في ذكر التكبير في قراءة
ابن كثير

Bāb 30, on f. 47. الباب الثلاثون في مخارج الحروف

Beginning : الحمد لله الذي أذاق قلوب القارئین حلاوة تلاوة الآيات
أما بعد جنين می کوید محمد بن محمود - الشيخ

Ending : در کتاب روح المزید فی شرح العقد الفريد بیان کرده
شده است - والله أعلم

A diagram showing the larynx, tongue, teeth and lips, with different alphabets marked thereon to indicate the place from where the sound should come out, on f. 51.

The principles of recitation (أصول قراءة) have been reduced into Persian. These could easily be understood by children and beginners.

Bāb 1, on f. 6. الباب الأول في ذكر أسماء القراء و أنسابهم و كنههم و بلدانهم و تاريخ وفاتهم

Bāb 2, on f. 8v. الباب الثاني في ذكر رواية الأئمة المذكورين إلى النبي عليه السلام

Bāb 3, on f. 10 الباب الثالث في ذكر الاستعاذة

Bāb 4, on f. 10v. الباب الرابع في ذكر البسملة

Bāb 5, on f. 11v. الباب الخامس في بيان ضمير الجمع

Bāb 6, on f. 12. الباب السادس في ذكر إدغام الكبير ذي المثليين

Bāb 7, on f. 13v. الباب السابع في ذكر إدغام المتقاربين في كلمة و كلمتين

Bāb 8, on f. 16v. الباب الثامن في ذكر هاء الكناية

Bāb 9, on f. 17. الباب التاسع في ذكر المد والقصر

Bāb 10, on f. 20. الباب العاشر في ذكر الهمزتين من كلمة

Bāb 11, on f. 21v. الباب الحادي عشر في ذكر الهمزتين من كلمتين

Bāb 12, on f. 23. الباب الثاني عشر في ذكر الهمزة المفردة

Bāb 13, on f. 23v. الباب الثالث عشر في نقل حركة الهمزة إلى الساكن قبلها

Bāb 14, on f. 24. الباب الرابع عشر في ترك الهمزة في مذهب أبي عمرو

Bāb 15, on f. 25. الباب الخامس عشر في السكوت على الساكن قبل الهمزة في مذهب حمزة

Bāb 16, on f. 26. الباب السادس عشر في وقف حمزة و هشام على الهمزة

Bāb 17, on f. 29v. الباب السابع عشر في ذكر الإظهار و الإدغام

ISLAMIC THEOLOGY

I. QUR'ĀNIC SCIENCE

1. *Tajwīd*—correct recitation of the Glorious Qur'ān.

2401

Taj. 7. المبسوط في القراءات السبع والمضبوط
من أضآات الطبع

A'L-MABSŪṬ FI'L-QĪRA'ĀTIS-SABA'WA'L-MADḤBŪṬ MIN
ĀḌĀ'ATI'T-ṬABA'

A detailed commentary by Muḥammad b. Maḥmūd b. Muḥammad b. Aḥmad b. 'Alī as'h-Sharīf a's-Samarqandī a'l-Hamadānī, maternal grandson of Abu'l Qāsim a'l-Madāyani a's-Samarqandī, on the famous versified work on tajwīd of Abu'l-Qāsim a'l-Qāsim b. Firrūḥ ash-Shāṭibī (d. 590/1194), called *Ḥirzu'l-Amānī wa-Wajhi't-Tahānī* which is popularly known as *Qaṣīdatu'sh-Shāṭibī*, or *Shāṭibiyya*.

This work, in turn, is a paraphrase of a't-Taisīr fi'l-Qir'āti's Saba' of 'Uṭmān a'd-Dānī (d. 444/1053).

The commentator claims that this work will be much easier than other works on Shāṭibiyya and the reader will not be in want of any other work.

The principles of Shāṭibiyya are commented upon in three ways and are divided into three kitāb (volumes).

The commentator's name is on ff. 1v and 53, and the title, on f. 3v.

The contents are as under :—

Introduction (ff. 1v-4v).

Vol. I in 30 bābs (ff. 4v-51).

TABLE OF CONTENTS

| | | |
|----------------|--------------------|---|
| CHAPTER I | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER II | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER III | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER IV | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER V | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER VI | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER VII | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER VIII | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER IX | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER X | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XI | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XII | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XIII | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XIV | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XV | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XVI | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XVII | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XVIII | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XIX | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XX | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XXI | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XXII | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XXIII | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XXIV | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XXV | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XXVI | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XXVII | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XXVIII | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XXIX | THE HISTORY OF THE | 1 |
| CHAPTER XXX | THE HISTORY OF THE | 1 |



TABLE OF CONTENTS FOR INDICES

| INDEX NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|------------|--|-----------|
| I | Names of Persons | i to xxxi |
| II | Names of Titles | i to xlvi |
| III | Names of Copyists | i to xi |
| IV | Dates of Transcription | i to xii |
| V | Places of Transcription | i to vi |
| VI | Autographs and Seals with Dates found with them | i to xvi |
| VII | List of Concordance | i to xii |
| VIII | Autograph copies, Calli- graphically written Mss ; Illustrated, Imperial, Rare Royal and Superbly decorated codices etc. | i to iv |



| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|---|-----------|
| 5. | Dāfe' u'l- <u>G</u> amm, (on ff. 29-30v) | 398 |
| 6. | Risāla-e-Jabr wa Ikhtiyār, (on ff. 30v-35v) | 398 |
| 7. | Risāla-e-Sawāl wa Jawāb, (on ff. 36-39v) | 398 |
| 8. | Risāla dar Haqiqat-e-Marg wa Rūḥ (on ff. 39v-42v) | 399 |
| 9. | A'r-Risālatu fi'n-Nafs, (on ff. 42v-44v.) | 399 |
| 10. | A'r-Risālatu fi Baqāi'n-Nafs-e-Insāniyah, (on ff. 44v-45v) | 399 |
| 11. | A'r-Risālatu fi Kayfiyāti Şudūri'l-Maujūdāt'an Mabda'i'l-Awwal, (on ff. 45v-46v) | 399 |
| 12. | Ithbāt-e-Wājibu'l-Wujūd, (on ff. 47-49) | 399 |
| 13. | A reply to the above by Tūsī, (on ff. 49v-51) | 400 |
| 14. | A note on <u>H</u> adith, in Persian, (on f. 51v) | 400 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|-----------|---|-----------|
| 3024 | Risāla-e-Radd-e-Shi'ah | 393 |
| 3025 | Majmū'a | 393-394 |
| | 1. Miftāḥu'l-Ghaib, (on ff. 1v-2v) | 393 |
| | 2. Risāla dar Khilāfat, (on ff. 3-68) | 394 |
| 3026 | Majmū'a | 394-395 |
| | 1. Iḍa'atu'sh-Shama' li Izāḥati Zalāmi'l-Muta' (on ff. 1-21v) | 394 |
| | 2. Saba' Sayyāra dar Radd-e-Mulḥidīn-e-Badkārah, (on ff. 22v-54v) | 395 |
| 3027 | Majmū'a | 395-396 |
| | 1. Raddu'l Buhtānī'l-Mauhūm, (on ff. 2v-6) | 395-396 |
| | 2. Tanbīhu's-Sālik, (on ff. 6v-8v) | 396 |
| 3028 | Majmū'a | 396-397 |
| | 1. Rūyat-e-Haqq, (on ff. 1v-3) | 396 |
| | 2. Jabr wa Ikhtiyār, (on ff. 3-5v) | 396-397 |
| | 3. Samā', (on ff. 5v-9) | 397 |
| | 4. Khwāb, (on ff. 9-10v) | 397 |
| | 5. Kamāl-e-Qudrat, (on ff. 10v-13) | 397 |
| 3029 | Majmū'a | 397-400 |
| | 1. Nūru'l-Hidāya, (on ff. 1v-9) | 397 |
| | 2. Nathru'l-La'ālī, (on ff. 10v-11v) | 397 |
| | 3. A'r-Risālatu fi Tafṣīlu'n-Nishāṭain, (on ff. 11v-26v) | 398 |
| | 4. Risāla Uṣūl-e-Dīn, (on ff. 26v-29) | 398 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|-----------|--|-----------|
| 3002 | A'ḍ-Ḍarbatu'l-Ḥaidariyah | 378-379 |
| 3003 | Dhurwat Sanāmu'l-Islām li-Tā'idi-Dīni'l-Islām | 379-380 |
| 3004 | Iyḍaḥ Laṭāfatu'l-Maqāl fi Tafṣīli'l-Jawāb | 380 |
| 3005 | Risāla-e-Munāẓirah | 381-382 |
| 3006 | Dhakhīratu'l-'Uqbā | 382 |
| 3007 | Sinān-e-Ḥaidariyah Kāsir-e-Ṣudūr-e-Mulḥidān-e-Hindiyah | 382-383 |
| 3008 | A'l-Fawā'idu't-Ta'ifah fi Ithbāti'r-Rābiṭah | 383 |
| 3009 | Tuḥfa-e-Nāṣiriyah wa Fawā'id-e-Ḥaidariyah | 384 |
| 3010 | Tark-e-Jūsh | 384-385 |
| 3011 | A'l-Qawlu'l-Mubīn | 385 |
| 3012 | A's-Saiful'-Maslūl- fi Qutli A'dā'ir-Rasūl | 386-387 |
| 3013 | Anwāru'l-Absār fi Taḥqīqi Marātibi'n-Nabī'il-Mukhtār wa A'immati'l-A't-hār | 387-388 |
| 3014 | — — — — — — — — — | 388 |
| 3015 | Tuḥfa-e-Munqalibah | 388-389 |
| 3016 | Risāla dar Ithbāt-e-Khilāfat-e Ḥaḍrat 'Alī | 389 |
| 3017 | Nuṣratu'l-Mu'minīn fi Kashfi'sh-Shubḥāti'l-Mu'ānidīn | 389-390 |
| 3018 | Nūru'l-Hidāya | 390 |
| 3019 | — — | 390 |
| 3020 | Risāla-e-Sawāl wa Jawāb | 391 |
| 3021 | Raddu'l-Fuḍūl | 391-392 |
| 3022 | Faiḍ-e-Quddūsī dar Bayān-e-Ikhtilāl-e-Kalām-e-Tūsī | 392 |
| 3023 | 'Ainu'l-Inṣāf | 392-393 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|-----------|---|-----------|
| | 3. Haft-band, on ff. 116v-119v. | 364 |
| 2981 | — — | 365 |
| 2982 | Hidāyatu'l-Ummah fi Ma'rifati'l-A'imma | 365-366 |
| 2983 | Risāla-e-Yūḥannā | 366 |
| 2984 | — — — | 367 |
| 2985 | — — — | 367 |
| 2986 | — — — | 367 |
| 2987 | Uṣūl-e-Fuṣūlu't-Tawḍīḥ | 368 |
| 2988 | Iḥbāt-e-'Aqā'id-e-Iḥnā 'Ashariyah | 369 |
| 2989 | Talkhīṣu'l-Marām fi 'Ilmi'l-Kalām | 369-370 |
| 2990 | Saifu'l-Mu'minin fi Qitāli'l-Mushrikin | 370 |
| 2991 | Iḥbāt-e-Ḥaqqin Laṭīfin | 370-371 |
| 2992 | Ḥazina-e-Radd-e-Munāfiq | 371-372 |
| 2993 | Risāla-e-Munāzira-e-Yūsuf wa Nūrullah | 372 |
| 2994 | Tuḥfa-e-Iḥnā 'Ashariyah | 372-373 |
| 2995 | Risāla-e-Iḥbāt-e-La'n bar Munāfiqin | 373 |
| 2996 | Kashfu'sh-Shubha 'an Ḥukumi'l-Muta' | 374 |
| 2997 | Kitāb-e-Mubīn | 374-375 |
| 2998 | Sullamu'l-Islām (Ḥujjatu'l-Islām wa Burhānu'l-Millat) | 375-376 |
| 2999 | Iḥyāu's-Sunnat wa Imātatu'l-Bid'at bi Ta'ni'l-Asinnat | 376 |
| 3000 | Nuzhatu'l-Iḥnā 'Ashariyah | 376-377 |
| 3001 | Jawāb-e-Risāla-e-Kashfu'l-Ḥiṭā | 377-378 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|---|-----------|
| 2960 | Şirât-e-Mustaqīm wa Dīn-e-Qawīm | 354 |
| 2961 | Barāhīn-e-Qāṭi'ah | 355 |
| 2962 | — — — | 355 |
| 2963 | Risāla-e-Qāḍizāda | 356 |
| 2964 | — — — | 356 |
| 2965 | Risāla dar Bayān-e-Siyādat | 357 |
| 2966 | Tarjamatu'l-Haqā'iq | 357-358 |
| 2967 | Kifāyatu'l-I'tiqād | 358 |
| 2968 | Kitābu'l-Imāmat | 358-359 |
| 2969 | — — — | 359 |
| 2970 | — — — | 359-360 |
| 2971 | — — — | 360 |
| 2972 | — — — | 360 |
| 2973 | — — — | 360-361 |
| 2974 | — — — | 361 |
| 2975 | Ithbāt-e-Imāmat | 361 |
| 2976 | Ithbāt-e-Imāmat | 362 |
| 2977 | Abşāru'l-Mustabşerīn | 362-363 |
| 2978 | — — — | 363 |
| 2979 | Risāla-e-Munāẓirah | 363-364 |
| 2980 | Majmū'a | 364 |
| | 1. Risāla-e-Munāẓirah, (on ff. Iv-53) | 364 |
| | 2. Abşāru'l-Mustabşerīn, (on ff. 53v-100) | 364 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|------------------------|---|-----------|
| 2945 | Majmū'a | 344-345 |
| | 1. Sarmāya-e-Iymān (on ff. Iv-91) | 344 |
| | 2. Risāla dar 'Ilm-e-Kalām, (on ff. 92v-139) | 345 |
| | 3. Risāla-e-Tauhīd, (on ff. 139-149) | 345 |
| 2946 | Majmū'a | 345-346 |
| | 1. Partawā-e-Anwār, (on ff. Iv-73) | 345 |
| | 2. Mir'ātu'l-Haqīqat, (on ff. 74v-115) | 346 |
| | 3. Riwayāt, (on ff. 115v-131v) | 346 |
| 6. CONTROVERSIAL WORKS | | |
| 2947 | Tuḥfatu'l-Abrār | 347 |
| 2948 | — — — | 347-348 |
| 2249 | Manhajū'l-Fāḍilīn fi Ma'rifati'a'immat'il Hudātil-Kamilīn | 348-349 |
| 2950 | — — — — — — — — | 349-350 |
| 2951 | — — — — — — — — | 350 |
| 2952 | Mabāḥitha-e-Tāhir Dakanī bā 'Ulamā-e-ahl-e-Sunnat | 350 |
| 2953 | Risāla-e-Ḥasaniyah | 351 |
| 2954 | — — — | 351-352 |
| 2955 | — — — | 352 |
| 2956 | — — — | 352 |
| 2957 | — — — | 353 |
| 2958 | — — — | 353 |
| 2959 | Tarāwatu'l-Laṭā'if fi Tarjamati Kitābi't-Tarā'if | 353-354 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| | 6. Risāla dar 'Ilm-e-'Arūd, (ff. 179v-181v) | 338 |
| | 7. Tafsīr-e-Kalām-e-Tauḥīd (ff. 181v-206) | 339 |
| | 8. A'r-Risāla fi Iḥbāti't-Tauḥīd, (margins of ff. 181v-184v) | 339 |
| 2940 | Majmū'a | 339-340 |
| | 1. Risāla dar Āḥār wa Awlād-e-A'imma (ff. 1v-7) | 339 |
| | 2. Sharḥ-e-Khuṭbatu'l-Bayān (ff. 7v-23v) | 340 |
| | 3. Risāla-e-Miqdāriya (ff. 24v-41) | 340 |
| 2941 | Majmū'a | 340-341 |
| | 1. Sarmāya-e-Iymān, on ff. 1v-178 | 340-341 |
| | 2. Sharḥ Du'ā-e-Ya Man Yaḥallu, (on ff. 181v-201) | 341 |
| 2942 | Majmū'a | 341-342 |
| | 1. Risāla-e-Uṣūl-e-Dīn, (on ff. 1v-32v) | 341 |
| | 2. Risāla-e-Ḥikmat, (on ff. 33v-52v) | 342 |
| | 3. Hadyatu's-Safar, (on ff. 53v-61v) | 342 |
| 2943 | Majmū'a | 342-343 |
| | 1. Tadhkirah, (on ff. 1v-41) | 342 |
| | 2. Hurmusu'l-Harāmīyah (on ff. 42-45) | 343 |
| | 3. Kitāb Nām-e-Ḥukama, (on ff. 46v-101) | 343 |
| 2944 | Majmū'a | 343-344 |
| | 1. Wilādat-e-Ḥaḍrāt-e-'Āliyāt (on ff. 1-4) | 343 |
| | 2. Risāla dar Namāz (on ff. 5-15v) | 344 |
| | 3. Majmū'a-e-Ruqa'āt, (on ff. 16-30v) | 344 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|-----------|---|-----------|
| 2922 | Uṣūl-e-Dīn | 326 |
| 2923 | Murshidu'l-Wā'izīn | 327 |
| 2924 | Surūru'l-Mu'mīnīn | 327-328 |
| 2925 | Sirāju'l-Hidāya fi Nihāyatiz-Zuhūr | 329 |
| 2926 | Zād-e-Ā'zam | 329-330 |
| 2927 | — — | 330 |
| 2928 | Ḥiznu'l-Mu'mīnīn | 330-331 |
| 2929 | Ḥadiqa-e-Sulṭāniyah | 331 |
| 2930 | Sulṭāniyah and Irshādu'l-'Awām | 332 |
| 2931 | Bashāratu'sh-Shi'ah | 333 |
| 2932 | A'r-Risālatu fi'r-Raj'at | 332-334 |
| 2933 | Majālis | 334 |
| 2934 | Zubdatu'l-'Aqā'id | 334-335 |
| 2935 | Risāla-e-'Aqā'id | 335 |
| 2936 | Sirāju'l-Mu'mīnīn | 336 |
| 2937 | Kilid-e-Bihisht | 336 |
| 2938 | Risāla-e-Ṣifāt-e-Thubūtiyah | 337 |
| 2939 | Majmū'a | 337-339 |
| | 1. Risāla dar I'tiqād (ff. 1-113) | 337 |
| | 2. Risāla-e-Tauḥīd (ff. 113v-122) | 337-338 |
| | 3. Nafā'isu'l-Arqām, (ff. 122v-147v) | 338 |
| | 4. Risāla-e-Tauḥīd (148-159) | 338 |
| | 5. Risāla-e-Jabr-wa-Ikhtiyār (ff. 159v-174) | 338 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|-----------|---|-----------|
| 2899 | Sham'-e-Yaqin (Ā'inā-e-Din) | 313 |
| 2900 | Jawāhirul-'Aqā'id | 314 |
| 2901 | Rīyādu'l-Abrār fi Manāqibi'l-Karrār | 315 |
| 2902 | Waqā'i'u'l-Maṣā'ib | 315-316 |
| 2903 | Shajratu'l-Ilāhiyah | 316 |
| 2904 | Risāla-e-Ghībat-e-Imām-e-Maw'ūd | 317 |
| 2905 | Manhaju'r-Rishād | 317 |
| 2906 | Risāla-e-Ithnā 'Ashariya | 318 |
| 2907 | — — — — | 318 |
| 2908 | Risāla dar Ithbāt-e-Imāmat | 319 |
| 2909 | Miftāḥ-e-Asrāru'l-Husainī | 319-320 |
| 2910 | Fiqrāt-e-'Āli Darajāt | 320 |
| 2911 | — — — — | 320 |
| 2912 | Nishā-e-Sarshār Arbāb-e-Iymān | 321 |
| 2913 | — — — — — | 321 |
| 2914 | Risāla-e-Raj'at-e-Şāhibu'l-Amar | 322 |
| 2915 | Zīnatu'l-Hidāya | 322 |
| 2916 | Tanbihu'l-Ghāfilīn | 323 |
| 2917 | Chihil Kalima | 323-324 |
| 2918 | Ijābatu'l-Muḍṭarrīn fi Bayāni'l-Uṣūl wa Furū'i'-dīn | 324 |
| 2919 | — — — — — — — — | 325 |
| 2920 | Ma'rifat-e-Ilāhiyāt | 325 |
| 2921 | Hadiyatu'l-Mu'minīn | 326 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|-----------|-----------------------------|-----------|
| 2876 | Tuḥfatu'l-Gharā'ib | 301-302 |
| 2877 | 'Aynu'l-Ḥayāt | 302-303 |
| 2878 | — — | 303 |
| 2879 | — — | 303 |
| 2880 | — — | 304 |
| 2881 | — — | 304 |
| 2882 | Risāla-e-Raj'at | 304-305 |
| 2883 | Ḥilyatu'l-Muttaqīn | 305 |
| 2884 | — — — | 305-306 |
| 2885 | — — — | 306 |
| 2886 | — — — | 306 |
| 2887 | — — — | 307 |
| 2888 | — — — | 307 |
| 2889 | Ḥayātu'l-Qulūb | 307-308 |
| 2890 | — — — | 308 |
| 2891 | — — — | 309 |
| 2892 | Tadhkiratu'l-A'immaḥ | 309-310 |
| 2893 | Ḥaqqu'l-Yaqīn | 310 |
| 2894 | — — | 310-311 |
| 2895 | Maslaku'l-Ārifīn | 311 |
| 2896 | — — — | 311-312 |
| 2897 | Manhajū'l-Yaqīn | 312 |
| 2898 | Sham'-e-Yaqīn (Ā'ina-e-Dīn) | 313 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|-----------|--|-----------|
| 2858 | Tuhfa-e-'Abbāsī | 289 |
| 2859 | Masāliku'i-Aṭwār wa Mashāriqu'l-Anwār | 289-290 |
| 2860 | Nukāt-e-Dawām-e-Dūdman-e-Quṭb Shāhī | 290 |
| 2861 | — — — — — | 291 |
| 2862 | Naṣiḥat-Nāma | 291 |
| 2863 | Manāqibu'l-Murtaḍawī | 292 |
| 2864 | — — — — — | 292-293 |
| 2865 | — — — — — | 293 |
| 2866 | — — — — — | 293 |
| 2867 | — — — — — | 294 |
| 868 | — — — — — | 294 |
| 2869 | Rawḍatu'l-Anwār wa Zubdatu'l-Afkār | 294-295 |
| 2870 | 'Aqā'id-e-Dīniyah | 295-296 |
| 2871 | 'Aqā'id-e-Quṭb Shāhiya | 296 |
| 2872 | Fawā'id-e-Munji | 297 |
| 2873 | — — — — — | 298 |
| 2874 | Sharḥ-e-Tajridu'l-'Aqā'id | 299 |
| 2875 | Majmū'a-e-Rasā'il-e-Kāshī | 300-301 |
| | 1. Sharā'itu'l-Iymān, (on ff. 1v-8) | 300 |
| | 2. 'Ā'ina-e-Shāhī (on ff. 8v-15v) | 300 |
| | 3. Tarjamatu'sh-Sharī'at, (on ff. 15v-33v) | 300 |
| | 4. Tarjamatu'ṭ-Ṭahārat, (on ff. 33v-40) | 300-301 |
| | 5. Risāla-e-Jawāb. (on ff. 40-42v) | 301 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|---|-----------|
| 2836 | Hallu'l-'Aqā'id | 274-275 |
| 2837 | — — — | 275 |
| 2838 | Tarjama-e-Baḥru'l-Ansāb | 275-276 |
| 2839 | Arkānu'l-Iymān | 276-277 |
| 2840 | Tarjamatu'l-Manāqib | 277-278 |
| 2841 | — — — | 278 |
| 2842 | Tarjama-e-Minhāju'l-Karāmāt fi Ma'rifati'l-Imāmat | 278-279 |
| 2843 | Ḥadīqatu'sh-Shī'ah | 279-280 |
| 2844 | — — — | 280 |
| 2845 | Risāla-e-Ḥasanīyah | 280-281 |
| 2846 | — — — | 281 |
| 2847 | — — — | 282 |
| 2848 | — — — | 282 |
| 2849 | — — — | 282-283 |
| 2850 | I'lāmu'l-Aḥibbā fi Ḥurmati'l- <u>G</u> hinā fi'l-Qur'ān | 283 |
| 2851 | Kifāyatu'l-Mu'minīn | 283-284 |
| 2852 | — — — | 285 |
| 2853 | — — — | 285 |
| 2854 | — — — | 285-286 |
| 2855 | Risāla-e-Uṣūl wa Ahkām | 286-287 |
| 2856 | Uṣūl-e-Khamsa | 287-288 |
| 2857 | Tuḥfa-e-Shāhī wa 'Aṭīyya-e-Ilāhī | 288-289 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| 2815 | Anīsu'l-Atqiyā | 260 |
| 2816 | Aḥwāl wa Faḍā'il-e-A'imma-e-Tāhirīn | 261 |
| 2817 | Irshādu'l-Mu'minīn | 261-262 |
| 2818 | Akḥbāru'l-Ma'ād | 262-263 |
| 2819 | Jawharu'l-Faḍā'il | 263-264 |
| 2820 | Dharī'atu'n-Najāṭ | 264 |
| 2821 | Janāḥu'n-Najāḥ | 265 |
| 2822 | Iyqāzu'niyām li'l-Ihtimām bi-Muqailidi Kulli Imām | 265-266 |
| 2823 | Tarjama-e-Sirāju'l-Iymān | 266 |
| 2824 | Fatwā | 267 |
| 2825 | 'Umdatul-Maqāṣid wa'l-Maṭālib | 267-268 |
| 2826 | Mirqātu'l-Jannāt | 268 |
| 2827 | Jām-e-Kaūthar | 269 |
| 2828 | Risāla Dar 'Aq'āid | 269-270 |
| 2829 | Risāla-e-Qāḍī Quṭbu'ddīn Kāhshānī | 270 |
| 2830 | Risāla dar 'Aqā'id | 270 |
| 2831 | Nūr-Nāma | 271 |
| 2832 | — — | 271 |
| 2833 | Shama'-e-Iymān | 272 |

(ii) SHIITES

| | | |
|------|-----------------------------------|-----|
| 2834 | Thawābu'l-A'māl wa 'Iqābu'l-A'māl | 273 |
| 2835 | Tarjama-e-I'tiqādāt-e-Qummi | 274 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|-----------|--|-----------|
| 2800 | Majmū'a | 250-251 |
| | 1. Intikḥāb-e-Zinatu'l-'Ibād, (on ff. Iv-36v) | 250-251 |
| | 2. A'māl-e-Rūz-e-'Āshūrah, (on ff. 39v-102) | 251 |
| 2801 | Rasā'il-e-Fiqh | 251-252 |
| | 1. Tarjuma-e-Tabṣīratu'l-Muta'allimīn fī Aḥkāmī'd-Rīn, (on ff. Iv-81v) | 251-252 |
| | 2. 'Amdah (on ff. 82v-138) | 252 |

5. 'AQĀ'ID

(i) SUNNIES

THEOLOGY, MORAL DOCTRINES, AND FORMS OF WORSHIP

| | | |
|------|-----------------------------------|---------|
| 2802 | Laṭā'if-e-Ghīyāthiyah | 253 |
| 2803 | A'l-Mu'tamad fī'l-Mu'taqid | 254 |
| 2804 | Khulāṣatu'l-Aḥkām fī Dīnī'l-Islām | 254-255 |
| 2805 | — — — — — | 255 |
| 2806 | — — — — — | 255 |
| 2807 | Natījatu'l-'Ālim li Naf'il-'Ālam | 256 |
| 2808 | Manāfi'u'l-Qulūb | 256-257 |
| 2809 | Manāqib-e-Sādāt | 257 |
| 2810 | Tuḥfa-e-Husain Shāhī | 258 |
| 2811 | Tuḥfatu'ṣ-Ṣalāt | 258 |
| 2812 | Takmilu'l-Iymān | 259 |
| 2813 | — — — | 259 |
| 2814 | — — — | 260 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| 2791 | Risāla dar Masā'il-e-Ṭahārat wa Ṣalāt | 244 |
| 2792 | — — — — — | 245 |
| 2793 | Nakḥbah | 245 |
| 2794 | Rasā'il-e-Fiqh | 245-246 |
| | 1. Shāḥ-e-Nabāt, (on ff. 1-4) | 245 |
| | 2. Dastūru'l-'Amal, (on ff. 4-35) | 246 |
| 2795 | Khulāṣatu'l-Aḥkām | 246 |
| 2796 | Hadyatu'ṣ-Ṣawm | 247 |
| 2797 | Zīnatu'l-'Ibād | 247 |
| 2798 | Majmū'a | 248-249 |
| | 1. Uṣūl-e-Dīn, (on ff. 1v-9) | 248 |
| | 2. Tarjamatu'ṣ-Ṣalāt, (on ff. 9v-17v) | 248 |
| | 3. Uṣūl-e-Dīn Manzūm, (on margins of 1v-5v) | 248 |
| | 4. Tarjama-e-Chihil Ḥadīth, (on margins of 6-9) | 248 |
| | 5. A note on the position of Ḥaḍrat 'Alī according to Maulānā Rūm's estimation on margins f. 9v. | 248-249 |
| 2499 | Majmū'a | 249 |
| | 1. A'r-Risālatu'ṣ-Ṣaghira, (on ff. 1v-60) | 249 |
| | 2. Kitābu'ṣ-Ṣawm, (on ff. 61v-82v) | 249 |
| | 3. Ṣirāṭu'n-Najāt, (on ff. 83v-86) | 249-250 |
| | 4. Hadyatu'ṣ-Ṣāliḥīn, (on ff. 86v-90v) | 250 |
| | 5. Ṣirāṭu'n-Najāt, (on ff. 91v-263) | 250 |

| CAT Nos. | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|----------|--|-----------|
| | 3. Du'ā-e-Saḥar, (on ff. 192v-194. Attributed to Imām J'afar Ṣādiq) | 233 |
| | 4. Uṣūl-e-Dīn, (on ff. 195-200. Shiites principles of faith) | 233-234 |
| 2773 | Risāla Namāz-e-Shabb | 234 |
| 2774 | Barātu'n-Najāt | 235 |
| 2775 | Tuḥfa-e-Lāriyah | 235 |
| 2776 | Ajwibatu'l-Masā'il | 236 |
| 2777 | Zīnātu'l-Hidāya | 236-237 |
| 2778 | Anīsu't-Tujjār | 237 |
| 2779 | Murshidu'l-'Awām | 237-238 |
| 2780 | Tarjama-e-Asāsu'l-Uṣūl | 238 |
| 2781 | Dhakhīratu's-Sa'ādat | 239 |
| 2782 | Tarjama-e-Iṣlāḥu'l-'Amal | 239-240 |
| 2783 | Miṣbāhu't-Tarīq | 240 |
| 2784 | Rasā'il-e-Fiqh | 241 |
| | 1. Intikhāb-e-Iṣlāḥu'l-'Amal, (on ff. Iv-22. by Abu'l-Ḥasan a'l-Ḥusainī) | 241 |
| | 2. Risālatu'n-Najāt, (on ff. 23v-120v) | 241 |
| 2785 | Risālatu'n-Najāt | 242 |
| 2786 | — — — | 242 |
| 2787 | — — — | 242 |
| 2788 | Zahru'r-Riyāḍ | 243 |
| 2789 | Tuḥfatu'l-Khāqāniyah | 243 |
| 2790 | Risāla-e-Bāqiriyah | 244 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|---|-----------|
| | 7. Risāla-e-Zakāt, (on 72v-76) | 225 |
| | 8. Risāla-e-Kaffārah, (on 76v-82v) | 225 |
| | 9. Risāla dar Madh Raūḍa-e-Muqaddasa-e-Najaf wa Karbalā, (on ff. 83-92v) | 225 |
| | 10. Fuṣūṣ-e-Sulaimānīyah, (on ff. 93-106v) | 226 |
| | 11. Tarjama-e-Kitāb-e-'All, (on ff. 107-137v) | 226 |
| | 12. Tarjama-e-Ḥadīth-e-'Uyūn-e-Akhbārī'r-Riḍā, (on ff. 137v-141v) | 226 |
| | 13. Sharḥ-e-Ḥadīth, (on ff. 141-154) | 227 |
| 2764 | Mā'idatu's-Samāwīyah | 227-228 |
| 2765 | Jāme'u'r-Riḍwī | 228 |
| 2766 | Gul-e-Gulzār-e-Ma'ānī | 229 |
| 2767 | Tarjama-e-Hadyatu'l-Mu'minīn | 229-230 |
| 2768 | Ṣaidīyah | 230 |
| 2769 | Majmū'a | 231 |
| | 1. Risāla-e-Ādāb-e-Safar, (on ff. 1-47v) | 231 |
| | 2. Miscellaneous prayers notes on magic and talismans, (on ff. 48-180v) | 231 |
| | 3. Ṣaidīyah, by Ḥazīn (on ff. 180v-200v) | 231 |
| 2770 | Tuḥfa-e-Āshīfīyah | 231-232 |
| 2771 | Risāla-e-Fiqh | 232 |
| 2772 | Majmū'a | 233-234 |
| | 1. Ziyārat-nāma, (on ff. 1v-93) | 233 |
| | 2. Tuḥfatu'l-Husainīyah, (on ff. 93v-191v) | 233 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| 2750 | Risālatu'r-Ridā' | 215-216 |
| 2751 | Ajwibatu'l-Masā'il | 216 |
| 2752 | Qiblatu'l-Āfāq | 217 |
| 2753 | Tarjama-e-Kanzu'l-'Irfān fi Fiqhi'l-Qur'ān | 217-218 |
| 2754 | Rasāi'l-e-Fiqh | 218-219 |
| | 1. Aqalla ma Yajūz bihiṣ-Ṣalāt (on ff. 1v-15) | 218 |
| | 2. Hadiyatu'l-Maulā (on ff. 15v-27) | 218-219 |
| 2755 | Tarjamatu'ṣ-Ṣalāt | 219 |
| 2756 | — — — | 220 |
| 2757 | — — — | 220 |
| 2758 | — — — | 220 |
| 2759 | Risālatu'n fi Shakkīyāti'ṣ-Ṣalāt | 221 |
| 2760 | Risālā-e-Kaffārah | 221-222 |
| 2761 | Risālatu'n fi'l-Hudūd wa'd-Dīyāt | 222 |
| 2762 | Rasāi'l-Fiqh | 222-223 |
| | 1. Hadīqatu'l-Muttaqīn, (on ff. 1-72) | 223 |
| | 2. Risāla fi Shakkīyati'ṣ-Ṣalāt, (ff. 73v-84v) | 223 |
| 2763 | (Majmū'a-e-Rasā'il | 223-227 |
| | 1. Tarjamatu'ṣ-Ṣalāt, (on ff. 1v-13v) | 223-224 |
| | 2. Tarjama-e-Tauḥīdu'r-Ridā, (on ff. 14-44) | 224 |
| | 3. Risāla fi Ahkāmi'n-Nawāṣib wal-Ghawāṣib, (on ff. 52) | 224 |
| | 4. Risāla-e-Waqf, (on f. 52v-59) | 224 |
| | 5. Risāla dar Taḥqīq-e-Tā'riḫ-e-Kushta Shudan-e- 'Umar, (on ff. 59-66v) | 224-225 |
| | 6. Risāla fi'l-Jabr wa'l-Ikhtiyār, (on ff. 67-72v). | 225 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|-----------|--|-----------|
| 2729 | Jāma'-e-Abbāsī | 205 |
| 2730 | — — | 206 |
| 2731 | — — | 206 |
| 2732 | — — | 206 |
| 2733 | — — | 207 |
| 2734 | — — | 207 |
| 2735 | — — | 207-208 |
| 2736 | Rasāi'l-e-Fiqh | 208 |
| | 1. Tarjamatu'l-Ithnā, 'Ashariyah (ff. Iv-19) | 208 |
| | 2. Uṣūl-e-Dīn (ff. 19v-31) | 208 |
| 2737 | Tarjamatu'l-Ithnā 'Ashariyah | 209 |
| 2738 | Uṣūl-e-Dīn | 209 |
| 2739 | — — | 210 |
| 2740 | Wājibāt-e-Namāz | 210 |
| 2741 | Lawāmi'-e-Ṣāhibqirānī | 211 |
| 2742 | — — — | 211 |
| 2743 | — — — | 212 |
| 2744 | — — — | 212 |
| 2745 | — — — | 213 |
| 2746 | Ḥadīqatu'l-Muttaqīn | 213 |
| 2747 | — — — | 214 |
| 2748 | — — — | 214 |
| 2749 | Sharḥ e-Ḥadīqatu'l-Muttaqīn | 214-215 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| | 3. Risāla dar Bayān-e-Tāj wa Arkān-e-Mashāi'kh, (on ff. 73v-77) | 194 |
| | 4. Şaigh-e-Nikāh, (on ff. 77-78) | 194 |
| | 5. Risāla-e-'Aqāi'd, (on ff. 78-80) | 194-195 |
| | 6. Uşūl-e-Dīn, (ff. 80v-83) | 195 |
| | 7. Jawāhir-nāma, on (ff. 62-64 ; and on margins of ff 64v-66) | 195 |
| 2712 | Şaidiya-e-Tahmāsp Şafawī | 195-196 |
| 2713 | Şaidiyah | 196-197 |
| 2714 | — — | 198 |
| 2715 | — — | 198 |
| 2716 | Tarjama-e-Fiqhu'r-Riḍwi | 198-199 |
| 2717 | Kilīd-e-Rustgāri | 199-200 |
| 2718 | — — — | 200 |
| 2719 | Tarjama-e-Miftāhu'l-Falāh | 200 |
| 2720 | — — — — | 201 |
| 2721 | Jāma'-e-'Abbāsi | 201-202 |
| 2722 | — — | 202 |
| 2723 | — — | 203 |
| 2724 | — — (In two different hands) | 203 |
| 2725 | — — | 204 |
| 2726 | — — | 204 |
| 2727 | — — | 205 |
| 2728 | — — | 205 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| 2694 | Asāsu'l-Muṣallī | 182 |
| 2695 | Farā'id-e-Irtiqāfiyah | 183 |
| 2696 | Aḥkāmu'l-Haiwān | 183-184 |
| 2697 | Aḥkāmu'ṣ-Ṣalāt | 184 |
| 2698 | Risāla-e-Panj Kalima wa-Ad'iyāt-Durūri | 185 |
| 2699 | Farā'idu'l-A'zamīyah | 185-186 |
| 2700 | Minhāju'l-'Adālat | 186-187 |
| 2701 | <u>Khamsa</u> -e-Maḥbūb Shāhī | 187 |
| 2702 | Masā'il-e-Fiqh | 188 |
| 2703 | Risālah dar Fiqh | 188-189 |
| 2704 | Risālah dar Fiqh | 189 |
| 2705 | Farhang-e-Fiqh | 189-190 |
| 2706 | Qawā'id-e-Namāz wa Waḍū | 190 |

(ii) SHIITES

| | | |
|------|---|---------|
| 2707 | Nailu'l-Marām | 191 |
| 2708 | Rasā'il-e-Fiqh | 191-192 |
| | 1. Tarjamatu'l-Ja'farīyah (on ff. 1v-35v) | 191-192 |
| | 2. Alfīyah Fārsī (on ff. 36v-48v) | 192 |
| 2709 | Shārh-e-Sharā'i'u'l-Islām | 192-193 |
| 2710 | Sī wa Haft Bāb dar Bayān-e-Wājibāt | 193 |
| 2711 | Majmū'a-e-Rasā'il | 194-195 |
| | 1. Sī wa Haft bāb dar Bayān-e-Wājibāt, (ff. 1v-62.) | 194 |
| | 2. 'Aqā'id-e-Dīnīyah, on (ff. 64v-73) | 194 |

| CAT. NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| 2673 | Fatāwa-e-Amīniya (With notes at both ends) | 171 |
| 2674 | — — — (With notes at both ends) | 171 |
| 2675 | Risāla-e-Şaidīyah | 171-172 |
| 2676 | — — — | 172 |
| 2677 | — — — | 172-173 |
| 2678 | Fiqh-e-Barahna | 173 |
| 2679 | — — — (With notes and table of contents in the beginning) | 174 |
| 2680 | Majmū'a-e-Khānī fi 'Izzi'l-Makānī | 174-175 |
| 2681 | — — — — — | 175 |
| 2682 | Ithāratu'sh-Shauq wa'l Gharām Ilā Hajji Bait'illāhi'l-Harām | 175-176 |
| 2683 | Miftāhu's-Şalāt | 176-177 |
| 2684 | Majmū'-e-Sultānī | 177 |
| 2685 | — — — — — | 177-178 |
| 2686 | Rasā'il-e-Fiqh | 178 |
| | 1. Risāla-e-Fiqh, (ff. 1-8) | 178 |
| | 2. Mushkilātu'l-Fiqh (ff. 8v-16v) | 178 |
| 2687 | Tāisiru'l-Aḥkām | 179 |
| 2688 | — — — — — | 179 |
| 2689 | — — — — — | 180 |
| 2690 | Mir'ātu'l-Muṣallī | 180 |
| 2691 | Targhibu's-Şalāt | 180-181 |
| 2692 | — — — | 181 |
| 2693 | Mir'ātu'l-Masā'il-e-Muḥammad Shāhī | 181-182 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| 2652 | Tarjamatu'l-Hidāya fī Sharḥi'l-Bidāya (Containing table of contents and Vol. IV. from Kitābu'sh-Shif'a to Kitābu'l-Khunthā). | 157-158 |
| 2653 | Sharḥ-e-Wiqāya | 158 |
| 2654 | — — — (Table of contents at the end). | 158-159 |
| 2655 | Manāfi'u'l-Muslimīn | 159 |
| 2656 | — — — | 159-160 |
| 2657 | Sharḥ-e-Farā'idu's-Sirājīyah | 160 |
| 2658 | Ṣalāt-e-Mas'ūdī | 160-161 |
| 2659 | — — — (Part II, in 45 bābs) | 162 |
| 2660 | — — — (In 44 bābs) | 162 |
| 2661 | — — — (Containing Part III from poor rate to miscellaneous topics). | 162-163 |
| 2662 | Sharḥ-e-Ṣalāt-e-Mas'ūdī | 163 |
| 2663 | Khīratu'l-Fuqahā wa Hujjatu'l-Fuḍalā | 163-165 |
| 2664 | Tarjama-e-Kanzu'd-Daqā'iq | 165 |
| 2665 | — — — — | 166 |
| 2666 | — — — — | 166 |
| 2667 | Tanwīru'l-Manār | 166-167 |
| 2668 | Fawā'id-e-Maḥmūd Khānī | 167-168 |
| 2669 | Fatāwa-e-Qarākhānī | 168 |
| 2670 | Fiqh-e-Bāburī | 168-169 |
| 2671 | Mukhtāru'l-Ikhtiyār 'Alā Madhhabī'l-Mukhtār | 169-170 |
| 2672 | Fatāwa-e-Amīniya | 170 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| 2641 | Risāla-e-Ḥadīth | 149-150 |
| 2642 | Kalimāt-e-Amīru'l-Mu'minīn | 150 |
| 2643 | Risāla-e-Ḥadīth | 150-151 |
| 2644 | Risāla-e-Sa'd wa Naḥas | 151 |
| 2645 | Majmū'a | 151-152 |
| | 1. Risāla fī Ikhtiyārati's-Sā'āt (ff. Iv-112.) | 152 |
| | 2. Taqwīmu'l-Muḥsinīn wa Aḥsanu't-Taqwīm, (ff. 112-132) | 152 |
| | 3. Mir'atu'l-Mustaḥallīn, (ff. 133v-140) | 152 |
| 2646 | Majmū'a | 153 |
| | 1. Risāla fī Ikhtiyārati's-Sā'āt, (on ff. Iv-24) | 153 |
| | 2. Risāla-e-Kaḥlārāt, (on ff. 25v-32) | 153 |
| | 3. Risāla fī'l-Jabr wa'l-Ikhtiyār, (on ff. 33v-39v) | 153 |
| 2647 | Majmū'a | 154-155 |
| | 1. Tuḥfatu'l-Waṣāyā, (on ff. Iv-19) | 154 |
| | 2. Aḥwāl-e-Aḥmad bin Jadīr, (on ff. 20v-48) | 153 |
| 2648 | Sharḥ-e-fiqh -e-Akbar | 154-155 |

FIQH—LAW

(i) SUNNITES

| | | |
|------|---|-----|
| 2649 | Tarjamatu'l-Hidāya fī Sharḥi'l-Bidāya | 156 |
| 2650 | — — — (Containing Vol. III. from Kitābu'l-Ba'i to Kitābu'l-I'dhn). | 157 |
| 2651 | — — — — — | 157 |

| CAT. Nos. | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|-----------|--|-----------|
| 2618 | A's-Şāfi Sharḥ-e-Kāfi (Containing book XVI) | 134-135 |
| 2619 | Majālisu'l-Aḥzān | 135-136 |
| 2620 | Risāla fi Ikhtiyārātī's-Sā'at Wa'l-Ayyām Wa't-Tawārīkh | 106-137 |
| 2621 | — — — — — | 137 |
| 2622 | — — — — — (In an abridged form) | 137 |
| 2623 | — — — — — | 138 |
| 3624 | — — — — — | 138 |
| 2625 | Tarjama-e-Tauḥid-e-Mufaḍḍal | 138-139 |
| 2626 | — — — — — | 139 |
| 2627 | — — — — — | 139-140 |
| 2628 | Risālatu fi'r-Raj'at | 140-141 |
| 2629 | — — — — — | 141 |
| 2630 | — — — — — (Stray notes at the beginning) | 141 |
| 2631 | — — — — — | 141-142 |
| 2632 | Majmū'a-e-Rasā'il-e-Bāqir Majlisi | 142-143 |
| 2633 | Dastūru'l-Khā'ifin | 143-144 |
| 2634 | Anīsu'l-Akhyār | 144 |
| 2635 | Lisānu'dh-Dhākirin | 145-146 |
| 2636 | Khawāṭimu's-Şālihīn | 146 |
| 2637 | Ma'ārifu'l-Yaqīn fi Sharḥ Aḥādīth-i 'Arba'in | 147 |
| 2638 | Bashāratu'l-Muṣṭafā li Shī'ati'l-Murtaḍā | 147-148 |
| 2639 | (Tarjama-e-Aḥādīth-e-Qudsī) | 148-149 |
| 2640 | (Aḥādīth-e-Nabī fi Shān-e-'Alī) | 149 |

| CAT NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|----------|--|-----------|
| 2598 | — — — (Table of contents in the beginning). | 123 |
| 2599 | — — — | 124 |
| 2600 | — — — — — — — the beginning). | 124 |
| 2601 | — — — — — — — | 124 |
| 2602 | Tarjama-e-Chihal Ḥadīth | 125 |
| 2603 | Maḥāsinu'l-Ādāb, (Tarjama-e-Makārimu'l-Aḥlāq) | 125-126 |
| 2604 | Makārimu'l-Karā'm, | 126-127 |
| 2605 | Tarjama-e-Makārimu'l-Aḥlāq | 127 |
| 2606 | Mukhtār-Nāma | 128 |
| 2607 | — — — — — — — | 129 |
| 2608 | — — — | 129-130 |
| 2609 | — — — | 130 |
| 2610 | — — — | 130 |
| 2611 | Tarjama-e-'Uyūn Aḥbārī'r-Ridā | 131 |
| 2612 | Gauhar-e-Murād | 131-132 |
| 2613 | — — — | 132 |
| 2614 | — — — | 132 |
| 2615 | A's-Ṣāfi Sharḥ-e-Kāfi | 133 |
| 2616 | — — — (Books V and VI only) | 133-134 |
| 2617 | — — — (Containing extracts from the preceding work). | 134 |

| CAT Nos. | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|----------|---|-----------|
| 2578 | Tanbīhu'l- <u>G</u> hāfilīn wa Tadhkiratu'l 'Ārifīn | 113 |
| 2579 | — — — — — | 113-114 |
| 2580 | — — — — — | 114 |
| 2581 | Sharḥ-e-Nahju'l-Balāghat | 114-115 |
| 2582 | Dah Majlis | 115 |
| 2583 | — — — — — (Bound as a bayāḍ) | 116 |
| 2584 | — — (With marthīya of Muḥtasham Kāshī, in the beginning) | 116 |
| 2585 | — — Muḥtasham's marthīya is preceded Arabic prayer) | 117 |
| 2586 | — — — — — | 117 |
| 2587 | — — — — — (Bound as a bayāḍ) | 117 |
| 2588 | Yāzdah Majlis | 118 |
| 2589 | — — — | 118 |
| 2590 | Duwāzdah Majlis | 119 |
| 2591 | Tuḥfa-e-Shāhī | 119-120 |
| 2592 | Tarjama-e-Quṭb Shāhī | 120-121 |
| 2593 | — — — (With table of contents in the beginning) | 121 |
| 2594 | — — — — — | 122 |
| 2595 | — — — | 122 |
| 2596 | — — — (Without table of contents) | 122 |
| 2597 | — — — | 123 |

| CAT NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|----------|--|-----------|
| 2558 | <u>Thamra-e-Gulzār-e-Iymān</u> | 101 |
| 2559 | <u>Risāla-e-Hadīth</u> | 101-102 |
| 2560 | <u>Bustānu'l-Muhaddithīn</u> | 102 |
| 2561 | — — — — | 102-103 |
| 2562 | <u>E'lāmūn bi Faḍā'ila Yaumin Huwa Sayyidu'l-Ayyām</u> | 103 |
| 2563 | <u>Tarjama-e-Aḥādīth-e-Nabawī</u> | 103-104 |

ii. SHIITES

| | | |
|------|--|---------|
| 2564 | <u>Tarjama-e-Anwāru'l-'Uqūl min 'Ash'āri</u> <u>Waṣīi'r-Rasūl</u> | 105-106 |
| 2565 | <u>Fawātiḥ, (Sharḥ-e-Dīwān-e-Ḥaḍrat 'Alī</u> | 106-107 |
| 2566 | — — — — — (With preface). | 107 |
| 2567 | — — — — — (With commentary from f. 83v) | 107 |
| 2568 | — — — — — (Without preface). | 108 |
| 2569 | — — — — — | 108 |
| 2570 | — — — — — (Containing the preface only). | 108-109 |
| 2571 | — — — — — — — — | 109 |
| 2572 | <u>Ḥadīth-e-Bisāṭ</u> | 109-110 |
| 2573 | <u>Tarjama-e-Nahju'l-Balāghat</u> | 110 |
| 2574 | <u>Tarjama-e-Nahju'l-Balāghat</u> | 110-111 |
| 2575 | <u>Tarjama-e-Nahju'l-Balāghat</u> | 111 |
| 2576 | <u>Raḍātu'l-Abrār</u> | 112 |
| 2577 | — — — — | 112-113 |

| CAT NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|----------|--|-----------|
| 2536 | Sharḥu'l-Mishkāṭ | 84-85 |
| 2537 | A'r-Risālatu'l-'Aliyyah fi'l-Aḥādīthi'n-Nabawiyyah | 85-87 |
| 2538 | — — — — — | 88 |
| 2539 | Ashi'atu'l Lāme'āt fi Sharḥi'l-Mishkāṭ | 88-89 |
| 2540 | — — — — — | 89 |
| 2541 | — — — — — (Vol. II), (a continuation of the preceding work). | 89-90 |
| 2542 | — — — — — (Vol. II) | 90 |
| 2543 | — — — — — (Vol. III and IV,) | 90-93 |
| 2544 | — — — — — (Part III, Kitābs) | 93 |
| 2545 | — — — — — (Part IV) | 93 |
| 2546 | Sharḥ-e-Sufaru's-Sa'adat | 94 |
| 2547 | — — — — — (List of contents in the beginning). | 94 |
| 2548 | — — — — — | 95 |
| 2549 | Risāla dar Ādāb-e-Libās | 95 |
| 2550 | — — — — — | 95-96 |
| 2551 | — — — — — | 96 |
| 2552 | Taisīru'l-Qārī fi Sharḥ-e-Ṣaḥīḥi'l-Bukhārī | 96-97 |
| 2553 | — — (Containing commentary on two Kitābs on ff. Iv and 34v respectively). | 97 |
| 2554 | Chihil ḥadīth | 97-98 |
| 2555 | Risāla-e-Ḥadīth dar Faḍilat-e-Ḥaḍrat 'Alī | 98-99 |
| 2556 | A'r-Risālatu fi 'Ilmi Uṣūli'l-Aḥādīth | 99-100 |
| 2557 | Makhāzinu'l-Ma'rūf | 100 |

| CAT N ^{os} . | PARTICULARS | PAGE N ^{os} . |
|-----------------------|---|------------------------|
| 2520 | Sharḥ-e-Chihil Āyah | 75 |
| 3. HADITH—TRADITIONS | | |
| (i) SUNNITES | | |
| 2521 | Risāla-e-Ḥadith | 76 |
| 2522 | Lubābu'l-Akhbār | 76-77 |
| 2523 | — — | 77 |
| 2524 | — — | 77-78 |
| 2525 | — — | |
| 2526 | Sharḥ Qaṣida-e-Burdah | 79 |
| 2527 | — — — — | 79-80 |
| 2528 | — — — — (Defective in the beginning). | 80 |
| 2529 | — — — — (Compiled in 921/1515,) by Faḍlullah, surnamed Khwāja Iṣfahānī. | 80 |
| 2530 | — — — — (by Ibrāhīm b. Muḥammad b. 'Arab Shāh a'l-Iṣfarā'inf). | 81 |
| 2531 | A'l-Jawāhiru'l-Faridah fī Sharḥi'l-Qaṣidah | 81 |
| 2532 | Fathu'l-Mubīn | 82 |
| 2533 | Tarjamatu'l-Māthūrah | 82-83 |
| 2534 | Majmū'a | 83 |
| | 1. Tarjama-e-'Uddatu'l-Ḥisni'l Ḥaṣīn, (ff. 4v-47v). | 83 |
| | 2. D'uā'-e-Kimiyā-e-Sa'ādat (ff. 48-49v). | 83 |
| | 3. Adī'ya (ff. 50v-109v). | 83 |
| 2535 | Riyāḍ-e-'Abbāsī | 84 |

| CAT NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|----------|--|-----------|
| 2501 | <u>Khulāṣat u'l-Manhaj</u> | 66 |
| 2502 | — — — (Containing the second half Jnz 16 to 30) | 67 |
| 2503 | — — — | 67 |
| 2504 | — — — (From Sūra xix to the end of Rukū' I of Sūra xxxvi) | 67-68 |
| 2505 | — — — (From Sūra xix to Sūra xxxv). | 68 |
| 2506 | — — — (From Sūra xix to Sūra xxxii). | 68 |
| 2507 | — — — (Containing Sūra xxxiv to the end) | 69 |
| | — — — — — | 69 |
| 2509 | <u>Khulāṣatu'l-Manhaj</u> | 69 |
| 2510 | — — — (Containing Sūra xxxvi to liv). Defective at the end). | 70 |
| 2511 | — — — (Containing Sūra liv to the end of Rukū' I of Sūra xxxvi) | 70 |
| 2512 | <u>Jalāu'l-Aḥḥān wa Jalāu'l-Aḥzān dar Tafsīr-e-Qur'ān</u> | 70-71 |
| 2513 | — — — (Vol. II) containing Sūras vi to xviii) | 71 |
| 2514 | — — — (Vol. III) containing Sūra xix to cxiv, the end). | 22 |
| 2515 | — — — | 72 |
| 2516 | — — — (Vol. III, but containing Sūras xxxvi to the end). | 72-73 |
| 2517 | <u>Tarjamat-u-Āyāti'l-Aḥkām</u> | 73-74 |
| 2518 | — — — — | 74 |
| 2519 | <u>Tafsīru'l-Qur'ān</u> | 74-75 |

| CAT NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|-----------|--|-----------|
| 2482 | Manḥajū's-Ṣādiqīn (Vol. V From Sūra xxxvi to Sūra cxiv) | 59 |
| 2483 | — — (Vol. I containing the commentary upto verse 279 of Sūrah II). | 60 |
| 2484 | <u>Khulāṣatu'l-Manhaj</u> | 60 |
| 2485-2490 | — — — (Vol. I from Sūra i to Sūra iv) | 61 |
| 2486 | — — — (Vol. II From Sūra v to Sūra ix) | 61 |
| 2487 | — — — (Vol III From Sūra x to Sūra xviii) | 61 |
| 2488 | — — — (Vol. IV From Sūra xix to Sūra xxix) | 61 |
| 2489 | — — — (Vol. V From Sūra xxx to Sūra xiv) | 61 |
| 2490 | — — — (Vol. VI From Sūra xivi to Sūra xlv) | 61-62 |
| 2491 | — — — (from Sūra i to Sūra xviii) | 62 |
| 2492 | — — — | 62-63 |
| 2493 | — — — (From the beginning to verse 70 of Sūra xviii) | 63 |
| 2494 | — — — (From the beginning to the end of sūra vi) | 63 |
| 2495 | — — — (From the beginning to the end of Sūra vi) | 64 |
| 2496 | — — — (Containing Sūras vii to xvii) | 64 |
| 2497 | — — — (Containing Sūras vii to xviii) | 64-65 |
| 2498 | — — — (From the beginning of Sūra viii to the end of Sūra xviii). | 65 |
| 2499 | — — — (Containing first 192 verses of Sūra ii). | 65 |
| 2500 | — — — (A continuation of No. 2492, from Sūra xix to the end). | 66 |

| CAT Nos. | PARTICULARS | PAGE Nos. |
|--------------|--|--------------|
| 2460 | Mawāhib-e-'Alīyyah (Tafsīr-e-Husainī) | (Part II) 47 |
| 2461 | — — — — — | (Part II) 48 |
| 2462 | — — — — — | (Part II) 48 |
| 2463 | Tafsīr-e-Sūra-e-Yūsuf | 48-49 |
| 2464 | Sharḥu'l-Qur'ān-e-Mu'īnī | 49-50 |
| 2465 | Aḥsanu'l-Qaṣaṣ | 50 |
| 2466 | Tafsīr-e-Bismillah | 51 |
| 2467 | Amārātu'l-Kalāmi'r-Raḥmānī | 51-52 |
| 2568 | — — — — — | 52 |
| 2469 | Fathu'r-Raḥmān bi Tarjamati'l-Qur'ān | 52 |
| — | Muqaddima-e-Tafsīr-e-Qādirī | 53 |
| 2470 | Tafsīr Fathu'l-'Azīz | 53-54 |
| 2471 | Sālāru't-Tafāsīr | 54 |
| 2472 | Fathu'l-Mathānī | 55 |
| 2473 | Tafsīr-e-Sūra-e-Baqarah | 55 |
| (ii) SHIITES | | |
| 2474 | Lawāme'u't-Tāwil | 56 |
| 2475 | A'l-Ikhtesās-bi-Tarjamati'l-Khawāṣ | 57 |
| 2476 | — — — — — | 57 |
| 2477 | — — — — — | 58 |
| 2478-2482 | Manḥaju's-Ṣādiqīn (Vol. I From Sūra i to Sūra iii) | 58 |
| 2479 | — — — — — (Vol. II From Sūra iv to Sūra viii) | 58-59 |
| 2480 | — — — — — (Vol. III From Sūra ix to Sūra xviii) | 59 |
| 2481 | — — — — — (Vol. IV From Sūra xix to Sūra xxxv) | 59 |

| CAT NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|----------|---|----------------|
| 2437 | Tafsir-e-Sūra e-Yūsuf (It contains extra matter on ff. 348v-362v) | 37 |
| 2438 | — — — | 37-38 |
| 2439 | — — — | 38 |
| 2440 | Jawāhiru't-Tafsir li-Tuhfati'l-Amir | 38-39 |
| 2441 | — — — — — | 33-40 |
| 2442 | Mawāhib-e-'Alīyyah (Tafsir-e-Husaini) | 40-41 |
| 2443 | — — — — — | 41 |
| 2444 | — — — — — | 41 |
| 2445 | — — — — — | 24 |
| 2446 | — — — — — | 42 |
| 2447 | — — — — — | (Part I) 42-43 |
| 2448 | — — — — — | (Part I) 43 |
| 2449 | — — — — — | (Part I) 43 |
| 2450 | — — — — — | (Part I) 44 |
| 2451 | — — — — — | (Part I) 44 |
| 2452 | — — — — — | (Part I) 44-45 |
| 2453 | — — — — — | (Part I) 45 |
| 2454 | — — — — — | (Part I) 45-46 |
| 2455 | — — — — — | (Part II) 46 |
| 2456 | — — — — — | (Part II) 46 |
| 2457 | — — — — — | (Part II) 46 |
| 2458 | — — — — — | (Part II) 47 |
| 2459 | — — — — — | (Part II) 47 |

| CAT NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|---|--|-----------|
| | 8. Mathnawī-e-Mīr Ḥasan (ff. 94v-102v). | 25-26 |
| 2424 | Majmū'a | 26-27 |
| | 1. Maqṣūdu'l-Qārī, (ff. 1-6v). (Refer Nos: 2406 and 2422/2). | 26 |
| | 2. Risāla-e-Qirā'at, ff. 7-31) | 26 |
| | 3. Tuḥfa-e-Sulaimānī, (ff. 31v-52) | 26 |
| | 4. Risāla dar Bayān-e-Nūn-e-Sākin, (ff. 53-56) | 26 |
| | 5. Risāla-e-Waqf-e-Lāzim, (ff. 56-58v). | 27 |
| 2. TAFSIR—CRITICAL STUDIES AND COMMENTARIES | | |
| (i) SUNNITES | | |
| 2425 | Tarjama-e-Tafsīr-e-Ṭabarī | 28 |
| 2426 | — — — — (Containing Part II) | 28-29 |
| 2427 | A'l-Baṣā'ir fi'l-Wujūhi Wa'n-Nazā'ir | 29-31 |
| 2428 | Tafsīr-e-Zāhidi | 32 |
| 2429 | Tafsīr-e-Ya'qūb Charkhī | 32-33 |
| 2430 | — — — — | 33 |
| 2431 | — — — — | 33-34 |
| 2432 | — — — — | 34 |
| 2433 | Baḥr-e-Mawwāj | 34-35 |
| 2434 | — — — (Containing portion of Part I from chapter 7 (a'l-a'rāf) to end of chapter 18 (a'l-Kahaf). | 35-36 |
| 2435 | Tafsīr-e-Sūra-e-Yūsuf | 36 |
| 2436 | — — — — | 36-37 |

| CAT NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|----------|---|-----------|
| 2412 | Kanzu'l-Imān fi Qawā'idil-Qur'ān | 15-16 |
| 2413 | Sab'atu'th-Thawānī | 16-17 |
| 2414 | Kifāyatu'l-Qārī | 17-18 |
| 2415 | Marghūbu'l-Qārī | 18 |
| 2416 | Ḥadā'iqu'l-Qirā'at | 18-19 |
| 2417 | <u>Kh</u> ulāṣatu'n-Nawādir | 19-20 |
| 2418 | Risāla dar Ta'dādāt-e-Āyāt-e-Qur'ān | 20 |
| 2419 | Fuṣūl-e-Jamāliya and Risāla-e-Tajwīd | 21 |
| | 1. Fuṣūl-e-Jamāliya, (ff. 1v-41v) | 21 |
| | 2. Risāla-e-Tajwīd, (ff. 42v-77) | 21 |
| 2420 | 'Ajāibu't-Tajwīd | 22 |
| 2421 | Risāla-e-Tajwīd | 22 |
| 2422 | Majmū'a | 23-24 |
| | 1. Mufidu'l-Qurrā, (ff. 1v-50) | 23 |
| | 2. Maqṣūdu'l-Qārī, (ff. 51v-59) noted in Nos 2406 and 2424/1. | 23 |
| | 3. A'l-Muqaddimatu'l-Jazariya (ff. 59v-66) | 23 |
| 2423 | Majmū'a | 24-26 |
| | 1. Nazmu'l-La'ālī, (ff. 1v-10) | 24 |
| | 2. Fāl-Nāma, ff. 11-13). | 24 |
| | 3. Fāl-Nāma, (ff. 13-18v) | 24-25 |
| | 4. Risāla-e-Qirā'at, (ff. 19-34v) | 25 |
| | 5. Chihil-Sūrah, (ff. 36v-56) | 25 |
| | 6. Nazm-e-Ḥāfizī, (ff. 65-69v) | 25 |
| | 7. A few Persian ghazals of Mīr 'Abbās 'Alī on (ff. 88-93v). | 25 |

TABLE OF CONTENTS

VOLUME VII

ISLAMIC THEOLOGY

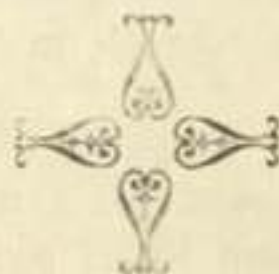
| CAT NOS. | PARTICULARS | PAGE NOS. |
|----------|--|-----------|
| | (i) Preface By Dr. M. L. Nigam, Director. | (i-ii) |
| | QURANIC SCIENCE | |
| | <i>1. Tajwid—Correct recitation of the Glorious Qur'ān</i> | |
| 2401 | A'l-Mabsūt fi'l-Qirā'āti's-Sab'a wa'l-Maḍbūt Min A'ḍā'ati't-Ṭab'a | 1-6 |
| 2402 | Manhalu'l-'Atshān fi Rasm-e-Aḥrufi'l-Qur'ān | 6 |
| 2403 | Qawā'idu'l-Qur'ān | 7 |
| 2404 | — — — | 8 |
| 2405 | Ma'danu'l-Qirā'at | 8-10 |
| 2406 | Maqṣūdu'l-Qārī | 10 |
| 2407 | Risāla-e-Tajwīd | 10-11 |
| 2408 | Naẓm-e-La'ālī | 12 |
| 2409 | Tuḥfatu'l-Qurrā' and Muḥṭaṣar Dar 'Ilm-e-Tajwīd | 12-14 |
| | 1. Tuḥfatu'l-Qurrā (ff. Iv-IIov) | 12-13 |
| | 2. Muḥṭaṣar dar 'Ilm-e-Tajwīd (ff. IIIv-138v) | 13-14 |
| 2410 | — — — (Ref: Nos. 2409/a and 2424/6) | 14 |
| 2411 | Zīnātu'l-Qārī | 14-15 |

2960. ŞIRĀTU'L-MUSTAQĪM WA DĪN-E-QAWĪM

An anonymous treatise on Shiite faith dedicated to Ibrāhīm Quṭb Shāh of Golconda. An early xiv/xx cent copy.

2987. UŞŪL-E-FUŞULU'T-TAWDĪH

A controversy between two Shiites about the Şūfic order by an unknown author. An early vii/xviii cent. copy.



LIST OF PHOTO BLOCKS

Catalogue VII of Persian Manuscripts

| SL. NOS. | MS. NOS. | PARTICULARS | CAT. NOS. | FACING P. |
|----------|---------------------------|--|-----------|-----------|
| 1. | Taf. 5. | Colophon of the oldest, rare and valuable codex of this Catalogue, transcribed by Hibbatu'llah in Archaic naskh on 11 Dhīhajja, 603 A. H/9 July, 1207 A.D. | 2427 | 31 |
| 2. | A. Nm. 595. | Photo showing dated seal of 'Abdu'r-Rahīm (khān-e-Khānān) on f. 3 (a) of Sharh Qaṣida-e-Burdah. | 2526 | 79 |
| 3. | H. I. 47. (M. No. 208) | A Royal Codex bearing the Royal seals having couplet of the 3. Golconda Kings. (1) Ibrāhīm Quṭb Shāh, (2) Muḥammad Qulī Quṭb Shāh and (3) Muḥammad Quṭb Shāh. | 2564 | 105 |
| 4. | H. I. 10. | Colophon of a Royal Codex Tarjama-e-Quṭb Shāhī, transcribed by Ḥasan Kitābdār Khushnawīs Khānī in good nasta'liq and having Ibn-e-Kātūn's Autograph in the margin. | 2592 | 121 |
| 5. | F. I. 15. | Opening page of a rare and excellent Royal codex Tarjama-e-Fiqh u'r-Riḍwā transcribed by Muḥammad Mu'min 'Arab Shīrāzī. | 2716 | 199 |

2839. ARKANU'L-IYMÂN

A short treatise on Shiite beliefs by Abul-Hasan Sharif, dedicated to Shahzād a Sultānam. Transcribed in 966/1558.

2855. RISĀLA-E-UŞŪL WA AHKĀM

A treatise on the Principles of faith and divine command by Shāh Qāḍī (Ghāzī) for Muḥammad Quṭb Shāh of Golconda in 1021/1612. Transcribed by 'Arab Kātib Shirāzī in 1034/1625 at Hyderābād.

2856. UŞŪL-E-KHAMSA

A short treatise on the five principles of Shiite faith by an anonymous author on the orders of Muḥammad Quṭb Shāh of Golconda. A late xi/ xvii cent copy.

2857. TUḤFA-E-SHĀHI WA 'ATĪYYA-E-ILĀHĪ

A Persian paraphrase of Mulla 'Alī Qushji's commentary on Tūsī's Tajrīdu'l-'Aqā'id by Zainu'ddin 'Alī Badakhshī and dedicated to Quṭb Shāh of Golconda. Transcribed in 1023/1614 in Naskh and Riqā'.

2876. TUḤFATI'L-GHARĀ'IB

A Persian Paraphrase of Arabic work Masā'il 'Abdullah bin Salām by 'Alī bin Ṭaifūr a'l-Buṣṭāmī during the reign of 'Abdu'llah Quṭb Shāh of Golconda. A late xi/xvii cent copy.

2900. JAWĀHIRU'L-'AQAI'D

A treatise on the five principles of Shiite faith by Muḥammad Rafī' Qāzwīnī and dedicated to Ātish Shāh. A late xi/xvii cent. copy.

2909. MIFTĀḤ-E-ASRĀRU'L-HUSAINĪ

A treatise on Shiite beliefs by Muḥammad Yūnus Damāwandī in 1160/1747. Transcribed in 1182/1768 by Mirza Muḥammad Masīḥ.

2949. MANHAJU'L-FĀḌILĪN FĪ MA'RIFATI'L A'IMMATI'L HUDĀ-TI'L-KĀMILĪN

A controversial work on the right of Imāmat between Shiites and Sunnites by Muḥammad bin Isḥāq in 936/1530 and dedicated to Shāh Tahmāsp Ṣafawī. Transcribed in clear Naskh by Muẓaffar 'Alī in 1065/1654 at Aurangābād.

2576. RA'UDAT-U'L-ABRĀR

A Persian commentary on the famous Nahju'l-Balāghat by 'Alī bin Ḥasan of Zawwarah (Iṣfahān) in 947/1540. Transcribed in Naskh and Nasta'liq by 'Abdu'l-Latīf in 1027/1611 at Hyderābād for the library of Sulṭān Muḥammad Quṭb Shāh of Golconda.

2633. DASTŪRU'L-KHĀ'IFĪN

A work on the Shiite practices and observances of daily life by Mīr Kamālu'ddīn Husain Mūsawī a'l-Husainī 'a't-Tehrānī. An autograph copy of 1172/1758.

2682. ATHĀRATU'SH-SHAUQ WA'L-GHARĀM ILA HAJJI
BAITI'L-HARĀM

A treatise on rituals and observances for Pilgrims of Holy cities of Macca and Madīna by Shāh Muḥammad a'l-Makkī in 1030/1621. An autograph copy.

2716. TARJUMA-E-FIQHU'R-RIDWĪ

A Persian paraphrase of the Arabic work of Fiqh ascribed to the 8th Shiite Imām 'Alī bin Mūsā Ridā by Muḥammad Shāh Qāḍī under the supervision of Muḥammad M'umin Astrābādī. Transcribed in 1029/1620 at Hyderābād by Muḥammad. 'Arab As'h-Shīrāzī for the Royal Library of Muḥammad Quṭb Shāh of Golconda.

2815. ANĪSU'L-A'TQIYYA

A rare work on Sunnite 'Aqāid by 'Abdu'r-Raḥīm. Transcribed in 1062/1652 by Mullā 'Abdu'l-Qādir.

2819. JAWHARUL-FĀDĀI'L

A treatise on Sunnite beliefs about the family of the Holy Prophet by Ghulām 'Alī a'l-Husainī a'r-Ridwī a'l-Kirmānī takhallu's-Arshead in 1166/1753. Transcribed in 1193/1779 at Khuldābād by author himself.

2820. DHARĪ'ATU'N-NAJĀT

A collection of forty Qur'ānic verses with Persian translation and commentary by Faiḍ in 1179/1755 in praise of Ḥaḍrat 'Alī. A late xii/xviii cent. copy.

Archaic Naskh by Hibbatullah bin Muhammad bin Muhammad a'l-Khatil in 603/1207. It is the oldest dated Persian Manuscripts of our Library.

2464. SHARHU'L-QUR'ÂN-E-MU'INI

A Rare commentary on A'l-Qur'ân by Mu'īnu'ddin b. Sirāju'ddin Khawand Mahmūd and dedicated to Mughal Emperor Ālamgīr. Transcribed in 1076/1666 in Naskh.

2465. AḤSANU'L-QAṢAṢ

A persian paraphrase and commentary on the Arabic book Kitābu's-Sittīn of Abū Bakr b. Muḥammad bin Zaid a't-Tūsī. Transcribed in 1097/1686.

2467. AMĀRĀTU'L-KALĀMI'R-RAḤMĀNĪ

Index of A'l-Qur'ân compiled by Muṣṭafā bin Muḥammad S'āid Muqarrab Khān in 1103/1692 and transcribed by 'Ināyatu'llah in 1131/1719 at Bijāpūr.

2512. JALĀU'L-ADHHĀN-WA JALĀ'IL-AḤZĀN

A Shiite commentary of the five chapters of A'l-Qur'ân by Abū'l-Maḥāsīn A'l-Husain bin Hasan a'l-Jurjānī. Transcribed in Thulth and Naskh by Muḥammad M'umin bin Mīr Husain Tūnī in 993/1591.

2536. SHARHU'L-MISHKĀT

A commentary on Waliu'ddin's famous book of tradition, Mishkātu'l-Maṣābiḥ by 'Aṭāu'llah bin Faḍlu'llah (d. 926/1520). Transcribed in naskh. A xi/xvii cent. copy.

2537. A'R-RISĀLAT-U'L-'ALĪ'YYAH-FI'L-AḤĀDITHI'N-NABAWIYYA

A collection of forty traditions with explanation by Husain bin 'Alī A'l-Wāi'z-a'l-Kāshif dedicated to 'Alī Sher. Transcribed in late xi/xvii cent.

2558. THAMRA-E-GULZĀR-E-IYMĀN

A collection of forty sayings of Holy Prophet with persian paraphrase and notes by Faiḍ in 1175/1761. Transcribed in 1176/1762 in Naskh.

NOTES ON RARE WORKS

Catalogue VII of Persian Manuscripts

2401. A'L-MABSŪT FI'L QUR'ĀATIS SABA' WA'L MAḌBŪT MIN A ḌATI'I-ṬABA'

An important and rare Commentary by Muḥammad bin Maḥmūd Sharif a's-Samarqandī a'l-Hamadānī the famous versified work on Tajwīd known as Shāṭibiyya of Abu'l-Qāsim a'l-firruḥ-a's Shāṭibī in three volumes Transcribed in good Naskḥ by Fathu'llah Shirwānī in 867/1463.

2402. MANHALU'L-ATSHĀN FI RASM AHRUFIL-QUR'ĀN

An orthographic study of the glorious Qur'ān by Tāhir Ḥāfiẓ Iṣfahānī and dedicated to Sulṭān Shāh Ruḥ Bahādur (808-850/1405-1447). Transcribed in late xii/xviii Cent.

2408. NAẒM-E-LU'ALI

A versified treatise of Tajwīd by Abu'l-Qāsim Nāẓim Mashhadī in 1061/1651 during the reign of 'Abdu'llah Quṭb Shāh of Golconda. Transcribed in late xii/xviii Cent.

2413. SABA'TUTH-THAWĀNĪ

An other versified treatise on Tajwīd by Faḍal Khān Yūsuf Samarqandī in 1123/1711, most probably an Autographed codex.

2418. RISĀLA DAR T'ADĀDĀT-E-ĀYĀT-E-QUR'ĀNĪ

A critical study of glorious Qur'ān's number of verses in each chapter by Hairān Ḥusain bin Uḥḥan. Transcribed in late xii/xviii Cent.

2419. FUṢŪL-E-JAMĀLIYYA AND RISĀLA-E-TAJWĪD

Two short treatises on Tajwīd. The author of the second treatise is Muḥammad bin 'Alī Ḥusainī. Transcribed in 1095/1684.

2427. A'L-BAṢĀ'IR FI'L WUJŪH WA'N-NAẒĀ'IR

A Critical study of the Glorious Qur'ān by Abul'-Faḍāi'l Muḥammad bin Ḥusain a'l-M'uḥḥi-a'n-Niṣhāpūrī (d. 577/1111). Transcribed in

The eight Indices, covering names of persons, titles, names of copyists, dates and places of transcription, autographs and seals, lists of concordance, calligraphically written, illustrated and royal codices, which are the very soul of the catalogue, have also been prepared with utmost care.

It is heartening to note that the staff of the manuscripts section has done an excellent job in bringing out this catalogue to coincide with the celebrations of 1400 years of Islamic era.

Lastly I must also thank Justice Sharfu'ddīn Ahmad, the Director, and Staff of the Dairatu'l-Ma'ārif-i'l-Osmania for their co-operation and care in bringing out this catalogue. I hope it will inspire scholars and students to embark on further researches on the subject.

M. L. NIGAM

Director,

Sālār Jung Museum

PREFACE

It gives me immense pleasure in introducing to readers the seventh concise catalogue of the Persian manuscripts in the Sālār Jung Museum, Hyderābād. This volume is specifically devoted to Islamic theology containing both the Sunnite and Shiite theologies. Besides, it covers various other subjects like Recitation of A'l-Qur'ān, its Glossaries and Commentaries. Traditions and Islamic jurisprudence etc.

Tajwid, Tafsīr, Hadīth, Fiqha, 'Aqā'id and other numerous subjects form the contents of this catalogue. The oldest dated manuscript is an incomplete Sunnite commentary entitled "A'l-Baṣa'ir Fi'l-Wujūh w'an-Naẓ'āir," on the Glorious Qur'ān, compiled by Abu'l-Faḍā'il Muḥammad a'n-Nishāpūrī and transcribed by Hibbatu'llah bin Muḥammad in 603 A.H./1207 A.D. in Archaic Naskh. Equally important is a Shiite commentary on the first sūras of the Qur'ān entitled Jalāu'l-Adhḥān wa Jalāi'l Aḥzān by Abu'l-Maḥāsin a'l-Husain bin Ḥasan Jurjānī and transcribed in Thulth and Naskh by Muḥammad Mu'min Tūnī in 993 A.H./1591 A.D. This catalogue covers dated manuscripts from 7th century A.H. to 13th century A.H. and undated manuscripts which can be placed between 8th century A.H. to 14th century A.D.

Precise care has been taken in giving all the necessary technical and literary information about each and every manuscript with cross references to available catalogues in other famous libraries. Antiquity and historical value of manuscripts also has been taken into account. A detailed list of manuscripts with a supplement of rare manuscripts and a list of Illustrations is added in the beginning for the convenience of scholars.

A
CONCISE DESCRIPTIVE CATALOGUE
OF
THE PERSIAN MANUSCRIPTS
IN
THE SALAR JUNG MUSEUM & LIBRARY

COMPILED

BY

LATE HĀJĪ MAULĀNĀ MUḤAMMAD ASHRAF

(Special Officer for Cataloguing)

WITH A PREFACE

BY

DR. M.L. NIGAM

Director, Sālār Jung Museum

VOLUME VII

CONCERNING 627 MANUSCRIPTS OF ISLAMIC THEOLOGY

Published by

DIRECTOR

Salar Jung Museum and Library

Hyderabad, Andhra Pradesh

INDIA

1980

Price Rs:

Salar Jung Museum Publications
New Series No. 9/7

CATALOGUE OF THE PERSIAN MANUSCRIPTS



**Volume VII
(Islamic Theology)**

**Salar Jung Museum and Library
Hyderabad, Andhra Pradesh
INDIA**

1980

Price Rs: